तमिल शैवभक्त कवि माणिक्कवाचकर कृत

तिरुवाचकम्

1



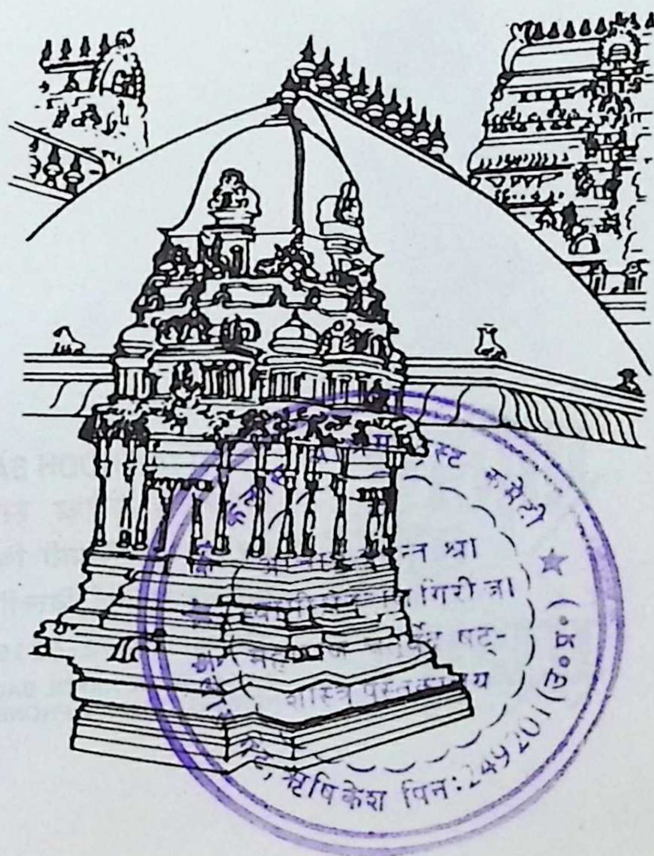
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

1-2-

तिरुवाचकम्

तमिल शैवभक्त कवि माणिक्कवाचकर कृत

प्रथम खण्ड



KUMARAGURU COLLEGE OF TECHNOLOGY
COIMBATORE-641066
UNDER THE AEGIS OF
RAMANANDA ADIGLAR FOUNDATION



साहित्य शोध संस्थान

SAHITYA SHODH SANSTHAN
साहित्य शोध संस्थान
8ए/141, पश्चिमी विस्तार क्षेत्र
करोलबाग, नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 2572-6216
8-A/141, W.E.A. KAROL BAGH
NEW DELHI-110005, PHONE: 2572-6216

तिरुवाचकम्

तमिल शैवभक्त कवि माणिक्कवाचकर कृत

(मूल तमिल, देवनागरी लिप्यंतर, हिन्दी भावानुवाद
एवं संक्षिप्त परिचायात्मक विवेचन सहित)



डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

ISBN : **81-85073-21-X**

CC : O 31, 1 (R 673); g 152
Q 28 : 417 X 5, 1

DDC : 894.8111009

मूल्य : छः सौ पचास रुपये मात्र (रु. 650/-); दोनों खण्डों का

संस्करण : प्रथम, 2006 ई.

प्रकाशक : **साहित्य शोध संस्थान**
8ए/141, पश्चिमी विस्तार क्षेत्र,
करौल बाग, नई दिल्ली-110005
फोन : 2572-6216

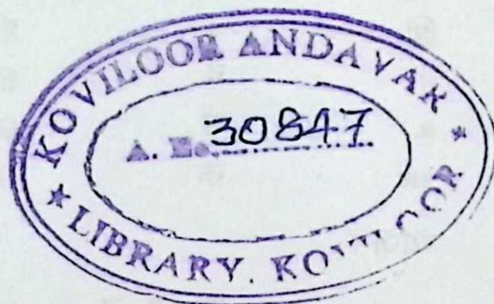
लेज़र : **साहित्य शोध संस्थान**

लेज़र : कैपिटल क्रिएशन्ज़, फ्लैट नं. 4,
शुभ्रम् काम्पलेक्स, डी.-96,
मुनीरका (गाँव), नई दिल्ली-110067

पुस्तबंध : गोयल एन्टरप्राइज़िज, दिल्ली-110032

मुद्रक : शकुन प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

Part - I



TIRUVACHKAM

TAMIL ŚAIVA-BHAKTA KAVI MĀṆIKKAVĀŚAKAR
KRIT

with Tamil text, transliteration into Devnāgari, Translation into Hindi and brief informative note.

Translator : **Dr. RAVINDER KUMAR SETH**

Publisher : **SAHITYA SHODH SANSTHAN**
8A/141, W.E.A. Karol Bagh,
New Delhi-110005; Ph. 25726216

Price : Rs. 650/- (Rupees Six hundred fifty only)
Part-I & II

email : drrkseth@hotmail.com

ISBN : 81-85073-21-X

तमिऴ् से देवनागरी लिप्यंतर संकेत चिह्न
தமிழ்—தேவநாகரி ஒலியாக்கம்

स्वर

அ	-	अ	எ	-	ए
ஆ	-	आ	ஏ	-	ए
இ	-	इ	ஐ	-	ऐ
ஈ	-	ई	ஒ	-	ऑ
உ	-	उ	ஓ	-	ओ
ஊ	-	ऊ	ஔ	-	औ

व्यजन

க	-	क, ग, ह	ம	-	म
ங	-	ङ	ய	-	य
ச	-	च, ज, श, स	ர	-	र
ஞ	-	ञ	ல	-	ल
ட	-	ट, ड	வ	-	व
ண	-	ण	ழ	-	ऴ
த	-	त, द	ள	-	ळ
ந	-	न	ற	-	र
ப	-	प, ब	ன	-	न

ग्रंथाक्षर

ஜ	-	ज	ஹ	-	ह
ஷ	-	ष	க்ஷ	-	क्ष
ஸ	-	स			

□ □ □

शीर्षक सूची

●●●

लेखकीय वक्तव्य

तमीश्वराणां परमं महेश्वरम्
तं देवतानां परमं च दैवतम्।
पतिं पतीनां परमं परस्ताद्
विदाम देवं भुवनेशमीड्यम्।। 6/7।।

"वे ईश्वरों के भी परम महेश्वर, देवताओं के भी परम देवता, पतियों के भी परम पति, परात्पर, परमपूज्य और भुवनेश्वर हैं।" श्वेताश्वतर उपनिषद् के परमतत्त्व, परंज्योति 'शिव' के अनुग्रह से ही उनके नवीं शती के भक्तकवि माणिक्कवाचकर की असाधारण कृति 'तिरुवाचकम्' का समग्र हिन्दी अनुवाद 'परमसत्य' की अपार अनुकम्पा के समक्ष प्रणत होकर हर्ष और उल्लास के साथ प्रस्तुत है। इस कृति को रहस्यवादी कृति कहा गया है। रहस्यवाद परमात्मा के ऐकान्तिक, व्यक्तिगत, पराबौद्धिक ज्ञान एवं सम्बन्ध को स्वीकार करता है। यह उस अनिर्वचनीय सत्य के साक्षात्कार का 'अनुभव' है जिसे साधक भक्त चैतन्य की एक विशेष स्थिति में निरंतर बना रहकर आत्मसात् करता है। यह अलौकिक शक्ति के साथ एक शान्त और निश्छल सम्बन्ध है; यह वैषम्य में व्याप्त ऐक्य की अनुभूति है; यह साधक-द्रष्टा की अनन्त सत्ता के साथ सायुज्य की प्राप्ति है।

'तिरुवाचकम्' के अनुवाद की प्रक्रिया में मैं कभी आनन्द से गद्गद् और कभी अपने ज्ञान (!) की सीमा से व्याकुल हुआ हूँ। कभी मूल 'शब्द' के 'अर्थ' का आच्छादन अविद्या माया का अनुभव देता और कभी अनायास ही अर्थ स्पष्ट हो जाने पर शिवानुग्रह का आभास होता। इस समग्र प्रक्रिया में कभी 'प्रकाश की किरण' कौंध जाती तो ज्योतिरूप शिव की कृपा समझ उसे ग्रहण कर लिया जाता और कभी हर सम्भव बौद्धिक, मानवीय प्रयास अर्थ की गहनता को भेद पाने में असमर्थ रहता।

कबीर-प्रदत्त नश्वरता का भाव हृदयाकाश से कभी दूर नहीं होता -

पाती झड़ती देखते हँसी कोपलिया
हम चली तुम भी चलिये धीमी बावलिया।

परन्तु शैव-दर्शन का प्रभाव भी अपना कार्य करता रहता है- अंतर्-दर्शन

प्रकाशरूप है। शिव के अनुग्रह से आत्मा को अज्ञान-आवरण से क्रमशः मुक्त होने का अवसर प्राप्त होता है, यह 'कृपा' अवर्णनीय है। कृपा-स्वरूप ईश्वर की अनन्त-कृपा से शरीर-रक्षा तो हुई ही, डॉ. ना. महालिंगम् को कई वर्ष पूर्व दिये गये 'वचन' की भी रक्षा हो गई। 1993 ई. में जब 'तमिल शैव-भक्ति साहित्य' का प्रकाशन हुआ था, उन्हीं दिनों शैवभक्ति परम्परा के प्रमुख कवियों के काव्य का अनुवाद और उनका सम्यक् विवेचन, उनकी भक्ति-साधना और दार्शनिक पक्ष का परिचय हिन्दी में प्रकाशित करने की योजना बनी थी। भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा का सद्परामर्श भी इस योजना के साथ था। क्रमशः रामलिंग स्वामी-वल्ललार कृत 'तिरु-अरुट्पा,' चंक्किळार कृत 'परियपुराणम्' तिरुमूलर कृत 'तिरुमंतिरम्' तथा ज्ञानसम्बन्धर, अप्पर, और सुन्दरमूर्ति नायनार् के तेवारम् ग्रंथों का मूल तमिल, देवनागरी लिप्यंतर सहित हिन्दी अनुवाद प्रकाशित होते गये। तीन वर्ष पूर्व किए गए 'तिरुवाचकम्' के लिप्यंतर और अनुवाद का सुधार, यत्किंचित् परिवर्तन आदि करने में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा। शनैः-शनैः इस विशाल कृति का एक समग्र, प्रकाशन-योग्य रूप उभर कर सामने आया है।

भारतीय भक्ति-परम्परा, विशेषतः मध्ययुगीन भक्ति-काव्य के सम्यक् अध्ययन और तात्त्विक विवेचन के लिए माणिक्कवाचकर की इस कृति का हिन्दी अनुवाद एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है, ऐसा मेरा विश्वास है। तमिल के आळ्वार-साहित्य और नायनमार् भक्तों के साहित्य के परिप्रेक्ष्य में देखने से भारतीय भाषाओं में अंतर्व्याप्त भक्ति-परम्परा के अनेक संदर्भ नवीन अर्थवत्ता प्रदान करते हैं।

तिरुवाचकम् एक आत्मा की अध्यात्म-यात्रा है जिसका अनुवाद करने की प्रक्रिया में अनुवादक का अंतर्मन उस यात्रा से एकीकृत होता हुआ उसका साक्षात् अनुभव करता रहा है। माणिक्कवाचकर की इस अध्यात्म आत्मगाथा के इससे पूर्व अनेक अनुवाद हुए हैं, उनमें से पांच अंग्रेजी अनुवादों से कुछ अंश प्रत्येक अध्याय के अंत में दिए गए हैं। इसका मूल लक्ष्य तुलनात्मक अध्ययन के लिए मूल तमिल, देवनागरी लिप्यंतरण, हिन्दी अनुवाद के साथ-साथ विविध अंग्रेजी अनुवादों के अंशों को उपलब्ध करवा कर तमिल के इस विश्व-विख्यात भक्ति-ग्रंथ को हिन्दी साहित्य के साथ सम्यक् रूप से सम्बद्ध करने तथा तुलनात्मक रूप में भारतीय साहित्य का अध्ययन करने के लिए सामग्री एक स्थल पर उपलब्ध करवाने की भावना है।

'तिरुवाचकम्' के अनुवाद की पूरी प्रक्रिया में हिन्दी, तमिल और

मलयालम के प्रख्यात विद्वान् डॉ. एच. बालसुब्रह्मण्यम् ने सद्परामर्श और सहयोग प्रदान किया है। सागर सदृश गहरे अर्थों से युक्त 'तिरुवाचकम्' के शब्द-भाण्डार में आपने एक अनुभवी गोताखोर की भाँति 'अर्थ'-मुक्ता को ढूँढकर जो सहायता की है उसका मात्र शब्दों में धन्यवाद कर पाना सम्भव न होगा। मैं उनका हृदय से आभारी हूँ और साधना के पथ पर अग्रसर इस 'पथिक' के सुखद, स्वस्थ भविष्य की सर्वव्यापक 'शिव' से प्रार्थना करता हूँ।

कुमरगुरु कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी के प्रो. के. अरुमुहम् भारत और विश्व में उच्च तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण नाम है। तमिल संस्कृति के संरक्षण और विकास तथा डॉ. ना. महालिंगम् की सहायता एवं मार्ग-दर्शन से वे तकनीकी शिक्षा को चरम उत्कर्ष के पथ पर ले जाने का महत् कार्य कर रहे हैं। डॉ. ना. महालिंगम् के अनुरोध पर रामानन्द अडिगलार फांउडेशन से जो विशिष्ट सहायता उन्होंने प्रदान की उसके लिए मैं उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। 'किसान वर्ल्ड' के श्री एस. कुंचितपादम्, शक्ति शूगर्स के डॉ. के. पी. गणेशन, 'ओम्शक्ति' और 'संयदि मडल' के श्री पी. चिदम्बरनाथन् द्वारा विविध आयोजनों और हिन्दी में प्रकाशित तमिल विषयक ग्रंथों का परिचय जनजन तक पहुँचता है। विविध रूपों में उनसे प्राप्त सहायता के लिए मैं उनका ऋणी हूँ। संगीत और साहित्य की साधना में रत प्रो. एम. वैद्यलिंगम् का ग्रंथ के अनुवाद के संदर्भ में विविध रूपों में सहयोग मिलता रहा जिसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

डॉ. ना. महालिंगम् के विशेष सचिव के रूप में चन्नै में कार्यरत श्री सी. रवीन्द्रन् एक निष्ठावान्, कर्त्तव्य-भावना से कर्मरत 'भक्त' व्यक्ति हैं। श्री सी. रवीन्द्रन की निःस्वार्थ सहायता, उनके भ्रातृभाव और अपार स्नेह के कारण ग्रंथ-अनुवाद और प्रकाशन के मार्ग की बाधाएँ सहज ही दूर होती चली गईं। उन्होंने मूल ग्रंथों तथा प्रमुख संदर्भ-ग्रंथों को उपलब्ध करवाया। मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

'सत्य' के इस अनुसंधान में जीवन-संगिनी डॉ. रमेश सेठ के स्नेहपूर्ण सक्रिय सहयोग से यह कार्य सहज और सरल बनता गया। निराशा के क्षणों में आत्मविश्वास का पुनः संचार कर देना उनका विशिष्ट योगदान है। प्रिय स्मिता, अशोक तथा उनकी सृष्टि संचिता और श्रेया का निश्छल, निःस्वार्थ स्नेह मुझे नवीन स्फूर्ति और नव-उत्साह प्रदान कर जीवन में अमृतवर्षा कर देते हैं।

'कैपिटल क्रिएशन्ज़' के श्री शाहजहाँ ने पूरी निष्ठा के साथ तमिल अंश की कम्पोज़िग और यथासम्भव प्रूफ-संशोधन का कार्य करके मुझ पर

अनुग्रह किया है। गोयल एन्टरप्राइज़िज़ के बन्धुवर श्री चन्द्रमोहन और श्री अनमोल गोयल ने प्रकाशन के हर सोपान पर सहायता दी है तथा पुस्तबंध इत्यादि का कार्य मनोयोग से किया है। उनकी लगन और कर्त्तव्य-भावना श्लाध्य है।

उद्धृत अनुवाद एवं तुलनात्मक अंश

डॉ. रेवरेण्ड जी. यू. पोप कृत अनुवाद का प्रथम प्रकाशन 1900 ई. में हुआ। रत्ना नवरत्नम् द्वारा रचित कृति तिरुवाचकम् - 'द हिन्दू टेस्टामैन्ट ऑफ लव' 1963 ई. में प्रकाशित हुई जिसमें विश्लेषण सहित आंशिक अनुवाद उपलब्ध है। श्री जी. वन्मीकनाथन् कृत अनुवाद 'पाथवे टू गॉड थ्रू द तिरुवाचकम्' 1971 ई. में प्रकाशित हुई। श्री टी. एन. रामचन्द्रन् कृत एक महत्त्वपूर्ण अनुवाद 'तिरुवाचकम्' नाम से 2001 ई. में और श्री एस. ए. शंकरनारायनन् कृत अनुवाद भी इसी वर्ष में प्रकाशित हुए। तुलनात्मक अध्ययन के लिए अंशों का चयन और संकलन इन्हीं पाँच अनुवादों से किया गया है। जिन अनुवादकों के अनूदित अंशों को तुलनात्मक अध्ययन के लिए प्रस्तुत किया गया है मैं उनके प्रति विशेष आभार व्यक्त करता हूँ।

तिरुवाचकम् के अनेक अन्य अनुवाद भी प्रकाशित हुए हैं। 'तिरुवाचकमणि' कृत अंग्रेजी अनुवाद 1958 ई. में, एस. एम. पोन्निया का आंशिक अनुवाद 1988 ई. में तथा डॉ. सी. श्रीनिवासन का अनुवाद 1991 ई. में प्रकाशित हो चुके हैं। अनेक अन्य अनुवादों की सूचना उपलब्ध है पर उन्हें प्राप्त कर पाना सम्भव न हो पाया।

करुणा और अमृत के सागर, सर्वशक्तिमान तिल्लै चिदम्बरम् के नटराजराज विषयक यह कृति उनके ही एक 'साधक-भक्त' अरुट्चेल्वर डॉ. ना. महालिंगम् को समर्पित करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। तमिलनाडु ही नहीं, भारत के विविध क्षेत्रों और विश्व के अनेक स्थलों पर उन्होंने अपने अद्भुत शील और मानवीय संवेदनाओं से युक्त एक श्रेष्ठ भक्त-साधक के रूप में अपनी छाप छोड़ी है। जन-सेवा, लोकमंगल और राष्ट्रहित के साथ-साथ मानव-मात्र के कल्याण का उनका सक्रिय कार्यकलाप आदर्श और अनुकरणीय है। उनके सद्परामर्श और मार्गदर्शन के फलस्वरूप ही यह कृति प्रकाश में आ रही है।

आशा है, हिन्दी और तमिल के सुधी, सहृदय विद्वान्, भक्त, साहित्य-प्रेमी इस प्रयास से लाभान्वित होंगे।

(रवीन्द्रकुमार सेठ)

अरुट्चेल्वर डॉ. ना. महालिंगम् को सादर समर्पित

तमिल साहित्य एवं विशेषकर तमिल शैव-भक्ति की विशद् परम्परा को हिन्दी-जगत् के समक्ष प्रस्तुत करवाने की योजना के सूत्रधार अरुट्चेल्वर डॉ. ना. महालिंगम् को सादर समर्पित। रामलिंग स्वामी और महात्मा गाँधी के आदर्शों को स्वजीवन में उतारकर, जन-जन में उनका प्रचार करने वाले; भारतीय धर्म, और संस्कृति के प्रसार और राष्ट्रीय भावात्मक ऐक्य के लिए कर्मरत; प्रदेश, भाषा, जाति, धर्म आदि की सीमाओं से ऊपर उठकर मानव-कल्याण के लिए समर्पित; संगीत, तकनीकी शिक्षा, पुरातत्व, मंदिर पुनरुद्धार एवं नव-निर्माण, शिक्षा-प्रसार आदि में महत्त्वपूर्ण योगदान करने वाले डॉ. ना. महालिंगम् एक श्रेष्ठ मानव और उच्चकोटि के भक्त-साधक हैं। उनके मार्ग-दर्शन और सद्परामर्श के द्वारा ही यह कृति साहित्य और धर्म के सुधी विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत हो सकी है।



अरुट्चेल्वर डॉ. ना. महालिंगम्   Arutchelvar Dr N. Mahalingam

Dedicated to Arutchelvar Dr N. Mahalingam

Dedicated to Arutchelvar Dr N. Mahalingam. His mission is to provide Tamil literature and culture, especially Tamil Saiva Bhakti literary heritage for Hindi-world. One who has been following the ideals of Ramalinga Swami and Mahatma Gandhi in his personal life, spreading and propagating these ideals; one who having crossed the barriers of language, religion, caste etc. is working ceaselessly for national emotional integration and welfare of humanity. Dr N. Mahalingam has been actively engaged in welfare of down-trodden, promotion of music, technical education, research in old civilizations, temple renovation and getting new temples constructed. A wonderful 'human - being', a devotee, a visionary whose guidance and inspiration has made this publication possible.

माणिक्कवाचकर और तिरुवाचकम्

. *तिरुवाचकम् 51 शीर्षकों में विभक्त, समग्रत: 3327 पंक्तियों की एक विशाल कृति है। ये कविताएँ विविध तमिल-छन्दों यथा अहवल, वेण्बा, कलिप्पा और विरुत्तम् में निबद्ध हैं। श्री के. वी. ज़्वेलेबिल के शब्दों में यह भक्ति काव्य का उच्चतम सोपान है, जिसमें अनेक आत्मकथात्मक तत्त्व समाहित हैं। आत्मा द्वारा ईश्वर के प्रति प्रेमपूर्ण समर्पण और शिव द्वारा अपनी अरुळ् - 'कृपा' प्रदत्त करना इसका मूलाधार है। यह कृति शैव-सिद्धान्त दर्शन की विकसित स्थिति की परिचायक है :*

'It represents the peak of Śaiva bhakti poetry and, apart from many autobiographical elements, one may discern the ripening of Śaiva Siddhānta philosophy with a stress on the love of the soul for God and Śiva's response with arul, grace.'

माणिक्कवाचकर के जीवन के विषय में सामग्री प्रायः अंतःसाक्ष्य पर आधृत है। इतना स्वीकार किया जा सकता है कि वे एक ब्राह्मण वंश में उत्पन्न हुए; मदुरै के निकट तिरुवादवूर नामक स्थल में उनका जन्म सम्भवतः नवीं शती में हुआ। वे पाण्ड्य नरेश के मंत्री थे तथा अपनी विलक्षण प्रतिभा, विद्वता और कार्यकुशलता के लिए छोटी आयु में ही समादृत एवं विख्यात हो गए थे। एक बार वे राज्य की सेना के लिए घोड़े क्रय करने के लिए गए तो मार्ग में तिरुप्पॆरुन्तुरै नामक स्थल पर गुरुरूप में 'शिव' के दर्शन हुए। उन्होंने समस्त राजधन शिवभक्तों और मंदिर पर व्यय कर दिया। सर्वस्व त्याग कर वे भक्ति-मार्ग पर अग्रसर हो गए। उल्लेख मिलता है कि पाण्ड्य-नरेश ने धन के अपव्यय के कारण उन्हें बंदी बना लिया परन्तु प्रभुलीला से "घोड़े" राजा के अस्तबल में पहुँचा दिए गए और पाण्ड्य नरेश ने इन्हें ससम्मान पुनः मंत्री पद प्रदान किया। यह कथा अंतःसाक्ष्य से भी प्राप्त होती है।

माणिक्कवाचकर प्रभु-अनुग्रह का साक्षात् अनुभव कर चुके थे फलतः सुख-दुःख में समभाव से वे अपने दायित्व का निर्वाह करते रहे। हृदय के अंतर तो शिव व्याप्त थे; उनके गुणों का, उनकी असीम कृपा का प्रकाश

था; अतः शीघ्र ही राज्य-कार्य को छोड़ कर आप विभिन्न शिव-स्थलों की यात्रा को चल पड़े। दार्शनिक दृष्टि से जीव और शिव के अभेद रूप को काव्य में अभिव्यक्त करते हुए वे अनेक मंदिरों और तीर्थ-स्थलों में भ्रमण करते रहे। चिदम्बरम् क्षेत्र में श्रीलंका (जाफ़ना) से आए बौद्ध आचार्यों को शास्त्रार्थ में पराजित कर शैव-भक्ति के महत्त्व की स्थापना का उल्लेख भी मिलता है।

तिरुवाचकम् में आस्था और प्रकाश का अद्भुत संयोग है। यह ईश्वर की अगाध करुणा के रहस्यों को जानने की प्रक्रिया है। अपार स्नेह और पूर्ण समर्पण की भावना संजोये यह एक अद्भुत कृति है। समस्त ब्रह्माण्ड उस परमसत्ता से व्याप्त है। सृजन, पालन और संहार करने वाले, परमतत्त्व का यह प्रत्यक्ष अनुभव है। ब्रह्माण्ड में व्याप्त इस परंज्योति को प्राप्त करने के साधन अनन्त हैं, मार्ग भी अनन्त हैं। माणिक्कवाचकर की तिरुवाचकम् परम्परागत मान्यताओं से अनाबद्ध, अंतर्मन की आवाज़ पर निरंतर अग्रसर होने वाली कृति है। इस कृति के पदों में अद्भुत भावनापूर्ण आलोड़न है और उनको हृदय में उतार लेना 'आनन्द के सागर' में गोते लगाने के समान है। शैव-चिंतन के मूल आधार 'अरुळ्'-कृपा, अनुग्रह 'तिरुवाचकम्' के चिंतन, दर्शन एवं काव्य का मूल स्वर है।

चेक्किळार कृत 'पॅरियपुराणम्' - जिसे 'तिरुतोण्डर पुराणम्' भी कहते हैं-63 शैव-भक्तों का काव्यमय चित्रण है। इसमें माणिक्कवाचकर का उल्लेख नहीं है। इससे पूर्व सुन्दरमूर्ति नायनार् ने 'तिरुतोण्डतेगै' में साठ भक्तों के अंतर्गत भी उन्हें समाहित नहीं किया। 'पॅरियपुराणम्' के रचयिता चेक्किळार कुलोतुंग चोळा (1070 ई.-1108 ई.) के प्रधानमंत्री थे। सम्भवतः सुन्दरमूर्ति के 'तिरुतोण्डतोगै' को आधाररूप में स्वीकार करने के कारण माणिक्कवाचकर को पॅरियपुराणम् में स्थान नहीं मिला। माणिक्कवाचकर ने अपने काव्य में वरगुण पाण्ड्य द्वितीय (862 ई.-880 ई.) का उल्लेख किया है। दार्शनिक मतों का उल्लेख करते हुए काव्य में 'मायावाद' का भी संदर्भ आया है जिससे शंकराचार्य के दार्शनिक चिंतन का परिचय स्पष्ट है। शंकराचार्य का देहावसान लगभग 820 ई. में हुआ। अन्य अंतःसाक्ष्य, विविध अभिलेखों और ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर माणिक्कवाचकर का समय नवीं शती के लगभग उपयुक्त प्रतीत होता है।

गहन आध्यात्मिक चिंतन, प्रभु-अनुग्रह का साक्षात् अनुभव, अटूट आस्था से आप्लावित यह कृति मानव और ईश्वर के नित्य, अनवरत, सम्बन्ध का भावपूर्ण चित्रण है। कवि ने शिव की कृपा और ज्योति का हृदय में दर्शन किया। दृश्यमान् और अदृश्य सृष्टि के इस परमसत्य के स्वानुभव

को; सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोभाव एवं अनुग्रह करने वाले चिदम्बरम् के नटराज के नृत्य को काव्य में अभिव्यक्त किया और जनजन के लिए उस परमतत्त्व को सहज अनुभूतिगम्य बना दिया। रत्ना नवरत्नम् के अनुसार—

The Poet perceived, realised, lived and communicated to man, the supreme experience that Siva is the transcendent and immanent Reality, pervading the whole visible and invisible universe, and that his five-fold acts of creation, preservation destruction, embodiment and gracious release are embodied in his ceaseless mystic dance at Tillai. *(पृ.29)*

तिरुवाचकम् के कवि के जीवन का एकमात्र लक्ष्य अपने कर्मों को विनष्ट करवाना है। इसे इस रूप में भी कह सकते हैं कि प्रकारान्तर से कवि मानवमात्र के लिए इस लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। शिवानुग्रह से प्राप्त मानव-जन्म, और इस जन्म में प्राप्त ईश्वरीय प्रेम और सत्यज्ञान से कर्म-विनाश होता है। गुरु ज्ञान-दृष्टि द्वारा साधक के आन्तरिक ज्ञान को प्रस्फुटित करके उसके चित्त से अज्ञानान्धकार तिरोहित करता है, सत्य-ज्ञान प्रकाशित करता है। ईश्वर कृपा-स्वरूप है, चित्-शक्ति की अभिव्यक्ति 'कृपा' का ही प्रकाशन है। सृष्टि, स्थिति, संहार एवं तिरोधान ईश्वर द्वारा ही सम्पादित होते हैं तथा आत्मा को मुक्त करने के लिए ईश्वर अपनी कृपाभिव्यक्ति करते हैं। ईश्वर सर्वज्ञ एवं सर्वव्यापक है। आत्मा जब स्वज्ञान प्राप्त करती है तो उसका अज्ञानान्धकार नष्ट हो जाता है; वह सत्य, सर्वव्यापक ज्ञान से पूर्ण हो जाती है। 'चैतन्य-स्वरूप आत्मा के आत्मज्ञान एवं शिवज्ञान की अनन्यता का बोध' ही 'सत्यज्ञान' की स्थिति है। ईश्वर कृपापूर्वक विविध उपायों से आत्मा के अज्ञानान्धाकार को दूर करता है तथा उसे सत्यज्ञान से युक्त कर देता है। मात्र सृष्टि ही नहीं अपितु पंचकृत्यों के सम्पादन द्वारा ईश्वर आत्मा के अज्ञानान्धकार को विनष्ट कर ज्ञान-प्रकाश का अनन्त परमानन्द प्रदान करता है।

ज्ञान-प्राप्ति होने पर चित्त एकाग्र हो जाता है, ज्यों-ज्यों शिव-शक्ति का प्रकाश विस्तार लेता है, मानव-आत्मा ज्ञानशक्ति को आश्रय बनाती है। उदासीन, कामना-रहित, ज्ञान के उच्चतर सोपानों की ओर अग्रसर आत्मा सांसारिक प्रपंचों से असम्बद्ध एवं अप्रभावित हो जाती है। कामना का अन्त कर्मबंधन का क्षय है। शिव-शक्ति अनन्त, स्वप्रकाश, चैतन्य है अतः उसके प्रति समर्पणभाव से पशुत्व का विनाश होता है। इसके साथ ही अहंभाव, 'मैं' और 'मेरे' की अनुभूति से मुक्ति हो जाती है। यह अनन्त ज्ञान में निमज्जित होना है।

शैव दार्शनिक उमापति शिवाचार्य के चिंतन के अनुसार - ईश्वर को

उसकी कृपा के प्रकाश से ही जाना जा सकता है। आत्मा पूर्व के अल्पबोध को त्यागकर ईश्वरीय इच्छा एवं प्रेम से युक्त होकर ज्ञान-निष्ठा की उच्च स्थिति को प्राप्त करती है (मंत्र, 84)। चित् शक्ति की प्रेरणा से साधक सच्चिदानन्द स्वरूप में निमज्जित हो जाता है। ईश्वरीय करुणा साधना-यात्रा का पाथेय है, भक्त विविध सोपानों को पार करता हुआ सायुज्य प्राप्त करता है। ईश्वर की नटराज मूर्ति जीव के प्रति ईश्वरीय करुणा का प्रत्यक्ष रूप है। शिव के आनन्द-ताण्डव का प्रयोजन जीव-मुक्ति है। वह देवाधिदेव परमेश्वर महादेव जीवों के हृदयाकाश में आनन्द-नृत्य करता है।

तिरुवाचकम् ईश्वर में अनन्य आस्था और प्रेम की काव्यमय अभिव्यक्ति है। कवि संत माणिक्कवाचकर के अनुसार सच्चा साधक भक्ति-मार्ग में आँच में पड़े मोम की भाँति पिघलता है, द्रवित होता है। भक्त की अनन्यता और एकतानता उसका सम्बल बनता है। उसका अंतःकरण, मन, इन्द्रिय सब एकाग्र हो जाते हैं और वह अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है। मानव का क्रमशः आत्मोत्थान उसे ईश्वर-सायुज्य प्रदान करता है। 'तिरुवाचकम्' इस अद्भुत, अवर्णनीय 'अनुभव' को अभिव्यक्त करने का उपक्रम है। माणिक्य के समान कथन करने वाले - माणिक्कवाचकर को ज्योतिस्वरूप, सत्यज्ञानरूप आनन्दमय प्रभु ने तिरुपेरुन्तरै स्थल पर गुरुरूप में दर्शन दिए। गुरुरूप 'शिव' की कृपा से भक्त-कवि के सकल कर्म निःशेष हो गए और अजस्त्र आनंद का चिरंतन स्त्रोत प्राप्त हुआ। जब जाज्वल्यमान् ज्योतिराट् के दर्शन हो गए तब जीवन का प्रत्येक श्वास उस अमंद, असीम आनन्द को जन-मानस तक पहुँचाने में रत हो गया। अध्यात्म-यात्रा के इन गीतों की भाषा, इनमें अन्तर्व्याप्त आस्था और नाद-सौंदर्य को आत्मसात कर उसका अनुवाद भी आनन्दपूर्ण आध्यात्मिक 'अनुभव' है।

'तिरुवाचकम्' का संक्षिप्त परिचय देने के लिये इस कृति के प्रत्येक शीर्षक तथा उपशीर्षक का भाव तथा उसके अंतर्गत वर्णित विषय को स्पष्ट करने से समग्र कृति का एक रूप स्वतः ही स्पष्ट हो जाएगा। प्रथम शीर्षक 'शिव-पुराण' में ब्रह्मतत्त्व की व्याख्या 'शिव के आदि-अनादि रूप' के अंतर्गत की गई है। नमश्शिवाय नाम, तिरुप्पेरुतुरै के अधीश, आगम के साकार रूप, एकमूर्ति, अनेकमूर्ति शिव की स्तुति इस अंश का विषय है। इसमें आत्मा द्वारा विविध रूपों में जन्म लेना, शिव के सत्यज्ञान, ज्योतिस्वरूप और 'सत्य-बोधक गुरु' स्वरूप का परिचय और सृष्टि में व्याप्त 'बृहत् से बृहत् और अणु से भी अणीयान' रूप का उल्लेख है। नव-द्वार की कुटिया में पड़े मायामय तमस से आवृत मानव के लिए वह अनुग्रहपूर्वक उद्धार

करने के लिए दर्शन देता है। 'आ गए तुम धरणीतल पर, दर्शन दिए पुण्यमय निज दीर्घचरण' तथा श्वान-सम दास पर माँ से भी अधिक दया करनेवाले तत्त्व-स्वरूप का चित्रण है। 'शिव पुराण' शीर्षक के अंतर्गत 'अपरिमेय परमपुरुष' का वर्णन करते हुए माणिक्कवाचकर कहते हैं—

बसे हो प्राणों में प्राण बनकर
परे हो तुम सुख-दुःख के द्वंद्व से, किंतु
जग-स्वरूप होने से इनसे युत हो
आराधकों के परम प्रिय हो
सर्वस्वरूप हो युगपत् अरूप हो
ज्योतिस्वरूप तुम निबिड़ तमोमय भी
अद्भुत महिमा के धनी ! तुम
आदि-मध्य-अंत हो इनसे परे भी।

यह अलौकिक ज्योति-पुंज, आनन्द की अमृतधारा, शाश्वत ज्ञान-प्रकाश, वाणी के लिए अगोचर अनुभव, क्षण-क्षण परिवर्तित हो रहे विश्व में शाश्वत ज्ञानबोध भक्त-कवि के हृदय में आनन्द के अमृत-उत्स रूप में प्राप्त होता है। कविता के अंतिम चरण में तिल्लै चिदम्बरम् में नर्तित नटराजराज से कर्मपाश और जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त कर 'शिवमय' बनाने का आग्रह है।

कृति का द्वितीय शीर्षक 'शिव की कीर्ति' शिवानुग्रह की प्रशस्ति का गायन है। विविध परिस्थितियों एवं स्थलों में शिव अपने निष्ठावान् भक्तों पर अनुग्रह करते हैं, अपने नव-नव सौंदर्य को उजागर करते हुए वह लीलामय एक सुनियोजित विधि से जीव का अज्ञान दूर कर उसे शिवमय बनाता है। महेन्द्र-गिरि में जिसे विरचित किया उस आगमशास्त्र का विस्तार शिव ने कल्लाडम धाम में किया। अपने असीम, अगाध प्रेम के कारण प्रभु ने भक्तों के हृदय को अपना आवास बना लिया है। शिव ने पंचपळ्ळी में किरात वेश धारण किया और केवट बनकर 'केळिरु' मत्स्य के मुख से आगमशास्त्र का उद्धार किया। नन्तमपाड़ी में वे चतुर्वेद विशारद द्विज-रूप में और पांड्य नरेश की सभा में कुशल अश्व-प्रशिक्षक के रूप में प्रकट हुए। यहाँ पार्थ-अनुग्रह और विष्णु-ब्रह्मा के लिए आद्यन्तविहीन ज्योतिःस्तम्भ की पौराणिक गाथा का उल्लेख है। 'वेंती' नामक बृद्धा के लिए वेगै नदी पर बन रहे बांध के लिए टोकरी में मिट्टी ढोने की लीला, पॅरुन्तुरै में ज्ञानाचार्य रूप में तथा पट्टमंगै में अष्ट महासिद्धियों की व्याख्या करने के संदर्भ शिव-कीर्ति के रूप में वर्णित हैं। 'ओरी' गाँव में बालक रूप, तेवूर के दक्षिण में स्थित द्वीप में

नृपवेश धारण करना तथा तिरुवांचियम् में सुगंधकुंतला देवी के साथ आमोद से विलसने वाले 'शिव' 'भक्तों के हित लेते हैं प्रभु बहुविध रूप बहुविध वेश'। ईङ्गोय की पहाड़ी पर सौंदर्य की छटा बिखेरते प्रभु तिरुवैयारु में शैवाचार्य रूप में, पुरम्पयम् में अनेक धर्मग्रंथों के रचयिता रूप में, चंद्रद्वीप में यंत्रयान पर आरूढ़ होकर विज्ञानी सम अवतरित प्रभु मंत्र-स्वरूप तथा महेन्द्र पर्वत पर सुन्दरेश रूप में विराजते हैं। अपनी करुणा, अनुकम्पा द्वारा शिव—

अपना लेते हैं जीव को दूरकर उसके दोष को
और जीव को बना लेते हैं शिवमय।

ब्रह्माण्ड प्रकरण-'शिव का स्थूल सूक्ष्म' के अंतर्गत माणिक्कवाचकर शिव को चिरंतन, पुरातन मानते हैं जो ब्रह्मा के सर्जक हैं। सृजन कार्य ब्रह्मा, पालन विष्णु ओर संहार रुद्र का कार्य है; परात्पर शिव तीनों कृत्यों से परे विराजता है। कवि यहां असंख्य ब्रह्माण्ड, उनके ग्रहपिण्ड और अगणित ग्रह आदि को उसी भाँति परिकल्पित करता है जैसे कि रन्ध्र से आ रहे सूर्य प्रकाश में असंख्य धूलकण हों। अणु और ब्रह्माण्ड की संरचना में उसने भेद नहीं माना। कीट से लेकर ब्रह्मा तक सबका शक्ति-स्त्रोत एक ही तत्त्व है; चन्द्र की शीतलता, अग्नि की ऊष्मा, गगन की व्यापकता, वायु की वेग-शक्ति, जल का माधुर्य, धरती की संसक्ततापूर्ण दृढ़ता, सर्वत्र उसकी अपरंपार महिमा व्याप्त है।

'शिव के नाम' उपशीर्षक से शिव की नादप्रियता का वर्णन है।, वह राग-रागिनी के सूक्ष्म भाव का ज्ञाता, 'भक्ति जाल' में फंसता है। वह अणोरणीयान है, महीयान है, पोथियों के ज्ञान से अगम्य वह सूक्ष्म पुरुष अनादि और अनंत कालपुरुष है। वह नर है, नारी है, क्लीव भी; उस परमतत्त्व से आनन्द का, अजस्त्र अनुग्रह का अमृत स्रवित होता है। यहां एक महत्त्वपूर्ण कथन है - 'पधारे प्रभु मुझे अपनाने के लिए, अपनाया, अनुगृहीत किया।'

एक अन्य उपशीर्षक 'समुद्र और मेघ' में कवि ज्ञान-प्रकाश से 'दारुण निदाघ सम दुरित पुंज' के मिटने और ब्रह्मतेज से भाल देश के दीप्त होने का वर्णन करते हुए ईश द्वारा उसे अपनाए जाने के अनुभव का इन शब्दों में उल्लेख करता है-खिले हुए कृत्तिका पुष्प के समान अजंलि-मुद्रा, गद्गद् भाव से खड़ा, नयनों से आनन्दाश्रु का प्रवाह, सकल दुरित विनष्ट होकर आनन्द ही आनन्द की प्रतीति - शिवानन्द के दिव्य प्रवाह ने पुण्य और पाप के महावृत्त को जड़मूल से काट डाला।

श्री जी. वन्मीकनाथन के अनुसार यह अंश चिदम्बरम् में गाया गया। इसमें हृदय की सहजाभिव्यक्ति और आत्मकथात्मक तत्त्व का समावेश और

ज्ञान-भक्ति का समन्वय द्रष्टव्य है। सगुण-निर्गुण ब्रह्म का वर्णन, ईश्वरीय अनुकम्पा और प्रेम से सराबोर भक्त का अनुभव इसके महत्त्व में अभिवृद्धि करते हैं।

'शिव चरण प्रशस्तिगान' के अंतर्गत उस पौराणिक गाथा का उल्लेख है जिसमें धरती और आकाश को वामन रूप में नाप लेने वाले श्रीमन्नारायण शिव-दर्शन के लिए शक्तिशाली, वेगवान जंगली शूकर का रूप धारण कर पाताल तक छान मारते हैं पर शिवचरणों के दर्शन प्राप्त नहीं कर पाते। 'जन्म' उपशीर्षक से माता के गर्भ में बच्चे के विकास क्रम का शब्द-चित्र है, जन्म के उपरान्त अर्जित, संचित कर्मों के कारण कुमारावस्था, युवावस्था का आगमन होता है। महत्त्वाकांक्षा, विद्यागर्व, दरिद्रता, अन्यान्य दुराचरणों से बचता हुआ व्यक्ति अपने अस्तित्व की रक्षा करता है। शनैः-शनैः जीव के मानस में ईश-बोध होता है, द्वेषरहित प्रेम-स्वरूप के अस्तित्व का पता चलता है तब तर्कवाद, नास्तिकता तथा विभिन्न मायावी शक्तियाँ प्रेमाभक्ति के मार्ग में बाधक बनते हैं। यहां विविध मतों का उल्लेख करते हुए वेदांत के मायावाद का संदर्भ आया है। इस संदर्भ के आधार पर माणिक्कवाचकर का रचनाकाल नवीं शती का स्वीकार किया गया है क्योंकि 'मायावाद' के प्रतिपादक शंकराचार्य का परलोकवास 820 ई. में हुआ। हरे वृक्ष पर ठोकी गई कील की भांति सच्चा साधक भक्ति-मार्ग में आँच में पड़े मोम की तरह द्रवित होता है। धीरे-धीरे वह जान जाता है कि मिथ्या अहँकार मोक्ष-मार्ग में बाधक तत्त्व है, गाय से बिछुड़े बछड़े की भाँति वह प्रभु के लिए रुदन करता है, अनन्यता उसका आभूषण बनता है। प्रभु की महिमा अपरंपार है वह—

अपनी पर उतर आता है जो
भक्तजन के उद्धार के हित गुरु-रूप में
भक्त भी संलग्न होता है चरण-युगल से
ज्यों अनुसरण करती है छाया वस्तु का....

'जय गीत' में भक्त वत्सल प्रभु आदिदेव महादेव का जयगान है और 'स्तुति' के अंतर्गत शब्दातीत, अगोचर विश्व-संरचना के इन्द्रजालिक की स्तुति है। इस अंश में कवि का आत्मकथात्मक अंश महत्त्वपूर्ण है—

ऐसे महिमामय प्रभु सहज सरल बन
आए मेरे पास
ज्ञान दिया नश्वर जग का शरीर का
फिर ज्योतिष्मान प्रभु ने

मेरी काया को भी बना दिया ज्योतिर्मय
जिससे मैं करूँ भक्ति का विस्तार....

वह दिग्दिगंत में ढूँढने वाले बहिर्मुख साधकों के लिए अगोचर हो कर तिरोधान कर लेता है, तपस्वी तथा दंभ से युक्त वेदमार्गी भी जिसे प्राप्त नहीं कर पाते वह 'भक्त' के लिए आनन्द का उत्स बनकर स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। संशय की डोर में डोलने वाले या अहंकारपूर्ण दावा करने वालों को वह दर्शन नहीं देता। ऐसा अनुपम अप्रमेय शिव कवि के कान में मंत्र फूंकता है - यह मैं हूँ, हाँ मैं हूँ......... और द्विजवेश दिखाकर अनुग्रह पूर्वक 'भक्त' को अपना लेता है। 'भक्त' माणिक्कवाचकर ने भी जब उसे समक्ष नहीं पाया तो प्रेमाभक्ति में द्रवित होकर उसी भाँति चिल्ला उठा जैसे सागर तरंगों में तुमुल गर्जन हो रहा हो। वह उन्मत्त हो उठा, सुध-बुध खोकर प्रलाप करने लगा; तब नाथ ने जो मधुमय अनुभव दिया वह वृक्ष के उच्च शृंग से झरने वाले सुमधुर मधु के समान अंग-अंग मं व्याप्त हो गया–

जलाकर भस्म कर डाला हमारे त्रिमल को
दर्शन दिया मुझे नाथ ने
देखा मैंने हस्तामलकवत्।

यह आनंदानुभूति अनिर्वचनीय है, गूंगे का गुड़ है; मानो ऊँची हिलोर ले रही अगणित सागरों की सुख-शीतल तरंगों में एक साथ उफ़ान आ गया हो। रोम-रोम आनन्द से सराबोर हो गया, आनन्दमय ज्योति-शरीर प्राप्त कर, परमानंद में स्थित होकर भक्त अनुग्रह के स्वर्गीय आनन्द को पाकर अमृतस्वरूप हो गया।

इस भाँति अतिशय प्रेम से अंग-अंग द्रवित हो जाता है, हृदय पसीजता है, प्रेम-नदी तटबंध तोड़कर बह निकलती है; वाणी ही नहीं सम्पूर्ण काया कम्पायमान हो जाती है और प्रेम का यह सम्बन्ध विकास-मार्ग पर अग्रसर होता है।

'जयगान' उपशीर्षक में दक्षिण चिदम्बरम् में नर्तित नटराज का जयगान है। सृष्टि, स्थिति और संहार करने वाले विघ्न-विनाशक तात, अमृतस्वरूप राजाधिराज ईश को कवि नमन करता है। 'शिव' के विविध रूपों, गुणों आदि का उल्लेख करते हुए माणिक्कवाचकर वेदनायक, अमल-विमल गंगाधर, चेतन स्वरूप, अमरों के दुर्लभ औषध, सखा-मित्र, जीवनाधार पशुपति, मन और वाक् के अतीत, अनुग्रह के महार्ह पर्वत, प्रलय-उपरान्त सृजन के मूलकारण, हरिणलोचना उमा के नायक की स्तुति करते हैं। परात्पर प्रभु के प्रशस्ति गान के ये पद भक्तों द्वारा युगों से गाए जा रहे हैं।

इस अंश में शिव से सम्बद्ध अनेक पौराणिक और लोक-विश्वास पर आधृत अंतर्कथाओं के संकेत विद्यमान हैं। रत्ना नवरत्नम् के शब्दों में जीवन के ऊबड़खाबड़ मार्ग और अनिश्चयात्मकता के मध्य ईश्वरीय अनुकम्पा का यह वर्णन माता के गर्भ से लेकर मानव-जीवन के विविध सोपानों की गाथा है :

..... Poet sings the song of praise to the Lord, for graciously guiding man through the vicissitudes and uncertainties of life. It is a faithful record of a pilgrim's progress from the mother's womb to the light of God, the emergence of the life of man through successive stages guided by the ever sustaing power of Grace.

'श्रीशतक' - 'भक्ति-वैराग्य का वैचित्र्य' में कवि ने सांसारिकता के व्यामोह से मुक्त होकर रहस्यमय आध्यात्मिक प्रेम के विविध रूपों का वर्णन किया है। 'गुरु' रूप ईश्वर के प्रति उनकी अगाध, अनन्य निष्ठा की पुनः-पुनः अभिव्यक्ति हुई है। अंजलिबद्ध करयुगल सिर पर धरे, अंतःकरण में उत्ताप, भावना के संवेग से कांप रहे, नेत्रों में अश्रु और जिह्वा से प्रभु का जयजयकार करते भक्त का चित्र हृदयग्राही है। सर्वस्व त्यागकर प्रभु के ध्यान में बावरा बना भक्त ग्राम, नगर, मंदिर में लोगों के कथनों से अनभिज्ञ, प्रभु की आसक्ति में उन्मत्त बना रहता है। वह भगवद्गीता के 'यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति' (6/30) के अनुसार सम्पूर्ण भूतों में ईश्वर के दर्शन करता है।

इस शतक में दक्ष-यज्ञ, समुद्र-मंथन के उपरान्त शिव का हलाहल धारण करना, महाविष्णु द्वारा शिव के चरणों को ढूँढ न पाना, श्मशान में व्याघ्र-चर्म धारण कर घूमना आदि अनेक प्रसंगों का समावेश है। कवि-भक्त अपने लघुत्व से परिचित है —

'मेरी लघुता जान कर भी
'महादेव मेरे स्वामी
मैं उनका दास'
यह मेरी घोषणा ही
पर्याप्त है उनकी उदारता के
यशोविस्तार के लिए सकल भुवन में।'

'ज्ञान का उद्‌बोधन' उपशीर्षक में प्रभु से भक्ति में परिपक्वता प्रदान करने की प्रार्थना है। वह परमतत्त्व स्वर्ग है, धरती है, अनिल है, ज्योति है; शरीर और प्राण भी वही है; व्यक्त भी वही और अव्यक्त भी वही है। चिदाकाश में रहस्य रूप में व्याप्त प्रभु चिदंबर की चित्सभा में नर्तन कर रहे हैं। मानव-

हृदय वसंत में पुष्पशर की वर्षा करते कामदेव के प्रभाववंश कामिनी की धवल मुस्कान, मुक्तासम दंतपंक्ति, अरुणिम अधर, श्यामल नयनों पर अभिभूत हो जाता है। ऐसे में अनुग्रह करने के लिए, भक्त को अपनाने के लिए आए नाथ अंतर्ध्यान हो गए। 'भक्त' अपने हृदय को समझाता है कि 'ऐसा जीना भी क्या जीना है'; सर्वनाश के मार्ग से बचकर नाथ का स्तुति गान करो, वह कर्मबंधन काट देगा, दुःखसागर से पार कर देगा।

'बंधन काटना' उपशीर्षक प्रकारान्तर से भक्ति के रूप की व्याख्या है। 'जिसे अपना लिया तुमने आगे बढ़ कर अकस्मात् ही' - पंक्ति द्वारा प्रभु की अनुकम्पा - अरुळ् के महत्त्व का गायन है। भक्त के लिए काम्य है - एड़ी से चोटी तक हृदय बनकर द्रवित होना; प्रेम के अश्रु से नेत्रों का छलकना। प्रभु इतने करुणामय हैं कि स्वयं मेरे पास आए और बोले - 'आओ वत्स! ईश हूँ मैं, कर्म को जड़मूल से काट दूंगा'। इतनी अपार करुणा पाकर भी मैं लौहप्रतिमा की भांति स्थिर रहा; अश्रु नहीं बहाए, आनन्द की मूर्च्छा में सुध-बुध नहीं भूला, यह कैसा विचित्र प्रमाद है ! मूल भावना यह है कि ईश्वरीय अनुकम्पा के बदले में मानव कुछ भी दे पाने में असमर्थ है पर उसे उस 'कृपा' के लिए हृदय से आभारी तो होना ही चाहिए।

यह अरुणाभ नाथ के अनुग्रह का ही परिणाम है कि मन और चिंतन प्रभु पर केन्द्रित हो गया; नयन चरणों पर केन्द्रित हो गए; वाणी को अपनी प्रशस्तिगान के योग्य बना लिया। विद्या और अनुभव के अभाव में भी करुणामृत के विशाल सागर ने 'अपना लिया मुझे दास रूप में।' वह अजर, अमर, निर्विकार परमेश्वर, जो श्रुति और श्रवण से ज्ञेय नहीं, कवि पर अनुकम्पा करता है–

"दिखा दिया सब कुछ जो कभी देखा न था
सुना दिया सब कुछ जो कभी सुना न था
मुक्त कर दिया जन्म-मरण के बंधन से
और अपना लिया मुझे अपना बना लिया...."

अंतस् में अमृत-वर्षा की अनुभूति हुई, जब नाथ ने कवि को अपना लिया तो –

'अब किसी की प्रजा नहीं
भय नहीं मुझे मृत्यु से भी।'

इस आनन्दमय स्थिति को प्राप्त करने के बाद भी मानव मन भटकाता है, विषय-सुखों में आसक्ति छूटती नहीं; अंतरात्मा प्रेमाभक्ति में

तड़प-तड़प कर द्रवित होना चाहता है पर मन दुष्कर्मों की ओर प्रवृत्त होता है। पण्डितमणि कदिरेसन चेट्टियार ने अपनी 'तिरुच्चतकम्' की टीका में इस द्वन्द्व को आत्मा की पवित्रता प्राप्ति का मार्ग बताया है। 'मैं' और 'मेरा' की भावना से सांसारिक आकर्षण और विषय-कामनाएँ अपना आकर्षण बढ़ाती हैं। माणिक्कवाचकर इस स्थिति में आत्म-निन्दा द्वारा हृदय को सद्मार्ग की ओर प्रवृत्त करने का प्रयास करते हैं।

वह प्रभु भक्तिपूर्वक उपासना करनेवालों के लिए मधु सम, घृत सम इक्षुरस सम मधुरिम हैं। वह शाश्वत और अनुपम चरणयुगल स्वयं प्रभु प्रदान करते हैं, श्वान से भी निकृष्ट मुझ पर उसने अनुग्रह की वर्षा कर दी ऐसे महिमामण्डित प्रभु से विमुख होना आश्चर्य का विषय है ! मृगनयना रमणियों के काममोहित दृगों से चकित मन उद्वेलित हुआ; सुस्वादु भोजन, रुचिपूर्ण वस्त्र का व्यामोह फैल गया और आनन्दमय शिवपुर जाने की सुधि नहीं रही। इस स्थिति की जटिलता इसलिए और भी बढ़ जाती है जब देवाधिदेव कृपापूर्वक बुलाकर कहते हैं'- 'आओ वत्स ! प्राप्त कर लो दिव्य ज्ञान' पर जगत् के अस्थायी सुख मानव को बांध लेते हैं। इन एक सौ पदों में लोकजीवन के आकर्षणों में आबद्ध भक्त के परमत्त्व की ओर अग्रसर होने के प्रयास का पुनः-पुनः वर्णन है। मनुष्य मूर्ख बनकर खाता-पीता है, देह-चिंता में लीन रहकर मानव-जीवन के चरम लक्ष्य सत्यतत्त्व को प्रेमाभक्ति से प्राप्त करने से वंचित रह जाता है। कामिनी के अधरों पर थिरकती मुस्कान, घुंघराली अलकावली, दृगों में व्याप्त प्रेम-संकेतों के बंधन में ज्योतिरूप, ज्ञान-दाता, कनकाभ देहकांति के स्वामी को भुला दिया जाता है। अपनी अपूर्णता और दोषों को जानकर भक्त पुनः प्रभु से अनुग्रह की प्रार्थना करता है। तिल्लै चिदम्बरम् में नर्तित नटराज, निर्मल सच्चिदानन्द प्रभु को नमन करता हुआ भक्त कवि उसके 'ॐ नमश्शिवाय' रूप का स्मरण करता है; पंचभूत, सूर्य, चन्द्र और जीव रूपी अष्टमूर्ति परमेश्वर से आनन्दमय सायुज्य देने की यह प्रार्थना एक और रूप लेती है —

'जो भी अपराध होता है छोटों से
क्षमा करना धर्म है बड़ों का'

अतः तिल्लै की चित्सभा में विराजे नटराजराज के चरणों पर नमन करते हुए कवि कामना करता है—

खड़ा हूँ नाथ इसी प्रतीक्षा में
बुलाओगे मुझे 'आओ वत्स'
बुलाकर अपने पास

स्थान दोगे निज चरणों पर
हरण करोगे इस एकाकी के
सकल दुःख संताप।

इस प्रार्थना का उत्तर भी तत्काल मिलता है। प्रभु अपरिमित अनुग्रह करने वाले हैं अतः—

अहह ! अनुपम है तुम्हारा औदार्य
स्वयं आगे बढ़कर मुझे अपना लिया
मिटा कर मिथ्या मोह और जीव-बोध को....

'तिरुच्चतकम्' - 'श्रीशतक' के एक सौ पदों में कवि कतिपय स्थलों पर पुलकित होकर सायुज्य के अनुभव का आनन्द प्राप्त करता है, 'वरेण्य सत्यवस्तु' की सेवा में लगे रहने की प्रतिज्ञा करता है तथा निर्मल सच्चिदानंद की सर्वव्यापकता का गुणगान करता है; संयोग के क्षणों में चरणकमलों को प्राप्त करने का आनन्द पाकर भी वियोग की पीड़ा का अनुभव करता है। 'आनन्द में सुधबुध होकर खोना' उपशीर्षक के पदों में कवि स्वयं को *आनन्दमय शिवपुरी के पुरद्वार के बाहर पाता है अतः अपनी व्यथा-गाथा का गायन करता है :*

परिपक्व भक्तगण पहुँचे
पुण्यमय शिवलोक
जहाँ से लौटना नहीं होगा
किंतु मैं खड़ा हूँ बहिर्भाग में
गाँव की गैया को रंभाते सुन
अंधी गाय भी ज्यों रंभाती है
तुम्हारी भक्ति के लिए तृषित मैं
गुहार मचा रहा हूँ....

'आनंदातिरेक' उपशीर्षक के दस पदों में भी इससे पूर्व के भाव का *विस्तार है। परिपक्व भक्तगण चरणांबुज के प्रति अपनी अव्याज, अनन्य आसक्ति से सायुज्य पा गए पर 'श्वान तुल्य अभागा था मैं' कि अधम का अधम ही रहा। जब तुमने आकर मुझे बरबस अपनाया था तो जैसे बालक के हाथ में स्वर्ण-चषक दे दिया जाये, वैसे ही मैं तुम्हारी महिमा से अपरिचित रहा। 'अयोग्य ही सही किन्तु' - 'मुझे यों प्रपंच में छोड़ रखना उचित है क्या?' कवि मानता है कि नटराजराज के विचित्र नाटकीय प्रभाव से 'अपर ज्ञान बदल गया पर-ज्ञान में।' उसकी एकमात्र कामना है कि प्रशस्तिगान*

करते हुए चिदाकाश में ऊर्ध्वतांडव करते प्रभु के साथ एकाकार होकर काया का पिंजर छूट जाए।

आत्मकथात्मक संदर्भ, हृदय के अंतरतम से निकले भक्ति, समर्पण आशा-निराशा के ये स्वर जिस लय और गति से मूल तमिल में अभिव्यक्त हुए हैं वे अपार सौंदर्य, ईश्वरीय अनुग्रह, हृदय के उतार-चढ़ाव का अप्रतिम उदाहरण है। सत्य के मार्ग में, ईश्वर-दर्शन-प्राप्ति की प्रक्रिया में मानव की अपनी अपूर्णता, अंतस् का अंधकार और स्वार्थ-भाव ही मूलतः बाधक है। आनन्द-परवश होने पर ईश्वरीय अनुकम्पा के फलस्वरूप सत्य-आनन्द की प्राप्ति होती है। निष्ठापूर्ण, अनन्य भक्ति-भाव और पूर्ण आस्था से युक्त प्रेमभाव होने के संदर्भों से युक्त इस 'भक्ति-वैराग्य वैचित्र्य' अंश के एक शतक पद भक्ति-मार्ग के पथिकों के लिए मार्ग-दर्शन करते हैं।

'निर्वेद-निवेदन' शीर्षक का उपशीर्षक 'प्रपंच-वैराग्य' है। डॉ. के. सुब्रह्मण्य पिल्लै इसे 'पाश-मुक्ति की प्रार्थना' मानते हैं। प्रसिद्ध विद्वान् नवनीत कृष्ण भारती और दण्डपाणि देसिकर ने इस शीर्षक के अंतर्गत आए प्रार्थना-अंश का अर्थ किया है-आप मुझे त्याग रहे हैं, इस पर स्वयं विचार करें ! श्री जी. वन्मीकनाथन इसका भाव- 'देखो ! मेरा परित्याग न करो !' करते हैं।

कवि अपनी काम-वासनात्मक वृत्तियों का उल्लेख करता है-क्षण भर भी मैं कुंभस्तनी कामिनी के अधरामृत से विलग नहीं रहा; फिर भी मेरे नाथ मेरा परित्याग न करो। जिस भाँति नदी तट पर खड़े वृक्ष की जड़ें जलधार से कट जाती हैं उसी भाँति मेरी पांचों इन्द्रियाँ 'काम' के वशीभूत होकर थक गईं, मैं जड़मूल से नष्ट हो गया। मैंने अज्ञानवश तुम्हारी करुणा को तिरस्कृत किया, हे करुणामय प्रभु ! मेरे कर्मबंध चूर कर मुझे स्वीकार करो—

क्या महान् लोग क्षमा नहीं करते
लघुजन के अपराधों को ?

प्रभु-अनुग्रह की प्रबल कामना, गुरुतर अपराधों का बोध, चिंता, द्विविधा के कारण भयकातर बना देता है। शरीर प्रकंपित है, स्वेदधार छूट रही है, पंचेंद्रिय शत्रु भौतिक सुखों की ओर खींच रहे हैं। हे नाथ ! आपके वृष के गले पर पर बंधी घुंघरुओं की माला का निनाद ही इन शत्रुओं को भयभीत करने के लिए पर्याप्त है। जैसे कोई चींटा दोनों ओर जलती आग के बीच ईंधन की लकड़ी पर फँसा हो, वही मेरी गति है; प्रभो मेरा परित्याग न करना ! मैं जल-प्रवाह के मध्य भी तृषित हूँ; जिह्वा सूख गई है, मेरे सामने

अनुग्रह का महासागर है पर मैं दुखःसागर से छूट नहीं पाता। हे ज्योतियों में ज्योति ! परंज्योति ! रक्षक प्रभु ! परित्याग न करना मेरा !

इन्द्रियाँ कवि-भक्त को इस प्रकार ध्वस्त कर रही हैं जिस भाँति हाथियों के गुत्थमगुत्था होने पर लघु पौध मसले जाते हैं। कवि कहता है—

हे मेरे तात ! परित्याग न कर देना मेरा
कर्म का मारा अवश्य हूँ
स्फुरित हो जाओ मेरे हृदय में ज्योति बनकर
मधु-दुग्ध इक्षुरस अमृत बनकर
परमानंद की बाढ़ कर दो
पिघला दो मेरे तन-मन को
एक एक हड्डी पिघलकर बह जाए
और अपना लो मुझे दास रूप में।

यह भाव अग्रसर होता है : जिस प्रकार चींटियों का आक्रामक दल केंचुए को खा जाता है, चींटियाँ ही जिस भाँति घृत भरे घट पर धावा बोलती हैं, उसी भाँति पंचेन्द्रिय के मुझे निष्क्रिय कर दिया है। जलाशय के सूखने के दौर में जिस भाँति छोटी-छोटी मछलियाँ तड़पती हैं, उफनती गंगा के अपार जल में लघु नौका डगमगाती है; उसी भाँति मैं ललनाओं के पर्वत निभ स्तनभार के मध्य में पतित होकर व्याकुल हूँ - 'ओ मेरे तात ! परित्याग न करना मेरा !' कैलाश में विराजे मेरे नाथ ! आप बोलो कब मेरे मन को परिपक्व कदली के समान बनाओगे? हे जाज्वल्यमान ज्योति ! तुम सच्चे भक्तों के लिए अमृतस्वरूप हो, मैं पराजित हूँ, आप मेरे एकमेव साथी हो, इस प्रपंच से मेरा उद्धार करो !

'तिरु एम्बावै'-'ज्ञान के प्रकाश में अवगाहन' अथवा ईश-शक्ति से चमत्कृत होने की भावना का वर्णन है। पौराणिक मान्यता है कि देवताओं के लिए 'उत्तरायण' दिवस है और 'दक्षिणायन' रात्रि है। इन दोनों का संधिकाल उनके लिए उषाकाल माना गया है। श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश भी मार्गशीर्ष में दिया था। सूर्य के धनु राशि में होने और उसकी गति से भावी वर्षा का अनुमान भी इसी मास में होने से इसका कृषि-विषयक महत्त्व भी है। तिरुवाचकम् के अंतर्गत तिरुवण्णामलै में 'तिरु एम्बावै' शीर्षक 20 पद हैं। कुमारी कन्याएँ प्रातःकाल उठकर सखियों के घर जाकर उन्हें उठाती हैं। जाड़े के मौसम में ब्रह्म-मुहूर्त में सब मिलकर सरोवर में स्नान करने जाती हैं और प्रभु का गुनगान करती हैं। ईश्वर-परमात्मा है, सोनेवाली कन्याएँ अपक्व जीवात्मा हैं, जगानेवाली कन्याएँ पक्वावस्था को प्राप्त भक्त हैं। निद्रा

अज्ञान है, स्नान करने का जल ईश्वरत्व है अतः आद्यन्तरहित अनुग्रह परंज्योति का कीर्तिगान मूलतः अज्ञान से ज्ञान की ओर जाने की प्रक्रिया है। इस संदर्भ में आळ्वार कवयित्री आण्डाळ की 'तिरुप्पावै' का स्मरण हो जाना स्वाभाविक है। आण्डाळ के तिरुप्पावै के गीतों में भी उल्लास, आशा और विश्वास का स्वर प्रमुख है। यह अंश अनुपम परंज्योति, अद्‌भुत करुणा-सागर, अद्वितीय परमेश्वर का यशोगान है। माणिक्कवाचकर के पदों में प्रकृति की सुषमा तथा शिव के पंचकृत्य - सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोधान और, अनुग्रह का भी उल्लेख है। 'शिवशक्ति स्वरूप है यह पावन तड़ाग' जिसमें ईश पर आसक्त भक्तजन मल को दूर करने हेतु स्नान करते हैं। फिर जाज्वल्यमान ज्योतिराट् परमज्ञान चिदम्बरनाथ का गायन, स्तवन करते हैं। वह नाथ त्रिमल दूर कर सान्निध्य की अनुभूति में आकर अनुग्रह प्रदान करता है। इन पदों में प्रेमाभक्ति, अनन्यता और परमनिष्ठा का आधार स्पष्ट है।

'तिरु अम्मानै' - 'आनन्दोल्लास' के पद कन्याओं द्वारा कौड़ियों, पत्थरों अथवा लकड़ी की 'गोटियों' से खेले जानेवाले एक खेल के साथ सम्पृक्त हैं। इनका लक्ष्य प्रभु के गुणों का गायन और प्रभु द्वारा भक्त को अपनाये जाने की भावना का वर्णन है। 'करुणाकर प्रभु ने बरबस बुलाया मुझे और अनुग्रह दिया सायुज्य का'; 'प्रभो स्वयं आए तुम मेरे पास, बरसाया वात्सल्य माँ के समान'; 'दैया रे ! कैसा चमत्कार कर दिया, पाषाण सम मेरे हृदय को मसलकर गूंथ कर, पक्वफल के समान मृदुल बना दिया' जैसे संदर्भ इन गीतों के मूल स्वर की पहचान करवाते हैं। इन पदों में आए कतिपय संदर्भ माणिक्कवाचकर के विषय में अतःसाक्ष्य के रूप में प्रयुक्त होते हैं —

वेश बदलकर आए थे श्रमिक बनकर
ढोया मिट्टी रेत मदुरापुरी में
पीटा भी गया मदुरै नृपति के हाथ
जिससे ढोना पड़ा निशान
अपनी हिरण्मय काया पर......

पांड्य देश का शस्यश्यामल होना, तमिल भाषा का मधुरिम पक्ष शिव के सुन्दरेश रूप के अनुग्रह का परिणाम है। कन्याओं के गीत होने के कारण 'अंजन-भूषित नयन', चूड़ियों और कंगन का खनकना, कानों में कर्णफूल और कुंडल, वेणी के फूलों में स्रवित मधु आदि के सहज वर्णन हैं। दक्षयज्ञ में देवताओं को दंडित करने के संदर्भ का भी उल्लेख है। कतिपय पद तो कान्ता-भक्ति के अप्रतिम उदाहरण हैं यथा —

धारण करूँगी अपनी वेणी में
शिवनाथ के लिए प्रिय कोन्ऱै माल्य
लग जाऊँगी प्रियनाथ के
सुपुष्ट कंधों के संग
आश्लेषित कर आनंद पाऊँगी
आनन्द में मदमत्त हो भूलूँगी निज को
फिर रूठूँगी प्रिय से अकारण ही
बिछुड़ जाने पर
तरसूँगी नाथ के अरुणिम अधरों के लिए
विह्वल चित्त से खोजूँगी शिवराज को
भटकूँगी दरदर शिव को खोजते हुए
चिंतन करूँगी शिव के चरणकमल का
फिर आह्लादित हो जाऊँगी उन्हें पाकर
जो नर्तन करता है वह्निज्वाल ले निजकर में
आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'
यशोगान करती हुई शिव के पावन चरणों का।

'मंगल चूर्ण कूटना'- आनन्द में तन्मयता के पद हैं। उज्ज्वल मुक्तामाल और पुष्णमालाओं से वितान सजाकर, मंगलकलश, धान की बालियाँ, सुगंधित धूप, घृत-दीपक आदि द्वारा 'शिव' का स्वागत करने की तैयारी है। तिरुवैयारु के अधीश के प्रशस्ति-गीतों का गायन और उबटन के लिए सुरभित मंगलचूर्ण कूटने का यह प्रसंग देवी के संग पधार रहे नर्तित नटराज के प्रति समर्पण-भावना का द्योतक है। स्त्री-सौंदर्य के एक चित्र में सखी कहती है —

तड़ित-सी कटि प्रवाल सम अधर
श्यामल नयन धवलोज्ज्वल हँसी
और रागिनी सी मधुबैनी सखियो !

गंगाधर, जटाधर का कीर्तिगान करती इन कन्याओं की शंख की चूड़ियां खनखना रही हैं, पायल झनझना रही है, सुभग वेणी पर पुष्पमाल डोल रही हैं, प्रवाल तुल्य अधर् फड़क रहे हैं। अनेक पौराणिक आख्यानों का उल्लेख इस अंश की अन्य विशेषता है; त्रिपुर-ध्वंस, हलाहल-पान, ब्रह्मा के कपाल से कंदुक-क्रीड़ा, दक्षयज्ञ में सूर्य का दँतक्षय, समरोद्धत हस्ती का चर्म चीरना आदि के प्रसंग आए हैं। वह वेदरूप है, यज्ञरूप है,

सत्यवस्तु है, मायामय भी वही तथा ज्योतिरूप और तमस भी वही है। वे शिवशक्ति रूप में पूर्णरूप हैं, ऐसे परमतत्त्व के लिए स्वर्णिम कदम्ब का चूर्ण कूटने और उनका अभिषेक करने की कामना से युक्त ये पद हृदय-तंत्री झंकृत कर देते हैं।

'भ्रमर-सन्देश' मूलतः शिव-सायुज्य की ओर अग्रसर होना है। तिरु - पवित्र, को - नरेश, तुम्बी - भ्रमर-'तिरुक्कोतुम्बि' शीर्षक इस अंश में भ्रमर के माध्यम से प्रियतम शिव को संदेश-प्रेषण है। मिलन की उत्कट लालसा का यह संदेश शिव के प्रति माणिक्कवाचकर-नायिका की निष्ठा का संदेश है।

'क्या बताऊँ हृदय की प्रेम दशा' - हे भ्रमर ! तू जब नटराजराज के सान्निध्य में जाएगा तो उनके दर्शनमात्र से कायाकल्प हो जाएगा, अंग-प्रत्यंग पिघल उठेंगे, रग-रग में अनुराग-राग भर उठेगा, नस-नस में आनन्द-मधु का उत्स होगा। इस भ्रममय जगत् में जन्म-मृत्यु के कारण हैं-अपने धन, दारा-पुत्र, कुलीनता, शास्त्र-ज्ञान आदि का मिथ्या अभिमान; परमेश्वर भक्त पर करुणा कर उसकी आसक्ति को निश्शेष कर देता है। कवि के अनुसार उस प्रभु ने 'अपनाया मुझे उद्धार कर; ऊंचा पद प्रदान किया मानो पालकी में श्वान को आरूढ़ किया हो।' ऐसे प्रभु के प्रति भृंगराज द्वारा गुंजन कर भक्त का संदेश भेजने के ये पद प्रभु की करुणा और मातृवात्सल्य का चित्र प्रस्तुत करते हैं।

प्रभुकृपा का एक अन्य प्रमाण प्रस्तुत पद में वर्णित है—

'महानायक प्रभु ने साधन बनाया
श्वान तुल्य मुझको
निज महिमा के प्रशस्ति-गान का
कितना निकृष्ट था मैं'

सकल दोष क्षमाकर, प्रभु ने भक्त की सेवकाई को स्वीकार किया अतः हे भृंगराज, उनके महिमामय चरणों का गायन करो। अनित्य को सत्य मानकर, मिथ्या माया में फँसे भक्त का अज्ञान-तिमिर से उद्धार करना प्रभु का अपार अनुग्रह है।

तिरुत्तेळ्ळेणम् - 'शिव में एकाकार होना' तालियों के लय-ताल में गाए गए गीत हैं। श्रीललित तिरुप्परुन्तुरै में विराजे प्रभु निर्गुण-निराकार और सगुण-साकार भी हैं, वह नामरूप रहित परमेश्वर भक्त-हृदय को पिघलाकर उसे अपनी सेवकाई में लगा लेता है। उसके द्वारा अपनाते ही नवलज्योति हृदय में संचार करती है; 'मैं' और 'मेरा' विनष्ट होकर शिवोऽहम की अनुभूति होती है। भाव विह्वलता का एक शब्दचित्र इस प्रकार है —

.....वर्णन करते हुए नाथ की महिमा का
नाच रहे हैं शब्द जिह्वा में
ज्योति नाच रही है हृदय में
चमकते नयनों पर नाच रहे हैं अश्रु
सखियो नाथ-महिमा का गान करें हम
तालियों के ताल-लय में।

नाथ जन्म-मरण के चक्र से मुक्त करते हैं; पाप-पुण्य के द्वन्द्व से स्वतः मुक्ति मिली, स्व-पर का बोध विस्मृत हो गया, लोक-आसक्ति समाप्त हो गई; 'उसका काम मेरा काम बन गया'; इस भाँति परंज्योति ने भक्त को भक्ति-सागर में निमग्न कर दिया। इसी स्थिति का अनुभव वर्णित करते हुए माणिक्कवाचकर कथन है—

शिवयोग साधना से
हृदय हमारा पसीज उठता है
निमग्न होकर
प्रेम के आनन्दसागर में
छक कर पिएँ हम करुणा - और
अनुग्रह का आनन्दामृत
पूरित होकर इसी आनंद से आह्लाद से
नाथ के चरणकमलों का गान करेंगे
तालियों की ताल-लय में।

'चाळ्ल्-नृत्य' में प्रथम दो पंक्तियों में सखी द्वारा किया गया प्रश्न है, बाद की दो पंक्तियां नायिका (कवि) का उत्तर है। लक्ष्य है-शिव के गुणों का आकलन करना। श्रीलंका के नरेश के संग आए बौद्ध-भिक्षुओं के साथ किये गए चिदम्बरम् में शास्त्रार्थ और बौद्धों की पराजय का संदर्भ इस अंश के साथ जोड़ा जाता है। मान्यता है कि माणिक्कवाचकर के प्रश्नों से नरेश की गूंगी कन्या को उत्तर देने की शक्ति प्राप्त हो गई और वह रोगमुक्त हो गई। इस अंश को शिव-विषयक जिज्ञासाओं के समाधान का प्रयास भी माना जा सकता है।

शिव निखिल जगत् के प्राणतत्त्व, साररूप, आदिमूल हैं, उनके विविध गुणों का आकलन इन पदों में हुआ है। इन पदों में वटवृक्ष तले धर्म की व्याख्या, हलाहल-पान, जलंधर-विनाश, भिक्षाटन आदि अनेक संदर्भ व्याख्यायित हुए हैं।

'पुष्प-चयन गीत' शीर्षक के अंतर्गत वल्लरियों से पुष्प तोड़कर

समवेत स्वर में सखियों द्वारा शिव के गुणों का गायन है। तिरु - पवित्र, पू- पुष्प, वल्लि - पुष्प-लता 'तिरुप्पूवल्लि' में पुष्प-चयन करती हुई, प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण में विचरण करती हुई युवतियों द्वारा गाए गए पद शिव-महिमा का ही गायन है। इन पदों में भी कवि ने अपने दैन्य को स्वीकार करते हुए प्रभु-कृपा का वर्णन किया है –

श्वान से भी कदर्य
मुझे भी सम्मान देते हुए
माँ से भी ममतामय दयामय प्रभु ने
काट डाले जनन-मरण के बंधन
अपना लिया मुझे वात्सल्य से.....

उस प्रभु ने शीश नमन करने के लिए दिया है, मुँह दिव्य-चरण का गान करने और भक्त-मंडली सत्संग के लिए दी है। ऐसे शिवकामसुंदरी के संग नृत्य करते तिल्लै चिदम्बरम् के प्रभु की महिमा का गायन लताओं से फूल तोड़ते हुए करें। यहाँ पर मधुरापुरी में वृद्धा के लिए माटी ढोने और आमोदपूर्वक मधुर पिट्टु खाने तथा नृप से छड़ी की चोट खाने का प्रसंग पुनः वर्णित हुआ है।

'तिरुउन्तियार्' - कंदुक गीत हैं जिनमें ज्ञान की विजय का वर्णन है। त्रिपुर-संहार, दक्षयज्ञ, उपमन्यु प्रसंग और रावण के दर्प का दलन इसके प्रमुख विषय हैं।

'श्री स्कन्ध-दर्शन' का उपशीर्षक प्रपंच-शुद्धि है। जड़ और चेतन जगत् की मल-मुक्ति तथा पवित्रता के माध्यम से आत्म-शुद्धि का वर्णन इन पदों में है –

'मृग-मरीचिका को
कुसुमित कमल सरोवर मानकर
तृषा बुलाने की चेष्टा में रत हैं
भ्रमजाल से निमग्न जन'

जाज्वल्यमान तिल्लै चित्सभा में नर्तित नटराजराज ऐसी मिथ्या माया से बचाता है। प्रभु की विमल कीर्ति का गायन करती हुई युवतियां 'तोणोक्कम्' खेलती हैं। इस प्रसंग में व्याध 'कण्णप्प' तथा भक्त चण्डेश की गाथा का उल्लेख है। धरती, अंबर, अनल, अनिल, सलिल, सूर्य, चन्द्र, मानव रूपी प्रभु के अष्ट-मूर्ति रूप का वर्णन है तथा बौद्ध आदि मतमतान्तरों के भ्रमजाल का संकेत है। विष्णु द्वारा सहस्त्र कमलों से शिव का पूजन और एक कमल

के अभाव में स्वनयन अर्पित करने की पौराणिक गाथा का आकलन है। विष्णु को अमोघ चक्रायुध देने, दक्षयज्ञ में देवताओं को अहंकार का दण्ड देने, ज्योति-स्तम्भ रूप में ब्रह्मा और विष्णु के गर्व का परिहार करने का वर्णन इन पदों में हुआ है। माणिक्कवाचकर अपनी सीमाओं का वर्णन करते हुए कहते हैं –

अकिंचन यह दास
न जाने कितने जन्म जन्मांतर तक
सींचता रहा ऊसर को
उपासना नहीं की परमेश्वर की
सकल चराचर के आदि मूल
निर्मल अनिंद्य मणिरत्न
करुणामय प्रभु आए धरती पर
काट दिया मेरा भव-बंधन
प्रभु की करुणा का गान करती हुई
सखियो हम खेलें तोणोक्कम्।

'तिरुप्पॉन्नूशल'-'सुनहरा झूला' प्रसंग में नायिका (कवि, आत्मा) स्वर्णिम झूले पर आनन्द-मग्न होकर सखियों के साथ झूला झूलती है और शिव का गुणानुगान करती है। नौ पदों के इस अंश में कवि की सौंदर्य-अभिव्यक्ति दर्शनीय है –

शोभामय प्रवाल के डांड पर
मुक्तामय रज्जु बांधकर
निर्मित है सुनहरा झूला
इसके स्वर्ण-खचित फलक पर बैठकर
गाएँ सखियो प्रभु महिमा.....

'सुमन-भूषित सुभगस्तनी', 'शुभ्र कंकण धारिणी', 'कनकस्तनी' सखियां झूला झूलती हुई प्रभु के गुणों का वर्णन करती हुई गाती हैं –

सुभग कैलाश के तुंग शृंग से
उतर आए प्रभु धरणीतल पर
उत्थित हुए नील सागर की वीचियों से
अश्वारूढ़ होकर आए हमारे सामने
अपना लिया हमें करुणा से अनुग्रह से....

प्रेम की परिपक्वावस्था में पहुँची नायिका 'मातृ पृच्छा दशक' के दस

पदों में नायक - शिव के गुणों का वर्णन करती है। इस अंश का उपशीर्षक 'आत्मपूर्णता' स्वतः स्पष्ट है। शिव की अरुणिम देहकांति, उनके द्वारा चतुर्वेद का उच्चार, भस्म-लेपित सकल शरीर, संग में मुरज, अंजन-रंजित नयन - ऐसे नायक का अंतर् में प्रवेश करना, हृदय का पिघलना और अक्षय अश्रुधार का बहना भक्त-नायिका की मनोदशा का भावपूर्ण चित्र है। सुन्दरेश, दक्षिणेश, श्वेतांबरधारी आदि रूपों में शिव को स्मरण करती नायिका अपनी माँ से कहती है—

कहती है—"प्रिय के गले में
शोभित है 'ताळी' और दूर्वा की माला
अंग-अंग पर चंदन का अंगराग
इस भंगिमा से शासन करते हैं हम पर"
फिर कहती—"ओ माँ !
हम पर शासन करते प्रियतम हैं न !
उनके हाथ में बज रहा है करताल
अहा ! कैसी रमणीय है उनकी भंगिमा !"

नायिका प्रिय के प्रेम में उन्मत्त हो गई है। माँ को इसका कारण स्पष्ट करती है - अब पता चला माँ कि वे सिर पर धतूरा पहने हैं इसलिए मैं भी उन्मत्त हो गई !

शिव पांड्य देश के महिमामय नाथ हैं। कोयलिया को इस अद्भुत स्वामी के स्वागत में कूकने का आग्रह करने वाले दस पद 'कोकिल-दशक' में हैं। नन्हीं, 'नीलाभ कोयलिया' को पंचमराग छेड़ने की स्नेहपूर्ण प्रार्थना उस प्रभु के लिए है जो—

देवलोक को तजकर आए धरणीतल पर
अपनाया नाथ ने नरलोक को प्रेम से
मांस-मज्जा पर ध्यान दिए बिना
सीधे प्रवेश कर गए मेरे हृदय में
व्याप्त हुए चित्त में, मन में, भावना में.....

मणि-रत्न खचित सुन्दर अश्व पर 'अश्वारूढ़ वीर', 'पेरुन्तुऱैधाम का अधीश', 'सप्तलोक के स्वामी', 'दक्षिणेश' के स्वागत में कोयलिया से कूजन करने का आग्रह इन पदों का विषय है।

'तिरुच्चयत शाङ्गम्'-शीर्षक के अंतर्गत संकलित पदों में नायिका 'शुकी' से प्रश्न करती है और स्वतः ही उसका उत्तर दे देती है। किसी नरेश

के परिचय में दस विशिष्टताओं का उल्लेख होता है-नाम, राज्य, राजधानी, राज्य की प्रमुख नदी, प्रमुख पर्वत, अश्व, विशिष्ट वाद्य, विशिष्ट अस्त्र-शस्त्र, गले की माला और ध्वज। इन दस विशेषताओं को प्रश्न रूप में पूछ कर प्रेमाधिक्य में उन्मत्त नायिका - (कवि, आत्मा) स्वतः ही उत्तर देती है। आरूरन-आरूर धाम के अधीश है, भक्तजन-हृदय प्रेम-साम्राज्य उनका राज्य है, देश दक्षिण पांड्यभूमि है, उत्तरकोशमंगै धाम नाथ का प्रिय नगर है; स्वर्ग लोक से सकल मनोमालिन्य का प्रक्षालन करने के लिए बहने वाला 'आनन्द' स्वामी की नदी है, नाथ का पर्वत कैलास है, वह अज्ञान रूपी अंधकार को ध्वस्त करने के हित ज्ञान का खड्ग लिए है। वे चिदाकाश के अश्व पर आरूढ़ हैं; उनका त्रिशूल प्रणतजन के चित्त के त्रिमल को निर्मूल करने में सक्षम है, जो निर्मल सु-मन को पिघला देता है। मुरज उनका नादमंत्र है जिससे परमानंद की धारा बहती है, जो जन्म-मरण का शत्रु है; ताळी और दूर्वा का हार ही प्रभु की प्रिय माला है; उनका अघरहित वृषभ-ध्वज तुंग आकाश में गांभीर्य से फहराता है और शत्रुओं के हृदय में संत्रास फैलाता है।

'तिरुप्पळ्ळि यंळ्ुच्चि' - जागरण गीत - प्रभु को प्रातः उठाए जानेवाले प्रभाती गीत हैं। इसी शीर्षक से तोण्डर अडिपोडि आळ्वार ने भी दस पदों की रचना की थी। सर्वव्यापक, सर्वज्ञाता और सदैव भक्तों की रक्षा करने वाले प्रभु को गीतों द्वारा उठाया जाता है। स्थूल सेवा से प्रारम्भ हुई अर्चा-विग्रह की सेवा अनन्यता और श्रद्धा की चरम सीमा पर पहुँचकर भगवत्प्राप्ति का साधन बन जाती है। प्रतिमा भगवत्स्वरूपा हो जाती है और भक्त उसी में सर्व-समर्थ, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् के दर्शन करता है। 'जागो मेरे नाथ विहान हो गया, चढ़ा रहा हूँ नवप्रसून चरणयुगल पर' - मेरे नाथ स्वामी हो तुम, जाग उठो निद्रा से ! भास्कर पूर्व दिशा में निकल आया है, घन तिमिर तिरोभूत हो गया है। अतः भक्त प्रभु से प्रार्थना करता है कि 'कृपा समुद्र तुम करो नयोन्मीलन'। कोयलिया कूक रही है, कुक्कुट का कूजन हो रहा है, पंछी चहचहा रहे हैं, तारकों की द्युति मंद हो रही है, भास्कर की प्रभा का प्रसार हो रहा है अतः प्रभो ! नयनोन्मीलन करो। भक्त-समाज सन्निधि में खड़ा होकर आनन्दपूर्वक प्रभु के उठने की प्रतीक्षा में है, ऋग्वेद का स्तुति-गान हो रहा है, वीणावादक और सुमधुर याळ्वादक उनके उठने की प्रतीक्षा कर रहे है जो सकल चराचर, और घटघट में व्याप्त है, आवागमन से परे, नित्य शाश्वत है, ऐसे प्रभु को जगाने के आवाहन के ये पद आनन्दामृत से सराबोर हैं।

'आदि देवालय गीत' में शिव और शक्ति के भक्त के हृदय में निवास

करने और भक्त द्वारा आद्यन्त-विहीन प्रभु के दासों के साथ स्थान पाने की प्रार्थना है। भक्त की विनम्रता का, प्रभु के प्रति निष्ठा का एक रूप देखें—

प्रेममय दास्यता से प्रमुदित प्रभु !
पाषाण सदृश हृदय मेरा पिघलता नहीं
लोक को साक्षी बनाकर
यदि मैं परिवाद करूं तुम्हारी उपेक्षा का
तो लोग कहेंगे नहीं, कि यह अनुचित हुआ?

इन पदों में प्रिय से न मिल पाने के फलस्वरूप अत्यन्त व्याकुलता का भाव प्रमुख है। 'इधर मैं खड़ा हूँ एकाकी तुमसे बिछुड़कर, ऐसे में सिसक-सिसक रोने के सिवा क्या मार्ग है?' भक्त को विरह की पीड़ा अत्यन्त संतप्त करती है; सन्निधि में खड़े होकर भी कनकसभा में नर्तित नटराज की कृपा की प्रतीक्षा है; अनन्यता और पूर्ण समर्पण के भाव के कारण वह कह उठता है - 'यदि तुम नहीं करोग अनुग्रह, कहाँ जाऊँ मैं? कौन देगा मुझे अभय?' नयनों से बहती अश्रुधार, लड़खड़ाती जिह्वा और निरंतर चल रहा स्तुतिगान दास-भक्त माणिक्कवाचकर की स्थिति का द्योतन करते हैं।

देवालय गीत - ईश्वर प्राप्ति के लक्षणों का वर्णन करने वाले इन पदों में प्रेममार्ग से ज्ञानसागर की प्राप्ति का संकेत है। गुरू-आदेश के अनुसार जब माणिक्कवाचकर तिल्लै चिदम्बरम् पहुँचे तो उनके आनन्द का पारावार न रहा, पर मानव हृदय के भीतर भी तो चिदम्बरम् (चित्+ अम्बर) विद्यमान है जो ईश्वरीय अनुग्रह से सौन्दर्यमय हो जाता है। 'मेरे हृदय में आनन्द का उत्स बनकर विलसे अमृतस्वरूप' इसी की प्रतिध्वनि है। भक्त का हृदय प्रेमातिरेक से प्रकंपित हो उठता है, वाक् और शब्द मौन हो जाते हैं वह कह उठता है - गुणातीत आनन्द ! अब जब तुम तक पहुंच गया हूँ तो और किसी की चाह नहीं —

ओ अन्यून परिपूर्ण ! विशुद्ध अमृत !
भावनातीत जाज्वल्यमान ज्योति पर्वत !
वेद बनकर वेद का सार बनकर आए तुम
आकर मेरे हृदय में बस गए आनन्द से.....

जब ईश्वर के दर्शन हो जाएँ, हृदय में अमृत के उत्स झरने लगें तो कौन अपना, कौन पराया, सर्वत्र आनन्द ही आनन्द है।

देवालय गीत के उपरान्त माणिक्कवाचकर की कविता का रहस्यवादी रूप और गहरा जाता है। प्रबुद्ध ज्ञानमय आत्मा का चरम आनन्द की ओर

अग्रसर होता प्रत्येक पग विचित्र प्रतीत होता है। मधुमय अमृत झरता हो, कृपानिधि प्रभु प्राप्त हो गए हों, ऐसी स्थिति में साधक-भक्त के 'जीने' का क्या अर्थ है? प्रबल तपस्या करनेवाले अमरगणों को भी जिसके दर्शन नहीं होते ऐसे प्रभु स्वयं चलकर मेरे पास आए, मुझे अपना दास बनाया, इतने महान् अनुग्रह के बाद भी मैं प्रेम में तड़पता नहीं, पिघलता नहीं ! कवि की एकमात्र कामना जनन-मरण हेतुक भवबंधन को समाप्त कर प्रभु-सान्निध्य में रहने की है। एक हृदयग्राही अंश देखें –

तुमसे बिछुड़कर रहना महाकठिन है
क्या करूँ कुछ सूझता नहीं
तुम्हीं बताओ 'ऐसा करो वत्स' !

यह भाव पुनः-पुनः शब्दबद्ध होता है - मैं तुम्हारा पुत्र हूँ, पुत्र को यों चीत्कार करते देना क्या तुम्हें शोभा देगा? प्रभु ने कृपा की, अभय प्रदान किया, अपना लिया, आनन्द वारिधि में तैरता रहा पर फिर भी प्रेम में पिघला नहीं। आनन्द-तुंदिल होकर भी अहंकार में पड़कर दुःखी होने वाले इस भक्त की मनःस्थिति को विश्लेषित कर पाना सहज नहीं।

नश्वर कृमि-कीट पूरित देह को और मलीन मन को ज्ञानशून्य, विद्या-शून्य ढो रहा हूँ; प्रभो तुम स्वामी, मैं दास, तुम्हारी शरण में आया हूँ। 'शरणागति दशक' के दस पदों में डगमगाते, मतिहीन भक्त की करुण पुकार है। दुख-दुरित के सागर में कामिनी-वीचियों की चोट और काम-तिमिंगल के थपेड़े खाते तिल-तिल कर मिटने वाले भक्त की यह पुकार भक्ति-मार्ग के प्रत्येक पथिक के लिए मार्ग-दर्शक है।

इन पदों में कामिनियों के घुंघराले केशपाश, उनके अंजन-रंजित अमौरी जैसे नयनों का दृग्-विक्षेप, तन्वंगी कामिनियों के विद्युल्लता सम कटाक्ष-विक्षेप का जाल जैसे अंश प्रमुख रूप से उभरे हैं। अपनी अज्ञता का वर्णन करते हुए कवि-कथन है –

हाय ! मैं नहीं जानता
कैसे करूं वंदना, उपासना, आराधना
जाना नहीं अभी तक तुम्हें
जानने का ढंग भी नहीं जानता.....

अतः भक्त उस औढरदानी की शरण में आकर, उसके अनुग्रह का अजस्र रूप से प्रवहित अमृत प्राप्त करने और आनन्द-वारिधार के पान करने की कामना करता है।

'आशैप्पत्तु' - इच्छा दशक में तिल्लै के नटराजराज से अज्ञान-तिमिर को मिटाने की प्रार्थना है। इन पदों में शरीर की नश्वरता का अंश प्रबल है। 'मांस, मज्जा, रुधिर से निर्मित अस्थि-चर्म से ढके इस चोले में सीमित रहने की कामना नहीं'; 'यह देह का ढांचा जो कृमि-पूरित है, पीब से भरा है, टूट कर नष्ट हो जाए'; प्राण श्रांत-क्लांत हो रहे हैं, टूट गया हूँ सब भाँति थका-हारा हूँ; इहलोक-सौख्य के साधन जो तुमने दिए थे अब मुझे उनसे मुक्त करो आदि वाक्यों में व्याप्त मूलस्वर प्रथम दृष्टि में निराशा का प्रतीत होता है पर मूलतः वह प्रभु-कृपा प्राप्त करने की अदम्य पिपासा है। लक्ष्य स्पष्ट है —

बड़ी इच्छा है मेरी, निहार लो
तात मेरे और छिटक दो मंदहास।

'अतिशयप्पत्तु'- 'चमत्कार दशक' में आश्चर्य का भाव है। नाथ के अनुपम ज्योतिर्मय चरण का मिल जाना और भक्त-मंडली में मिला लेना - यह आश्चर्य का आधार-बिन्दु है। 'कामिनियों के श्यामल कुंतल में लगी जुही पर' रीझने वाले निष्कृष्ट जन को प्रभु ने अपना लिया। इस दस पदों में प्रभु द्वारा कृपा करने का भाव निरंतर बना हुआ है —

मांस-मज्जा की कच्ची माटी की दीवार को
घुन भरी सड़ी-गली इस नश्वर देह को
सत्य शाश्वत मान बैठा था मैं
घूम रहा था भवसागर के दुःख-दुरित के भंवर में
ऐसे पामर जन का उद्धार किया प्रभु ने
मुक्ता-माणिक्य महार्ध-मणि की
हीरक-प्रवाल की जाज्वल्यमान ज्योति ने
अपना कर मिला लिया निज भक्तमंडली में
अहह ! ऐसा आश्चर्य देखा हमने।

पुनर्चिप् पत्तु - 'संयोग दशक' के दस पदों में आत्मा द्वारा गुरुरूप प्रभु के सामीप्य के आनन्द की कामना का वर्णन है। जिस प्रभु ने अव्याज करुणा के संग स्वयं को ही मुझे दे दिया उसके सामीप्य का, उस ज्योतिर्मय मणि के आलिंगनपाश के सुख की प्राप्ति कब होगी? जब ऐसा अवसर मिलेगा तो मैं निज शीर्ष चरणकमल पर धर कर, सुरभित सुमन अर्पित कर जी भरकर आह्लादित होकर रोऊंगा। इस भाव से ओत-प्रोत दस पदों में अचिंतनीय, अकल्पनीय, अनल, सलिल, अनिल, धरती, अम्बर रूप महिमामय प्रभु का गुणानुगान है। इस अंश में प्रेमाभक्ति के उस रूप का भी चित्र है जहां भक्त

प्रेम के उन्माद में धरती पर लुढ़क कर लोटपोट हो जाता है, कभी हँसता है, कभी रोता है, गलियों में डोलता हुआ नाचता है; प्रभु के सामीप्य का सुख प्राप्त करना उसका एकमात्र लक्ष्य बन जाता है।

'जीवन-असारता' शीर्षक से तिरुप्पेरुन्तुरै में विराजे शिवराज से प्रार्थना है कि कृपा करके भक्त माणिक्कवाचकर को अपने समीप बुला लें। 'तुम्हीं को सुनाऊंगा अपनी परिवेदना'; 'जान लो समर्थ नहीं हूँ मैं इस समुद्र वलयित धरती पर जीने के लिए'; 'तुम मुझमें व्याप गए हो, मेरे सर्वस्व हो'; 'सब भाँति अधम हूँ किन्तु तुम्हारा दास हूँ' आदि कथनों द्वारा अपनी स्थिति का वर्णन कर प्रार्थना का एक ही स्वर है - 'अब तो कृपा करो मुझ पर, और बुला ला अपने पास'।

अरुट् पत्तु - 'अनुग्रह दशक' में प्रभु से एक असाधारण प्रार्थना है कि जब –

"…..यह दास पुकार उठे
तुम्हारा नाम लेकर आदर के संग
प्रत्युत्तर दिया करो, कहो क्या बात है वत्स !"

इन दस पदों में महाज्योति, अर्धनारीश्वर, नृत्यरत, निर्मल, नित्ययुक्त भालनेत्र शिव की स्तुति करते हुए कामदेव-दहन की घटना का स्मरण है। इसी अंश में एक पद शिव और पर्वतराज कुमारी के परिरंभण का है–

"कमनीय अलकावली की धनी
तनुमध्यमा सुभगस्तनी पर्वत राजकुमारी के
परिरंभण से अंकित हुए
स्तनाग्रभाग के दो चिह्न शोभित हैं…."

समग्र दस पदों का मूल स्वर अंतिम पंक्ति में विद्यमान है –

….. प्रत्युत्तर दिया करो 'कहो क्या बात है मेरे वत्स'।

'सद्गुरु दर्शन' उपशीर्षक से 'गृध्राचल दशक' के दस पद वेदगिरि नामक पर्वत पर गुरु के दर्शनों का वर्णन है। महत्त्वपूर्ण संदर्भ यह है कि इन पदों में पेरुन्तुरै धाम में हुए दर्शन-आनन्द का वर्णन है और पुनः तिरुक्कऴुकुन्रम धाम में भी 'प्रकट हुए तुम दिखाया निज स्वरूप' कहकर पुनः दर्शन की बात कही गई है। प्रभु-अनुग्रह से त्रिमल कटना, प्रभु द्वारा चरणयुगल प्रदान करना, निजस्वरूप दर्शाना आदि से स्पष्टतः यह ईश्वरीय अनुग्रह की पुनः प्राप्ति का प्रमाण है।

'कण्डपत्तु' : 'दर्शन दशक' - तिल्लै चिदम्बरम् के मार्ग में कवि-भक्त

को अनेकानेक बाधाओं का सामना करना पड़ा। अनेक संदेह और शंकाएँ, व्यंग्य-बाण और सहज मानवीय दुर्बलताओं के कारण निराशा के क्षण आते रहे, जाते रहे। पर जब तिरुक्कुळ्ुकुन्रम् में - गृधाचल पर्वत पर नटराजराज के दर्शन प्राप्त हुए तो हृदय आनन्द से परिपूर्ण हो गया। इन दस पदों में 'देखा मैंने अमृतेश्वर नाथ को, तिल्लै चिदम्बर में आमोद से'-स्वर प्रमुख है। भक्त अपनी अज्ञता से परिचित है पर प्रभु की करुणा का औदार्य पशुपाश को काटकर, दिव्य जीवन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। 'मैं' और 'मेरा' का भाव, अज्ञानजनित भेद-बुद्धि, जाति, कुल का भंवर दूर करके प्रभु भक्त को 'मुक्त' कर देते हैं। जग के लोग जिसे 'बावरा' कहते हैं, उसे प्रभु की भक्ति की सुदृढ़ डोर बांध लेती है, प्रेमाभक्ति की ज्योति के माध्यम से वह ज्योतिर्मय अंतर् में व्याप जाता है; अग-जग में व्याप्त वह अभेदतत्त्व, ज्योति-परमेश्वर तिल्लैधाम में दर्शन प्रदान करता है।

'प्रार्थना-दशक'-संगीतमय गीतियाँ हैं जो अनन्त आनन्द और प्रभु-प्रेम की प्राप्ति की प्रार्थना हैं। यहाँ पुनः 'दुःख-संताप का तिमिर', भटकन और ज्योति-दर्शन की आशा है : 'सब ओर से हारे इस जन पर' 'कृपा करो ताकि मुझमें भक्ति-भाव जगे, पनपे'। 'तमसावृत काया के प्राचीर' से मुक्त होकर मात्र ईश्वरीय प्रेमानुग्रह की कामना है। भक्त को तो सनातन, चिरंतन, शिवानंद सागर में डूबना है, परमानन्द छकना है ताकि मन-प्राण और काया का बंधन छूट जाए। ऐसे शाश्वत संग और अव्याज प्रेमाभक्ति की यह चाह वियोग और विछोह, स्मृति-विस्मृति से परे निस्सीम शिवानन्द प्राप्ति की है। कवि-भक्त भक्त-मण्डली से विलग और श्रांत-क्लांत, पराया, अनत, बांस के तने के समान अपनी स्थिति को पाता है अतः कथन है-'वर्षित करो ऐसा अनुग्रह कि द्रवीभूत हो मेरा हृदय'।

विगलित हृदय-दशक' का मूल स्वर है - 'दास से त्रुटि हो जाए तो क्षमा करना तुम्हारा धर्म नहीं है?' —

मेरी यह धारणा थी
कि दास के दुःख संताप दूर करना
स्वामी का कार्य है
दास जो बना लिया था
पापमय इस देह को नष्ट क्यों नहीं किया
हे आनन्दमय शिवलोक के स्वामी
मेरे नाथ ! बुलाया नहीं
सेवा में लगाया नहीं

सीधे दंडित कर दिया
क्या यह कार्य समुचित है?

बोल रही जिह्वा से लेकर वर्णन योग्य सकल पदार्थ तुम हो, जड़-चेतन, गुण-दोष सब तुम्ही हो, सकल पदार्थ में तुम ही समाये हो, तुमने मुझे स्वेच्छा से निज सेवकाई में नियुक्त किया, जो भी अनुग्रह करोगे वही लूँगा। कविभक्त का कथन है कि मायामय इस जीवन को तुम्हारे चरणों पर सौंपना ही करणीय है; 'जिस कल बिठाओगे, उस कल बैठूंगा मेरे शिवराज !'

'शिवानन्द का अतिरेक' उपशीर्षक 'जीव-निगलित दशक' पदों में प्रभु-अनुग्रह के परिणामस्वरूप हुए अहम् के विगलन और अनन्त ज्योति के प्रति समर्पण तथा कभी आनन्द, कभी वियोग का भाव जन्म लेता है।

जब मन और वाणी से परे ईश अपने जादू से भक्त को बावरा बना देते हैं तो उसे ऐसा प्रतीत होता है :

श्वान को भी कुछ माना यही बहुत है,
प्रविष्ट हो गए नाथ मेरी देह में
घुसकर हृदय में, हिलमिल गए मन-प्राण में
बने रहेंगे मेरे मन के ही संग सर्वदा....

इस 'अनुभव' के उपरान्त 'विमलकीर्ति', 'अतुलधाम', 'धरती और स्वर्ग का आधिपत्य' सबकी कामना समाप्त होकर केवल तिरुप्पेरुन्तुरै धाम में विराजे नाथ-चरण की कामना शेष रह जाती है। जब वह 'अमोघ औषध रूप' कृपा करता है तो भक्त माणिक्कवाचकर कह उठते हैं—

गह लिया प्रपंच ज्ञान
पर ज्ञान को जाना नहीं
यह नहीं जान पाया कि
मेरे रूप में तुम्हीं तुम हो....

'अच्च'-'भीति' दशक में जीवनमुक्त को जिनसे भय है उसका विवेचन है। बिल में निवास करने वाले सर्प, काम और साँसारिक इच्छाएँ, कर्मबंध का पाश, वलय-शोभित कोमलांगी के कटाक्षपात आदि से भक्त भयभीत नहीं होता पर जो जन तिल्लै चिदंबरम् में नृत्यरत मणितुल्य नाथ के प्रति प्रीति नहीं करते उन्हें देख 'भीत भीत हो जाता हूँ मैं'। प्रेमाभक्ति से विरहित जन से सर्वाधिक भय लगता है। रोग-बाधा से ग्रसित होना, जन्म-मृत्यु का आवर्तन, धधकती अग्नि-ज्वाला, टूटते पहाड़, अन्यायपूर्ण आरोप, मृत्यु आदि से कोई भय नहीं पर जिनका हृदय आदि देव परमेश्वर के चरण-कमलों की

वंदना से विमुख है कवि उनसे भयभीत हो जाता है।

'पांड्य-भूमि दशक' में उस घटना का स्मरण है जब निर्गुण, निरामय परमेश्वर अश्वारूढ़ होकर प्रकट हुए और उन्होंने पांड्य नरेश के समक्ष माणिक्कवाचकर के सम्मान की रक्षा की थी। जाज्वल्यमान ज्योतिरूप में हाथ में त्रिशूल लिए, अश्वारूढ़ शिव जब पांड्यनरेश के समक्ष प्रकट हुए तो उनकी भी जन्म-मृत्यु से मुक्ति हो गई। शिव की म्यान की उज्ज्वल ज्ञान-करवाल भक्तों के सकल जनन-मरण के समूह को विनष्ट कर देती है। तदुपरान्त अज्ञान का तमस दूर होकर, ज्ञानज्योति के प्रदीप्त होने पर सब कुछ हस्तामलकवत् स्पष्ट हो जाता है। शिव-अनुग्रह से अनन्त आनन्द में निमग्न होकर भक्त शाश्वत मुक्ति के आनन्द-सागर में निमज्जित हो जाते हैं। एक पद में वृषभारूढ़ होकर मां पराशक्ति के संग पधारने का भी एक शब्द-चित्र है।

भ्रमण करते हुए, विविध अनुभवों का संचयन करते हुए माणिक्कवाचकर जब तोनिपुरम् पहुँचे तो प्रभुचरणों को कसकर पकड़ने का भाव लिए दस पदों की रचना की। तुम करुणा और अनुग्रह के सागर हो, तुम खिसक न जाओ यह सोचकर कसकर पकड़ लिया है। अब बोलो ! किस ओर पधारोगे? प्रभु प्रेमाभक्ति में उपजे मधुरिम अमृत हैं, सत्य स्वरूप हैं, अक्षय निधि हैं, सकल कलास्वरूप और उनके सार रूप हैं, वर्णनातीत आनन्दानुभव हैं पर उन्होंने ज्ञानरहित, गुणरहित भक्त को दिव्य ज्योति प्रदान की। भक्त उनके चरण कसकर पकड़कर मानो उस अद्भुत अवर्णनीय आनन्द को चिरस्थायी बनाना चाहता है :

हे मातृस्वरूप देव ! तुमने पिघला दिया
इस लघुजन के चित्त को हृदय को
प्रसरित कर दी अंतःज्योति
क्षण-क्षण जो वर्धित हुई
अमंद आनन्द बनकर व्याप्त हुई
स्रवित हुआ मधु का उत्स....

भक्त ने ऐसे प्रभु को कसकर बांध लिया और पूछा - बोलो, अब पधारोगे किस ओर ? यहाँ अंतर्निहित भोलापन, आत्मीयता, और समर्पण का भाव द्रष्टव्य है।

'तिरुवेशरवु' - 'स्मृति और पीड़ा' अंश का विषय आत्मा की मुक्तावस्था है। अब शरीर-पिंजर का बंधन भक्त को नहीं सताता, परन्तु पूर्वकथा का स्मरण हो आता है - 'जब सियारों को शक्तिशाली अश्व' बनाकर चमत्कार

दिखाया था; जनन-मरण के घोर नरक में जब भक्त बंधु-बांधव, स्वजनों के बिना तड़प रहा था उस समय परात्पर शिवनाथ ने दिव्यचरणों के दर्शन देकर अमृत प्रदान किया था।

यह उन क्षणों का स्मरण है जब कवि-भक्त रुई के समान कोमल मृदुल-चरण कामिनियों के नयन कोर के आघात से पीड़ित होकर तड़पता था; उस समय प्रभु ने अनुग्रह-वर्षा की और जैसे 'श्वान को उठाकर बिठा दिया रत्न-खचित कनक-सिंहासन' पर। ऐसे प्रभु का गुणानुगान करते हुए और शि-वा-य-न-म मंत्र का स्मरण कर भक्त कह उठता है —

हे आदिदेव ! अनादिदेव !
सनातन चिरंतन महादेव ! चिरयुवा !
वेदों के सार रूप ! वेद संस्तुत देवाधिदेव !
दृश्यमान प्रपंच भी तुम हो
अदृश्य मूल प्रकृति भी !
सदसत्-स्वरूप मेरे नाथ ! शिवराज !
हृदय में प्रवेशकर अपनाया था मुझे
जब मैं लोटता रहा प्रपंच की धूल-माटी में
फिर से उद्धार किया तुमने
असीम करुणा, से अनुग्रह से।

'प्रलाप' - 'शिवानन्द परिपक्वता' अंश में तिरुवारूर में गाए गए ईश्वर-अनुग्रह विषयक तीन पद हैं। मूल भाव है कि तिरुवारूर के नाथ ने जो कृपा की उसके उपरान्त नाम-धाम, विद्या-कला-आसक्ति आदि कुछ भी काम्य नहीं; केवल वही आसक्ति चाहिए जो बछड़े के अंतस् में अपनी माँ गाय के प्रति रहती है। तुंग प्राचीरों और विशाल उपवनों से वलयित तिरुवारूर एवं तिरुप्पंरुन्तुरै धाम के अधीश से यही निवेदन किया गया है।

'कुलाप्पत्तु' - 'उल्लास-दशक'- विविध क्षेत्रों में भ्रमण करने के बाद योगी रूप में माणिक्कवाचकर जब निरंतर सत्य-आनन्द की प्राप्ति के लिए तिल्लै-चिदम्बरम् में निवास करने लगे तो उनका तन-मन-प्राण आनंदमय हो गया। पूर्व के कामिनियों के डमरू-तुल्य कटितट पर काममोहित होने और मधुबैनी तन्वंगियों के सुकोमल स्कंधों के आकर्षण अब बाधक तत्त्व नहीं रहे। प्रभु ने द्वन्द्व मिटा दिया, अंतर् को पिघला दिया, जन्म-मृत्यु के मूल पाप-पुण्य के संचित कर्म नष्ट कर, प्रभु ने स्वयं हृदय में प्रवेश कर लिया और भक्त-हृदय उन्हें पूर्णरूप से जानने की प्रक्रिया से आनन्दित होने लगा। जो जन जीव-बोध तजकर शिवबोध में रमते हैं, उन्हें प्रभु का अमृत-स्वरूप प्राप्त

होता है और वे नाथ-परमेश्वर के आनंदमय तिल्लै-धाम में पहुँचते हैं। इन पदों में एक संकेत पाद-दीक्षा का है –

"धर दिए प्रभु ने निज चरण मेरे शीर्ष पर
तत्क्षण ही नियंत्रण मे आ गया
पंचेन्द्रियों का अदम्य पराक्रम.....

तिरुप्पंरुन्तुरै में गाए गए 'अद्भुतप् पत्तु' - 'चमत्कार दशक' में उस अवसर का स्मरण किया गया है जब राज्य के मंत्री के रूप में कवि अहम् भाव और इन्द्रिय-सुख की कामनाओं से अभिभूत था। काम-मोहित, अंगराग रंजित कुंभस्तनियों के प्रेमजाल में फंसे व्यक्ति को प्रभु ने गुरुरूप में दर्शन देकर अनुग्रह की वर्षा की और अंतस् का सकल मालिन्य मिटा दिया। मिथ्या-भाषण में लिप्त और श्यामल-कुंतला कामिनियों के नयनबाण से बिद्ध भक्त को नूपुर-शिंजित-चरण नाथ ने माँ उमा के संग आकर साथी के रूप में अपनाया। इन दस पदों में नारी-शरीर के प्रति आकर्षण का विशेष प्रभाव विद्यमान है-धन संपत्ति, परिजन के साथ सांसारिक सुखभोग, कामिनियों के मध्य रमण कर रहे भक्त पर प्रभु ने अनुग्रह किया। स्फीत-स्तनी कामिनियों के अंजन रंजित नयनों के आघात से अभिभूत कवि को तात ने आकर जो अपनाया 'इस अद्भुत का वर्णन कैसे करूँ?'

आदर्शगुरु रूप में ईश्वर का वर्णन 'शीर्ष-दशक' में हुआ है। दक्षिण पंरुंतुरै के अधीश परंज्योति स्वरूप के सुभग, सुमन सरिस चरण युगल पर हमारे शीश नित्य ज्योतित रहें - इन पदों का मूल स्वर है। अष्टमूर्ति, सुन्दरेश, अमृतमय आनंद-धार सुगंधकुंतला देवी उमा को वाम भाग में लिए - भक्त-आत्मा को मोहित करता है, मुक्ति का आमोद प्रदान करता है। प्रभु जीवन की अनित्यता का ज्ञान देकर अर्चा, चर्या और आराधना का सन्मार्ग दर्शाता है, संसार के जन्ममृत्यु के सागर को पार करने के लिए निज नाम की नौका प्रदान करता है। परिणामतः भक्तगण सुधबुध भूलकर ध्यान में, स्तवन में, कीर्तन में मग्न हो जाते हैं।

'श्रीवार्ता' का उपशीर्षक 'आनन्द का बाँटना' है जो वर्णित विषय को स्पष्ट करता है। यहां भी अर्धनारीश्वर प्रभु पंरुन्तुरै के अधीश रूप में प्रस्तुत हैं। तिरुविलैयाडल पुराण में वर्णित गाथाओं के कई प्रसंगों का उल्लेख कर आदिदेव, अनादिनाथ, रत्नकिरीटधर चिदम्बर में नर्तित नटराजराज के कुछ कृपाप्रसंग इस दशक में वर्णित हैं। 'इरैमरुदूर की सुशील नारी' पर अनुग्रह; मछुआरिन कुमारी बनी उमा पर आसक्त होकर मछुआरे का रूप धारण कर मत्स्य-जाल फैलाना, नटनकला में सुदक्ष अश्व पर आरूढ़ होकर धरती पर

पधारना, मंदोदरी पर कृपा करना, बाण-बिद्ध मृतप्राय शूकरी को शूकरी रूप धारण कर स्तन्य पिलाना आदि प्रसंगों का वर्णन हुआ है। लौकिक आसक्ति को दूर करके इहपरसौख्य प्रदान करने वाले देवाधिदेव एक बार मधुरा नगरी में शंख-निर्मित चूड़ियाँ लेकर भद्रनारियों को बेचने के लिए भी पधारे थे। प्रभु की महिमा को जो यथातथ्य रूप में जानते हैं ऐसे महज्जनों के 'हम दास हैं, वे हमारे नाथ हैं।'

'सुविचार दशक' का मूल विषय सायुज्य के आनन्द की प्राप्ति के लिए प्रार्थना है। कवि-कामना है - मुझे तुम्हारे चरणों पर अचल भक्ति चाहिए। पूर्व में एक बार वृद्धरूप में प्रकट होकर तुमने जो अनुग्रह बरसाया, मुझे वात्सल्य से अपनाया क्या वह सब अलीक था? मेरा जीवबोध मिटा दो ताकि केवल शिवबोध विलसित रहे। तेरे चरण-कमल के दर्शन का अभ्यास छूट गया है, आनन्दमग्न हो नर्तन और चरणकमल पूजन भी नहीं करता, अब यदि तुम दया करके दर्शन दे भी दो तो तुम्हारे सामने आने में लज्जा आएगी। मेरे अमृत ! मेरे प्राणों के प्राण ! ऐसी कृपा करो कि तड़पूँ, चीखूँ और अपने अंदर ही तुम्हें प्राप्त कर लूं।

'यात्रा-दशक' अलौकिक आनन्द की अभिव्यक्ति है। मायामय देह को तजकर तेजोमय शिवमय बनने की घड़ी आ गई है। यहां रामलिंग स्वामी का कथन स्मरण हो आता है; उनकी अंतिम क्षणों की कविता का अंश है –

"आज ही पधार रहे हैं सखि !
मेरे स्वामी, मेरे देव, मेरे प्राणनाथ !
यहीं इसी स्थल पर जहाँ बैठी हूँ मैं,
अभी अगले ढाई घड़ी के भीतर
आकर मिलेंगे घुलकर, मेरे शरीर से
प्रवेश करेंगे हृदय में
फिर कमी न होगा बिछोह....."

इसकी तुलना माणिक्कवाचकर के पद से करें तो भाव-साम्य पर आश्चर्य होता है –

देवाधिदेव महादेव प्रभु वह
हम लघु जनों पर अनुग्रह बरसाने के हित
आ रहे हैं धरणी पर
आकर मन-प्राण में घुल मिलकर
बस जाएँगे हृदय-देश में...."

इन पदों में विचार-क्रम अत्यंत संयत और ज्ञान की उच्चतम सीमा पर पहुँच चुका है —

हम कौन हैं? अपना कौन है यहाँ ? जग की कैसी माया है ! भ्रम-विभ्रमों से मुक्त होकर यह ज्ञान होता है कि आत्मा में ईश्वर व्यक्त है, आत्मा ही अपना बंधु-मित्र है; साधकों के मार्ग-दर्शक परमेश्वर के बताए सन्मार्ग पर चलें तो वह पन्नग-भूषण परमेश्वर निश्चय ही प्रश्रय देंगे, अपनाएँगे। जीवन का समय अल्प है, अतः आसक्ति, काम, क्रोध, राग को तजकर निज को पुनीत यात्रा के लिए प्रस्तुत करें। श्रीलतिस शिवानन्द नगरी में नाथ-चरणों पर 'अञ्जलिबद्ध कर हों द्रवित गलित हृदय हो' तो बाद में पछताना नहीं पड़ेगा। नाथ को प्राप्त करने की अमिट प्यास, प्रबल ललक ही शिव-सन्मार्ग पर ले जाएगी, चेतने का यह अवसर चूक गए तो जन्म-जन्मातर तक चिंतामग्न बने रहोगे उद्धार का अवसर चूक जाएगा।

'तिरुप्पडै ऍऴु्च्चि' अंश के मात्र दो पदों में एक 'सैनिक अभियान' का चित्र है। भक्त जन से आग्रह है कि वे व्यूह रचना करते हुए आगे बढ़ें, समर-समर्थ योगी ज्ञानवाहिनी का संचालन करें, वज्र सम शक्तिशाली सिद्धजन आगे बढ़ें और सब मिलकर अमरलोक पहुँच कर वहाँ का शासन संभाल लें।

'तिरुवेण्बा' - 'श्रीछंद' में ईश्वर-प्राप्ति के सोपानों का विवेचन है। ज्ञानाग्नि से कर्मद्वय धू-धू कर जल जाते हैं, असत्य ज्वलित अग्नि में नष्ट हो जाते हैं। पॅरुन्तुरै में विराजे नृपतिसम प्रभु ने अज्ञान में निमग्न भक्त के हृदय में ज्ञान-खड्ग भोंक दिया फलतः भ्रम-विभ्रम दूर होकर उद्धार का मार्ग प्रशस्त हो गया। कबीर के गुरु ज्ञान प्रदान करने के लिए बाण खींचकर मारते हैं —

"सतगुर लई कमाँण करि, बाँहण लाजा तीर
एक जो बाह्या प्रीति सूँ, भीतरि रह्या सरीर"

पॅरुन्तुरै में सानन्द विराजे शिव की कृपा से पूर्व के कर्मद्वय ही नहीं आगामी कर्म का भी विच्छेदन हो जाता है। वही भक्त के मानस में भी निवास करते हैं। ज्ञान का 'अनुभव' गूंगे का गुड़ है, वर्णनातीत है, इस आनन्दामृत को चखते-चखते वाणी स्तम्भित हो जाती है। वह परम उदार करुणा वरुणालय मानस में बस जाते हैं। वे अमोघ औषधि रूप, कल्पतरु हैं, उस परम करुणा की, असीम अनुग्रह की कृतज्ञता प्रकट करने के लिए शब्द असमर्थ हैं।

'पण्डाय नान्मऱै' - 'आदि चतुर्वेद' शीर्षक पदों में कृतज्ञता का भाव

व्याप्त है, कवि स्व-मन से प्रश्न करता है - रे मन ! बोल इस अपरंपार कृपा का कोई प्रतिदान भी है ? पूर्ववर्णित कथाएँ यथा वन में व्याध बनना, समुद्र में मछुआरा बनकर जाल फैलाना, अश्वपालक रूप धारण करना आदि संदर्भ कोकऴिधाम के अधीश महिमामय परमेश्वर के सान्निध्य में पुनः स्मरण हो आते हैं—

"उसकी कृपा से, उसके अनुग्रह से
विचार जब विलीन होते हैं
दृश्य होता है वह अमृतमय
आनंदरूप में निज साधकों के लिए !"

वह सकल वाणी का, शब्द-अर्थ का एकमात्र लक्ष्य है। भक्त जब मणि-मंत्र-औषध स्वरूप नाथ को निज अंतर् में स्थापित कर लेता है तो जनन-मरण का बंधन कट जाता है।

प्रभु की सर्वव्यापकता, 'एक तत्त्व की ही प्रधानता' का भाव 'विजय-पताका' शीर्षक के पदों का है। यहां 'जीवोपाधि से निवृत्ति' की स्थिति आ चुकी है। 'यदि मेरे सामने प्रकट न होते, और मुझे अपनाया न होता' तो जो विविध परिवर्तन हुए, जो रसप्राप्ति हुई, वह न हुई होती। चरणयुगल के दर्शन का ही प्रभाव था कि कामिनियों-संग काम में लिप्त न रहकर भक्त लयताल युत गीत-वाद्य-नृत्य मे, सुन्दर राग-रागिनियों में संलग्न हुआ तथा उसे दिव्य शक्तियां प्राप्त हुईं। ईश्वरीय कृपा का ही परिणाम है कि पंचकरणों, पंचेन्द्रियों के माध्यम से बाह्य-लोक के दर्शन मिलते हैं तथा जीव-ब्रह्म के बीच पशु-पति का सम्बन्ध हुआ। बछड़े पर गाय के वात्सल्य के समान भक्तगण पर भगवान् का वात्सल्य-भाव है फलतः चिंतन-मनन-ध्यान सम्भव होता है; भक्त प्रेमानन्द के अमृत का छककर पान करता है। हृदय में अंतहीन अंड-ब्रह्माण्ड के दर्शन, शिवानन्द का बोध, आद्यन्त-विहीन आदि परंज्योति का सामीप्य मिलता है। यदि मेरे नाथ परमेश्वर ने दर्शन न दिया होता तो यह सब सम्भव न था और न ही जनन-मरण का चक्र इन्द्रजाल के समान विलीन हुआ होता। इन पदों में आनन्द-नृत्य, अनहद-नाद, मधुमय समागम, भक्त-मंडली में सेवक को अग्रिम स्थान मिलना आदि ज्ञान की चरमावस्था के द्योतक वर्णन प्रचुर मात्रा में है। कवि 'अगणित सिद्धियों के मुझ में समावेश' की, अगणित जन्मों और अगणित लोकों से मुक्ति का कथन कर 'सत्य-साक्षात्कार' का अनुभव वर्णित करता है। विविध अनुभवों से युक्त प्रस्तुत पद में कवि के अंतरतम से निकली गम्भीर चिंतन से प्रणीत अभिव्यक्ति है—

शंखों के घनीभूत प्रणव का
सांद्र मधुर-नाद अंतर् में श्रवित न होता
निज प्रकृति से कभी न बिछुड़ते
त्रिगुण का हम से बिछुड़कर जाना न होता
माया का विभ्रम कि 'यह सुंदर है'
'वह सुंदरतर' के तारतम्य का लोप न होता
'अब हमारा लक्ष्य नाथ के दासों का
दासानुदास बनना है' इस भाव का उदय न होता
शफरी-मीन सी चंचल लोचनियों के
लोल दृगों के मोह से विराग न हुआ होता
प्रेमाभक्ति में सिक्त भक्तगण को
अननुभूत शिवबोध का भान न होता
अग-जग में व्याप्त नाथ का
अमृत सम अनुभव अंतर् में न हुआ होता
वेद भी नहीं जानते जिनका आदि-अंत
ऐसे नाथ परमेश्वर का पधारना
मुझे अपनाना न हुआ होता।

'आनन्दमालै' एक सत्य-अनुभूति से युक्त जीवनमुक्त के चिंतन की अभिव्यक्ति है। प्रेम वर्णनातीत है, अनुभवगम्य है, आनन्द है। कवि माणिक्कवाचकर उसका वर्णन करने का उपक्रम करते हैं। मानव ईश्वरीय अनुकम्पा को समझ नहीं पाता, सत्संग के अभाव में पिछड़ा रह जाता है। आत्मनिंदा करते हुए कवि स्वयं को अधम, मूर्ख, शीलहीन, नियम-निष्ठाहीन, चर्म-निर्मित पुतली के समान नृत्य करने वाला कहते हुए प्रभु के स्नेह के प्रशस्त मार्ग पर अग्रसर होने तथा प्रभु-मिलन की कामना करता है–

"दोष रहित रूप में उस दिन
तुमने अपनाया था मुझे
फिर बिगड़ने दिया तो
नियंत्रण हीन होकर मैं विनष्ट होता गया
इसका दोष भी देखो आ गया तुम्हीं पर....."

वत्स को स्तन्य (ज्ञान) पिलाती मां यदि दुग्ध नहीं पिलाएगी तो क्या बालक दुर्बल नहीं बनेगा? मेरे साथ अन्याय मत करो, मुझे यों अधर में मत छोड़ो; तिल्लै में नर्तित नटराजराज! श्रांत, क्लांत भक्त को दया करके अवलम्ब प्रदान करो। वास्तव में यह सायुज्य के पूर्व की स्थिति है। एकमात्र

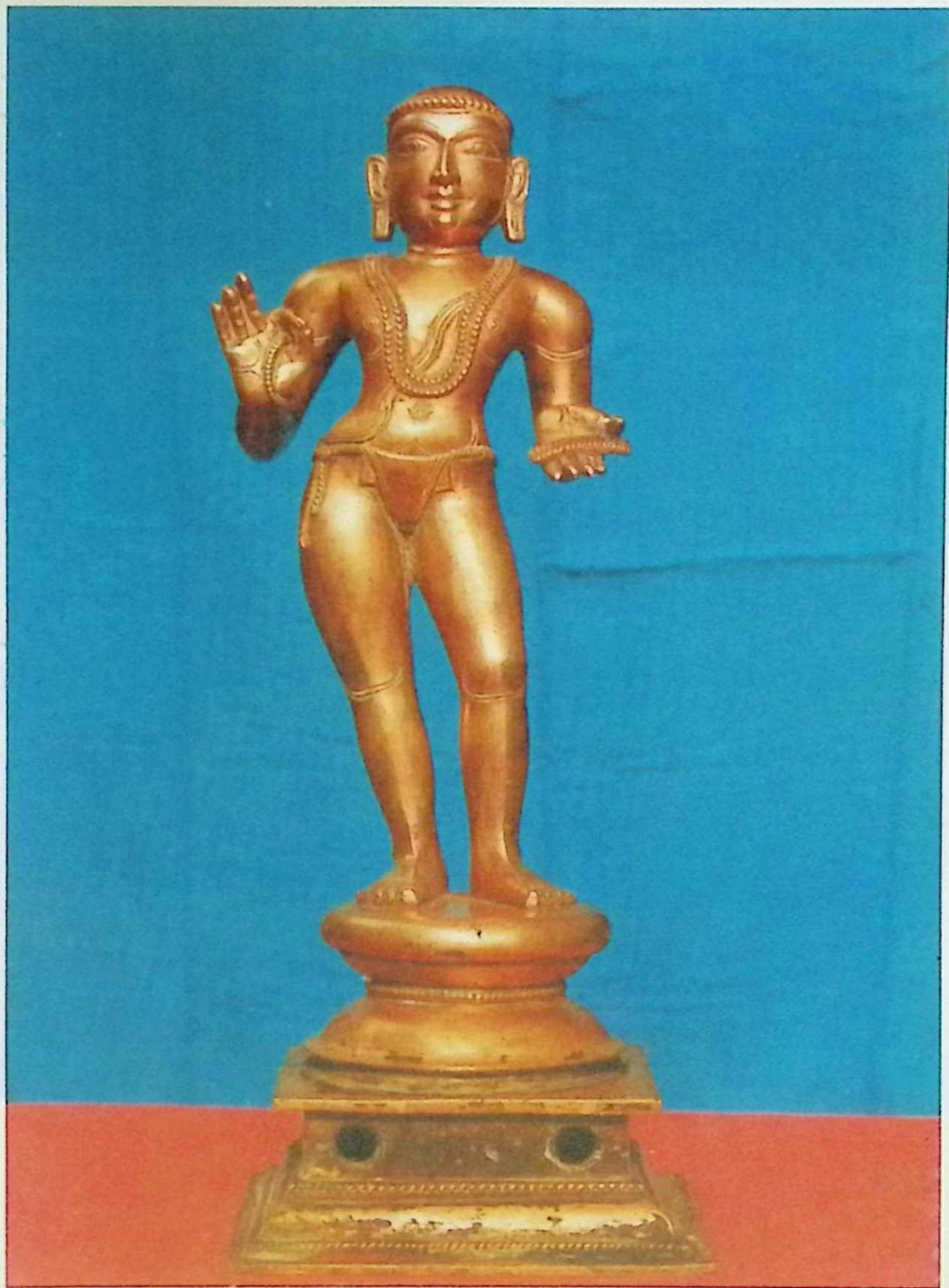
प्रभु को अवलम्ब मानकर, चकित, भ्रमित भक्त कवि करुणा-वरुणालय से मार्ग का संकेत चाहता है।

'अच्चोपदिगम्' - 'विस्मय दशक' में ज्ञानदेशिक की अपार करुणा का वर्णन है। तिरुवाचकम् के इस अंतिम अंश में स्पष्ट घोषणा है कि निर्लक्ष्य भटकने वाले, मुक्ति मार्ग से अनभिज्ञ कदर्य जन को भी भक्ति का सन्मार्ग दिखाकर, संचित कर्म से मुक्त कर, शिवमय बनाकर प्रभु ने निजदास रूप में अपना लिया। असत्य को सत्य मानकर, सांसारिक विषयों, कामवासना में लिप्त भक्त को प्रभु ने अनुग्रह करके चरणयुगल तक पहुँचा दिया। माटी में जन्म लेकर माटी में मिलने से बचाकर प्रभु ने अपने अकूत-अनुग्रह से विशुद्ध विभूत से लेपन कराया, शिव-सन्मार्ग में लगा दिया।

नाथ ने बंध-पाश के सांकल को हटाकर, उद्धार का सन्मार्ग दिखाया, क्रम-क्रम से परिपक्व बनाकर ऊँकार का गूढ़ार्थ समझा दिया। मातृरूप तात ने, आदिमूल प्रभु ने –

इस तरह इस अंकिंचन को बना दिया
कुछ जैसे श्वान को चढ़ा दिया हो पालकी पर
ऐसी करुणामय माँ ने
जो अनुग्रह मुझ पर बरसाया
अहह ! ऐसा अनुभव किसने पाया है
इस जगती तल में !





MANICKAVASAKAR
माणिक्कवाचकर



तमिलनाडु के ज्योति-उपासक संत रामलिंगर्—अरुट्प्रकाश वल्ललार (1823-1874 ई.) ने राष्ट्र को 'जीवकारुण्य' और 'अनन्त करुणापूर्ण ज्योति' विषयक चिंतन प्रदान किया। उनके द्वारा माणिक्कवाचकर की स्तुति में रचित प्रसिद्ध पद –

वान्कलन्द माणिक्कवाचक निन् वाचकत्तै
नान्कलन्दु पाडुङ्काल् नरकरुप्पञ्चाट्रिनिले
तेन्कलन्दु पाल्कलन्दु चेळुङ्कनित् तीञ्चुवै कलन्देन्
ऊन्कलन्दु उयिर, कलन्दु उवट्टामल् इनिपदुवे।

दैवी ज्योति में विलीन माणिक्कवाचक !
जब मैं गाता हूँ तुम्हारे वचनों को
अपने मन-प्राण से मिलाकर
तब इतना आता है आनन्द
मानो उसमें
ईख का रस मिला हो,
दूध मिला हो, फल-रस मिला हो
साथ में
मेरी देह और प्राण मिले हों
इन सबके माधुर्य में
वह अत्यंत मिठास से भरा होता है
वह 'आत्मा' में व्याप्त होने वाला अखण्ड आनन्द
जिसे पीते हुए मैं कभी नहीं अघाता।



प्रथम खण्ड

1

तिरुवाचकम्

तमिल शैवभक्त कवि
माणिक्कवाचकर कृत

मूल तमिल पद, देवनागरी लिप्यंतरण
एवं
हिन्दी भावानुवाद

(पद के बाईं ओर मूल तिरुवाचकम् की पद संख्या दी गई है। पद के साथ दी गई संख्या क्रमशः तिरुमुरै आठ के साथ शीर्षक क्रम संख्या तथा पंक्ति क्रमांक दिया गया है।)

திருச்சிற்றம்பலம்

1

சிவபுராணம்

शिवपुराणम्

சிவனது அநாதி முறைமையான பழமை

शिवनदु अनादि मुऱैमैयान पळमै

தோத்திரங்கள் तोत्तिरंगळ्

1. *நமச்சியவாய வாஅழ்க நாதன்தாள் வாழ்க*
இமைப்பொழுதும் என்நெஞ்சில் நீங்காதான் தாள்வாழ்க
கோகழி யாண்ட குருமணிதன் தாள்வாழ்க
ஆகமம் ஆகிநின் றண்ணிப்பான் தாள்வாழ்க
ஏகன் அநேகன் இறைவ னடிவாழ்க
வேகங் கெடுத்தாண்ட வேந்த னடிவெல்க
பிறப்பறுக்கும் பிஞ்ஞகன்தன் பெய்கழல்கள் வெல்க
புறத்தார்க்குச் சேயோன்தன் பூங்கழல்கள் வெல்க! 8

1. *नमश्शिवाय वाअऴ्ग ! नातन् ताळ् वाऴ्ग*
इमैप्पॊऴुदुम् ऍन् नॅञ्चिल् नीङ्गादान् ताळ् वाऴ्ग
कोकऴि आण्ड गुरुमणि तन् ताळ् वाऴ्ग
आगमम् आगि निन्ऱण्णिप्पान् ताळ् वाऴ्ग
एकन् अनेकन् इऱैवनडि वाऴ्ग
वेगम् कॅडुत्ताण्ड वेन्दनडि वॅल्ग
पिऱप्पऱुक्कुम् पिञ्ञागन् तन् पॅय्कऴल्गळ् वॅल्ग
पुऱत्तार्क्कुच् चेयोन् तन् पूङ्कऴल्गळ् वॅल्ग !

(तिरुमुऱै आठ - 1 पंक्ति 1-8)

तिरुचिट्रम्बलम्

1. *शिवपुराण*

शिव का आदि-अनादि स्वरूप

1. *जय हो नमशिवाय नाम की - नाथ-चरण की*
जय हो विजय हो अंतर्यामी प्रभु-चरण की
जो विलग न होते मेरे हृदय से
पलभर के लिए भी
जय हो तिरुप्परुंतुरै के अधीश
गुरुमणि के पुनीत चरण की
जय हो आगम के साकार रूप
मधुर मधुरिम महादेव की
जय हो एकमूर्ति अनेकमूर्ति प्रभुपाद की
मन का उद्वेग शमन कर अपनाया मुझे
विजयी रहें सदा ऐसे प्रभु के दिव्य चरण
विजयी हों शिवराज के नूपुर मंडित विश्रुत चरण
जो काट देते हैं जन्म-मरण के बंधन अति लाघव से
बाह्यजनों के लिए दूर जो हैं
जय हो विजय हो नाथ के कुसुम निभ प्रशस्त चरण की।

(तिरुमुरै आठ -1 पंक्ति 1-8)

2. கரங்குவிவார் உள்மகிழுங் கோன்கழல்கள் வெல்க
சிரங்குவிவார் ஓங்குவிக்குஞ் சீரோன் கழல்வெல்க
ஈச னடிபோற்றி யெந்தை யடிபோற்றி
தேச னடிபோற்றி சிவன்சே வடிபோற்றி
நேயத்தே நின்ற நிமல னடிபோற்றி
மாயப் பிறப்பறுக்கும் மன்ன னடிபோற்றி
சீரார் பெருந்துறைநம் தேவ னடிபோற்றி
ஆராத இன்பம் அருளுமலை போற்றி ! 16

2. *करङ् कुविवार् उण्मगिऴुम् कोन्कऴल्गळ् वॆल्ग*
शिरङ् कुविवार् ओङ्गुविक्कुम् चीरोन् कऴल् वॆल्ग
ईशन् अडि पोट्रि ! ऎन्तै अडि पोट्रि
तेसन् अडि पोट्रि ! शिवन् चेवडि पोट्रि
नेयत्ते निन्ऱ निमलन् अडि पोट्रि
मायप्पिऱप्पऱुक्कुम् मन्नन् अडि पोट्रि
चीरार् पॆरुन्तुऱैत् तेवन् अडि पोट्रि
आराद इन्बम् अरुळु मलै पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ -1 पंक्ति 9-16)

முகவுரை मुहवुरै

3. சிவனவனென் சிந்தையுள் நின்ற அதனால்
அவனரு ளாலே அவன்தாள் வணங்கிச்
சிந்தை மகிழச் சிவபுரா ணந்தன்னை
முந்தை வினைமுழுதும் ஓய உரைப்பன்யான். 20

3. *शिवनवन् ऎन् चिन्तैयुळ् निन्ऱ अदनाल्*
अवनरुळाले अवन्ताळ् वणङ्गि
चिन्तैमगिऴच् चिवपुराणम् तन्नै
मुन्तै विनैमुऴुदुम् ओय उरैप्पनियान् ।

(तिरुमुऱै आठ -1 पंक्ति 17-20)

2. *विजयी हों प्रभु के दिव्य चरण*
जिन पर मुदित हैं
अंजलिबद्ध आराधकों के हृदय
विजयी हों महिमामय के पुण्य चरण
तुंग पद पाते हैं जिनसे प्रणत जन
नमन है ईश-चरण पर ! नमन है तात-चरण पर !
नमन है तेजोमय प्रभु के दिव्य चरण पर !
नमन है शिवराज के अरुणिम चरण पर !
नमन है स्नेह-मुदित विमल के निर्मल चरण पर !
नमन है जनन-मरण काटते नाथ-चरण पर !
नमन है श्रीयुत पेरुंतुरै अधीश के पुण्य चरण पर
नमन है अक्षय आनंद का अनुग्रह करते मंगल गिरि पर।

(तिरुमुरै आठ -1 पंक्ति 9-16)

आमुख

3. *विलसते हैं मंगलमय शिव मेरे मानस में*
इसलिए —
उनके अनुग्रह से नमन कर उनके चरण पर
मुदित हृदय से विस्तार कर रहा शिवपुराण
मिट जाएँ सकल संचित कर्म निश्शेष ही।

(तिरुमुरै आठ -1 पंक्ति 17-20)

4. கண்ணுதலான் தன்கருணைக் கண்காட்ட வந்தெய்தி
எண்ணுதற் கெட்டா எழிலார் கழலிறைஞ்சி
விண்ணிறைந்து மண்ணிறைந்து மிக்காய் விளங்கொளியாய்
எண்ணிறந் தெல்லை யிலாதானே நின்பெருஞ்சீர்
பொல்லா வினையேன் புகழுமா றொன்றறியேன்! 25

4. कण्णुदलान् तन्करुणैक् कण्काट्ट वन्दॅय्दि
एण्णुदर्कु ऍट्टा ऍऴिलार् कऴल् इऱैञ्जि
विण्णिऱैन्दु मण्णिऱैन्दु मिक्काय् विळङ्कॉळियाय्
ऍण्णिऱन्दॅल्लै इलादाने निन् पॅरुञ्चीर्
पॉल्लाविनैयेन् पुगऴुमाऱॉन्ऱऱियेन् !

(तिरुमुऱै आठ -1 पंक्ति 21-25)

பிறப்புகள் पिरप्पुहल्

5. புல்லாகிப் பூடாய்ப் புழுவாய் மரமாகிப்
பல்விருக மாகிப் பறவையாய்ப் பாம்பாகிக்
கல்லாய் மனிதராய்ப் பேயாய்க் கணங்களாய்
வல்லசுர ராகி முனிவராய்த் தேவராய்ச்
செல்லாஅ நின்றஇத் தாவர சங்கமத்துள்
எல்லாப் பிறப்பும் பிறந்திளைத்தேன் எம்பெருமான்! 31

5. पुल्लागिप् पूडाय् पुऴुवाय् मरमागिप्
पल्विरुगमागिप् पऱवैयायप् पाम्बागिक्
कल्लाय् मनिदरायप् पेयाय् गणङ्गळाय्
वल्लसुररागि मुनिवरायत् तेवरायच्
चॅल्लाअ निन्ऱ इत्तावर जंगमत्तुळ्
ऍल्लाप् पिऱप्पुम् पिऱन्दिळैत्तेन् ऍम्पॅरुमान् !

(तिरुमुऱै आठ -1 पंक्ति 26-31)

4. *भालनेत्र प्रभु के कृपा-कटाक्ष से*
पहुँच गया मैं प्रभु के दिव्य चरण पर
प्रकीर्तन कर रहा अकल्पनीय कलित चरण का
ओ ज्योतिराट् ! व्याप्त हो तुम अवनी और अंबर तल में
व्याप्त हो ज्योतिरूप में इनके परे भी
सीमातीत हो प्रभु
कैसे करे प्रकीर्तन तेरी निस्सीम महिमा का
क्षुद्र दुष्कर्म में निरत यह जन ?

(तिरुमुरै आठ - 1 पंक्ति 21-25)

जन्म-शृंखला

5. *मृदुल घास बना मैं लघु पौध बना*
कृमि-कीट बना फिर झाड़ बना
बना नाना प्रकार के पशु-पंछी और उरग भी
पाषाण बनकर फिर पिशाच-मानुष-भूतगण बना
बना शक्तिशाली असुर तपोमय मुनि और देव-गण
इस तरह ओ मेरे प्रभु !
जड़-चेतनमय जग में स्थावर जंगम रूप में
ले लेकर अनगिनत जन्म मैं
थक गया हूँ मेरे नाथ !

(तिरुमुरै आठ - 1 पंक्ति 26-31)

ஞானகுரு ज्ञानगुरु

6. மெய்யேஉன் பொன்னடிகள் கண்டின்று வீடுற்றேன்
உய்யஎன் உள்ளத்துள் ஓங்கார மாய்நின்ற
மெய்யா விமலா விடைப்பாகா வேதங்கள்
ஐயா! எனவோங்கி ஆழ்ந்தகன்ற நுண்ணியனே!

6. *मॅय्ये उन् पॉन्नडिगळ् कण्डिन्ऱु वीडुट्रेन्*
उय्य ऍन्नुळ्ळत्तुळ् ओङ्कारमाय् निन्ऱ
मॅय्या ! विमला विडैप्पागा वेदङ्गळ्
ऐया ! ऍनवोङ्गि आऴ्न्दगन्ऱ नुण्णियने !

(तिरुमुऱै आठ -1 पंक्ति 32-35)

7. வெய்யாய் தணியாய் இயமான னாம்விமலா
பொய்யா மினவெல்லாம் போயகல வந்தருளி
மெய்ஞ்ஞான மாகி மிளிர்கின்ற மெய்ச்சுடரே
எஞ்ஞானம் இல்லாதேன் இன்பப் பெருமானே
அஞ்ஞானம் தன்னை அகல்விக்கும் நல்லறிவே!

7. *वॅय्याय् तणियाय् इयमाननाम् विमला*
पॉय्यायिन ऍल्लाम् पोयगल वन्दरुळि
मॅय्ञ्ञानम् आगि मिळिर्गिन्ऱ मॅय्च्चुडरे
ऍञ्ञानम् इल्लादेन् इन्बप्पॅरुमाने
अञ्ञानम् तन्नै अगल्विक्कु नल्लऱिवे !

(तिरुमुऱै आठ -1 पंक्ति 36-40)

ज्ञानगुरु

6. *सत्य ही मुक्त हो गया मैं बंधन से*
आज पाकर तुम्हारे पुण्य चरण
ओ सत्य स्वरूप ! बसे हो तुम मेरे मानस में ओंकार बनकर
ताकि मैं उद्धार पा जाऊँ
हे अमल-विमल ! वृषभारूढ़ प्रभु
'हे नाथ !' कहकर पुकारते हैं चारों वेद
मेरे मन में सूक्ष्म रूप में बसे प्रभु
तुम व्याप्त हो तुंग से उत्तुंग होकर नभ में
गहिर से गहिरतर होकर अतल-पाताल में
बृहत् से बृहत् तुम अणु से भी अणीयान हो।

(तिरुमुरै आठ - 1 पंक्ति 32-35)

7. *तप्त अंगार की ऊष्मा हो हिम निभ शीतल भी*
यज्ञ के यजमान तुम सबके प्रभु हो
हे विमल-अमल ! तुम्हारे आने से
हट जाते हैं मिथ्या-मृषा के झाड़-झंखाड़
ज्योतिस्वरूप ! विलस रहो सत्यज्ञान बन
आनंदमय प्रभु ! आए हो
अनुगृहीत करने इस ज्ञानहीन को
सत्य-बोधक गुरु ! दूर करो सकल अज्ञान।

(तिरुमुरै आठ - 1 पंक्ति 36-40)

ஐந்து தொழில் ऐन्दु तोऴिल्

8. ஆக்கம் அளவிறுதி யில்லாய் அனைத்துலகும்
ஆக்குவாய் காப்பாய் அழிப்பாய் அருள்தருவாய்
போக்குவாய் என்னைப் புகுவிப்பாய் நின்தொழும்பில்
நாற்றத்தின் நேரியாய் சேயாய் நணியானே
மாற்றம் மனங்கழிய நின்ற மறையோனே
கறந்தபால் கன்னலொடு நெய்கலந்தாற் போலச்
சிறந்தடியார் சிந்தனையுள் தேனூறி நின்று
பிறந்த பிறப்பறுக்கும் எங்கள் பெருமான்! 48

8. आक्क मनविरुदि यिल्लाय् अनैत्तुलगुम्
आक्कुवाय् काप्पायळिप्पाय् अरुळ् तरुवाय्
पोक्कुवायॅन्नैप् पुगुविप्पाय् निन् तॊळु म्बिल्
नाट्रत्तिन् नेरियाय् चेयाय् नणियाने
माट्रम् मनम् कळिय निन्ऱ मरैयोने
करन्द पाल् कन्नलॊडु नॅय् कलन्दार् पोलच्
चिरन्दरियार् चिन्तनैयुळ् तेनूऱि निन्ऱु
पिरन्द पिरप्परुक्कुम् ऍङ्गळ् पॆरुमान्।

(तिरुमुरै आठ - 1 पंक्ति 41-48)

पंच-कर्म

8. *प्रभो ! आदि मध्यांत रहित हो तुम*
सकल ब्रह्मांड के सृजनकर्ता
पालक और संहारक भी, यही नहीं
बरसाकर अनुग्रह तन्मय बनाते हो जीवों को
काटकर कर्म-बंधन मेरा लगाते हो निज सेवकाई में
नाथ ! तुम पुष्प में सुवास हो
प्रणत न होते उनके लिए दूर दूर तुम
नमन करने वालों के हित अति निकट हो
रहस्यमय तुम शब्द और मन के अतीत हो
कवोष्ण दुग्ध में इक्षुरस और घृत मिला ज्यों
भक्त-हृदय में चिंतन में भाव में
मधुरिम लगते हो मधुसम मधुमय !
काट देते हो जनन-मरण की परंपरा को।

(तिरुमुऱै आठ - 1 पंक्ति 41-48)

9. நிறங்களோ ரைந்துடையாய் விண்ணோர்க ளேத்த
மறைந்திருந்தாய் எம்பெருமான் வல்வினையேன்தன்னை
மறைந்திட மூடிய மாய இருளை
அறம்பாவம் என்னும் அருங்கயிற்றால் கட்டிப்
புறந்தோல் போர்த்தெங்கும் புழுஅழுக்கு மூடி
மலஞ்சோரும் ஒன்பது வாயிற் குடிலை
மலங்கப் புலனைந்தும் வஞ்சனையைச் செய்ய 55

9. *निऱङ्गळोरैन्दुडैयाय् विण्णोर्गळेत्त*
मऱैन्दिरुन्दाय् ऍम्पॅरुमान् वल्विनैयेन् तन्नै
मऱैन्दिड मूडिय माय इरुळै
अऱम् पावम् ऍन्नुम् अरुङ् कयिट्राल् कट्टिप्
पुऱन्तोल् पोर्त्तॅङ्गुम् पुऴु अऴुक्कु मूडि
मलम् चोरुमॉन्पदु वायिऱ् कुडिलै
मलङ्गप् पुलनैन्दुम् वञ्जनैयैच् चॅय्य

(तिरुमुऱै आठ -1 पंक्ति 49-55)

10. விலங்கு மனத்தால் விமலா உனக்குக்
கலந்தஅன் பாகிக் கசிந்துள் ளுருகும்
நலந்தான் இலாத சிறியேற்கு நல்கி
நிலந்தன்மேல் வந்தருளி நீழ்கழல்கள் காட்டி
நாயிற் கடையாய்க் கிடந்த அடியேற்குத்
தாயிற் சிறந்த தயாவான தத்துவனே ! 61

10. *विलङ्गु मनत्ताल् विमला उनक्कु*
कलन्द अन्बागिक् कशिन्दुळ्ळुरुगुम्
नलन्तानिलाद चिऱियेर्कु नल्गि
निलन्तन्मेल् वन्दरुळि नीऴ्कऴल्गळ् काट्टि
नायिऱ् कडैयाय्क् किडन्द अडियेर्कुत्
तायिऱ् चिऱन्द दयावान तत्तुवने !

(तिरुमुऱै आठ -1 पंक्ति 56-61)

9. *पंचरंगी तत्त्वमय हो प्रभु !*
ढूँढ रहे हैं स्तुतिरत देवगण किंतु तुम
अदृश्य हो उनके लिए
आए हो अनुग्रहपूर्वक मेरे उद्धार के लिए
मायामय तमस से आवृत मैं
पड़ा रहा निज को भूला
बंधकर पाप-पुण्य के पाश से
कृमि कीट का एक पुंजीभूत संचय
ढका हुआ है खाल से
नव-द्वार से युक्त कुटिया
निःसृत होता है मल निरंतर
वंचक पंचेंद्रिय सदा ठग रहे।

(तिरुमुरै आठ - 1 पंक्ति 49-55)

10. *पशुतुल्य मन भूला था जगत् की माया में*
बरस पड़ा तुम्हारा अनुग्रह
आसक्त हुआ मन तेरे चरण-कमल पर
पगकर प्रेम में पिघलता गया
और बन गया सु-मन
अहह ! तुम्हारी करुणा ! आ गए तुम धरणीतल पर
दर्शन दिए पुण्यमय निज दीर्घ चरण
कृपा करते हुए इस लघुजन पर
श्वान से भी गए बीते दास पर
बरसाई माँ से भी अधिक दया-ममता
तत्त्वस्वरूप ! बलिहारी हूँ तुम पर।

(तिरुमुरै आठ - 1 पंक्ति 56-61)

துதி तुति

11. மாசற்ற சோதி மலர்ந்த மலர்ச்சுடரே
தேசனே தேனார் அமுதே சிவபுரனே
பாசமாம் பற்றறுத்துப் பாரிக்கும் ஆரியனே
நேச அருள்புரிந்து நெஞ்சில்வஞ் சங்கெடப்
பேராது நின்ற பெருங்கருணைப் பேராறே! 66

11. मासट्र जोति मलर्न्द मलर्च्चुडरे
तेसने तेनार् अमुदे शिवपुरने
पाशमाम् पट्ररुत्तुप् पारिक्कुमारियने
नेश अरुळ् पुरिन्दु नेञ्जिल् वञ्जम् कॅडप्
पेरादु निन्ऱ् पॅरुङ्करुणैप् पेरारे !

(तिरुमुरै आठ -1 पंक्ति 62-66)

12. ஆரா அமுதே அளவிலாப் பெம்மானே
ஓராதார் உள்ளத் தொளிக்கும் ஒளியானே
நீராய் உருக்கியென் ஆருயிராய் நின்றானே
இன்பமுந் துன்பமும் இல்லானே உள்ளானே
அன்பருக் கன்பனே யாவையுமாய் அல்லையுமாம்
சோதியனே துன்னிருளே தோன்றாப் பெருமையனே
ஆதியனே அந்தம் நடுவாகி அல்லானே! 73

12. आरा अमुदे अळविलाप् पॅम्माने
ओरादार् उळ्ळत्तॉळिक्कुम् ऑळियाने
नीराय् उरुक्कि ऍन्नारुयिराय् निन्राने
इन्बमुम् तुन्बमुम् इल्लाने उळ्ळाने
अन्बरुक्कन्बने यावैयुमाय् अल्लैयुमाम्
चोतियने तुन्निरुळे तोन्राप् पॅरुमैयने
आदियने अन्त नडुवागि अल्लाने !

(तिरुमुरै आठ -1 पंक्ति 67-73)

स्तुति

11. *निर्मल ज्योतिराट् ! पूर्ण विकसित ज्योति-सुमन !*
काटकर सकल बंध-पाश
मुझे अपनाते मेरे देशिक-गुरो !
बरसाकर स्नेहमय अनुग्रह
दूर करते हो मन का सकल मल
और फिर बसे हो हृदय से हटे बिना
असीम करुणा के महानद !

(तिरुमुरै आठ -1 पंक्ति 62-66)

12. *ओ आनंदामृत, जिसके पान से*
अघाते नहीं कभी ! अपरिमेय परमपुरुष !
ज्योतिर्मय तुम छिपे रहते हो
स्मरण से विमुख जनों से,
पिघला कर मेरे मन को
बसे हो प्राणों में प्राण बनकर
परे हो तुम सुख-दुःख के द्वंद्व से, किंतु
जग-स्वरूप होने से इनसे युत हो
आराधकों के परम प्रिय हो
सर्वस्वरूप हो युगपत् अरूप हो
ज्योतिस्वरूप तुम निबिड़ तमोमय भी
अद्भुत महिमा के धनी ! तुम
आदि-मध्य-अंत हो इनसे परे भी।

(तिरुमुरै आठ -1 पंक्ति 67-73)

13. ஈர்த்தென்னை யாட்கொண்ட எந்தை பெருமானே
கூர்த்தமெய்ஞ் ஞானத்தாற் கொண்டுணர்வார்
தங்கருத்தின்
நோக்கரிய நோக்கே நுணுக்கரிய நுண்ணுணர்வே
போக்கும் வரவும் புணர்வுமிலாப் புண்ணியனே ! 77

13. इऱ्त्तॆन्नै आट्कॊण्ड ऎन्तै पॆरुमाने
कूऱ्त्त मॆय्ञ्ञानत्ताऱ् कॊण्डुणर्वाऱ् तम् करुत्तिन्
नोक्करिय नोक्के नुणुक्करिय नुण्णुणर्वे
पोक्कुम् वरवुम् पुणर्वुमिलाप् पुण्णियने !

(तिरुमुऱै आठ - 1 पंक्ति 74-77)

14. காக்குமெங் காவலனே காண்பரிய பேரொளியே
ஆற்றின்ப வெள்ளமே அத்தாமிக் காய்நின்ற
தோற்றச் சுடரொளியாய்ச் சொல்லாத நுண்ணுணர்வாய்
மாற்றமாம் வையகத்தின் வெவ்வேறே வந்தறிவாம்
தேற்றனே தேற்றத் தெளிவேயென் சிந்தனையுள்
ஊற்றான உண்ணா ரமுதே உடையானே ! 83

14. काक्कुमॆङ् कावलने काण्परिय पेरॊळिये
आट्रिन्ब वॆळ्ळमे अत्ता मिक्काय् निन्ऱ
तोट्रच्चुडरॊळियाय्च् चॊल्लाद नुण्णुणर्वाय्
माट्रमाम् वैयगत्तिन् वॆव्वेऱे वन्दऱिवान्
तेट्रने तेट्रत् तॆळिवे ऎॅन् चिन्तनैयुळ्
उट्रान उण्णारमुदे उडैयाने !

(तिरुमुऱै आठ - 1 पंक्ति 78-83)

13. मेरे तात ! स्वामी ! तुमने
खींच लिया अपनाया मुझे स्नेह वात्सल्य से
अद्‌भुत-अपूर्व दृश्य !
ज्ञानियों के अंतश्चक्षु में जो
साक्षात्कृत है सूक्ष्म अनुभूति रूप में
परिपूर्ण सर्वव्यापी पुण्यपुरुष !
कहीं गमनागमन नहीं संयोग नहीं
तुम्हारे लिए।

(तिरुमुरै आठ -1 पंक्ति 74-77)

14. मेरे परिपालक प्रभु ! अलौकिक ज्योतिःपुंज !
आनंद के अमिय धार ! मेरे तात ! तात से भी वरेण्य
शाश्वत ज्ञान-प्रकाश ! वाणी के लिए अगोचर अनुभव !
क्षणक्षण बदलते विश्व में शाश्वत ज्ञान-बोध !
स्वच्छतम प्रज्ञान !
मेरे अंतर में फूटे आनंद के अमृत-उत्स !
मेरे प्रभु ! स्वामी !

(तिरुमुरै आठ -1 पंक्ति 78-83)

விண்ணப்பம் विण्णप्पम्

15. வேற்று விகார விடக்குடம்பி னுட்கிடப்ப
ஆற்றேனெம் ஐயா அரனேயோ என்றென்று
போற்றிப் புகழ்ந்திருந்து பொய்கெட்டு மெய்யானார்
மீட்டிங்கு வந்து வினைப்பிறவி சாராமே
கள்ளப் புலக்குரம்பை கட்டழிக்க வல்லானே
நள்ளிருளில் நட்டம் பயின்றாடு நாதனே! 89

15. वेट्रु विकार विडक्कुडम्बिन् उळ्किडप्प
आट्रेन् ऍम्मैया, अरनेयो ऍन्ऱॆन्ऱु
पोट्रिप् पुगऴ्न्दिरुन्दु पॉय्कॅट्टु मॅय्यानार्
मीट्टिङ्गु वन्दु विनैप्पिऱवि चारामे
कळ्ळप्पुलक् कुरम्बैक् कट्टळिक्क वल्लाने !
नळ्ळिरुळिल् नट्टम् पयिन्ऱाडु नातने !

(तिरुमुऱै आठ -1 पंक्ति 84-89)

16. தில்லையுட் கூத்தனே தென்பாண்டி நாட்டானே
அல்லற் பிறவி அறுப்பானே ஓவென்று
சொல்லற் கரியானைச் சொல்லித் திருவடிக்கீழ்ச்
சொல்லிய பாட்டின் பொருளுணர்ந்து சொல்லுவார்
செல்வர் சிவபுரத்தி னுள்ளார் சிவனடிக்கீழ்ப்
பல்லோரும் ஏத்தப் பணிந்து. 95

16. तिल्लैयुट् कूत्तने तॅन्पाण्डि नाट्टाने
अल्लर् पिऱवि अरुप्पाने ओवॅन्ऱु
चॉल्लर्करियानैच् चॉल्लित् तिरुवडिक्कीऴ्
चॉल्लिय पाट्टिन् पॉरुळुणर्न्दु चॉल्लुवार्
चॅल्वर् शिवपुरत्तिनुळ्ळार् शिवनडिक्कीऴ्प्
पल्लोरुम् एत्तप् पणिन्दु ।

(तिरुमुऱै आठ -1 पंक्ति 90-95)

निवेदन

15. *सह न पाऊँगा अब*
अवस्थानुरूप विकृत होते
शरीर में पड़ा पड़ा छीजना
संत जनों ने भांति-भांति से
हमारे तात ! प्रभु ! हर हर !
पुकारते हुए स्तुतिगान किया
तजकर मायामय देह शिवमय शिवस्वरूप हुए
समर्थ हो तुम मेरे बंध-पाश खोलने में
ताकि फिर से यहाँ आकर न फँसूँ मैं
कर्मपाश में, जनन-मरण के चक्र में
अपनाओ मुझे ! शिवमय बना दो
घन-तिमिर में नृत्यरत मेरे नाथ !

(तिरुमुरै आठ - 1 पंक्ति 84-89)

16. *तिल्लै चिदंबरम् में नर्तित नटराज राज !*
दक्षिण पांड्य देश के अधीश !
रक्षा की पुकार मचाते हुए
जो गहते हैं तुम्हारे दिव्य चरण
व्यथापूर्ण जन्मबंधन कट जाता है उनका
वाचामगोचर प्रभु का
स्तवन जो करते हैं भांति-भांति के स्तोत्र से
अवगाहन करते हैं बोल के भावार्थ में
रमते हैं भाव की अनुभूति में
प्रवेश पाते हैं ध्रुव ही शिवपुर में आमोद से
पहुँचकर सानंद रमते हैं
शिवचरण में आराधित होकर शिवगणों से।

(तिरुमुरै आठ - 1 पंक्ति 90-95)



विविध अंग्रेजी अनुवादों से उद्धृत अंश; हिन्दी अनुवाद के संदर्भ में तुलनात्मक विश्लेषण हेतु -

Select English translation from various translators quoted for comparative analysis.

स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

Hail, the five letters ! Hail, foot of the Lord !
Hail, foot of Him Who not for an instant quits my heart !
Hail, foot of the Guru-pearl that rules in Gōgaṛi !
Hail, foot of Him, Who becomes, abides, draws near as the Āgamam !
Hail, foot of Him, the One, the Not-One, and the King !

Victory to the foot of the King, who soothed my soul's unrest, and made me His !
Victory to the jewelled feet of Piññagan, who severs continuity of birth !
Victory to the flower-foot of Him Who is far from those without !
Victory to the anklets of the King, rejoicing 'mid those that fold adoring hands !
Victory to the anklets of the glorious One, who uplifts those that bow the head !
Praise to the foot of Īçan ! Praise to my Father's foot !
Praise to the foot of the Teacher ! Praise to Çivan's roseate foot !
Praise to the foot of the Stainless, who in love stood near !
Praise to the foot of the King, who cuts off delusive birth !
Praise to the foot of glorious Perun-turraï's God !
Praise to the Mount, in grace affording pleasures that cloy not !

Because He, Çivan, within my thought abides,
By His grace alone, bowing before His feet,
Whith joyous thought, Çivan's 'Ways of Old' I 'll tell,
That thus my former 'deeds' may wholly pass.

I came, attained the grace the 'Brow-eyed' showed,
Adored the beauteous foot by thought unreached.
O Thou, Who fill'st the heaven, Who fill'st the earth, art manifested light,
Transcending thought, Thou boundless One ! Thy glory great
I, man of evil 'deeds,' know not the way to praise !

Grass was I, shrub was I, worm, tree,
Full many a kind of beast, bird, snake,
Stone, man, and demon, 'Midst Thy hosts I served.
The form of mighty Asuras, ascetics, gods I bore.
Within these immobile and mobile forms of life,
In every species born, weary I've grown, great Lord !

Truly, seeing Thy golden feet this day, I've gained release.
O Truth ! as the Ōṅgāram dwelling in my soul,
That I may 'scape. O spotless One ! O Master of the bull !
Lord of the Vēdas ! Rising, sinking, spreading, subtile One !
Thou art the heat ! and Thou the cold ! the Master Thou, O spotless One !
Thou cam'st in grace, that all things false might flee,
True Wisdom, gleaming bright in splendour true,
To me, void of all wisdom, blissful Lord !
O Wisdom fair, causing unwisdom's self to flee far off !

Thou know'st no increase, measure, end ! All worlds
Thou dost create, protect, destroy, enrich with grace,
Release. Thou causest me to enter 'mid Thy servant band.
More subtile Thou than fragrance. Thou'rt afar, art near.
Thou art the Mystic word transcending word and thought.
As when are mingled milk, sweet juice of cane and butter,
Thou dost distil, like honey, in the thought of glorious devotees,
And cuttest off the continuity of births – our mighty One !

Lines : 1 - 48

2

கீர்த்தித் திருவகவல்

कीर्ति तिरुअगवल्

சிவனது திருவருட்புகழ்ச்சி முறைமை

शिवनदु तिरुवरुट्पुहऴ्च्चि मुऱ़ैमै

17. *தில்லை மூதூர் ஆடிய திருவடி*
பல்லுயி ரெல்லாம் பயின்றன னாகி
எண்ணில் பல்குணம் எழில்பெற விளங்கி
மண்ணும் விண்ணும் வானோ ருலகும்
துன்னிய கல்வி தோற்றியும் அழித்தும்
என்னுடை யிருளை ஏறத் துரந்தும் 6

17. *तिल्लै मूदूऱ् आडिय तिरुवडि*
पल्लुयिऱ् ऍल्लाम् पयिन्ऱननागि
ऍण्णिल् पल्गुणम् ऍऴिल्पॆऱ विळङ्गि
मण्णुम् विण्णुम् वानोरुलगुम्
तुन्निय कल्वि तोट्रियुमऴित्तुम्
ऍन्नुडै इरुळै एऱत्तुरन्दुम्

(तिरुमुऱ़ै आठ -2 पंक्ति 1-6)

2

शिव की कीर्ति

शिवानुग्रह की प्रशस्ति

17. *प्राक्तन तिल्लै नगरी में*
नर्तित दिव्य चरण
रमते हैं प्रभु अगणित जीवराशि में आमोद से
प्रकट करते हुए नव-नव सौंदर्य
अगणित गुणगण
अवनी में अंबर में दिव्यलोकों में
लीलामय ईश की कलाएँ
प्रकट होती हैं तिरोभूत होती हैं
किंतु जीवों का अज्ञान दूर कर शिवमय बनाना
सुनियोजित कार्य है प्रभु का।

(तिरुमुऱै आठ - 2 पंक्ति 1-6)

18. அடியா ருள்ளத் தன்புமீ தூரக்
குடியாக் கொண்ட கொள்கையுஞ் சிறப்பும்
மன்னு மாமலை மகேந்திர மதனிற்
சொன்ன ஆகமம் தோற்றுவித் தருளியும்
கல்லா டத்துக் கலந்தினி தருளி
நல்லா ளோடு நயப்புறவு எய்தியும் 12

18. अडियार् उळ्ळत्तन्बु मीदूरक्
कुडियाक्कॉण्ड कॉळ्गैयुम् चिऱप्पुम्
मन्नुमामलै महेन्दिरमदनिऱ्
चॉन्न आगमम् तोट्रुवित्तरुळियुम्
कल्लाडत्तुक् कलन्दिनिदरुळि
नल्लाळोडु नयप्पुऱ् ऍय्दियुम्

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 7-12)

19. பஞ்சப் பள்ளியிற் பான்மொழி தன்னொடும்
எஞ்சா தீண்டும் இன்னருள் விளைத்தும்
கிராத வேடமொடு கிஞ்சுக வாயவள்
விராவு கொங்கை நற்றடம் படிந்தும்
கேவேட ராகிக் கெளிறது படுத்தும்
மாவேட் டாகிய ஆகமம் வாங்கியும்
மற்றவை தம்மை மகேந்தி ரத்திருந்து
உற்றஐம் முகங்க ளாற்பணித் தருளியும் 20

19. पञ्चप् पळ्ळियिऱ् पान्मॉऴि तन्नॉडुम्
एञ्जादीण्डुम् इन्नरुळ् विळैत्तुम्
किरात वेडमॉडु किंचुक वायवळ्
विरावु कॉङ्गै नट्रडम् पडिन्दुम्
केवेटरागिक् कॅळिऱदु पडुत्तुम्
मावेट्टागिय आगमम् वाङ्गियुम्
मट्रवै तम्मै महेन्दिरत्तिइरुन्दु
उट्र ऐम्मुगङ्गळाऱ् पणिन्दरुळियुम्।

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 13-20)

18. *भक्तों के प्रति प्रभु का है असीम प्रेम*
भक्त-हृदय को बना लिया निज आवास
वरेण्य है प्रभु का यह प्रेम-सिद्धांत
मंगलमय है यह महेन्द्र-गिरि
जहाँ विराजते हुए विरचित किया और
विस्तार किया प्रभु ने आगम-शास्त्र का
स्पृहणीय है कल्लाडम् का धाम भी
जहाँ प्रकट हुए नाथ
उमामहेश्वरी के साथ आमोद से
अनुगृहीत किया निज भक्तों को।

(तिरुमुऱै आठ - 2 पंक्ति 7-12)

19. *दुग्ध सम मधुबैनी उमा के संग*
विराजे प्रभु पंचपळ्ळी धाम में मोद से
बरसाकर सकल मंगल अमोघ रूप से
प्रभु ने धर लिया किरात वेश
निमग्न हुए बिंबाधरा के
सघन पयोधर मध्य में
प्रकट हुए प्रभु केवट बनकर
जाल फेंककर पकड़ा 'केळिरु' मत्स्य
जिसके मुँह से उद्धार किया आगमशास्त्र
तदनंतर विराजकर महेन्द्रगिरि में
व्याख्यायित किया आगमशास्त्रों को
अपने पाँचों मुखों से विस्तार से।

(तिरुमुऱै आठ - 2 पंक्ति 13-20)

20. நந்தம் பாடியில் நான்மறை யோனாய்
அந்தமில் ஆரிய னாயமர்ந்த தருளியும்
வேறுவே றுருவும் வேறுவே றியற்கையும்
நூறுநூ றாயிரம் இயல்பின தாகி
ஏறுடை ஈசனிப் புவனியை உய்யக்
கூறுடை மங்கையுந் தானும் வந்தருளிக்
குதிரையைக் கொண்டு குடாநா டதன்மிசைச்
சதுர்படச் சாத்தாய்த் தானெழுந் தருளியும் 28

20. नन्तमपाडियिल् नान्मऱैयोनाय्
अन्तमिल् आरियनाय् अमर्न्दसळियुम्
वेऱुवेऱुरुवम् वेऱुवेऱियऱ्कैयुम्
नूऱुनूऱायिरम् इयल्बिनदागि
एऱुडै ईशन् इप्पुवनियै उय्यक्
कूऱुडै मङ्गैयुम् तानुम् वन्दरुळि
कुदिरैयैक् कॉण्डु कुडनाडदन्मिशैच्
चतुर्पडच् चात्ताय् तानॅऴुन्दरुळियुम्।

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 21-28)

21. வேலம் புத்தூர் விட்டே றருளிக்
கோலம் பொலிவு காட்டிய கொள்கையும்
தற்பண மதனிற் சாந்தம் புத்தூர்
விற்பொரு வேடற் கீந்த விளைவும்
மொக்கணி யருளிய முழுத்தழல் மேனி
சொக்க தாகக் காட்டிய தொன்மையும்
அரியொடு பிரமற் களவறி யொண்ணான் 35

21. वेलम्पुत्तूर् विट्टेऱरुळिक्
कोलम् पॉलिवु काट्टिय कॉळ्गैयुम्
तर्प्पण मदनिऱ् चान्तम् पुत्तूर्
विऱ्पॉरु वेडऱ्कीन्द विळैवुम्
मॉक्कणि अरुळिय मुऴुत्तऴल् मेनि
चॉक्कदागक् काट्टिय तॉन्मैयुम्
अरियॉडु पिरमर्कु अळवरि ऑण्णा।

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 29-35)

20. *समागत हुए प्रभु नन्तमपाड़ी धाम में*
चतुर्वेद विशारद द्विजरूप में
विराजे हैं यहाँ अजर अमर गुरुरूप में
अपरंपार है महिमा शिवनाथ की
धर लेते हैं बहुविध रूप बहुविध वेश
बहुसहस्त्र गुण गणों के संग
विस्तार करते हैं निज लीला का
वृषभारूढ़ प्रभु विश्वकल्याण के हित
देकर वामभाग प्रिया को अति प्रीति से
सकल कला में वल्लभ हैं प्रभु
प्रकट हुए अश्व के कुशल प्रशिक्षक रूप में
एकदा पांड्य सभा में
संग में थे पश्चिम देश के अगणित अश्व।

(तिरुमुरै आठ -2 पंक्ति 21-28)

21. *वेलम्पुत्तूर धाम में*
तजकर निज वृषवाहन
भव्य रूप में शोभायमान हैं
शान्तमपुत्तूर धाम में
दर्शाई दर्पण में निज छवि
धनुर्धारी व्याधरूपी पार्थ को
मोक्कणीश्वर धाम में
विष्णु-विरिंचि के लिए अगम्य प्रभु
आद्यंतविहीन-ज्योतिःस्तंभ बने थे
यह प्राक्तन लीला है प्रभु की।

(तिरुमुरै आठ -2 पंक्ति 29-35)

22. நரியைக் குதிரை யாக்கிய நன்மையும்
ஆண்டுகொண் டருள அழகுறு திருவடி
பாண்டியன் தனக்குப் பரிமா விற்று
ஈண்டு கனகம் இசையப் பெறாஅது
ஆண்டான் எங்கோன் அருள்வழி யிருப்பத்
தூண்டு சோதி தோற்றிய தொன்மையும்
அந்தண னாகி ஆண்டுகொண் டருளி
இந்திர ஞாலங் காட்டிய இயல்பும் 43

22. नरियैक्कुदिरै आक्किय नन्मैयुम्
आण्डुकॊण्डरुळ अऴगुरु तिरुवडि
पाण्डियन् तनक्कुप् परिमा विट्रु
ईण्डु कनकम् इसैयप् पॆराअदु
आण्डान् ऍङ्कोन् अरुळ्वऴि इरुप्पत्
तूण्डु चोति तोट्रिय तॊन्मैयुम्
अन्तणनागि आण्डुकॊण्डरुळि
इन्दिर ञालम् काट्टिय इयल्बुम्

(तिरुमुऱै आठ - 2 पंक्ति 36-43)

23. மதுரைப் பெருநன் மாநக ரிருந்து
குதிரைச் சேவக னாகிய கொள்கையும்
ஆங்கது தன்னில் அடியவட் காகப்
பாங்காய் மண்சுமந் தருளிய பரிசும்
உத்தர கோச மங்கையு ளிருந்து
வித்தக வேடங் காட்டிய இயல்பும்
பூவண மதனிற் பொலிந்திருந் தருளித்
தூவண மேனி காட்டிய தொன்மையும் 51

23. मदुरैप् पॆरुनन्मागर् इरुन्दु
कुदिरैच् चेवगनागिय कॊळ्गैयुम्
आङ्गदु तन्निल् अडियवट्कागप्
पाङ्गाय् मण् चुमन्तरुळिय परिसुम्
उत्तरकोशमङ्गैयुळ् इरुन्दु
वित्तग वेडम् काट्टिय इयल्बुम्
पूवणम् अदनिर् पॊलिन्दिरुन्दरुळित्
तूवण मेनि काट्टिय तॊन्मैयुम्

(तिरुमुऱै आठ - 2 पंक्ति 44-51)

22. *अपरंपार है प्रभु की महिमा*
सियारों को खेल खेल में बना दिया अश्व
सुभग सुंदर चरण प्रभु
आए थे पांड्य को अनुगृहीत करने को
स्वीकार नहीं किया पांड्यराज से
कनक का अंबार–अश्व का मूल्य
पांड्यराज को धर्ममार्ग में
स्थिर करने के हित–उसे
दर्शाया जाज्वल्मान ज्योति-स्वरूप
द्विज रूप में आकर
अपनाया मुझे–स्पष्ट किया
इंद्रजाल सम मृषा है जग।

(तिरुमुरै आठ -2 पंक्ति 36-43)

23. *प्रकट हुए प्रभु महानगरी मदुरै में*
चतुर अश्वपालक रूप में
इसी धाम में 'वंती' भक्तिन् के हित
रची थी माटी ढोने की लीला
प्रशस्त है उत्तरकोशमंगै धाम
विराजे हैं प्रभु ज्ञानाचार्य रूप में
पुण्यमय पूवणम् का दिव्यधाम
प्रकट हुए जहाँ प्रभु
पावन प्रकाश-रूप में।

(तिरुमुरै आठ -2 पंक्ति 44-51)

24. வாத வூரினில் வந்தினி தருளிப்
பாதச் சிலம்பொலி காட்டிய பண்பும்
திருவார் பெருந்துறைச் செல்வனாகிக்
கருவார் சோதியிற் கரந்த கள்ளமும்
பூவலம் அதனிற் பொலிந்தினி தருளிப்
பாவ நாச மாக்கிய பரிசுந்
தண்ணீர்ப் பந்தர் சயம்பெற வைத்து
நன்னீர்ச் சேவக னாகிய நன்மையும் 59

24. वादवूरिनिल् वन्दिनिदरुळिप्
पादच्चिलम्बॊलि काट्टिय पण्बुम्
तिरुवार् पॆरुन्तुऱैच् चॆल्वनागिक्
करुवार् चोतियिऱ् करन्द कळ्ळमुम्
पूवलम् अदनिऱ् पॊलिन्दिनिदरुळिप्
पावनाशम् आक्किय परिसुम्
तण्णीर् पन्दल् चयम्पॆऱ वैत्तु
नन्नीर्च् चेवगन् आगिय नन्मैयुम्

(तिरुमुऱै आठ - 2 पंक्ति 52-59)

25. விருந்தின னாகி வெண்கா டதனில்
குருந்தின் கீழன் றிருந்த கொள்கையும்
பட்ட மங்கையிற் பாங்கா யிருந்தங்கு
அட்டமா சித்தி அருளிய அதுவும்
வேடுவ னாகி வேண்டுருக் கொண்டு
காடது தன்னிற் கரந்த கள்ளமும்
மெய்க்காட் டிட்டு வேண்டுருக் கொண்டு
தக்கா னொருவ னாகிய தன்மையும் 67

25. विरुन्दिननागि वॆण्काडदनिऱ्
कुरुन्दिन् कीऴ् अन्ऱिरुन्द कॊळ्गैयुम्
पट्टमङ्गैयिऱ् पाङ्गाय् इरुन्दङ्गु
अट्टमासित्ति अरुळिय अदुवुम्
वेडुवन् आगि वेण्डुरुक् कॊण्डु
काडदु तन्निऱ् करन्द कळ्ळमुम्
मॆय्क्काट्टिट्टु वेण्डुरुक् कॊण्डु
तक्कान् ऒरुवन् आगिय तन्मैयुम्

(तिरुमुऱै आठ - 2 पंक्ति 60-67)

24. *वादवूर में प्रकट हुए जब*
क्वणित हुआ नूपुर का मंजु निनाद
पॅरुन्तुऱै में पधारे ज्ञानाचार्य रूप में
आगमन का प्रयोजन पूर्ण हुआ जब
विलीन हुए प्रभु गर्भगृह की ज्योति में
पावन है पूवलम् का दिव्य धाम
महिमामंडित प्रभु ने
अघ-नाश किया था
समर भूमि में पांड्य-विजय हित
कृपापूर्वक खोला प्याऊ
बने सेवक जल पिलाने हेतु।

(तिरुमुऱै आठ - 2 पंक्ति 52-59)

25. *एक बार पधारे प्रभु*
अतिथि बनकर श्वेतारण्य धाम में
विराजे थे कुरुन्द-तरु तले गांभीर्य से
फिर एक बार पधारे
पट्टमंगै के प्रशस्त धाम में
विराजकर राजकीय आसन पर
व्याख्या की अष्टमहासिद्धियों की
वांछित रूप लेने में पटु हैं
व्याध रूप में प्रकट हुए वन में
फिर अंतर्धान हुए उसी वन में
सत्य के निदर्शन के हित
प्रकट हुए प्रभु
अवसेरोचित रूप में।

(तिरुमुऱै आठ - 2 पंक्ति 60-67)

26. ஓரியூரின் உகந்தினி தருளிப்
பாரிரும் பாலக னாகிய பரிசும்
பாண்டூர் தன்னில் ஈண்ட இருந்தும்
தேவூர்த் தென்பால் திகழ்தரு தீவிற்
கோவார் கோலங் கொண்ட கொள்கையும்
தேனமர் சோலைத் திருவா ரூரில்
ஞானந் தன்னை நல்கிய நன்மையும் 74

26. ओरियूरिन् उगन्दिनिदरुळिप्
पारिरुम् पालगन् आगिय परिसुम्
पाण्डूर् तन्निल् ईण्ड इरुन्दुम्
तेवूर्त् तॆन्पाल्त् तिगऴ्तरु नीविल्
कोवार् कोलम् कॊण्ड कॊळ्गैयुम्
तेनमर्च् चोलैत् तिरु आरूरिन्
ञानम् तन्नै नल्गिय नन्मैयुम्।

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 68-74)

27. இடைமரு ததனில் ஈண்ட இருந்து
படிமப் பாதம் வைத்தஅப் பரிசும்
ஏகம் பத்தில் இயல்பா யிருந்து
பாகம் பெண்ணோ டாயின பரிசும்
திருவாஞ் சியத்திற் சீர்பெற இருந்து
மருவார் குழலியொடு மகிழ்ந்த வண்ணமும்
சேவக னாகித் திண்சிலை யேந்திப்
பாவகம் பலபல காட்டிய பரிசும் 82

27. इडैमरुददनिल् ईण्ड इरुन्दु
पडिमप् पादम् वैत्त अप्परिसुम्
एकम्बत्तिन् इयल्बाय् इरुन्दु
पागम् पॆण्णोडायिन परिसुम्
तिरुवाञ्चियत्तिऱ् चीर्पॆऱ इरुन्दुम्
मरुवार् कुऴलियॊडु मगिऴ्न्द वण्णमुम्
चेवकन् आगित् तिण्चिलै एन्दिप्
पावगम् पलपल काट्टिय परिसुम्

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 75-82)

26. *दिखाई अद्‌भुत लीला 'ओरी' गाँव में*
जहाँ प्रभु को बनना पड़ा
नवजात शिशु
पांडूर को बना लिया निज आवास
तेवूर के दक्षिण में
सुभग-सुंदर द्वीप है
जहाँ धर लिया प्रभु ने नृप का वेश
मधुस्रवित उपवनवलयित
तिरुवारूर धाम में
परम ज्ञान का उपदेश दिया था।

(तिरुमुरै आठ -2 पंक्ति 68-74)

27. *इडैमरुदु के धाम में रहते हुए*
अंकित किया प्रभु ने
निज पद-चिह्न
एकम्ब धाम में दर्शनीय है शोभा
जहाँ वाम भाग दिया उमा सुकुमारी को
तिरुवांचियम् में विलस रहे हैं
सुगंध कुंतला के संग आमोद से
समरांगण में बन गए सैनिक
धारण किया था सुदृढ़ धनुष
यों भक्तों के हित लेते हैं प्रभु
बहुविध रूप बहुविध वेश।

(तिरुमुरै आठ -2 पंक्ति 75-82)

28. கடம்பூர் தன்னில் இடம்பெற இருந்தும்
ஈங்கோய் மலையில் எழிலது காட்டியும்
ஐயா றதனிற் சைவ னாகியும்
துருத்தி தன்னில் அருத்தியோ டிருந்தும்
திருப்பனை யூரில் விருப்ப னாகியும்
கழுமல மதனிற் காட்சி கொடுத்தும்
கழுக்குன் றதனில் வழுக்கா திருந்தும் 89

28. कडम्बूर् तन्निल् इडम्पॅर् इरुन्दुम्
ईङ्गोय् मलैयिल् ऍऴिलदु काट्टियुम्
ऐयाऱदनिऱ् शैवन् आगियुम्
तुरुत्ति तन्निल् अरुत्तियोडिरुन्दुम्
तिरुप्पनैयूरिल् विरुप्पनागियुम्
कऴुमलम् अदनिऱ् काट्चि कॉडुत्तुम्
कऴुक्कुन्ऱदनिल् वऴुक्कादिरुन्दुम्

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 83-89)

29. புறம்பய மதனில் அறம்பல அருளியும்
குற்றா லத்துக் குறியா யிருந்தும்
அந்தமில் பெருமை அழலுருக் கரந்து
சுந்தர வேடத் தொருமுத லுருவுகொண்டு
இந்திர ஞாலம் போலவந் தருளி 94

29. पुऱम्पयम् अदनिल् अऱम्पल अरुळियुम्
कुट्रालत्तुक् कुऱियाय् इरुन्दुम्
अन्तमिल् पॅरुमै अऴलुरुक् करन्दु
सुन्दर वेडत्तॉरु मुदल् उरुवु कॉण्डु
इन्दिर ञालम् पोल वन्दरुळि

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 90-94)

28. *विराजे तुम कडम्बूर् के विशाल धाम में*
दर्शनीय है प्रभु का सुभग सौंदर्य
ईङ्गोय् की पावन पहाड़ी पर
प्रकट हुए तिरुवैयारु धाम में
शैवाचार्य रूप में
विलस रहे हो तुरुत्ति में आसक्ति के संग
पनैयूर् धाम में इच्छा के साथ
कळ्ुमलम् नाम से विश्रुत शीऱ्काली में
दिखा दी प्रभु ने अपनी झांकी
गृध्राचल में विराजे हो
च्युतिरहित ढंग से।

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 83-89)

29. *पुरम्पयम् धाम में*
विरचित किये अनेक धर्मग्रंथ
कुट्रालम् में स्थित हुए लक्ष्य रूप में
प्रभु ! अंत नहीं आपकी महिमा का
आदि में धर लिया 'हिरण्यगर्भ' का अग्नि-रूप
फिर लिये अनगिनत सुंदर रूप
आदि मूल तुमने
रच डाले इंद्रजाल सम सकल जग।

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 90-94)

30. எவ்வெவர் தன்மையுந் தன்வயிற் படுத்துத்
தானே யாகிய தயாபரன் எம்மிறை
சந்திர தீபத்துச் சாத்திர னாகி
அந்தரத் திழிந்துவந் தழகமர் பாலையுள்
சுந்தரத் தன்மையொடு துதைந்திருந் தருளியும்
மந்திர மாமலை மகேந்திர வெற்பன்
அந்தமில் பெருமை அருளுடை அண்ணல்
எந்தமை ஆண்ட பரிசது பகரின் 102

30. ऍव्वॅवर् तन्मैयुम् तन्वयिऱ् पडुत्तुत्
ताने यागिय दयापरन् ऍम्मिऱै
चन्दिर तीपत्तुच् चात्तिरनागि
अन्तरत्तिऴिन्दु वन्दु अऴगमर् पालैयुळ्
सुन्दरत् तन्मैयॊडु तुदैन्दिरुन्दरुळियुम्
मन्तिर मामलै महेन्दिर वॆऱ्पन्
अन्तमिल् पॆरुमै अरुळुडै अण्णल्
ऍन्तमैयाण्ड परिशदु पगरिन्

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 95-102)

31. ஆற்றல் அதுவுடை அழகமர் திருவுரு
நீற்றுக் கோடி நிமிர்ந்து காட்டியும்
ஊனந் தன்னை யொருங்குடன் அறுக்கும்
ஆனந் தம்மே ஆறா அருளியும்
மாதிற் கூறுடை மாப்பெருங் கருணையன்
நாதப் பெரும்பறை நவின்று கறங்கவும்
அழுக்கடை யாமல் ஆண்டுகொண் டருள்பவன் 109

31. आट्रल् अदुवुडै अऴगमर् तिरुवुरु
नीट्रुक् कोडि निमिर्न्दु काट्टियुम्
ऊनन्तन्नै ऑरुङ्गुडन् अरुक्कुम्
आनन्दम्मे आऱा अरुळियुम्
मादिऱ् कूरुडै माप्पॆरुम् करुणैयन्
नादप्पॆरुम्पऱै नविन्ऱु कऱङ्गवुम्
अऴुक्कडैयामल् आण्डु कॊण्डरुळ्पवन्

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 103-109)

30. *त्रिगुणात्मक प्रकृति धर कर*
नवल नव्य सुंदर रूप लिये मेरे नाथ ने
यंत्रयान पर आरूढ़ होकर
अवतरित हुए चंद्रद्वीप में विज्ञानी सम
उतर कर पाले धाम में
विराजे प्रभु सुंदरेश रूप में
मंत्र-स्वरूप महेन्द्र पर्वत पर
आरूढ़ होकर महेश्वर ने
वेद मंत्रों का विस्तार किया
अनंत है प्रभु तुम्हारी महिमा और अनुग्रह।

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 95-102)

31. *यदि पूछो*
प्रभु ने मुझे कैसे अपनाया अनुगृहीत किया
कैसे बताऊँ
सर्वशक्तिमान प्रभु सौंदर्य का साक्षात् धाम है
भस्म के त्रिपुंड्र से शतगुण बढ़ गया है
प्रभु का अनंत सौंदर्य
मिटाते हुए सकल दोष
आनन्द प्रवहित है नदी रूप में
असीम है करुणा अनुकंपा प्रभु की
वामा को प्रदान किया
शरीर का अर्धभाग ही
डमरू निनाद के उद्घोष के मध्य
अपना लेते हैं जीव को दूर कर उसके दोष को
और जीव को बना लेते हैं शिवमय।

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 103-109)

32. கழுக்கடை தன்னைக் கைக்கொண் டருளியும்
மூல மாகிய மும்மலம் அறுக்கும்
தூய மேனிச் சுடர்விடு சோதி
காதல னாகிக் கழுநீர் மாலை
ஏல்வுடைத் தாக எழில்பெற அணிந்தும் 114

32. कऴुक्कडै तन्नैक् कैक्कॊण्ड रुळियुम्
मूलम् आगिय मुम्मलम् अऱुक्कुम्
तूय मेनिच्चुडर् विडु चोति
कादलनागिक् कऴुनीर् मालै
एलुवुडैत्ताग ऍऴिल् पॆऱ अणिन्दुम्

(तिरुमुऱै आठ - 2 पंक्ति 110-114)

33. அரியொடு பிரமற் களவறி யாதவன்
பரிமா வின்மிசைப் பயின்ற வண்ணமும்
மீண்டு வாரா வழியருள் புரிபவன்
பாண்டி நாடே பழம்பதி யாகவும்
பத்திசெய் அடியரைப் பரம்பரத் துய்ப்பவன்
உத்தர கோச மங்கையூ ராகவும்
ஆதி மூர்த்திகட் கருள்புரிந் தருளிய
தேவ தேவன் திருப்பெய ராகவும் 122

33. अरियॊडु पिरमऱ् कळवऱियादवम्
परिम्पविन् मिशैम् पयिन्ऱ वण्णमुम्
मीण्डु वारा वऴि अरुळ् पुरिपवन्
पाण्डि नाडे पऴम्पति यागवुम्
पत्तिसॆय् अडियारैप् पाम्बरत् तुय्प्पवन्
आदिमूर्त्ति कट्करुळ् पुरिन्दरुळिय
देवदेवन् तिरुप्पॆयरागवुम्

(तिरुमुऱै आठ - 2 पंक्ति 115-122)

32. *धारण कर निज कर में त्रिशूल*
रक्षित करते हो सकल जीव को
पावन देह से निःसृत
ज्ञानज्योति से
कट जाते हैं सनातन त्रिमल
प्रियतम हो तुम सकल जीव के
वक्ष पर धरे हो अरुणिम सुमन-माल्य
रुचिर ढंग से — संवर्धित है
तेरा सौंदर्य सौगुना जिससे।

(तिरुमुरै आठ - 2 पंक्ति 110-114)

33. *अगम्य है विष्णु विरिंचि के लिए*
किंतु व्यक्त किया है प्रभु ने
अश्वारूढ़ होकर निज को
मोक्षमार्ग का अनुग्रहकर्ता
जिनका धाम है प्राक्तन पांड्य-देश
भक्त-जन को मुक्ति देते हैं
प्रिय धाम है उत्तरकोशमंगै
सकल देवों का शक्ति-स्रोत
जिनका 'महादेव' नाम अन्वर्थ है।

(तिरुमुरै आठ - 2 पंक्ति 115-122)

34. இருள்கடிந் தருளிய இன்ப வூர்தி
அருளிய பெருமை அருண்மலை யாகவும்
எப்பெருந் தன்மையும் எவ்வெவர் திறமும்
அப்பரி சதனால் ஆண்டுகொண் டருளி
நாயி னேனை நலமலி தில்லையுள்
கோல மார்தரு பொதுவினில் வருகென
ஏல என்னை யீங்கொழித் தருளி 129

34. इरुळ् कडिन्दरुळिय इन्ब ऊर्दि
अरुळिय पॅरुमै अरुण्मलै यागवुम्
मॅय्प्पॅरुम् तन्मैयुम् ऍव्वॅवर् तिऱमुम्
अप्परिसदनाल् आण्डुकॉण्डरुळि
नायिननै नलमलि तिल्लैयुळ्
कोलम् आर्तरु पॉदुविनिल् वरुगॅन
एल ऍन्नै ईङ्गॉऴिन्दरुळि

(तिरुमुऱै आठ - 2 पंक्ति 123-129)

35. அன்றுடன் சென்ற அருள்பெறும் அடியவர்
ஒன்ற வொன்ற உடன்கலந் தருளியும்
எய்தவந் திலாதார் எரியிற் பாயவும்
மாலது வாகி மயக்க மெய்தியும்
பூதல மதனிற் புரண்டுவீழ்ந் தலறியும்
கால்விசைத் தோடிக் கடல்புக மண்டி 135

35. अन्ऱुडन् चॅन्ऱ् अरुळ् पॅऱुम् अडियवर्
ऑन्ऱ् वॉन्ऱ् उडन् कलन्दरुळियुम्
ऍय्द वन्दिलादार् ऍरियिऱ् पायवुम्
मालदुवागि मयक्कम् ऍय्दियुम्
पूतलम् अदनिऱ् पुरण्डुवीऴ्न्दलऱियुम्
काल् विसैत्तोडिक् कडल् पुगमण्डि

(तिरुमुऱै आठ - 2 पंक्ति 130-135)

34. *परमानन्द ही वाहन है प्रभु का*
जिससे ध्वस्त होता है अज्ञान-तिमिर
असीम है तेरी करुणा हे प्रभु
जिन जिन के पास शक्ति है क्षमता है
प्राप्त हुई हैं नाथ-कृपा से
प्रभु-अनुग्रह से
आदेश हुआ इस श्वान सम जन को
कलित तिल्लै की चित्सभा में चलो
प्रभु के संग पहुँच गया मैं
तिल्लै के दिव्यधाम में
आह ! छोड़कर एकाकी मुझे यहाँ
तिरोभूत हो गए मेरे नाथ।

(तिरुमुरै आठ - 2 पंक्ति 123-129)

35. *भक्तगण जो चले थे*
उस दिन नाथ के संग
उनमें अनेक पा गए प्रभु में सायुज्य
जो सायुज्य पाने में असमर्थ हुए
झपट पड़े अग्नि-ज्वाल में
शेष जन चकित-भ्रमित हुए
मूर्च्छित होकर भू-लुंठित
भाग चले कुछ लोग
नदी से भी तीव्र वेग से
समुद्र में गिरने के लिए।

(तिरुमुरै आठ - 2 पंक्ति 130-135)

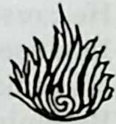
36. நாத நாத என்றழு தரற்றிப்
பாத மெய்தினர் பாத மெய்தவும்
பதஞ்சலிக் கருளிய பரமநா டகவென்று
இதஞ்சலிப் பெய்தநின் றேங்கின ரேங்கவும்
எழில்பெறும் இமயத் தியல்புடை யம்பொன்
பொலிதரு புலியூர்ப் பொதுவினில் நடநவில்
கனிதரு செவ்வாய் உமையொடு காளிக்கு
அருளிய திருமுகத் தழகுறு சிறுநகை
இறைவன் ஈண்டிய அடியவ ரோடும்
பொலிதரு புலியூர் புக்கினி தருளினன்
ஒலிதரு கைகலை உயர்கிழ வோனே! 146

36. 'नाद' 'नाद' ऍन्ऱऴु दरट्रि
पादम् ऍय्दिनर् पादम् ऍय्दवुम्
'पतञ्जलिक्करुळिय परमनाटक ऍन्ऱु
इतञ्जलिप् पॅय्द निन्ऱेङ्गिनर् एङ्गवुम्
ऍऴिल् पॅऱुम् इमयत्तियल्पुडै अम्पॊन्
पॊलितरु पुलियूर्प् पॊदुविनिल् नडनविल्
कनितरु चॅव्वाय् उमैयॊडु काळिक्कु
अरुळिय तिरुमुगत्तऴगुऱु चिऱुनगै
इऱैयवन् ईण्डिय अडियवरोडुम्
पॊलितरु पुलियूर्प् पुक्किनिदरुळिनन्
ऒलितरु कैलै उयर्किऴवोने !

(तिरुमुऱै आठ -2 पंक्ति 136-146)

36. 'नाथ नाथ !' पुकारते क्रंदन करते हुए
जो पा गए तुम्हारे पुण्य चरण
अनुसरण करूँगा मैं उन भक्तों का
भक्त जन तरसते हैं शिवानंद के लिए
निवेदन करते हैं—
'हे चित्सभा के महानर्तक नटराज
तुमने अनुगृहीत किया पतंजलि को
तार दो हमें भी'
ज्यों हिमगिरि का शीर्षभाग कनकाभ है
व्याघ्रपुरी चिदम्बरम् की छत भी कनकमय है
जहाँ तुमने बिंबाधर उमा को
तथा तिल्लै की काली को
पृथक् पृथक् झांकी दिखाई अपनी
हे प्रभो कैलासपते !
पधार कर निजभक्तों के संग
तिल्लै चिदम्बरम् में विराजे हो आमोद से।

(तिरुमुरै आठ - 2 पंक्ति 136-146)



स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

The sacred foot that danced in Tillai's city old
Is His, Who in all varied lives has energized ;
Revealed in beauty of innumerous, varied qualities ;
In earth, in sky, and in celestial worlds.
All ordered lore hath He revealed, and He made void.
My darkness hath He driven for aye far off.
Within His servants' inmost soul that love o'erflows
He dwells,—His glory and His choice.
On great Mahēndra's biding hill
In grace He caused the uttered Āgamas appear.
He came with the good goddess,
Pleasant and gracious, mingling with men at Kallāḍam.

With her whose words are milk in the 'fivefold couch,'
He caused sweet grace, that unfailing accumulates, to grow.
In guise of a woodman, of her whose lips are crimson,
He sank in the lovely expanse of the swelling breast.
Becoming a fisherman He caught the shark.
And he recived the Āgamas, a rich spoil.
Moreover, on Mahēndra seated, the self-same Āgamas
From His five mouths He graciously spake forth.
In our abode a Brāhman He became,
And as a deathless Guru dwelt in grace.
Assuming diverse forms, and diverse habitudes,
As hundreds of hundreds of thousands of natures,
Īçan, Lord of the bull, that the world might be saved,—
He and the Lady, His partner,—came in grace.
Bringing horses, in the Western land,
Right royally He rode in state.
In fair Puttūr, town of the dart, upon the bull He rode,

Made manifest His state and glorious pomp.
In a mirror, at Puttūr of the santhal-wood,
Gave increase to the woodman armed with bow.
His form all flame, that held the 'gram-bag,'
In magic beauty exquisite, of old he showed.
He whose extent to Hari and to Brahmā was not known,
In goodness jackals into horses made,
To make him His, He of the sacred foot,
The chargers to the Pāṇḍiyan sold,
Nor deigned to take the heaped-up gold.
Our King made me His slave, and in the path of grace to keep,
Made manifest the ancient brightening ray.
Becoming a Brāhman, graciously making me His own,
He showed the magic illusion.
Coming to Madura, the city great and fair,
He became a horse's groom.
And therein too, for the female devotee
He condescended to carry earth.

In Uttara-Kōça-Maṅgai abiding
He showed His special form.
In Pūvaṇam he vouchsafed to appear in beauty,
And showed His ancient spotless form.
In Vāthavūr he came sweetly gracious
And caused the sound of His tinkling anklets to be heard.
In Perun-turrai's blissful home, a Blessed One He dwelt,
And guileful, in undimmed lustre hid Himself.
In Pūvalam, beauteous, sweet and gracious,
He sin destroyed.
A water-booth he placed, to gain the victory,
And graciously became an attendant who serves water.
He came a guest to Veṇkāḍu.
Beneath the Kurunthu tree He sat that day.
In royal Maṅgai, in fair beauty throned,
The eight great mystic powers in grace He gave.
Becoming a hunter, and assuming the form He desired,
In the forest with guile He lay hid.

Lines : 1 - 65

3

திருவண்டப்பகுதி

तिरुवण्डप् पगुदि

சிவனது தூலசூக்குமம்

शिवनदु तूलसुक्कुमम्

37. அண்டப் பகுதியின் உண்டைப் பிறக்கம்
அளப்பருந் தன்மை வளப்பெருங் காட்சி
ஒன்றனுக் கொன்று நின்றெழில் பகரின்
நூற்றொரு கோடியின் மேற்பட விரிந்தன
இன்னுழை கதிரின் துன்னணுப் புரையச்
சிறிய வாகப் பெரியோன் தெரியின் 6

37. अण्डप्पगुदियिन् उण्डैप्पिऱक्कम्
अळप्परुन्तन्मै, वळप्पॆरुङ्काट्चि
ऒन्ऱनुक्कॊन्ऱु निन्ऱॆऴिल् पगरिन्
नूट्ऱॊरु कोटियिन् मेर्पड विरिन्दन
इन्नुऴै कदिरिन् तुन्नणुप पुरैयच
चिऱियवागप् पॆरियोन् तॆरियिन्

(तिरुमुऱै आठ -3 पंक्ति 1-6)

3

ब्रह्माण्ड प्रकरण

शिव का स्थूल सूक्ष्म

37. *असंख्य असीम हैं ब्रह्मांड के ग्रहपिंड*
अपरिमेय अद्‌भुत दृश्यावली
अंतरिक्ष के रंग-बिरंगे प्रतिभास की
कैसे वर्णन करें एक से बढ़कर एक सुंदर
व्याप्त हैं समूचे ब्रह्मांड में ग्रहकक्ष
जिनकी संख्या एक सौ एक करोड़ से अधिक
ऐसे ही तिर रहे हैं अनगिनत ग्रह
जैसे छत के सूराख से
आ रहे सूर्य प्रकाश में
तिर रहे हों असंख्य धूलकण अणुसम
एक समान है संरचना अणु की और ब्रह्मांड की
दोनों में भेद नहीं है।

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 1-6)

38. வேதியன் தொகையொடு மாலவன் மிகுதியும்
தோற்றமுஞ் சிறப்பும் ஈற்றொடு புணரிய
மாப்பே ரூழியும் நீக்கமும் நிலையும்
சூக்கமொடு தூலத்துச் சூறை மாருதத்து
எறியது வளியிற்
கொட்கப் பெயர்க்குங் குழகன் முழுவதும் 12

38. वेदियन् तॊगैयॊडु मालवन् मिगुदियुम्
तोट्रमुम् चिऱप्पुम् ईट्रॊडु पुणरिय
माप्पेर् अऴियु नीक्कमु निलैयुम्
चूक्कमॊडु तूलत्तुच् चूऱै मारुदत्
ऍऱियदु वळियिऱ्
कॊट्कप् पॆयर्क्कुम् कुऴगन् मुऴुवदुम्।

(तिरुमुऱै आठ -3 पंक्ति 7-12)

அவருடைய செய்கை अवरुडैय सॆय्कै

39. படைப்போற் படைக்கும் பழையோன் படைத்தவை
காப்போற் காக்குங் கடவுள் காப்பவை
கரப்போன் கரப்பவை கருதாக்
கருத்துடைக் கடவுள் திருத்தகும்
அறுவகைச் சமயத் தறுவகை யோர்க்கும்
வீடுபே றாய்நின்ற விண்ணோர் பகுதி 18

39. पडैप्पोऱ् पडैक्कुम् पऴैयोन् पडैत्तवै
काप्पोऱ् काक्कुम् कडवुळ् काप्पवै
करप्पोन् करप्पवै करुदाक्
करुत्तुडैक् कडवुळ् तिरुत्तगुम्
अऱुवगैच् चमयत्तऱुवगै योर्क्कुम्
वीडुपेऱाय् निन्ऱ विण्णोर् पगुदि

(तिरुमुऱै आठ -3 पंक्ति 13-18)

38. *भिन्न-भिन्न कितने हैं ब्रह्मांड*
असंख्य ब्रह्मा अनगिनत विष्णु
अपने अपने कर्त्तव्य में निरत
हो रहा सृष्टि स्थिति संहार कार्य
प्रलय और महाप्रलय भी
निश्चित निर्णीत गति से
तिरोभवन और पुनः सृजन का चक्र
चल रहा अविच्छिन्न रूप से
उपमा एक राजती है
जैसे चल रहा हो कोई महान् चक्रवात
जिसमें हवाएँ भी बदल लेती हैं स्थान
वैसे ही नियंता हैं परमेश्वर
और स्थान बदलते हुए कर्त्तव्यनिरत हैं
अन्य देवता उपदेवता
स्थूल और सूक्ष्म स्थितियों में।

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 7-12)

39. *पुरातन चिरंतन है परमेश्वर*
जनक है स्वयं सर्जनहार ब्रह्मा का
सृजन-ब्रह्मा का कार्य
पालन विष्णु का कार्य
अंत में संहार करना दायित्व है रुद्र का
तीनों कृत्यों से परे
विराज रहा है परात्पर परमेश्वर
प्रदान करता है मुक्त हस्त से
वेद-विहित षण्मार्ग-पंथियों को
मुक्ति का साम्राज्य
महानायक वह अमरलोक का।

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 13-18)

40. *கீடம் புரையுங் கிழவோன் நாள்தொறும்*
அருக்கனிற் சோதி அமைத்தோன் திருத்தகு
மதியில் தண்மை வைத்தோன் திண்டிறல்
தீயின் வெம்மை செய்தோன் பொய்தீர்
வானிற் கலப்பு வைத்தோன் மேதகு
காலின் ஊக்கங் கண்டோன் நிழல்திகழ்
நீரில் இன்சுவை நிகழ்ந்தோன் வெளிப்பட
மண்ணில் திண்மை வைத்தோன் என்றென்று
எனைப்பல கோடி யெனைப்பல பிறவும்
அனைத்தனைத் தவ்வயின் அடைத்தோன் அஃதான்று 28

40. *कीटम् पुरैयुम् किऴवोन् नाळ् तांरुम्*
अरुक्कनिऱ् चोति अमैत्तोन् तिरुत्तगु
मतियिल् तण्मै वैत्तोन् तिण्डिऱल्
तीयिन् वंम्मै चंय्दोन् पांय्तीऱ्
वानिऱ् कलप्पु वैत्तोन् मेतगु
कालिल् ऊक्कम् कण्डोन् निऴल् तिगऴ्
नीरिल् इन्चुवै निगऴ्न्दोन् वंळिप्पड
मण्णिल् तिण्मै वैत्तोन् ऎंन्ऱ्ंन्ऱु
ऎंनैप् पल कोटि ऎंनैप्पल पिऱवुम्
अनैत्तनत्तव्वयिन् अडैन्दोन् अह्दान्ऱु

(तिरुमुऱै आठ -3 पंक्ति 19-28)

40. सबका स्वामी समाहित हैं जिसमें
कीट से लेकर ब्रह्मा तक सकल चराचर
सबका शक्ति-स्रोत एक तुम्हीं हो
प्रदान करते हो अनुदिन
उदित होते दिवाकर को उसका प्रकाश
चंद्रमा को उसकी शीतलता
अग्नि को ऊष्मा, गगन को व्यापकता
वायु को वेगत्व-शक्ति
जल को उसका मधुरिम स्वाद
धरती को संसक्तता पूर्ण दृढ़ता
यों वर्णन करते जाएँ कोई अंत नहीं
तुम्हारी अपरंपार महिमा का
व्याप्त है जो कोटि-कोटि सत्वों में
बिठा दिया है सबको निज-निज कल में
ताकि प्रवर्तन हो ब्रह्मांड का सुचारु रूप से
स्थित हो
और तुम स्थित हो सबसे परे
अनुपम और अवर्णनीय।

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 19-28)

நாமங்கள் नामंगळ्

41. முன்னோன் காண்க முழுதோன் காண்க
தன்னே ரில்லோன் தானே காண்க
ஏனத் தொல்லெயி றணிந்தோன் காண்க
கானப் புலியுரி அரையோன் காண்க
நீற்றோன் காண்க அந்தோ கெடுவேன்
ஆற்றேன் காண்க நினைதொறும் நினைதொறும்
இன்னிசை வீணையி லிசைந்தோன் காண்க
அன்னதொன் றவ்வயின் அறிந்தோன் காண்க! 36

41. मुन्नोन् काण्ग मुऴुदोन् काण्ग
तन्नेर् इल्लान् ताने काण्ग
एनत्तॊल्लॆयिऱ् अणिन्दोन् काण्ग
कानप्पुलियुरि अरैयोन् काण्ग
नीट्रोन् काण्ग निनैतॊऱु निनैतॊऱुम्
आट्रेन् काण्ग अन्तो कॆडुवेन्
इन्निशै वीणैयिल् इशैन्दोन् काण्ग
अन्नतॊन्ऱव्वयिन् अऱिन्दोन् काण्ग !

(तिरुमुऱै आठ - 3 पंक्ति 29-36)

शिव के नाम

41. *देखो आदि मूल वह व्याप्त है*
अगजग में परिपूर्ण
अप्रतिम वह अद्वितीय है
अहा ! अलंकृत है वक्ष
शूकर की धवलोज्ज्वल दंष्ट्रा से
कटितट पर शोभित है
वन्य-व्याघ्र का चर्म
भस्मोद्धूलित है सकल शरीर
क्षण-क्षण रमता हूँ उसकी सुरति में
पल भर के लिए भी बिसरूँ तो
हंत ! धरेंगे नहीं ये प्राण
नादप्रिय वह तल्लीन है
वीणा के सुमधुर नाद में
ज्ञाता है राग-रागिनी के सूक्ष्म भाव का।

(तिरुमुरै आठ - 3 पंक्ति 29-36)

42. பரமன் காண்க பழையோன் காண்க
பிரமன்மால் காணாப் பெரியோன் காண்க
அற்புதன் காண்க அநேகன் காண்க
சொற்பதங் கடந்த தொல்லோன் காண்க
சித்தமுஞ் செல்லாச் சேட்சியன் காண்க
பத்தி வலையிற் படுவோன் காண்க
ஒருவன் என்னும் ஒருவன் காண்க
விரிபொழில் முழுதாய் விரிந்தோன் காண்க
அணுத்தருந் தன்மையில் ஐயோன் காண்க
இணைப்பரும் பெருமையில் ஈசன் காண்க! 46

42. परमन् काण्ग पऴैयोन् काण्ग
पिरमन् माल् काणाप् पॆरियोन् काण्ग
अर्पुदन् काण्ग अनेकन् काण्ग
चॊर्पदम् कडन्द चॊल्लोन् काण्ग
चित्तमुम् चॆल्लाच् चेट्चियन् काण्ग
पत्तिवलैयिर् पडुवोन् काण्ग
ऒरुवनॆन्नुम् ऒरुवन् काण्ग
विरिपॊऴ़िल् मुऴुदाय् विरिन्दोन् काण्ग
अणुत्तरुम् तन्मैयिल् ऐयोन् काण्ग
इणैप्परुम् पॆरुमैयिल् ईशन् काण्ग !

(तिरुमुऱै आठ - 3 पंक्ति 37-46)

42. *देखो परब्रह्म है चिरपुरातन
महादेव यह अदृश्य है विष्णु विरिंचि के लिए भी
अनंत रमणीय यह विस्मयावह तत्त्व है
एक नहीं यह अनेकानेक
शब्द और वाक् के लिए अतीत
जिसके पास जाकर मौन होता है मन भी
इतना महिमा-मंडित यह सहज सौम्य है
सुलभ्य है फँस जाता है भक्तिजाल में
एकमेव वह अनुपम अद्वितीय है
ऐसा महिमामय वह चराचर बनकर
सकल भुवन बन व्याप्त है अग-जग में
अणोरणीयान् वह महतो महीयान है
ईश की महिमा का कहीं अंत नहीं है।*

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 37-46)

43. அரியதில் அரிய அரியோன் காண்க
மருவியெப் பொருளும் வளர்ப்போன் காண்க
நூலுணர் வுணரா நுண்ணியோன் காண்க
மேலொடு கீழாய் விரிந்தோன் காண்க
அந்தமும் ஆதியும் அகன்றோன் காண்க
பந்தமும் வீடும் படைப்போன் காண்க
நிற்பதுஞ் செல்வதும் ஆனோன் காண்க
கற்பமும் இறுதியும் கண்டோன் காண்க
யாவரும் பெறவுறும் ஈசன் காண்க
தேவரும் அறியாச் சிவனே காண்க! 46

43. अरियादिल् अरिय अरियोन् काण्ग
मरुवि ऍप्पॉरुळुम् वळर्प्पोन् काण्ग
नूलुणर् वुणरा नुण्णियन् काण्ग
मेलॉडु कीऴाय् विरिन्दोन् काण्ग
अन्तमुम् आदियुम् अगन्ऱोन् काण्ग
पन्तमुम् वीडुम् पडैप्पोन् काण्ग
निर्पतुम् चॅल्वतुम् आनोन् काण्ग
कर्पमुम् इऱुदियुम् कण्डोन् काण्ग
यावरुम् पॆऱवुरुम् ईशन् काण्ग
तेवरुम् अऱियाच् चिवने काण्ग !

(तिरुमुऱै आठ - 3 पंक्ति 47-56)

43. *देखो महार्ध मणि को*
जो विरल से भी है विरल
किंतु व्याप्त है सकल जीव में
रमता है सबको संवर्धित करता हुआ
अगम्य है यह पोथियों के ज्ञान से
सूक्ष्म पुरुष यह व्याप्त है
अनादि और अनंत होकर अग-जग में
बंधकारक यही मुक्तिदायक है
देखो यह कितने विस्मय की बात है
सर्वथा स्थिर यह चलता-फिरता भी है
कालपुरुष इसने देखे हैं
कितने कितने कल्प और कल्पांत
सरल हैं भोलेनाथ, पा जाते हैं सभी
किंतु शिवराज यह अगम्य है देवगण के लिए भी।

(तिरुमुरै आठ - 3 पंक्ति 47-56)

44. பெண்ஆண் அலியெனும் பெற்றியன் காண்க
கண்ணால் யானுங் கண்டேன் காண்க
அருள்நனி சுரக்கும் அமுதே காண்க
கருணையின் பெருமை கண்டேன் காண்க
புவனியிற் சேவடி தீண்டினன் காண்க
சிவனென யானுந் தேறினன் காண்க
அவனெனை ஆட்கொண் டருளினன் காண்க
குவளைக் கண்ணி கூறன் காண்க
அவளுந் தானும் உடனே காண்க!

44. पॆण्णाण् अलि ऍनुम् पॆट्रियन् काण्ग
कण्णाल् यानुम् कण्डेन् काण्ग
अरुळ् ननि चुरक्कुम् अमुदे काण्ग
करुणैयिन् पॆरुमै कण्डेन् काण्ग
पुवनियिल् चेवडि तीण्डिनन् काण्ग
शिवनॆन यानुम् तेऱिनन् काण्ग
अवनॆनै आट्कॊण्डरुळिनन् काण्ग
कुवळैक् कण्णि कूऱन् काण्ग
अवळुम् तानुम् उडने काण्ग !

(तिरुमुऱै आठ -3 पंक्ति 57-65)

44. *देखो सर्वमूर्ति है यह*
नर है नारी है क्लीव भी
जानकर इस परम-तत्त्व को
देख लिय मैंने शिवराज को प्रत्यक्ष ही
स्रवित होता है जिससे अमृत
आनंद का, अजस्र अनुग्रह का
देख लिया मैंने करुणा-वरुणालय को
धर लिये निज पुण्य चरण
धरणी पर हाँ मेरे लिए
पहचान लिया मैंने भी, यही शिवराज है
पधारे प्रभु मुझे अपनाने के लिए
अपनाया अनुगृहीत किया,
अहह ! धन्य हुआ मैं
वामभाग में शोभित है 'सरोरुह' नयना उमा
देखो शिव-शक्ति का यह मिलित रूप
भोज है नयनों के लिए।

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 57-65)

கடலும் மேகமும் | कडलुम् मेगमुम्

45. பரமா னந்தப் பழங்கட லதுவே
கருமா முகிலில் தோன்றித்
திருவார் பெருந்துறை வரையி லேறித்
திருத்தகு மின்னொளி திசைதிசை விரிய
ஐம்புலப் பந்தனை வாளர விரிய
வெந்துயர்க் கோடை மாத்தலை கரப்ப
நீடெழில் தோன்றி வாளொளி மிளிர
எந்தம் பிறவியிற் கோபம் மிகுந்து
முரசெறிந்து மாபெருங் கருணையில் முழங்கி 74

45. परमानन्दप् पऴङ् कडल् अदुवे
करुमा मुगिलिल् तोन्ऱित्
तिरुवार् पॆरुन्तुऱै वरैयिल् एऱित्
तिरुत्तगु इन्नॊळि तिशैतिशै विरिय
ऐम्पुलप् पन्तनै वाळर विरिय
वॆन्तुयर्क् कोडै मात्तलै करप्प
नीडॆऴिल् तोन्ऱि वाळॊळि मिळिर
ऍन्तम् पिऱवियिऱ् कोप मिगुन्दु
मुरसॆऱिन्दु माप्पॆरुम् करुणै मुऴङ्गि।

(तिरुमुऱै आठ -3 पंक्ति 66-74)

समुद्र और मेघ

45. *परमानंद का सागर यही सनातन*
उत्थित होता है इस सागर से
स्वयं श्यामल मेघ जैसे
व्याप्त होकर दिशि-दिशि में
प्रकट है वह सौंदर्य-धाम
पेरुन्तुरै की सुरम्य पहाड़ी पर
विकीर्ण करता हुआ अपना ज्ञान-प्रकाश
जिसके प्रभाव से
छिप गए भाग कर पंचेन्द्रिय के पन्नग
अहा ! मिट गया दारुण निदाघ सम दुरित पुंज
भाल देश मेरा दीप्त हुआ ब्रह्मतेज से
करुणामय ईश ! तुम्हारे अनुग्रह से
विरति हुई पुनर्जन्म से
धन्य हूँ मैं ! मुनादी करा के सकल जग में
अपनाया मुझे ईश ने
सकल लोक को साक्ष्य बनाकर।

(तिरुमुऱै आठ -3 पंक्ति 66-74)

46. பூப்புரை அஞ்சலி காந்தள் காட்ட
எஞ்சா இன்னருள் நுண்துளி கொள்ளச்
செஞ்சுடர் வெள்ளந் திசைதிசை தெவிட்ட வரையுறக்
கேதக் குட்டங் கையற வோங்கி
இருமுச் சமயத் தொருபேய்த் தேரினை
நீர்நசை தரவரும் நெடுங்கண் மான்கணம்
தவப்பெரு வாயிடைப் பருகித் தளர்வொடும்
அவப்பெருந் தாபம் நீங்கா தசைந்தன
ஆயிடை வானப் பேரியாற் றகவயின்
பாய்ந்தெழுந் தின்பப் பெருஞ்சுழி கொழித்துச்
சுழித்தெம் பந்தமாக் கரைபொரு தலைத்திடித்து

46. पूप्पुरै अञ्जलि कान्तळ् काट्ट
ऍञ्जा इन्नरुळु नुण्तुळिक् कॉळ्ळच्
चॅञ्चुडर् वॅळ्ळम् तिशैतिशै तॅविट्ट वरैयुऱक्
केतक् कुट्टम् कैयऱ् ओङ्गि
इरुमुच्चमयत् तॉरु पेय्त् तेरिनै
नीर्नशै तरवरु नॅडुङ्कण् मान्कणम्
तवप्पॅरुवायिडैप् परुगित् तळर्वॉडु
अवप्पॅरुम् ताप नीङ्गादशैन्दन
आयिडै वानप् पॅरियाट्रगवयिन्
पाय्न्दॅऴुन्दिन्बप् पॅरुञ्चुऴि कॉऴित्तुच्
चुऴित्तॅम् पन्तमाक् करैपॉरु तलैत्तिडित्तु

(तिरुमुऱै आठ - 3 पंक्ति 75-85)

46. *ईश-अनुग्रह पाकर खड़ा था मैं*
करांजलि बद्ध मुद्रा में
मुकुलित कृत्तिका सुमन सम
थी मेरी अंजलि की मुद्रा
गद्गद होकर खड़ा था, स्त्रवित थी
नयन से आनंद-वारिधार
मिट गए सकल दुरित
सब कहीं आनंद ही आनंद !
और उधर सुनकर घर्घर ध्वनि
षण्मत रूपी महारथ के चक्र से
मेघ मानकर भागे उसके पास
तृषित हिरन समूह
छक-छक कर पीने पर भी नहीं मिटी तृषा
भला अन्य देवता की उपासना से
कहाँ मिलेगा शाश्वत आनंद
कलप रहे थे साधक हिरन महती तृषा से
अहह ! तभी वहाँ प्रकट हुआ महानद
असीम करुणा की वारिधार
कोलाहल मय तुमुल वेग से
कितने कितने थे भँवर
जिनसे ध्वस्त हुए मेरे
जनन-मरण के भँवर।

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 75-85)

47. ஊழூழ் ஓங்கி நங்கள்
இருவினை மாமரம் வேர்ப றித்தெழுந்து
உருவ அருள்நீர் ஓட்டா அருவரைச்
சந்தின் வான்சிறை கட்டி மட்டவிழ்
வெறிமலர்க் குளவாய் கோலி நிறையகில்
மாப்புகைக் கரைசேர் வண்டுடைக் குளத்தின்
மீக்கொள மேன்மேன் மகிழ்தலின் நோக்கி
அருச்சனை வயலுள் அன்புவித் திட்டுத்
தொண்ட உழவ ராரத் தந்த
அண்டத் தரும்பெறல் மேகன் வாழ்க!

47. ऊऴ़ूऴ़् ओङ्गिय नङ्गऴ्
इरुविनै मामरम् वेर्परित्तॆऴ़ुन्दु
उरुव अरुऴ् नीरोट्टा अरुवरैच्
चन्तिन् वान्चिऱै कट्टि मट्टविऴ़्
वॆऱिमलर्क्कुळवाय् कोलि निऱैयकिल्
माप्पुगै करैचेर् वण्डुडैक् कुळत्तिन्
मीक्कॊळ मेन्मेल् मगिऴ़्दलिन् नोक्कि
अरुच्चनै वयलुऴ् अन्बु वित्तिट्टुत्
तॊण्ड उऴ़वर् आरत्तन्द
अण्डत्तरुम् पॆऱल् मेगन् वाऴ़्ग!

(तिरुमुऱै आठ -3 पंक्ति 86-95)

47. *शिवानंद का दिव्य प्रवाह*
जिसने काट डाला जड़मूल से
पुण्य-पाप के महावृत्त को
जन्म जन्मांतरों से घेरा था मुझे
अनुग्रह का दिव्य प्रवाह
पहाड़ियों से बहता आया
अमिय-सरोवर बन विलसा
तुम्हारी कृपा से
खिले अगणित सुरभित सुमन
तड़ाग के तट पर फैली
अगरु की सुरम्य सुगंध
उपासना के क्षेत्र में
बोये प्रेम-बीज भक्त कृषकों ने
अहा ! लहलहाई आनंद की फसल
जय हो मेघ-निभ ईश की
दुर्लभ है जो निखिल जग में।

(तिरुमुरै आठ - 3 पंक्ति 86-95)

வாழ்த்து | वाऴ्त्तु

48. கரும்பணக் கச்சைக் கடவுள் வாழ்க
அருந்தவர்க் கருளும் ஆதி வாழ்க
அச்சந் தவிர்த்த சேவகன் வாழ்க
நிச்சலும் ஈர்த்தாட் கொள்வோன் வாழ்க
சூழிருந் துன்பந் துடைப்போன் வாழ்க
எய்தினர்க் காரமு தளிப்போன் வாழ்க
கூரிருட் கூத்தொடு குனிப்போன் வாழ்க
பேரமைத் தோளி காதலன் வாழ்க
ஏதிலார்க் கேதிலெம் இறைவன் வாழ்க
காதலர்க் கெய்ப்பினில் வைப்பு வாழ்க!

48. करुम्पणक् कच्चैक् कडवुळ् वाऴग
अरुन्तवर्क्करुलुम् आदि वाऴग
अच्चन्तविर्त्त चेवकन् वाऴ्ग
निच्चलुम् ईर्त्ताट् कोळ्वोन् वाऴ्ग
चूऴिरुन्तुन्पम् तुडैप्पोन् वाऴ्ग
ऍय्दिनर्क्कारमुदळिप्पोन् वाऴ्ग
कूरिरुट् कूत्तोडु कुनिप्पोन् वाऴ्ग
पेरमैत् तोळि कादलन् वाऴ्ग
एदिलर्क्केदिल् ऍम्मिऱैवन् वाऴ्ग
कादलर्क् केय्प्पिनिल् वैप्पु वाऴ्ग !

(तिरुमुऱै आठ -3 पंक्ति 96-105)

जय गीत

48. *जय जय हो ईश की — शिवराज की*
कटितट पर मेखला सम विराजे है फणिराज
जय हो आदिदेव महादेव की
जो करते हैं अनुग्रह-वर्षा तपोधनों पर
जय हो महासेनानी की
ध्वस्त करते हैं जो मृत्युभय को
जय हो विजय हो महाप्रभु को
आकर्षित कर अपनाते हैं नित्य ही
जय हो हमारे नाथ की
निर्मार्जन करते हैं घिर रहे दुःख-संताप को
जय हो भक्तवत्सल प्रभु की
जो प्रदान करते हैं अमृत पास पहुँचे भक्तजन को
जय हो महाकाल की जो नृत्यरत हैं घनांधकार में
जय हो लोकैकनायक परमेश्वर की
जिसने वामभाग दिया उमा सुकुमारी को
जय हो करुणामय प्रभु की
जो लेश भी अहित न करते हैं उदासीन का
और जो अक्षय भविष्यनिधि हैं
अनुरक्त जन के लिए।

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 96-105)

துதி | तुति

49. நச்சர வாட்டிய நம்பன் போற்றி
பிச்செமை யேற்றிய பெரியோன் போற்றி
நீற்றொரு தோற்ற வல்லோன் போற்றி நாற்றிசை
நடப்பன நடாஅய்க் கிடப்பன கிடாஅய்
நிற்பன நிறீஇச்
சொற்பதங் கடந்த தொல்லோன்
உள்ளத் துணர்ச்சியிற் கொள்ளவும் படாஅன்
கண்முதற் புலனாற் காட்சியும் இல்லோன்
விண்முதற் பூதம் வெளிப்பட வகுத்தோன் 114

49. नच्चर वाट्टिय नम्बन् पोट्रि
पिच्चॆमै येट्रिय पॆरियोन् पोट्रि
नीट्रॊडु तोट्र वल्लोन् पोट्रि
नडप्पन नडाअय्क् किडप्पन किडाअय्
निर्पन निऱीइच्
चॊर्पदम् कडन्द तॊल्लोन्
उळ्ळत्तुणर्च्चियिऱ् कॊळ्ळवुम् पडाअन्
कण्मुदऱ् पुलनाऱ् काट्चियुम् इल्लोन्
विण्मुदऱ् पूतम् वॆळिप्पड वगुत्तोन्

(तिरुमुऱै आठ - 3 पंक्ति 106-114)

स्तुति

49. *जय हो अपने नाथ की, नचाते हैं जो*
विषधर फणिराज को अति कौतुक से
जय हो मेरे ईश की जिसने
उद्धार किया भक्ति के इस बावले का प्रेम से
जय हो भस्मोद्धूलित विग्रह परमेश्वर की !
जय हो सर्वशक्तिमान प्रभु की
जिनकी महिमा से चेतन चलते हैं
स्थिर पड़े रहते हैं अचेतन
सबका नियमन होता है यथास्थान
जय हो चिर पुरातन महादेव की
जो शब्दातीत है और अगोचर है
अंतःकरण के लिए मन-बुद्धि के लिए
अगोचर है जो स्थूल दृष्टि के लिए
जय हो विश्व संरचना के इंद्रजालिक की
जिसने नियमन किया
आकाश से लेकर पंचभूत का।

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 106-114)

50. பூவின் நாற்றம் போன்றுயர்ந் தெங்கும்
ஒழிவற நிறைந்து மேவிய பெருமை
இன்றெனக் கெளிவந் தருளி
அழிதரும் ஆக்கை ஒழியச் செய்த ஒண்பொருள்
இன்றெனக் கெளிவந் திருந்தனன் போற்றி
அளிதரும் ஆக்கை செய்தோன் போற்றி
ஊற்றிருந்த துள்ளங் களிப்போன் போற்றி
ஆற்றா இன்பம் அலர்ந்தலை செய்யப்
போற்றா ஆக்கையைப் பொறுத்தல் புகலேன்! 123

50. पूविन् नाट्रम् पोन्ऱुयरन्दॆङ्गुम्
ऑऴिवऱ् निऱैन्दु मेविय पॆरुमै
इन्ऱॆनक् कॆळिवन्दरुळि
अऴितरुम् आक्कै ऑऴियच् चॆय्द ऑण्पॊरुळ्
इन्ऱॆनक्कॆळि वन्दिरुन्दनन् पोट्रि
अळितरुम् आक्कै चॆय्दोन् पोट्रि
ऊट्रिरुन्दुळ्ळम् कळिप्पोन् पोट्रि
आट्रा इन्बम् अलर्न्दलैच् चॆय्यप्
पोट्रा आक्कैयैप् पॊरुत्तल् पुगलेन् !

(तिरुमुरै आठ - 3 पंक्ति 115-123)

50. *अद्भुत है प्रभु ! तेरी विभूति*
सुमन में सुवास सम रहते हुए
विस्तार करते हो निज महिमा
अंतराय बिन अग-जग में
ऐसे महिमामय प्रभु सहज सरल बन
आए मेरे पास
ज्ञान दिया नश्वर जग का शरीर का
फिर ज्योतिष्मान प्रभु ने
मेरी काया को भी बना दिया ज्योतिर्मय
जिससे मैं करूँ भक्ति का विस्तार
अहा ! पाया मैंने आनंद का उत्स
अपने हृदय-कमल में
विहँस रहा है मेरे मानस में सुमन सम
चाहता नहीं हूँ ढोना अस्थिचर्ममय देह को।

(तिरुमुरै आठ - 3 पंक्ति 115-123)

ஒளித்தல் ओळित्तल्

51. *மரகதக் குவாஅல் மாமணிப் பிறக்கம்*
மின்னொளி கொண்ட பொன்னொளி திகழத்
திசைமுகன் சென்று தேடினர்க் கொளித்தும்
முறையுளி யொற்றி முயன்றவர்க் கொளித்தும்
ஒற்றுமை கொண்டு நோக்கும் உள்ளத்து
உற்றவர் வருந்த உறைப்பவர்க் கொளித்தும்
மறைத்திறம் நோக்கி வருந்தினர்க் கொளித்தும்
இத்தந் திரத்திற் காண்டுமென் றிருந்தோர்க்கு
அத்தத் திரத்தின் அவ்வயின் ஒளித்தும் 132

51. *मरकत्क्कुवाअन् मामणिप्पिऱक्कम्*
मिन्नॊळि कॊण्ड पॊन्नॊळि तिगऴत्
तिशैमुगन् चॆन्ऱु तेडिनर्क्कॊळित्तुम्
उऱैयुळि ऒट्रि मुयन्ऱवाक्कॊळित्तुम्
ऒट्रुमै कॊण्डु नोक्कुम् उळ्ळत्तु
उट्रवर् वरुन्द उऱैप्पवर्क्कॊळित्तुम्
मऱैत्तिऱम् नोक्कि वरुन्दिनर्क्कॊळित्तुम्
इत्तन्दिरत्तिऱ् काण्डुमॆऍन्ऱिरुन्दोर्क्कु
अत्तन्दिरत्तिन् अव्वयिनॊळित्तुम्

(तिरुमुऱै आठ - 3 पंक्ति 124-132)

तिरोधान

51. *अद्‌भुत है प्रभु तुम्हारी देहकांति*
मरकत-राशि पर ज्यों पड़े माणिक्य की आरक्त आभा
तटिल्लता पर झलके ज्यों कनक की आभा
दिग्दिगंत में ढूँढते रहे बहिर्मुख साधकों के लिए
अगोचर होकर तुम तिरोधान कर गए
हार गए वे भी जो शास्त्र-विधि पर चलते रहे
हाथ में न आए तुम तपस्वियों के लिए भी
जो बंधु-बांधवों को ताप देकर तपते रहे स्वयं भी
रिक्तहस्त रहे वेदमार्गी भी
दंभ भरते रहे कतिपय जन
इस तंत्र से पा लेंगे हम
और तुम ने काट दिए उनके उपाय उस तंत्र से
तिरोभूत ही रहे तुम !

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 124-132)

52. முனிவற நோக்கி நனிவரக் கௌவி
ஆணெனத் தோன்றி அலியெனப் பெயர்ந்து
வாள்நுதற் பெண்ணென ஒளித்துஞ் சேண்வயின்
ஐம்புலன் செலவிடுத் தருவரை தொறும்போய்த்
துற்றவை துறந்த வெற்றுயி ராக்கை
அருந்தவர் காட்சியுள் திருந்த ஒளித்தும்
ஒன்றுண் டில்லை யென்றறி வொளித்தும்
பண்டே பயில்தொறும் இன்றே பயில்தொறும்
ஒளிக்குஞ் சோரனைக் கண்டனம் 141

52. मुनिवऱ् नोक्कि ननिवरक् कॅळवि
आणॅनत् तोन्ऱि अलियॅनप् पॅयर्न्दु
वाळ्नुदल् पॅण्णॅन ऑळित्तुम् चेण्वयिन्
ऐम्पुलन् चॅलविडुत् तरुवरै तॊरुम्पोय्त्
तुट्रवै तुऱन्द वॅट्रुयिर् आक्कै
अरुन्तवर् काट्चियुळ् तिरुन्द ऑळित्तुम्
ऑन्ऱुण्डिल्लै यॅन्ऱऱिवॊळित्तुम्
पण्डे पयिल्तॊऱुम् इन्ऱे पयिल्तॊऱुम्
ऑळिक्कुम् चोरनैक् कण्डनम्

(तिरुमुऱै आठ - 3 पंक्ति 133-141)

52. *प्रयासरत होने पर लगन से निष्ठा से*
दिखा वह पहले पुरुषाकार झट में बना क्लीव
अगले क्षण में झलक दिखाई शशिवदना नारी की
फिर कर गया तिरोधान वह छलिया।
धत्ता बताकर पंचेंद्रियों को कोई
चला गया गिरि-कंदरा में तपस्या करने
शरीर सूखकर कांटा बना लटके रहे प्राण
तब भी दिखे नहीं तुम
दर्शन नहीं दोगे उनके लिए
जो संशय के डोर में डोलते रहते
एक है कि वह अनेक है या नहीं है
कुछ लोगों का दावा था :
"पा लिया हमने उस छलिये को
अपना कर नए-पुराने साधना मार्ग"....।

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 133-141)

அர்ச்சனை अर्च्चनै

53. ஆர்மின் ஆர்மின் நாண்மலர்ப் பிணையலில்
தாள்தளை யிடுமின்
சுற்றுமின் சூழ்மின் தொடர்மின் விடேன்மின்
பற்றுமின் என்றவர் பற்றுமுற் றொளித்தும்
தன்னே ரில்லோன் தானேயான தன்மை
என்னே ரனையோர் கேட்கவந் தியம்பி 147

53. आर्मिन् आर्मिनाणमलर्प् पिणैयलिर्
ताळ् तलै इडुमिन्
चुट्रुमिन् चूऴ्मिन् तॉडर्मिन् विडेन्मिन्
पट्रुमिन् ऍन्रवर् पट्रु मुट्रॉळित्तुम्
तन्नेरिल्लोन् तानेयान तन्मै
ऍन्नेरनैयोर् केट्क वन्दियम्बि

(तिरुमुरै आठ - 3 पंक्ति 142-147)

54. அறைகூவி ஆட்கொண் டருளி
மறையோர் கோலங்காட்டி யருளலும்
உலையா அன்பென் புருக வோலமிட்டு
அலைகடற் றிரையன் ஆர்த்தார்த் தோங்கித்
தலைதடு மாறா வீழ்ந்துபுரண் டலறிப்
பித்தரின் மயங்கி மத்தரின் மதித்து
நாட்டவர் மருளவுங் கேட்டவர் வியப்பவும் 154

54. अऱैकूवि आट्कॉण्डरुळि
मऱैयोर् कोलम् काट्टि अरुळलुम्
उळैया अन्बॅन्बुरुग ओलमिट्टु
अलैकडल् तिरैयिनार्त्तार्न्दोङ्गित्
तलै तडुमारा वीऴ्न्दु पुरण्डलऱिप्
पित्तरिन् मयङ्गि मत्तरिन् मदित्तु
नाट्टवर् मरुळवुम् केट्टवर् वियप्पवुम्

(तिरुमुरै आठ - 3 पंक्ति 148-154)

अर्चना

53. *"....पा लिया उसे आओ भाइयो*
करो हर्षारव ! बांध लो
उसके चरणों को पुष्पमाल्यों से
घेर लो चारों ओर से ! पीछा करो ! छोड़ो मत !
बांध लो उसे" ..... कहते रहे वे
किंतु छिपा रहा वह उनके नयनों से।
अनुपम अप्रमेय वह
मुझ जैसों के कान में अभिमंत्रित करता
यह मैं हूँ, हाँ मैं हूँ, मैं ही हूँ ....।

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 142-147)

54. *कहते हुए अपना लिया अनुग्रहपूर्वक*
द्विज वेश दिखा कर अपना लिया
जब तुम्हें न पाया अपने सामने
द्रवित होकर प्रेमाभक्ति से
चिल्ला उठा तुम्हारे लिए
ज्यों हो रहा सागर तरंगों में तुमुल गर्जन
डगमगाकर गिर पड़ा अस्त-व्यस्त होकर
तड़प उठा लुढ़का धरणी पर
प्रलाप करता रहा उन्मत्त की भांति
सुधबुध खोकर
चकित-भ्रमित हुए सारे दर्शक
विस्मय-विमुग्ध हुए सुनने वाले।

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 148-154)

55. கடக்களி றேற்றாத் தடப்பெரு மதத்தின்
ஆற்றே னாக அவயவஞ் சுவைதரு
கோற்றேன் கொண்டு செய்தனன்
ஏற்றார் மூதூர் எழில்நகை யெரியின்
வீழ்வித் தாங்கன்று
அருட்பெருந் தீயின் அடியோம் அடிக்குடில்
ஒருத்தரும் வழாமை யொடுக்கினன்
தடக்கையின் நெல்லிக் கனியெனக் காயினன். 162

55. *कडक् कळिऱेट्राट् तडप् पॆरुमदत्तिन्*
आट्रेनाग अवयवम् चुवैतरु
कोट्रेन् कॊण्डु चॆय्दनन्
एट्रार् मूदूर् ऍऴिल्नगै ऍरियिन्
वीऴ्वित्ताङ्कन्ऱु
अरुट्पॆरुम् तीयिन् अडियोम् अडिक्कुडिल्
ऑरुत्तरुम् वऴामै ऑडुक्किनन्
तडक्कैयिन् नॆल्लिक्कनि ऍनक्कायिनन्।

(तिरुमुऱै आठ - 3 पंक्ति 155-162)

ஆனந்தம் आनन्दम्

56. சொல்லுவ தறியேன் வாழி முறையோ
தரியேன் நாயேன் தானெனைச் செய்தது
தெரியேன் ஆஆ செத்தேன் அடியேற்கு
அருளிய தறியேன் பருகியு மாரேன்
விழுங்கியும் ஒல்ல கில்லேன் 167

56. *चॊल्लुवदऱियेन् वाऴि, मुऱैयो*
तरिये नायेन् तानॆनैच् चॆय्ददु
तॆरियेन् आआ चॆत्तेनडियेर्कु
अरुळियदऱियेन् परुगियुम् आरेन्
विऴुङ्गियुम् ऑल्लकिल्लेन्

(तिरुमुऱै आठ - 3 पंक्ति 163-167)

55. *मदमत्त हाथी की तरह थी मेरी दशा*
जो आरूढ़ न होने देता महावत को
तनाव में था देह का अंग अंग
नाथ ने तब दिया मधुमय अनुभव
ज्यों झर रहा हो अंग-अंग में सुमधुर मधु
तरु के तुंग शृंग के छत्ते का
ऐसा था वह आनंद
पुराकाल में ज्यों ढहा दिया था त्रिपुर
अपने मधुमय मंदहास से
जला कर भस्म कर डाला हमारे त्रिमल को
दर्शन दिया मुझे नाथ ने
देखा मैंने हस्तामलकवत्।

(तिरुमुऱै आठ -3 पंक्ति 155-162)

आनन्द

56. *आनंद की वह अनुभूति गूंगे का गुड़ है*
कह नहीं पा रहा हूँ इस आनंद को
श्वान तुल्य इस तुच्छ जन पर ऐसी कृपा !
क्या मैं इस योग्य था ?
भार यह सह नहीं पाता
विवश विकल हूँ नाथ
हा मैं मर रहा हूँ
परम आनंद का मधुमय स्वाद
पान करते अघाता नहीं
निगलते बनता भी नहीं।

(तिरुमुऱै आठ -3 पंक्ति 163-167)

57. செழுந்தண் பாற்கடல் திரைபுரை வித்து
உவாக்கடல் நள்ளுநீர் உள்ளகந் ததும்ப
வாக்கிறந் தமுதம் மயிர்க்கால் தோறும்
தேக்கிடச் செய்தனன் கொடியேன் ஊன்தழை
குரம்பை தோறும் நாயுட லகத்தே
குரம்பைகொண் டின்தேன் பாய்த்தி நிரம்பிய
அற்புத மான அமுத தாரைகள்
எற்புத் துளைதொறும் ஏற்றினன் உருகுவது 175

57. चॆऴ़ुन्तण् पार्कडल् तिरैपुरैवित्तु
उवाक्कडल् नळ्ळुनीर् उळ्ळगम् तदुम्ब
वाक्किऱन्दमुदम् मयिर्क्काल् तोऱुम्
तेक्किडच् चॆय्दनन् कॊडियेन् ऊन्तऴै
कुरम्बै तोऱुम् नायुडलगत्ते
कुरम्बै कॊण्डिन्ऱेन् पाय्त्ति निरम्बिय
अर्पुदमान अमुद तारैगळ्
ऍर्पुत् तुळै तॊऱुम् ऍट्रिनन् उरुगुवदु ।

(तिरुमुऱै आठ -3 पंक्ति 168-175)

58. உள்ளங் கொண்டோர் உருச்செய் தாங்கெனக்கு
அள்ளூ றாக்கை யமைத்தனன் ஒள்ளிய
கன்னற் கனிதேர் களிறெனக் கடைமுறை
என்னையும் இருப்ப தாக்கினன் என்னிற்
கருணை வான்தேன் கலக்க
அருளொடு பராவமு தாக்கினன்
பிரமன்மா லறியாப் பெற்றி யோனே! 182

58. उळ्ळङ्कॊण्डोर् उरुच्चॆय्दाङ् गॆनक्कु
अळ्ळूराक्कै अमैत्तनन् ऒळ्ळिय
कन्नऱ् कनितेर् कळिऱॆनक् कडैमुऱै
ऍन्नैयुम् इरुप्पदाक्किनन् ऍन्निऱ्
करुणै वान्ऱेन् कलक्क
अरुळॊडु परावमुदाक्किनन्
पिरमन् मालऱियाप् पॆट्रियोने !

(तिरुमुऱै आठ -3 पंक्ति 176-182)

57. *सुधबुध भूल गया हूँ परमानंद से*
ज्यों अगणित सागरों की सुख-शीतल तरंगें
उत्थित हो रही हैं एक साथ
जैसे तुंग लहरों में उफान आ गया हो
पूर्ण चंद्र के दर्शन से
अहा ! मधुरिम आनंद यह
हो रहा है रोम रोम सराबोर
क्या मेरी तुच्छ देह इस योग्य है
नाथ के निवास के लिए ?
बसा है नाथ मेरी इसी देह में
भर दी है अमृतधारा आनंद की
हर नस-नाड़ी में कोशिका में।

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 168-175)

58. *पिघलते हुए मेरे मन को*
रूप दिया नाथ ने; आनन्दमय
ज्योति-शरीर पाया मैंने
अयोग्य हाथी को प्रेम से खिलाया
इक्षुखंड के संग बेल का अमृत फल
परमानंद में स्थिर किया मुझको
करुणामय प्रभु ने दिया
अनुग्रह का स्वर्गीय आनंद
अमृत स्वरूप बना दिया नाथ ने
जो अगोचर रहा
विष्णु-विरिंचि के लिए भी।

(तिरुमुरै आठ -3 पंक्ति 176-182)



स्रोत : तिरुवाचकम् - टी. एन. रामचन्द्रन्
Source : Tiruvaachakam by T.N. Ramachandran

On scrutiny one will find
The spherical and heavenly bodies of the Cosmos,
Their limitlessness, their uberous
And multitudinous forms,
And the way they excel each other in pulchritude,
To exceed in number a thousand millions.
God indeed is so great that all these worlds,
In His presence, are like the minute atomic particles,
Seen in the sun's rays that streak into a house.

He, the eternally young and handsome One,
Spins the throngs of Brahma-s
and the multitudinous Vishnu-s,
The commencement, the sustenace
and the absorption
Of the puissant and great aeons whence manifest
Creation, sustenance and absorption,
Like the swaying and spinning of the hurricane
Which is made up of strong and subtle currents.

He is the hoary One who creates the creators of all things,
Fosters the ones that foster the created things,
And resolves them at the appointed hour.
He is the Concealer whose grace defies thinking.
The godlings that confer release to those
That pursue the six lofty faiths,
Are like worms before Him.
He is the One that confers
On the sun its diurnal effulgence,
On the sacred moon its coolth,
On the puissant fire its heat,
On the ether pure its pervasiveness,
On the glorious wind its force,

On the sparkling water its sweetness,
On the earth its palpable hardness.
Thus, even thus, He packed into each
Of the billions and billions of things its virtue.

[These are but a few of His greatnesses.]
Behold Him, the hoary One, the complete One;
The peerless One; the One that wears
The tusks of the hoary Boar; the One whose loin
Is girt with the skin of the sylvan tiger;
The One that wears the Holy Ash.
As I think and think on Him
I am unable to contain myself;
Alas, ruination is my lot.
He is the concordant melody in the Veena
And of its (arcane) virtue He (alone) is aware.
He is the supernal One; He is the most hoary One;
He is the great One, by Brahma and Vishnu unbeheld;
He is the wondrous One; He is the many;
He is the ancient One beyond the reach of vocables;
He is the One far beyond the pale of Thought.
He is the One taken in the net of devotion;
He is the One – indeed the only One.

Lines : 1 - 46

4

போற்றித் திருவகவல்

पोट्रि तिरु अगवल्

சகத்தின் உற்பத்தி

जगत्तिन् उत्पत्ति

சிவனடி · शिवनडि

59. நான்முகன் முதலா வானவர் தொழுதெழ
ஈரடி யாலே மூவுல களந்து
நாற்றிசை முனிவரும் ஐம்புலன் மலரப்
போற்றிசெய் கதிர்முடித் திருநெடு மாலன்று
அடிமுடி யறியும் ஆதர வதனிற்
கடுமுரண் ஏன மாகி முன்கலந்து
ஏழ்தலம் உருவ இடந்து பின்னெய்த்து
ஊழி முதல்வ சயசய வென்று
வழுத்தியுங் காணா மலரடி யிணைகள்
வழுத்துதற் கெளிதாய் வார்கடல் உலகினில்

59. नान्मुगन् मुदला वानवर् तॊऴुदॆऴ
ईरडियाले मूवुलगु अळन्दु
नाट्रिशै मुनिवरुम् ऐम्पुलन् मलरप्
पोट्रि शॆय् कदिर्मुडित् तिरु नॆडुमाल् अन्ऱु
अडि मुडि अऱियुम् आदरवदनिऱ्
कडुमुरण् एनम् आगि मुन्कलन्दु
ऊऴि मुदल्व जय जय ऎन्ऱु
वऴुत्तियुम् काणा मलरडि इणैगळ्
वऴुत्तुतर्कॆळिदाय् वार्कडल् उलगिनिल् !

(तिरुमुरै आठ -4 पंक्ति 1-10)

4

शिव चरण प्रशस्तिगान

जगत् की उत्पत्ति

59. *स्तुतिरत थे चतुरानन प्रभृति देवता*
झटिति में नाप डाला सुदीर्घ नपु
श्रीमन्नारायण ने
धरती और आकाश को दो डगों से
बारंबार प्रणत हुए नारायण चरण पर
ऋषि-मुनि और देवगण
ऐसे नारायण का मन हुआ
ईश-चरण के दर्शन का
धारण किया जंगली शूकर का वपु
शक्तिशाली वेगवंत शूकर ने
पाताल तक छान मारा सप्तलोक
पर दर्शन नहीं मिला शिवचरणों का
थके हारे नारायण ने की स्तुति
जय हो प्रभु परमेश्वर तुम्हारी सदा विजय हो
तब भी पा न सके शिव चरण
ऐसे महिमामय चरण
दुर्लभ हैं भक्तजनों के लिए।

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 1-10)

பிறப்பு

पिरप्पु

60. யானை முதலா எறும்பீ றாய
ஊனமில் யோனியி னுள்வினை பிழைத்தும்
மானுடப் பிறப்பினுள் மாதா உதரத்து
ஈனமில் கிருமிச் செருவினிற் பிழைத்தும்
ஒருமதித் தான்றியின் இருமையிற் பிழைத்தும்
இருமதி விளைவின் ஒருமையிற் பிழைத்தும்
மும்மதி தன்னுள் அம்மதம் பிழைத்தும்
ஈரிரு திங்களிற் பேரிருள் பிழைத்தும்
அஞ்சு திங்களின் முஞ்சுதல் பிழைத்தும்
ஆறு திங்களின் ஊறலர் பிழைத்தும்
ஏழு திங்களில் தாழ்புவி பிழைத்தும்
எட்டுத் திங்களிற் கட்டமும் பிழைத்தும்
ஒன்பதில் வருதரு துன்பமும் பிழைத்தும்
தக்க தசமதி தாயொடு தான்படும் 24

60. यानै मुदला ऍरुम्बीऱाय
ऊनमिलि योनियिनुळ् विनै पिऴैत्तुम्
मानुडप् पिऱप्पिनुळ् माता उदरत्तु
ईनमिल् किरुमिच् चेरुविनिल् पिऴैत्तुम्
ऑरुमतित् तान्ऱियिन् इरुमैयिऱ् पिऴैत्तुम्
इरुमति विळैविन् ऑरुमैयिऱ् पिऴैत्तुम्
मुम्मति तन्नुळ् अम्मतम् पिऴैत्तुम्
ईरिरु तिङ्गळिऱ् पेरिरुळ् पिऴैत्तम्
अञ्जु तिङ्गळिन् मुञ्जुदल् पिऴैत्तुम्
आरु तिङ्गळिन् ऊऱलर् पिऴैत्तुम्
एऴु तिङ्गळिल् ताऴ्पुवि पिऴैत्तुम्
ऍट्टु तिङ्गळिऱ् कट्टमुम् पिऴैत्तुम्
ऑन्पतिल् वरुतरु तुन्पमुम् पिऴैत्तुम्
तक्क तशपति तायॊडु तान् पडुम्

(तिरुमुऱै आठ -4 पंक्ति 11-24)

जन्म

60. *हाथी से लेकर चींटी तक*
अगणित योनियों में जन्म लेने के बाद
कुछ पुण्यकर्म विशेष से
मानुष वपु मिलता है कठिन यातना के बाद
वास करना होता माँ के गर्भ में
पहले मास में संघर्ष करना होता है अगणित कृमियों से
दूसरे महीने में आकार हीनता से जूझता है
तीसरे महीने में योनि-मद में डूबा रहता है
चौथे महीने में टटोलता है अंधकार में
पाँचवें में बचता है गर्भपात की विपत्ति से
छठे मास में होता है अवयवों का गठन
सात आठ और नवें मास में
भांति भांति के दुखों से जूझता है
और अंत में प्रसव काल में
पीड़ा पाते हैं माँ और शिशु दोनों ही।

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 11-24)

61. துக்க சாகரத் துயரிடைப் பிழைத்தும்
ஆண்டுகள் தோறும் அடைந்தஅக் காலை
ஈண்டியும் இருத்தியும் எனைப்பல பிழைத்தும்
காலை மலமொடு கடும்பகற் பசிநிசி
வேலை நித்திரை யாத்திரை பிழைத்தும்
கருங்குழற் செவ்வாய் வெண்ணகைக் கார்மயில்
ஒருங்கிய சாயல் நெருங்கியுள் மதர்த்துக்
கச்சற நிமிர்ந்து கதிர்த்து முன்பணைத்து
எய்த்திடை வருந்த எழுந்து புடைபரந்து
ஈர்க்கிடை போகா இளமுலை மாதர்தம்
கூர்த்த நயனக் கொள்கையிற் பிழைத்தும்

61. तुक्क सागरत्तुयिरिडैप् पिऴैत्तुम्
आण्डुगल् तोऱुम् अडैन्द अक्कालै
ईण्डियुम् इरुत्तियुम् ऍनैप्पल पिऴैत्तुम्
कालै मलमॊडु कडुम् पकऱ्पशि निशि
वेलै नित्तिरै यात्तिरै पिऴैत्तुम्
करुङ्कुऴऱ् चॆव्वाय् वॆण्णगैक् कारमयिल्
ऑरुङ्गिय चायल् नॆरुङ्गि उळ्मदर्त्तुक्
कच्चऱ निमिर्न्दु कदिर्त्तु मुऩ्पणैत्तु
ऍय्त्तिडै वरुन्द ऍऴुन्दु पुडैपरन्दु
ईऱ्क्किडै पोगा इळमुलै मादर् तम्
कूर्त्त नयनक् कॊळ्ळैयिऱ् पिऴैत्तुम्

(तिरुमुऱै आठ - 4. पंक्ति 25-35)

61. *जन्म के बाद भी छूटती नहीं दुःख-परंपरा*
डूबना होता है दुःख-संताप के सागर में
साल पर साल बीतते हैं
अर्जित संचित कर्मों का भार बढ़ता जाता है
सुबह जगता है मल के साथ
बुमुक्षा भोजन निद्रा की चलती है परंपरा
फिर बड़े हुए पार हुई कुछ कौमार दशा
तो लगती है काम की तृषा
सघन केश जाल अरुणिम अधर मोती सरिस दंतपंक्ति
धवलोज्ज्वल मुस्कान के संग
हो रही मयूरी का नर्तन
तुंग स्तन युग्ल सघन इतना
कि मध्य में तीली रखने का स्थान नहीं
ऐसी मदिरेक्षणा के तीक्ष्ण नयन बाण से
बचना होता है।

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 25-35)

62. பித்த வுலகர் பெருந்துறைப் பரப்பினுள்
மத்தக் களிறெனும் அவாவிடைப் பிழைத்தும்
கல்வி யென்னும் பல்கடற் பிழைத்தும்
செல்வ மென்னும் அல்லலிற் பிழைத்தும்
நல்குர வென்னுந் தொல்விடம் பிழைத்தும்
புல்வரம் பாய பலதுறை பிழைத்தும் 41

62. पित्त उलगर् पॆरुन्तुऱैप् परप्पिनुळ्
मत्तक् कळिऱॆनुम् अवाविडैप् पिऴैत्तुम्
कल्वि ऍन्नुम् पल्कडऱ् पिऴैत्तुम्
चॆल्वम् ऍन्नुम् अल्ललिऱ् पिऴैत्तुम्
नल्कुरवॆन्नुम् तॊल्विडम् पिऴैत्तुम्
पुल्वरम्बाय पलतुऱै पिऴैत्तुम्

(तिरुमुऱै आठ -4 पंक्ति 36-41)

மதம் मतम्

63. தெய்வ மென்பதோர் சித்தமுண் டாகி
முனிவி லாததோர் பொருளது கருதலும்
ஆறு கோடி மாயா சக்திகள்
வேறு வேறுதம் மாயைகள் தொடங்கின
ஆத்த மானார் அயலவர் கூடி
நாத்திகம் பேசி நாத்தழும் பேறினர்
சுற்ற மென்னுந் தொல்பசுக் குழாங்கள்
பற்றி யழைத்துப் பதறினர் பெருகவும் 49

63. तॆयवम् ऍन्पदोर चित्तमुण्डागि
मुनिविलाददोर पॊरुळदु करुदलुम्
मारुकोडि माया सक्तिगळ्
वेऱु वेऱु तम् मायैगळ् तॊडंगिन;
आत्तमानार अयलवर् कूडि
नात्तिगम् पेशि नात्तऴुम्बेऱिनर्
चुट्रम ऍन्नुम् तॊल्पशुक्कुऴाङ्गळ्
पट्रि अऴैत्तुम् पदऱिनर् पॆरुगवुम्

(तिरुमुऱै आठ -4 पंक्ति 42-49)

62. *जग-जीवन में भांति-भांति के*
उन्माद से ग्रसित जनों के मध्य
जीता हुआ उनसे बचता हुआ
महत्त्वाकांक्षा के मदमत्त हाथी से बचता हुआ
मोक्ष-साधना में बाधक
विद्या-गर्व से बचता हुआ
दरिद्रता के दुख से बचता हुआ
अन्यान्य दुराचरणों से बचता हुआ
अस्तित्व में रहा किसी भांति से।

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 36-41)

मत-मतांतर

63. *उदित हुआ धीरे धीरे*
जीव के मानस में ईश-बोध
स्फुरित हुआ हृदय में तत्त्व-बोध
द्वेषरहित प्रेम-स्वरूप के अस्तित्व का
साथ ही सक्रिय हुईं
नाना प्रकार की माया-शक्तियाँ
अड़ोस-पड़ोस के लोगों ने उठाया
भांति-भांति का तर्कवाद नास्तिकता का
मोहवश बंधु-बांधव निजजन परिजन
चमड़े की गाय की भांति
पीछे पड़े चीत्कार करते हुए
यों बाधक बने प्रेमाभक्ति में।

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 42-49)

64. விரத மேபர மாகவே தியரும்
சரத மாகவே சாத்திரங் காட்டினர்
சமய வாதிகள் தத்தம் மதங்களே
அமைவ தாக அரற்றி மலைந்தனர்
மிண்டிய மாயா வாத மென்னும்
சண்ட மாருதஞ் சுழித்தடித் தாஅர்த்து
உலோகா யதனெனும் ஒண்திறற் பாம்பின்
கலாபே தத்த கடுவிட மெய்தி
அதிற்பெரு மாயை யெனப் பல சூழவும் 58

64. विरदमे परमाग वेदियरुम्
चरदम् आगवे चात्तिरम् काट्टिनर्
समयवादिकळ् तत्तम् मतङ्गळे
अमैवदाग अरट्रि मलैन्दनर्
मिण्डिय मायावादम् ऍन्नुम्
चण्ड मारुतम् चुऴित्तडित् ताअर्त्तु
उलकायदन् ऍनुम् ऑण्डिरर् पाम्बिन्
कला पेदत्त कडुविडम् ऍय्दि
अदिर् पॅरुमायै ऍनैप्पल चूऴ्वुम्

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 50-58)

64. *तप की अमोघता का उद्घोष किया*
वेद-धर्म के मानने वाले
दिखाते हुए शास्त्र के दृष्टांत
नाना मतवादी उछलकूद मचाते रहे
बखान करते हुए
अपने अपने मत की श्रेष्ठता का
फिर चला वेदांत का मायावाद
धूल उड़ाता हुआ चक्रवात बनकर
उधर से प्रकट हुआ लोकायत मत
ऐहिक सुख को अमोघ बताता हुआ
सीत्कार करता सर्प सा उठा
विषमय प्रचार का प्रसार करता हुआ।

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 50-58)

நாமங்கள் नामङ्गळ्

65. தப்பா மேதாம் பிடித்தது சலியாத்
தழலது கண்ட மெழுகது போலத்
தொழுதுள முருகி அழுதுடல் கம்பித்து
ஆடியும் அலறியும் பாடியும் பரவியும்
கொடிறும் பேதையுங் கொண்டது விடாதெனும்
படியே யாகிநல் லிடையறா அன்பில்
பசுமரத் தாணி அறைந்தாற் போலக்
கசிவது பெருகிக் கடலென மறுகி
அகங்குழைந் தனுகுல மாய்மெய் விதிர்த்து 67

65. तप्पामे ताम् पिडित्तदु चलियात्
तऴदलु कण्ड मॆऴुगदु पोलत्
तॊऴुदुळम् उरुगि अऴुदुडल् कम्बित्तु
आडियुम् अलऱियुम् पाडियुम् परवियुम्
कॊडिरुम् पेदैयुम् कॊण्डदु विडादॆनुम्
पडिये आगि नल् विडैयऱा अन्बिल्
पसुमरत्ताणि अऱैन्दाऱ् पोलक्
कसिवदु पॆरुगि कडलॆन मरुगि
अगम् कुऴैन्दनु कुलमाय् मॆय् विदिर्त्तु

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 59-67)

गुरु

65. *फँसे बिना मतवादों के भ्रमजाल में*
संपृक्त रहा सच्चा साधक भक्ति-मार्ग में
पिघलता रहा आँच में पड़े मोम सा
अश्रुपूरित नयनों से
प्रणत रहा नाथ चरण पर
रोते रोते कंपित हुआ शरीर
नाचता गाता चीखता चिल्लाता नाम ले लेकर
उसी भांति लगा रहा ईश के प्रेम में
जैसे चिमटा और मूर्ख छोड़ते नहीं अपनी पकड़
प्रेम मार्ग में संलग्न रहा
जैसे हरित तरु पर ठोकी गई कील हो
प्रेम में पसीजता हुआ
समुद्र सम उद्वेलित होता हुआ
मन पिघलता रहा तन कंपित होता रहा।

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 59-67)

66. சகம்பேய் என்று தம்மைச் சிரிப்ப
நாணது வொழிந்து நாடவர் பழித்துரை
பூணது வாகக் கோணுத லின்றிச்
சதுரிழந் தறிமால் கொண்டு சாரும்
கதியது பரம அதிசய மாகக்
கற்றா மனமெனக் கதறியும் பதறியும்
மற்றோர் தெய்வங் கனவிலும் நினையாது
அருபரத் தொருவன் அவனியில் வந்து
குருபர னாகி யருளிய பெருமையைச்
சிறுமையென் றிகழாதே திருவடி யிணையைப்
பிறிவினை யறியா நிழலது போல
முன்பின் னாகி முனியா தத்திசை 79

66. चगम् पेय् ऍन्ऱु तम्मैच् चिरिप्प
नाणदु ऑऴिन्दु नाडवर् पऴित्तुरै
पूणदुवागक् कोणुदल् इन्ऱिच्
चदुरिऴन्दऱिमाल् कॉण्डु चारुम्
गतियदु परम अतिशयमाक्
कट्रा मनमॅनक् कदऱियुम् पदऱियुम्
मट्रोर् तॅय्वम् कनविलुम् निनैयादु
अरुपरत्तॉरुवन् अवनियिल् वन्दु
गुरुपरन् आगि अरुळिय पॅरुमैयैच्
चिऱुमै ऍन्ऱिगऴादे तिरुवडि इणैयैप्
पिऱिविनै अऱिया निऴलदु पोल
मुन्पिन्नागि मुनियादत्तिशै

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 68-79)

66. *जग हँसता है उस पर पिशाच कह कर*
न शर्म करता है न बुरा मानता
लोकनिंदा को मान लेता है यह मेरा भूषण है
लेशमात्र भी मन छोटा नहीं करता
क्योंकि जानता है मिथ्या अहंकार
बाधा बनता है वांछनीय मोक्ष-मार्ग में
भली-भांति जानता है
सब से बड़ी उपलब्धि है मोक्ष
रोता है प्रभु के लिए
गाय से बिछुड़े बछड़े की भांति ही
भक्ति की एकतानता अनन्य भाव में
आसक्त न होता है अन्य देव पर
प्रभु की महिमा भी अपरंपार है
अपनी पर उतर आता है जो
भक्तजन के उद्धार के हित गुरु-रूप में
भक्त भी संलग्न होता है चरण-युगल से
ज्यों अनुसरण करती है छाया वस्तु का
दोनों एक दूसरे से विलग होते नहीं।

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 68-79)

67. என்புநைந் துருகி நெக்குநெக் கேங்கி
அன்பெனும் ஆறு கரையது புரள
நன்புலன் ஒன்றி நாதவென் றரற்றி
உரைதடு மாறி உரோமஞ் சிலிர்ப்பக்
கரமலர் மொட்டித் திருதயம் மலரக்
கண்களி கூர நுண்துளி அரும்பச்
சாயா அன்பினை நாடொறுந் தழைப்பவர் 86

67. ऍन्बु नैन्दुरुगि नॆक्कु नॆक्केङ्गि
अन्बॆनुम् आऱु करैयदु पुरळ
नन्पुलन् ऑन्ऱि नात ऍन्ऱरट्रि
उरै तडुमाऱि उरोमम् चिलिर्प्पक्
करमलर् मॉट्टित्तिरुदय मलरक्
कण्कळि कूर नुणतुळि अरुम्बच्
चाया अन्बिनै नाडॉरुम् तऴैप्पवर् तऴैप्पवर्

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 80-86)

67. *अतिशय प्रेम में*
पिघल जाते हैं अंग अंग, पसीजता हृदय
प्रेम नदी बहती चली तोड़कर तटबंध
अंतःकरण मन इंद्रिय एकाग्र हुए
पुकारा उसे 'हे प्रभो ! मेरे नाथ !'
गद्गद् होकर डगमगा उठी वाणी
थर थर कांप उठी संपूर्ण काया
मुकुलित हुए कर, हृदयकमल
विहँस उठा, निःसृत हुए
नयनों से प्रेमाश्रु के बिंदु
मिटता नहीं कभी यह प्रेम
दिनों दिन पगता बढ़ता है।

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 80-86)

தோத்திரம் तोत्तिरम्

68. தாயே யாகி வளர்த்தனை போற்றி
மெய்தரு வேதிய னாகி வினைகெடக்
கைதர வல்ல கடவுள் போற்றி
ஆடக மதுரை அரசே போற்றி
கூடல் இலங்கு குருமணி போற்றி
தென்தில்லை மன்றினுள் ஆடி போற்றி
இன்றெனக் காரமு தானாய் போற்றி
மூவா நான்மறை முதல்வா போற்றி
சேவார் வெல்கொடிச் சிவனே போற்றி!

68. ताये आगि वळर्त्तनै, पोट्रि
मॆय् तरु वेदियन् आगि विनै कॆडक्
कैतर वल्ल कडवुळ् पोट्रि
आडक मदुरै अरशे, पोट्रि
कूडल् इलंगु गुरुमणि, पोट्रि
तॆन्ऱिल्लै मन्ऱिनुळ् आडि पोट्रि
इन्ऱॆनक्कु आरमुदानाय् पोट्रि
मूवादान् मऱै मुदल्वा पोट्रि
चेकर् वॆल्कॊडिच् चिवने पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ -4 पंक्ति 87-95)

जयगान

68. *जननी सम पाल रहे प्रभु तुम्हें नमन है*
द्विज रूप धर कर आए, मेरे कर्म-बंधन काटकर
बरसाया मुझ पर अनुग्रह तुम्हें नमन है
कनकाभ मदुरै के नायक तुम्हें नमन है
कूडल नगरी में विलसे गुरुमणि, नमन है
दक्षिण चिदम्बरम् में नर्तित नटराज
तुम्हारे चरण युगल में बारंबार नमन है
अमृत बन आए मेरे लिए प्रभु तुम्हें नमन है
कालजयी चतुर्वेद के अधीश, नमन है
विजयदायक वृषभध्वज प्रभु तुम्हें नमन है।

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 87-95)

69. மின்னா ருருவ விகிர்தா போற்றி
கல்நார் உரித்த கனியே போற்றி
காவாய் கனகக் குன்றே போற்றி
ஆஆ என்றனக் கருளாய் போற்றி
படைப்பாய் காப்பாய் துடைப்பாய் போற்றி
இடரைக் களையும் எந்தாய் போற்றி
ஈச போற்றி இறைவ போற்றி
தேசப் பளிங்கின் திரளே போற்றி
அரசே போற்றி அமுதே போற்றி
விரைசேர் சரண விகிர்தா போற்றி!

69. मिन्नार् उरुव, विकिर्दा पोट्रि
कल्नार् उरित्त कनिये पोट्रि
कावाय् कनकक् कुन्रे पोट्रि
आआ ऍन् तनक्करुळाय् पोट्रि
पडैप्पाय्, काप्पाय्, तुडैप्पाय् पोट्रि
इडरैक् कळैयुम् ऍन्ताय् पोट्रि
ईश पोट्रि इऱैव पोट्रि
तेशप् पळिङ्गिन् तिरळे पोट्रि
अरशे पोट्रि अमुदे पोट्रि
विरैशेर् चरण विकिर्दा पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 96-105)

69. *तड़ित सम चमक कर*
नाना रूप लेते प्रभु, तुम्हें नमन है
शिला सम कठिन हृदय को
मृदुल बनाते इन्द्रजालिक तुम्हें नमन है
पालन करो कनक-शैल प्रभु, नमन है
हा हा ! करते पुकारता हूँ
रक्षा करो प्रभु, नमन है
सृष्टि स्थिति संहार कर्ता तुम्हें नमन है
विघ्नविनाशक तात, तुम्हें नमन है
ईश तुम्हें नमन है भगवन् तुम्हें नमन है
तेजोद्दीप मणियों के अंबार तुम्हें नमन है
राजाधिराज तुम्हें नमन है
अमृत-स्वरूप तुम्हें नमन है
सुगंधित चरण ! तुम्हें नमन है !

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 96-105)

70. வேதி போற்றி விமலா போற்றி
ஆதி போற்றி அறிவே போற்றி
கதியே போற்றி கனியே போற்றி
நதிசேர் செஞ்சடை நம்பா போற்றி
உடையாய் போற்றி உணர்வே போற்றி
கடையேன் அடிமை கண்டாய் போற்றி
ஐயா போற்றி அணுவே போற்றி
சைவா போற்றி தலைவா போற்றி
குறியே போற்றி குணமே போற்றி
நெறியே போற்றி நினைவே போற்றி !

70. वेदि, पोट्रि विमला, पोट्रि
आदि पोट्रि अऱिवे, पोट्रि
गतिये पोट्रि कनिये पोट्रि
नदिशेर् चॅञ्जडै नम्बा पोट्रि
उडैयाय्, पोट्रि उणर्वे पोट्रि
कडैयेन् अडिमै कण्डाय् पोट्रि
ऐया पोट्रि अणुवे पोट्रि
शैवा, पोट्रि तलैवा, पोट्रि
कुऱिये, पोट्रि गुणमे, पोट्रि
नॅऱिये पोट्रि निनैवे पोट्रि !

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 106-115)

70. वेदनायक तुम्हें नमन है ! अमल-विमल तुम्हें नमन है
आदिदेव तुम्हें नमन है ! ज्ञानस्वरूप तुम्हें नमन है
सकल जीव की सद्गति, नमन है ! सकल कार्य के फल, नमन
अरुणिम जटा पर गंगा धरे हो तुम्हें नमन है
एकैकनायक स्वामी नमन है ! चेतन स्वरूप तुम्हें नमन है
सदा रहा मैं दास तुम्हारा ! तुम्हें नमन है !
प्रभु तुम्हें नमन है ! अणु से भी अणु रूप तुम्हें नमन है
शिव स्वामी तुम्हें नमन है ! मेरे नायक तुम्हें नमन है
मेरे लक्ष्य तुम्हें नमन है ! वरेण्य गुण, तुम्हें नमन है
मेरे सत्पथ तुम्हें नमन है ! स्मृति रूप तुम्हें नमन है !

(तिरुमुरै आठ -4 पंक्ति 106-115)

71. வானோர்க் கரிய மருந்தே போற்றி
ஏனோர்க் கெளிய இறைவா போற்றி
மூவேழ் சுற்றம் முரணுறு நரகிடை
ஆழா மேயருள் அரசே போற்றி
தோழா போற்றி துணைவா போற்றி
வாழ்வே போற்றியென் வைப்பே போற்றி
முத்தா போற்றி முதல்வா போற்றி
அத்தா போற்றி அரனே போற்றி
உரையுணர் விறந்த ஒருவ போற்றி
விரிகடல் உலகின் விளைவே போற்றி!

71. *वानोक्करिय मरुन्दे, पोट्रि*
एनोर्क्कॆळिय इऱैवा पोट्रि
मुवेऴ् चुट्र मुरणुऱु नरकिडै
आऴामे अरुळ् अरशे पोट्रि
तोऴा पोट्रि तुणैवा पोट्रि
वाऴ्वे पोट्रि ऍन् वैप्पे पोट्रि
मुत्ता पोट्रि मुदल्वा पोट्रि
अत्ता पोट्रि अरने पोट्रि
उरै उणर्विऱन्द ऒरुव पोट्रि
विरिकडल् उलगिन् विळैवे, पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 116-125)

71. *अमरों के दुर्लभ औषध, नमन है*
इतर जनों के सहज सुलभ, तुम्हें नमन है
त्रि-सप्त पीढ़ियों को नरक-गर्त से
तारते करुणामय, तुम्हें नमन है
सखा मित्र नमन है, संगी-साथी नमन है
जीवनाधार तुम्हें नमन है ! महार्ह निधि नमन है!
मुक्तपुरुष नमन है ! नायक तुम्हें नमन है !
तात मेरे तुम्हें नमन है ! हर पशुपते नमन है !
मन और वाक् के अतीत, तुम्हें नमन है !
सागर-वलयित विश्व के लिए
महान् उपलब्धि, तुम्हें नमन है !

(तिरुमुरै आठ -4 पंक्ति 116-125)

72. அருமையில் எளிய அழகே போற்றி
கருமுகி லாகிய கண்ணே போற்றி
மன்னிய திருவருள் மலையே போற்றி
என்னையும் ஒருவ னாக்கி இருங்கழல்
சென்னியில் வைத்த சேவக போற்றி
தொழுதகை துன்பந் துடைப்பாய் போற்றி
அழிவிலா ஆனந்த வாரி போற்றி
அழிவதும் ஆவதுங் கடந்தாய் போற்றி
முழுவதும் இறந்த முதல்வா போற்றி
மானோர் நோக்கி மணாளா போற்றி!

72. अरुमैयिल् ऍळिय अऴगे पोट्रि
करुमुगिल् आगिय कण्णे पोट्रि
मन्निय तिरुवरुळ् मलैये पोट्रि
एन्नैयुम् ऑरुवन् आक्कि इरुङ्कऴल्
चॅन्नियिन् वैत्त सेवक, पोट्रि
तॊऴुतकै तुन्बम् तुडैप्पाय् पोट्रि
अऴिविला आनन्द वारि पोट्रि
अऴिवदुम आवदुम् कडन्दाय् पोट्रि
मुऴुवदुम् इऱन्द मुदल्वा पोट्रि
मानेर् नोक्कि मणाळा पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 126-135)

72. *अद्भुत सौंदर्य किंतु सहज सुलभ, तुम्हें नमन है !*
नील नीलिम मेघ के नयन तुम्हें नमन है !
अनुग्रह के महार्ह पर्वत, तुम्हें नमन है !
इस जन को भी दास मान कर
मेरे सिर पर चरण युगल धरे नायक, नमन है !
प्रणत जनों के आर्ति-भंजक, तुम्हें नमन है !
अक्षय आनंद के वारि, तुम्हें नमन है !
जनन मरण के अतीत, तुम्हें नमन है !
प्रलय के बाद सृजन के मूल कारण तुम्हें नमन है !
हरिणलोचना उमा के नायक सदा नमन है !

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 126-135)

73. வானகத் தமரர் தாயே போற்றி
பாரிடை ஐந்தாய்ப் பரந்தாய் போற்றி
நீரிடை நான்காய் நிகழ்ந்தாய் போற்றி
தீயிடை மூன்றாய்த் திகழ்ந்தாய் போற்றி
வளியிடை யிரண்டாய் மகிழ்ந்தாய் போற்றி
வெளியிடை ஒன்றாய் விளைந்தாய் போற்றி
அளிபவர் உள்ளத் தமுதே போற்றி
கனவிலுந் தேவர்க் கரியாய் போற்றி
நனவிலும் நாயேற் கருளினை போற்றி
இடைமரு துறையும் எந்தாய் போற்றி!

73. वानगत्तमरर् ताये पोट्रि
पारिडै यैन्दाय्प् परन्दाय् पोट्रि
नीरिडै नान्गाय् निगऴ्न्दाम् पोट्रि
तीयिडै मून्ऱाय्त् तिगऴ्न्दाय् पोट्रि
वळियिडै इरण्डाय् मगिऴ्न्दाय् पोट्रि
वॆळियिडै ऑन्ऱाय् विळैन्दाय् पोट्रि
अळिपवर् उळ्ळत्तमुदे पोट्रि
कनविलुम् देवर्क्करियाय् पोट्रि
ननविलुम् नायेर्क्करुळिनै पोट्रि
इडैमरुदुऱैयुम् ऍन्ताय् पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 136-145)

73. *अमरलोक वासियों की माता, तुम्हें नमन है !*
धरती पर पंचम तत्त्व रूप में व्याप्त, तुम्हें नमन है !
सलिल पर तुरीय तत्त्व बने हो, तुम्हें नमन है !
वह्नि में तृतीय तत्त्व रूप में शोभित तुम्हें नमन है
वायु में द्वितीय तत्त्व रूप में विलस रहे हो, तुम्हें नमन है
आकाश में प्रथम तत्त्व बन प्रकट हो, तुम्हें नमन है !
परिपक्व साधकों के हृदय में
अमृत बन विलसे हो तुम्हें नमन है !
स्वप्न में भी देवों के लिए दुर्लभ, नमन है
जाग्रत में भी मुझे सहज सुलभ हो
हे नाथ तुम्हें नमन है !
इडैमरुदूर में विराजे तात, तुम्हें नमन है !

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 136-145)

74. சடையிடைக் கங்கை தரித்தாய் போற்றி
ஆரூ ரமர்ந்த அரசே போற்றி
சீரார் திருவை யாறா போற்றி
அண்ணா மலையெம் அண்ணா போற்றி
கண்ணார் அமுதக்கடலே போற்றி
ஏகம் பத்துறை யெந்தாய் போற்றி
பாகம் பெண்ணுரு வானாய் போற்றி
பராய்த்துறை மேவிய பரனே போற்றி
சிராப்பள்ளி மேவிய சிவனே போற்றி
மற்றோர் பற்றிங் கறியேன் போற்றி !

74. चडैयिडैक् कङ्गै तरित्ताय् पोट्रि
आरूर् अमर्न्द अरशे पोट्रि
चीरार् तिरुवैयाऱा पोट्रि
अण्णामलै एम्म् अण्णा पोट्रि
कण्णार् अमुदक्कडले पोट्रि
एकम्बत्तुऱै ऍन्ताय् पोट्रि
पागम् पॆण्णुरुवानाय् पोट्रि
परायत् तुऱै मेविय परने पोट्रि
चिराप्पळ्ळि मेविय शिवने पोट्रि
मट्रोर् पट्रिङ्करियेन् पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 146-155)

74. *जटा पर गंगा धरे हो तुम्हें नमन है !*
तिरुवारूर में विराजे
त्यागराज प्रभु, तुम्हें नमन है !
श्रीलसित तिरुवैयार के अधीश, तुम्हें नमन है !
अरुणाचल में विराजे
हमारे नाथ, तुम्हें नमन है !
एकम्ब धाम में विराजे तात, नमन है !
अर्धनारीश्वर प्रभु, तुम्हें नमन है !
तिरुप्पराय् तुरै में विराजे
परात्पर प्रभु, तुम्हें नमन है
चिरापल्लि में विलसित शिवराज, नमन है !
तुम्हें छोड़ मेरा कोई आधार नहीं
एकैकनायक प्रभु, तुम्हें नमन है !

(तिरुमुरै आठ -4 पंक्ति 146-155)

75. குற்றா லத்தெங் கூத்தா போற்றி
கோகழி மேவிய கோவே போற்றி
ஈங்கோய் மலையெம் எந்தாய் போற்றி
பாங்கார் பழனத் தழகா போற்றி
கடம்பூர் மேவிய விடங்கா போற்றி
அடைந்தவர்க் கருளும் அப்பா போற்றி
இத்தி தன்னின் கீழிரு மூவர்க்கு
அத்திக் கருளிய அரசே போற்றி
தென்னா டுடைய சிவனே போற்றி
எந்நாட் டவர்க்கும் இறைவா போற்றி !

75. कुट्रालत्तॆम् कूत्ता पोट्रि
कोकऴि मेविय कोवे पोट्रि
ईङ्गोय् मलै ऍम् ऍन्दाय् पोट्रि
पाङ्कार् पऴनत्तऴगा पोट्रि
कडम्बूर् मेविय विडङ्गा पोट्रि
अडैन्दवर्क्करुळुम् अप्पा पोट्रि
इत्ति तन्निन् कीऴिरु मूवर्क्कु
अत्तिक्करुळिय अरशे पोट्रि
तॆन्नाडुडैय शिवने पोट्रि
ऍन्नाट्टवर्क्कुम् इऱैवा पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 156-165)

75. कुट्रालम् में नर्तित नटराज, तुम्हें नमन है !
तिरुवावडुतुरै धाम के अधीश, नमन है !
ईंगोयमलै में विलसते तात, तुम्हें नमन है !
सौंदर्यपुरी पळनम् में विराजे सुंदरेश, नमन है !
कडम्बूर् में विलसते हे विडंग, तुम्हें नमन है !
शरणागतों के प्रिय तात, तुम्हें नमन है !
प्रदान किया कृपापूर्वक
अश्मवट तले विराजे छहों के संग
हाथी को भी अनुग्रह, तुम्हें नमन है !
दक्षिण देश के नायक शिवराज तुम्हें नमन है !
सकल देश के परमेश्वर, तुम्हें नमन है !

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 156-165)

76. ஏனக் குருளைக் கருளினை போற்றி
மானக் கயிலை மலையாய் போற்றி
அருளிட வேண்டும் அம்மான் போற்றி
இருள்கெட அருளும் இறைவா போற்றி
தளர்ந்தே னடியேன் தமியேன் போற்றி
களங்கொளக் கருத அருளாய் போற்றி
அஞ்சே லென்றிங் கருளாய் போற்றி
நஞ்சே அமுதா நயந்தாய் போற்றி
அத்தா போற்றி ஐயா போற்றி
நித்தா போற்றி நிமலா போற்றி!

76. एनक्कुरुळैक् करुळिनै पोट्रि
मानक्कयिलै मलैयाय् पोट्रि
अरुळिड वेण्डुम् अम्मान् पोट्रि
इरुळ्कॆड अरुळुम् इऱैवा पोट्रि
तळर्न्दॆन् अडियेन् तमियेन् पोट्रि
कळङ्कॊळक् करुद अरुळाय् पोट्रि
अञ्जेल् ऍन्ऱिङ्करुळाय् पोट्रि
नञ्जे अमुदाय् नयन्दाय् पोट्रि
अत्ता पोट्रि अय्या पोट्रि
नित्ता पोट्रि निमला पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 166-175)

76. *कृपा बरसाई शूकर शावकों पर भी*
हे करुणामय, तुम्हें नमन है !
गौरवशाली कैलास के पति तुम्हें नमन है !
अनुग्रह चाहता हूँ मातृतुल्य प्रभु, तुम्हें नमन है !
अज्ञान-तिमिर को दूर करते हो, तुम्हें नमन है !
थका हारा एकाकी मैं पुकारता हूँ प्रभु
त्राण के लिए, तुम्हें नमन है !
सदा सर्वदा सर्वत्र ही आधार के लिए
मैं चाहूँ तुम्हें, ऐसा अनुग्रह करो
प्रभो, तुम्हें बारंबार नमन है !
अभयदान देकर अनुगृहीत करो, नमन है !
हलाहल को अमृत रूप में पान किया
प्रभु, तुम्हें नमन है !
तात तुम्हें नमन है प्रभु तुम्हें नमन है !
नित्य पुरुष तुम्हें नमन है अमल-विमल तुम्हें नमन है !

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 166-175)

77. பந்தா போற்றி பவனே போற்றி
பெரியாய் போற்றி பிரானே போற்றி
அரியாய் போற்றி அமலா போற்றி
மறையோர் கோல நெறியே போற்றி
முறையோ தரியேன் முதல்வா போற்றி
உறவே போற்றி உயிரே போற்றி
சிறவே போற்றி சிவமே போற்றி
மஞ்சா போற்றி மணாளா போற்றி
பஞ்சே ரடியாள் பங்கா போற்றி
அலந்தேன் நாயேன் அடியேன் போற்றி !

77. पत्ता पोट्रि पवने पोट्रि
पॅरियाय् पोट्रि पिराने पोट्रि
अरियाय् पोट्रि अमला, पोट्रि
मऱैयोर् कोल नॅऱिये पोट्रि
मुऱैयो, तरियेन् मुदल्वा पोट्रि
उऱवे पोट्रि उयिरे पोट्रि
चिऱवे पोट्रि शिवमे पोट्रि
मञ्जा पोट्रि मणाळा पोट्रि
पञ्जेऱ् अडियाळ् पङ्गा पोट्रि
अलन्दे नायेन् अडियेन् पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 176-185)

77. *प्रेमाभक्ति के साकार रूप, नमन है !*
भवशंकर प्रभु तुम्हें नमन है !
विराट् पुरुष तुम्हें नमन है !
प्रभु परमेश्वर बारंबार नमन है !
दुर्लभ रत्न तुम्हें नमन है ! अमल विमल तुम्हें नमन है !
वेदविदों के पुण्यपंथ तुम्हें नमन है
दुहाई है, धरूँगा कैसे धैर्य
हे मेरे नायक, तुम्हें नमन है !
मेरे बंधु-बांधव तुम्हें नमन है !
प्राणों के प्राण, बारंबार नमन है !
श्रेष्ठ पुरुष तुम्हें नमन है ! शिवराज नमन है !
सुंदरेश प्रभु तुम्हें नमन है !
दूल्हाराज तुम्हें नमन है !
मृदुचरण उमा को दिया वामभाग
प्रभु तुमने, बारंबार नमन है !
दास यह संतप्त है
दुःख दुरितों में पड़कर, प्रभो तुम्हें नमन है !

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 176-185)

78. இலங்கு சுடரெம் ஈசா போற்றி
கவைத்தலை மேவிய கண்ணே போற்றி
குவைப்பதி மலிந்த கோவே போற்றி
மலைநா டுடைய மன்னே போற்றி
கலயா ராிகே சாியாய் போற்றி
திருக்கழுக் குன்றிற் செல்வா போற்றி
பொருப்பமர் பூவணத் தரனே போற்றி
அருவமும் உருவமும் ஆனாய் போற்றி
மருவிய கருணை மலையே போற்றி
துாியமும் இறந்த சுடரே போற்றி!

78. इलंगु चुडर् ऍम् ईशा पोट्रि
कवैत्तलै मेविय कण्णे पोट्रि
कुवैप्पति मलिन्द कोवे पोट्रि
मलैनाडुडैय मन्ने पोट्रि
कलैयार् अरिगे चरियाय् पोट्रि
तिरुक्कऴुक्कुन्ऱिऱ् चॅल्वा पोट्रि
पॉरुप्पमर् पूवणत्तरने पोट्रि
अरुवमुम् उरुवमुम् आनाय् पोट्रि
मरुविय करुणै मलैये पोट्रि
तुरियमुम् इऱन्द चुडरे पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 186-195)

78. जाज्वल्यमान ज्योति, हमारे ईश तुम्हें नमन है !
कवैत्तलै धाम में विराजे अधीश नमन है !
कुवैपति धाम के नायक प्रभु तुम्हें नमन है !
पार्वत्य प्रदेश के अधिपति तुम्हें नमन है !
कला-कलित हरिकेसरी धाम के अधीश नमन है !
गृधाचल में विराजे नाथ तुम्हें नमन है !
पर्वत प्रदेश पूवणम् में विलसे प्रभु, नमन है !
निराकार भी हो साकार भी तुम्हें नमन है !
करुणा के महाशैल, बारंबार नमन है !
तुरीयातीत महाज्योति, तुम्हें नमन है !

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 186-195)

79. தெரிவரி தாகிய தெளிவே போற்றி
தோளா முத்தச் சுடரே போற்றி
ஆளா னவர்கட்கு அன்பா போற்றி
ஆராஅமுதே அருளே போற்றி
பேரா யிரமுடைப் பெம்மான் போற்றி
தாளி அறுகின் தாராய்ப் போற்றி
நீளொளி யாகிய நிருத்தா போற்றி
சந்தனச் சாந்தின் சுந்தர போற்றி
சிந்தனைக் கரிய சிவமே போற்றி
மந்திர மாமலை மேயாய் போற்றி!

79. तंरिवरिदागिय तंळिवे पोट्रि
तोळा मुत्तच् चुडरे पोट्रि
आळानवर्गट्कु अन्बा पोट्रि
आरा अमुरे, अरुळे पोट्रि
पेरायिरमुडैप् पंम्मान् पोट्रि
ताळि अरुगिन्राराय् पोट्रि
नीळंळि आगिय निरुत्ता पोट्रि
चन्दनच् चान्दिन् सुंदर पोट्रि
चिंतनैक्करिय शिवमे पोट्रि
मंतिर मामलै मेयाय् पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 196-205)

79. *सहज अग्राह्य स्पष्टता के रूप तुम्हें नमन है !*
छिद्ररहित मुक्ताराशि तुम्हें नमन है !
दास जनों के प्रियनाथ, बारंबार नमन है !
कभी न अघाते अमृत, अनुग्रहमूर्ति नमन है !
सहस्त्र नामों के स्वामी तुम्हें नमन है !
'ताळी' और दूर्वा माल्यों से शोभित
परमेश्वर प्रभु तुम्हें नमन है !
अखंड ज्योतिस्वरूप नर्तित नटराज, नमन है !
चंदन लेपित सुंदरेश प्रभु नमन है !
चिंतनातीत शिवराज तुम्हें नमन है !
महेंद्र पर्वत में विराजे ईश नमन है !

(तिरुमुरै आठ -4 पंक्ति 196-205)

80. எந்தமை உய்யக் கொள்வாய் போற்றி
புலிமுலை புல்வாய்க் கருளினை போற்றி
அலைகடல் மீமிசை நடந்தாய் போற்றி
கருங்குரு விக்கன் றருளினை போற்றி
இரும்புலன் புலர இசைந்தனை போற்றி
படியுறப் பயின்ற பாவக போற்றி
அடியொடு நடுவீ றானாய் போற்றி
நரகொடு சுவர்க்கம் நானிலம் புகாமல்
பரகதி பாண்டியற் கருளினை போற்றி
ஒழிவற நிறைந்த ஒருவ போற்றி!

80. ऍन्नमै उय्यक् कॉळ्वाय् पोट्रि
पुलिमुलै पुल्वायक् करुळिनै पोट्रि
अलै कडन् मीमिशै नडन्दाय् पोट्रि
करुङ् कुरुविक्कु अन्ऱरुळिनै पोट्रि
इरुम्पुलन् पुलर इशैन्दनै पोट्रि
पडियुऱप् पयिन्ऱ पावक पोट्रि
अडियॉडु नडु ईऱानाय् पोट्रि
नरकॉडु सुवर्क्क नानिलम् पुगामऱ्
परगति पाण्डियर्क्करुळिनै पोट्रि
ऑऴिवऱ् निऱैन्द ऑरुव पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 206-215)

80. तार दो मुझे प्रभु परमेश्वर, नमन है !
हरिण शावक पर दया करके
बाघिन का स्तन्य पिलवाया, तुम्हें नमन है !
तरंगसंकुल सागर पर
विचरण करते प्रभु तुम्हें नमन है !
काली गौरैया को भी
अनुगृहीत किया, तुम्हें नमन है
शक्तिशाली इंद्रियों को
निष्क्रिय बनाया, तुम्हें नमन है
मेरे उद्धार के लिए
धरती पर अवतरित ज्योतिरूप तुम्हें नमन है
आदि-मध्य-अंत-स्वरूप नमन है
पांड्यराज पर अनुग्रह बरसाया
स्वर्ग-नरक में प्रवेश के बिना
स्थान दिया शिवलोक में प्रभु
तुम्हें बारंबार नमन है
अंतराय बिन अगजग व्याप्त हो, नमन है।

(तिरुमुरै आठ -4 पंक्ति 206-215)

81. செழுமலர்ச் சிவபுரத் தரசே போற்றி
கழுநீர் மாலைக் கடவுள் போற்றி
தொழுவார் மையல் துணிப்பாய் போற்றி
பிழைப்பு வாய்ப்பொன் றறியா நாயேன்
குழைத்தசொன் மாலை கொண்டருள் போற்றி
புரம்பல எரித்த புராண போற்றி
பரம்பரஞ் சோதிப் பரனே போற்றி
போற்றி போற்றி புயங்கப் பெருமான்
போற்றி போற்றி புராண காரண
போற்றி போற்றி சயசய போற்றி!

81. चॅऴुमलर्च् चिवपुरत्तरशे पोट्रि
कऴुनीर् मालैक् कडवुऴ् पोट्रि
तॉऴुवार् मैयल् तुणिप्पाय् पोट्रि
पिऴैप्पु वाय्प्पॉन्ऱरिया नायेन्
कुऴैत्त चॉन्मालै कॉण्डरुऴ् पोट्रि
पुरम् पल ऍरित्त पुराण पोट्रि
परम् परञ्जोतिप् परने पोट्रि
पोट्रि पोट्रि पुयङ्गप् पॅरुमान्
पोट्रि पोट्रि पुराण कारण
पोट्रि पोट्रि जय जय पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 4 पंक्ति 216-225)

81. *सुमन-समृद्ध शिवपुर के अधीश नमन है !*
अरुणिम सरसिजमाल्यधर प्रभु, नमन है !
प्रणत जनों के दुरित नाशक तुम्हें नमन है !
युक्तायुक्त विवेक रहित
तुच्छ दास द्वारा रचित शब्द-माला को
उदारता से स्वीकार किया प्रभु
तुम्हें नमन है
त्रिपुर संहारक पुराणपुरुष तुम्हें नमन है !
परंज्योति स्वरूप परात्पर तुम्हें नमन है !
जय जय हो ! भुजंगधर प्रभु की
सबके आदि कारण, पुराणपुरुष नमन है
जयजयकार सहित नमन है
तुम्हें बारंबार नमन है।

(तिरुमुरै आठ - 4 पंक्ति 216-225)



स्रोत : तिरुवाचकम् - वर्ड बीटिफिक एस. ए. शंकरनारायनन्
Source : Tiruvacagam : Word Beatific by S.A. Sankaranarayanan

Four faced one and celestials' train
worshipp'd and moved; the great gloried
Maal of luminous locks, by sages
praised to their relish of senses
five from quarters four as He scaled
the three worlds in mere two steps
of yore, lusted for a darshan
of the feet-pair of Lord's mien
divine; took a tough tusker's form;
burrowed the nether worlds twice seven,
penetrating deep but failing;
wearied, did hail 'O, THE FIRST CAUSE
for the end of all worlds;' despite,
the Feet unseen, for worshipping,
are manifest, on sea-girt Earth,
great, in simple access; where,
surviving the fatal innards
of ranging wombs elephant-big
to ant-small beyoud either way
in the battle of bacterium,
spared, e'en thus, in human vessels;
saved in the first month from the risk
of dehiscence in foetal stage
assuming a belleric fix;
in second synodic saved from
the killing clash of larvae within;
and from the risk of wasting shape;
in third unsunk in viscid humour;
in fourth pimpling through the pitch-dark;
in fifth never losing the breath
from leavening swell of waters;
in sixth from prurient ooze saved;

from premature lapse in seventh,
womb failing, in eighth from choking
enlargement, in ninth from pendent
release, in tenth from agony
of the parent and the nascent
parting born thus; and while growing,
escaping myriad hurdles like
constriction, pressure, affliction;
freed from morning's laxing, midday's
fell famishing hunger, midnight's
sleep-bred disturbances, and such
uptown down town roamings;
from being ravished by women
of spear-sharp eyes, black locks, red lips,
teeth white, softness strong to humble
the peacock proud in monsoon months
in youthful bosoms upheaving,
swelling, to smart their slender waists
by a propelling dense bearing
more than other limbs as to snap
the ties of their stays that held them
so rivallingly paired, jamming
each other's soft spheric thickness
allowing not a palm-fibre
between; from musty desire
tusker-like that churns the whole sea
of drives with large parts on zany
land; squeezing through the many straits
of learning; exempt from the grief
of affluence that hardly stay;
from the venom of penury
stale, saved; and unorn by efforts
variform with frail targets set;..........

Lines : 1- 41

5

திருச்சதகம்

तिरुच्चतकम्

பக்தி வைராக்கிய விசித்திரம்

भक्ति वैराक्किय विचित्तिरम्

மெய்யுணர்தல் | **मॆय्युणर्तल्**

82. மெய்தான் அரும்பி விதிர்விதிர்த்
துன்விரை யார்கழற்கென்
கைதான் தலைவைத்துக் கண்ணீர்
ததும்பி வெதும்பியுள்ளம்
பொய்தான் தவிர்ந்துன்னைப் போற்றி
சயசய போற்றியென்னும்
கைதான் நெகிழ விடேன்உடை
யாயென்னைக் கண்டுகொள்ளே! 1

82. मॆय् तानरुम्बि विदिर् विदिर्त्तु
उन् विरैयार् कऴऱ्कॆन्
कैतान् तलै वैत्तुक् कण्णीर्
ततुम्बि वॆदुम्बियुळ्ळम्
पॊय्तान् तविर्न्दुन्नैप् पोट्रि
जय जय पोट्रि यॆन्नुम्
कैतान् नॆगिऴ् विडेन् उडै–
याय् ऎन्नैक् कण्डुकॊळ्ळे।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 1-4)

5

श्रीशतक

भक्ति-वैराग्य का वैचित्र्य

सत्य का ज्ञान

82. *तेरे सुगंधित चरणों की चाह में*
पुलकित हो रहा मेरा गात्र
भावना के संवेग से काँप रहा हूँ थर थर
अंजलिबद्ध करयुग्ल धरे हैं सिर पर
उत्ताप है अंतःकरण में
अश्रुपूरित हैं युगल नयन
तजकर असत्य वचन
जिह्वा कर रही है तुम्हारा जय जयकार
हे नाथ ! तुम्हें नमन है
शिथिल नहीं होंगे मेरे हाथ
प्रभो, देख लो मुझे करुणा-कटाक्ष से
और अपना लो कृपापूर्वक।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 1-4)

83. கொள்ளேன் புரந்தரன் மாலயன்
வாழ்வுகுடி கெடினும்
நள்ளேன் நினதடி யாரொடல்
லால்நர கம்புகினும்
எள்ளேன் திருவரு ளாலே
இருக்கப் பெறின்இறைவா
உள்ளேன் பிறதெய்வம் உன்னையல்
லாதெங்கள் உத்தமனே! 2

83. कॉव्ळेन् पुरन्दरन् मालयन
वाऴ्वु कुडि कॅडिनुम्
नव्ळेन् निनदडियारॉडल् –
लाल्नरकम् पुगिनुम्
ऍव्ळेन् तिरुवरुळाले
इरुक्कप् पॅरिन्, इरैवा !
उव्ळेन् पिऱ् दॅय्वम् उन्नैयल् –
ला दॅङ्गळ् उत्तमने !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 5-8)

84. உத்தம னத்தன் உடையான்
அடியே நினைந்துருகி
மத்த மனத்தொடு மாலிவ
னென்ன மனநினைவில்
ஒத்தன வொத்தன சொல்லிட
வூரூர்திரிந்தெவருந்
தத்தம் மனத்தன பேசஎஞ்
ஞான்றுகொல் சாவதுவே. 3

84. उत्तमन् अत्तन् उडैयान्
अडिये निनैन्दुरुगि
मत्त मनत्तॉडु मालिवन्
ऍन्न मन निनैविल्
ऑत्तन ऑत्तन चॉल्लिड
ऊरूर् तिरिन्दॅवरुम्
तत्त मनत्तन ऍञ् –
ञान्ऱु कॉल् चावदुवे।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 9-12)

83. *यदि तुम्हारा ऐसा अनुग्रह मिले*
हे प्रभो ! — तब भी
स्वीकार न करूँगा इन्द्र, ब्रह्मा और विष्णु का वैभव
चाहे विनष्ट हो जाए मेरा घरबार
चाहूँगा नहीं तुम्हारे भक्तों को छोड़कर
इतर जनों से मैत्री
चाहे इसके लिए नरकवास करना पड़े
उसकी निंदा नहीं करूँगा
हे वरेण्य देवाधिदेव !
मानूँगा नहीं तुम्हें छोड़कर
अन्य देवताओं को।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 5-8)

84. *हे परमेश्वर ! बावरा बनूँ मैं तेरे ध्यान में*
'हे सर्वोत्तम ! तात-मात ! मेरे नाथ !'
यों पुकारते हुए तुम्हारे नाम
डोलता रहूँ मैं ग्राम-नगर में
तुम्हारे मंदिरों में तीर्थस्थानों में
मुझे देखने वाले लोग कह उठें
देखो यह बावरा जा रहा है !
जो भी मन में आए बोलते रहें लोग
और मैं उनकी चिंता किये बिना
तुम्हारी आसक्ति में बना रहूँ उन्मत्त
बोलो प्रभो ! कब आएगा ऐसा सुयोग
जब मर जाए मेरे अंदर का 'मैं' ?

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 9-12)

85. சாவமுன் னாள்தக்கன் வேள்வித்
தகர்தின்று நஞ்சமஞ்சி
ஆவவெந் தாயேன் றவிதா
விடுநம் மவரவரே
மூவரென் றேயெம் பிரானொடும்
எண்ணிவிண் ணாண்டுமண்மேல்
தேவரென் றேஇறு மாந்தென்ன
பாவந் திரிதவரே. 4

85. चाव मुन्नाळ् तक्कन् वेळ्वित्
तगर् निन्रु नञ्जमञ्जि
आव वेन्दायेन्र् विदा
विडु नम्मवर् अवरे
मूवरन्रे ऍम्पिरानांडुम्
ऍण्णि विण्णाण्डुमणमेल्
तेवर् ऍन्रे इरुमान्दन्न
पावन्तिरिदवरे।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 13-16)

86. தவமே புரிந்திலன் தண்மலர்
இட்டுமுட் டாதிறைஞ்சேன்
அவமே பிறந்த அருவினை
யேன்உனக் கன்பருள்ளாஞ்
சிவமே பெறுந்திரு வெய்திற்றி
லேன்நின் திருவடிக்காம்
பவமே யருளுகண் டாய்அடி
யேற்கெம் பரம்பரனே. 5

86. तवमे पुरिन्दिलन् तण्मलर्
इट्टु मुट्टादु इरैञ्जेन्
अवमे पिरन्द अरुविनै
येन् उनक्कन्बरुळ्ळाम्
शिवमे पॅरुन्तिरुवॅय्दिट्रि
लेनिन् तिरुवडिक्काम्
पवमे अरुळु कण्डायडि
येर्कॅम् परम्परने !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 16-20)

85. पुराकाल में हमारे देवताओं ने
दक्ष-यज्ञ में भाग लेकर
खा लिया अज-माँस आमोद से
हविमणि के रूप में
फिर चुकाना पड़ा इस का दंड भी
थर-थर काँपे थे मृत्यु से डरकर
फिर समुद्र-मथन के बाद
जब निकला अमृत
अशन किया आमोद से
यह दंभ भरते हुए
कि हम त्रिमूर्ति हैं परमेश्वर के तुल्य
किंतु जब हलाहल निकला था
हाहाकार करते हुए भागे आए
परमेश्वर के पास
त्राहि-त्राहि ! हमारे तात।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 13-16)

86. नहीं किया कोई तपोनुष्ठान
ईश मेरे, अर्चन नहीं किया तेरे चरणों का
सुरभित सुमनों से और
गिड़गिड़ाया नहीं तुम्हारे समक्ष
व्यर्थ ही गया मेरा जन्म
दुष्कर्म का मारा मैं
वंचित रहा शिवानंद से
जो तुम्हारे भक्तों को सुलभ है
यही प्रार्थना है प्रभो
ऐसा जन्म दो मुझे
मैं तुम्हारा दास बनूँ
हे परात्पर ! अपनाओ मुझे।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 17-20)

87. பரந்துபல் லாய்மல ரிட்டுமுட்
டாதடி யேயிறைஞ்சி
இரந்தவெல் லாமெமக் கேபெற
லாமென்னும் அன்பருள்ளங்
கரந்துநில் லாக்கள்வ னேநின்றன்
வார்கழற் கன்பெனக்கு
நிரந்தர மாயரு ளாய்நின்னை
யேத்த முழுவதுமே. 6

87. परन्दु पल्लाय् मलरिट्टु मुट् –
टादपडिये इऱैञ्जि
इरन्द वॅल्लामॅमक्के पॅऱ –
लामॅन्नुम् अन्बरुळ्ळम्
करन्दु निल्लाक् कळ्वने निन्ऱन्
वार् कऴर्कन्बॅनक्कु
निरन्तरमाय् अरुळाय् निन्नै
एत्त मुऴुवदुमे।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 21-24)

88. முழுவதுங் கண்டவ னைப்படைத்
தான்முடி சாய்த்துமுன்னாள்
செழுமலர் கொண்டெங்குந் தேடஅப்
பாலன்இப் பால்எம்பிரான்
கழுதொடு காட்டிடை நாடக
மாடிக் கதியிலியாய்
உழுவையின் தோலுடுத் துன்மத்த
மேல்கொண் டுழிதருமே. 7

88. मुऴुवदुम् कण्डवनैप् पडैत्
तान् मुडि चाय्त्तु मुन्नाळ्
चॅऴुमलर् कॉण्डॅङ्गुम् तेड अप्
पालनिप्पाल् ऍम्पिरान्
कऴुदॉडु काट्टिडै नाटक
माडिक् कदियिलियाय्
उऴुवैयिन् तोलुडुत्तुन्मत्त
मेर्कॉण्डुऴि तरुमे।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 25-28)

87. *चुन चुनकर भांति भांति के सुमन*
अर्चन करते हैं तेरे चरणों पर
भक्तजन विधिपूर्वक नित्य नियमित रूप से
विश्वास है उन्हें
जो भी इच्छा होगी पूरी होगी तुम्हारी कृपा से
विलस रहे हो प्रभु ऐसे प्रेमी जनों के हिय में
छिप जाते हो चोर की भांति इतर जनों से
हे प्रभो ! मेरे नाथ ! अनुग्रह करो
निमग्न रहूँ सतत ध्यान में पूजन आराधन में
निष्ठा से नियम से।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 21-24)

88. *सृजनकर्ता के भी तात महाविष्णु*
शूकर रूप लेकर ढूँढते रहे
पूरा ही मुँह धंसाकर धरती पर
छान डाला पाताल तक
सुवासित सुमन लेकर खोजते रहे
किंतु पा न सके परमेश्वर को
महाविष्णु के लिए अदृश्य प्रभु
इधर धर कर अति साधारण वेश
श्मशान में घूम रहे हैं
भूत-प्रेत के संग उन्मत्त की भांति
कटि पर शोभित रहा व्याघ्र-चर्म
कैसा है यह नाटक !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 25-28)

89. உழிதரு காலுங் கனலும்
புனலொடு மண்ணுவிண்ணும்
இழிதரு காலமெக் காலம்
வருவது வந்ததற்பின்
உழிதரு காலத்த உன்னடி
யேன்செய்த வல்வினையைக்
கழிதரு காலமு மாயவை
காத்தெம்மைக் காப்பவனே! 8

89. उऴितरु काॢुङ् कनलुम्
पुनलांडु मण्णु विण्णुम्
इऴितरु कालमॅक्कालम्
वरुवदु वन्ददर्पिन्
उऴितरु कालत्त उन्नडि
येन् चॅय्द वल्विनैयैक्
कऴितरु कालमुमायवै
कात्तॅम्मैक् काप्पवने !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 29-32)

90. பவனெம் பிரான்பனி மாமதிக்
கண்ணிவிண் ணோர்பெருமான்
சிவனெம் பிரான்என்னை ஆண்டுகொண்
டான்என்சிறுமைகண்டும்
அவனெம் பிரானென்ன நானடி
யேனென்ன இப்பரிசே
புவனெம் பிரான் தெரி யும்பரி
சாவ தியம்புகவே. 9

90. पवनॅम्पिरान् पनि मामतिक्
कण्णि विण्णोऱ् पॅरुमान्
शिवनॅम्पिरान् ऍन्नैयाण्डुकॉण्
डान् ऍन् चिऱुमै कण्डुम्
अवन् ऍम्पिरा नॅन्न नानडि
येनॅन्न इप्परिशे
पुवनॅम्पिरान् तॅरियुम्परि
चावदियम्पुकवे ।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 33-36)

89. *प्रलय काल में*
काल कवलित होते हैं
चलायमान अनिल अनल के संग
सलिल आकाश भी मिट्टी भी
प्रलय के बाद सृजन करते हो
फिर से काल देश और सकल भूत को
काल के भी काल तुम
महाकाल हो मेरे नाथ !
अज्ञानवश मेरे द्वारा कृत
कर्मों का भी नाश करो
बचाओ हमें कर्म से काल से
ओ कालातीत ! महाकाल !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 29-32)

90. *भवशंकर प्रभु मेरे नाथ*
जटा पर शोभित शीतल चंद्र के संग कोन्रै-माल्य
अमर-लोक के एकैकनायक वह महादेव है
ऐसे देवाधिदेव शिवशंकर प्रभु ने
मुझे अपनाया अनुगृहीत किया
मेरी लघुता जान कर भी
'महादेव मेरे स्वामी
मैं उनका दास'
यह मेरी घोषणा ही
पर्याप्त है उनकी उदारता के
यशोविस्तार के लिए
सकल भुवन में ।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 33-36)

91. புகவே தகேன்உனக் கன்பருள்
யானென்பொல் லாமணியே
தகவே யெனையுனக் காட்கொண்ட
தன்மையெப் புன்மையரை
மிகவே உயர்த்திவிண் ணோரைப்
பணித்திஅண் ணாவமுதே
நகவே தகும்எம் பிரானென்னை
நீசெய்த நாடகமே.

91. पुगवे तगेनुनक्कन्परुळ्
यानॅन् पॉल्ला मणिये
तगवे ऍनैयुनक्काट्कॉण्ड
तन्मैयॅप् पुन्मैयरै
मिगवे उयर्त्ति विण्णोरैप्
पणित्ति अण्णावमुदे
नगवे तगुमॅम्पिरानॅन्नै
नी चॅय्द नाटकमे।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 37-40)

91. *लेश भी योग्य नहीं हूँ*
तुम्हारी भक्त-मंडली में प्रवेश करने को
हे अनुपम महार्ह मणि !
इस तुच्छजन को अपनाना
तुम्हारी महानता के अनुयोज्य है
धरती के सामान्य जन को
तुम ने ऊँचा उठा दिया
इतना ऊँचा कि नीचा देखना पड़े
अमरलोक के वासियों को भी
हे मेरे नाथ ! अमृतस्वरूप
तुम्हीं खेल सकते हो
ऐसा हास्य नाटक !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 37-40)

அறிவுறுத்தல் अरिवुरुत्तल्

92. நாடகத்தா லுன்னடியார்
போல்நடித்து நானடுவே
வீடகத்தே புகுந்திடுவான்
மிகப் பெரிதும் விரைகின்றேன்
ஆடகச்சீர் மணிக்குன்றே
இடையறா அன்புனக்கென்
ஊடகத்தே நின்றுருகத்
தந்தருளெம் உடையானே. 11

92. नाटकत्ताल् उन्नडियार्
पोल् नडित्तु नानडुवे
वीडगत्ते पुगुन्दिडुवान्
मिगप् पॅरिदुम् विरैकिन्ऱेन्
आटगच् चीर् मणिक्कुन्ऱे
इड़ैयऱा अन्बुनक्कॅन्
ऊडगत्ते निन्ऱुरुगत्
तन्दरुळ् ऍम्मुडैयाने।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 41-44)

ज्ञान का उद्बोधन

92. *घुसकर तुम्हारी भक्त-मंडली में
उनका अनुकरण करते हुए
मैं कर रहा हूँ भक्ति का, प्रेम का अभिनय
झटिति में मुक्ति पाने की इच्छा से
ओ मेरे नाथ ! कनकमणि शैल !
कृपा करो मुझ पर ऐसी
कि मेरे हृदय में प्रेम की लौ लगे
पसीज उठे हृदय मन-प्राण
परिपक्व हो जाऊँ मैं भक्ति में।*

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 41-44)

93. யானேதும் பிறப்பஞ்சேன்
இறப்பதனுக் கென்கடவேன்
வானேயும் பெறில்வேண்டேன்
மண்ணாள்வான் மதித்துமிரேன்
தேனேயும் மலர்க்கொன்றைச்
சிவனேயெம் பெருமானெம்
மானேயுன் அருள்பெறுநாள்
என்றென்றே வருந்துவனே. 12

93. यानेदुम् पिऱप्पञ्जेन्
इऱप्पदनुळ् कॅन्कडवेन्
वानेयुम् पॅऱिल् वेण्डेन्
मण्णाळ्वान् मदित्तमिरेन्
तेनेयुम् मलर्क्कॉन्ऱैच्
चिवने ऍम्पॅरुमान् ऍम्माने
उन् अरुळ् पॅरुम् नाळ्
ऍन्ऱु ऍन्ऱे वरुन्दुवने।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 45-48)

94. வருந்துவன்நின் மலர்ப்பாத
மவைகாண்பான் நாயடியேன்
இருந்துநல மலர்புனையேன்
எத்தேன்நாத் தழும்பேறப்
பொருந்தியபொற் சிலைகுனித்தாய்
அருளமுதம் புரியாயேல்
வருந்துவனத் தமியேன்மற்
றென்னேநான் ஆமாறே. 13

94. वरुन्दुव निन् मलर्प्पादम्
अवै काण्पान् अडियेन्
इरुन्दु नल मलर् पुनैयेन्
एत्तेन् नात्तऴुम्बेरप्
पॉरुन्दिय पॉऱ्चिलै कुनित्ताय्
अरुळमुदम् पुरियायेल्
वरुन्दुवन् नल् तमियेन् मट्ऱु
ऍन्ने नानामाऱे।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 49-52)

93. *लेश मात्र भी भय नहीं है जन्म का*
मृत्यु के बारे में क्या कहूँ ?
स्वर्ग का साम्राज्य मिले
तब भी स्वीकार नहीं करूँगा
धरणीतल के एकच्छत्र राज्य को भी
कुछ भी नहीं मानता मैं
मधु-स्त्रवित कोन्रैधारी शिवराज
मेरे तात ! नाथ
मेरे मन में यही तड़प है
कब आएगा वह सुदिन
जब मिलेगा तुम्हारा अनुग्रह।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 45-48)

94. *तड़पते हैं मेरे नयन*
सुमन निभ चरण-युगल के दर्शन को
कैसे पाऊँ तुम्हारे चरणकमल
जिन्हें पाने के लिए
मैंने गूंथी नहीं सुंदर सुमनों की माला
पहनाई नहीं तुम्हें
प्रशस्तिगान भी नहीं किया
अपनी जिह्वा पर छाले पड़ने तक
हे महादेव ! अमित पराक्रमी तुमने
मेरु पर्वत के दृढ़ धनुष पर
चढ़ाया डोर
यदि तुम नहीं चखाओगे
अनुग्रह का अमृत
निराश्रित मैं तड़पता रहूंगा मन मैं
कर ही क्या सकता हूँ इसके सिवा ?

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 49-52)

95. ஆமாறுன் திருவடிக்கே
அகங்குழையேன் அன்புருகேன்
பூமாலை புனைந்தேத்தேன்
புகழ்ந்துரையேன் புத்தேளிர்
கோமான்நின் திருக்கோயில்
தூகேன்மெழுகேன் கூத்தாடேன்
சாமாறே விரைகின்றேன்
சதுராலே சார்வானே. 14

95. आमारुन् तिरुवडिक्के
अगम् कुऴैयेन् अन्बुरुगेन्
पूमालै पुनैन्देत्तेन्
पुगऴ्न्दुरैयेन् पुत्तेळिर्
कोमानिन् तिरुक्कोयिल्
तूगेन् मॆऴुगेन् कूत्ताडेन्
चामाऱे विरैकिन्ऱेन्
चतुराले चार्वाने।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 53-56)

96. வானாகி மண்ணாகி
வளியாகி ஒளியாகி
ஊனாகி உயிராகி
உண்மையுமாய் இன்மையுமாய்க்
கோனாகி யானெனதென்
றவரவரைக் கூத்தாட்டு
வானாகி நின்றாயை
யென்சொல்லி வாழ்த்துவனே. 15

96. वानागि मण्णागि
वळियागि ऑळियागि
ऊनागि उयिरागि
उण्मैयुमाय् इन्मैयुमाय्
कोनागि यार्नॆनदॆन्ऱु
अवर् अवरैक् कूत्ताट्टु
वानागि निन्ऱायै
ऍन् चॉल्लि वाऴ्त्तुवने।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 57-60)

95. उद्धार पा जाऊँ इसके लिए
चरणकमल के ध्यान में
हृदय मेरा पसीजता नहीं
प्रेम से पिघलता नहीं
सुमनमाला अर्पित कर
स्तवन करता नहीं
प्रशस्तिगान भी करता नहीं
हे देवाधिदेव महादेव !
स्वच्छ नहीं करता तुम्हारा मंदिर
झाड़ू-पोंछा देकर
योगविद्या से प्राप्य मेरे नाथ !
मैं कुछ नहीं कर पाता
प्रेम में पग कर नृत्य भी नहीं करता
बस, आगे बढ़ रहा हूँ
मृत्यु के मार्ग में वृथा ही।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 53-56)

96. स्वर्ग तुम हो धरती भी तुम हो
तुम्हीं अनिल हो तुम्हीं ज्योति हो
शरीर भी तुम हो प्राण भी तुम हो
तुम व्यक्त रूप हो अव्यक्त भी तुम हो
सकल चराचर के स्वामी भी तुम हो
सबके अंदर अंतर्यामी बनकर
सब को नचाते हो जिससे
'मैं मेरा' के दंभ में सब उछल-कूद करते हैं
अपरंपार है तुम्हारी महिमा
जिसका बखान मैं कैसे करूँ ?

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 57-60)

97. வாழ்த்துவதும் வானவர்கள்
தாம்வாழ்வான் மனம்நின்பால்
தாழ்த்துவதுந் தாமுயர்ந்து
தம்மையெல்லாந் தொழவேண்டிச்
சூழ்த்துமது கரமுரலுந்
தாரோயை நாயடியேன்
பாழ்த்தபிறப் பறுத்திடுவான்
யானுமுன்னைப் பரவுவனே. 16

97. वाऴ्त्तुवदुम् वानवर्गळ्
ताम् वाऴ्वान् मनम् निन्पाल्
ताऴ्त्तुवदुम् तामुयर्न्दु
तम्मैयॆल्लाम् तॊऴवेण्डिच्
चूऴ्त्तु मदुकरमुरलुम्
तारोयै नायडियेन्
पाऴ्त्त पिरप्परुत्तिडुवान्
यानुमुन्नैप् परवुवने।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 61-64)

98. பரவுவார் இமையோர்கள்
பாடுவன நால்வேதம்
குரவுவார் குழல்மடவாள்
கூறுடையா ளொருபாகம்
விரவுவார் மெய்யன்பின்
அடியார்கள் மேன்மேலுன்
அரவுவார் கழலிணைகள்
காண்பாரோ அரியானே. 17

98. परवुवार् इमैयोर्गळ्
पाडुवन नाल्वेदम्
कुरवुवार् कुऴल्मडवाळ्
कूरुडैयाळ् ऑरुपागम्
विरवुवार् मॆय्यन्बिन्
अडियार्गळ् मेन्मेलुन्
अरवुवार् कऴलिणैगळ्
काण्पारो अरियाने।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 65-68)

97. *देवगण का चित्त इसलिए लगा है तुम पर*
कि वे चाहते हैं अनश्वर समृद्ध जीवन
चाहते हैं उच्च पद जिससे
मानव उनका नमन करें स्तवन करें
मधुप गुंजित सुवासित माल्य धरे
हे परमेश्वर ! मेरे नाथ !
प्रणत मैं तुम्हारे चरण पर इसलिए हूँ
कि कट जाए भव-बंधन
मुक्ति मिले जनन-मरण के चक्र से।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 61-64)

98. *स्तुतिगान कर रहे हैं निरंतर अमरगण*
चारों वेद करते हैं तुम्हारी महिमा का विस्तार
वाम भाग में विलस रही है उमा सुकुमारी
जिसका कुंतल महक रहा है सुरभित सुमनों से
प्रेम में पगे सच्चे भक्त
बारंबार तुम से मिलते हैं आनंद की मूर्च्छा में
किंतु मेरे नाथ ! बताओ,
दर्शन भी कर पाया है कोई
तुम्हारे नूपुर-शिंजित चरण कमलों का ?

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 65-68)

99. அரியானே யாவர்க்கும்
அம்பரவா அம்பலத்தெம்
பெரியானே சிறியேனை
ஆட்கொண்ட பெய்கழற்கீழ்
விரையார்ந்த மலர்தூவேன்
வியந்தலறேன் நயந்துருகேன்
தரியேன்நான் ஆமாறென்
சாவேன்நான் சாவேனே. 18

99. अरियाने यावर्क्कुम्
अम्बरवा अम्बलत्तेम्
पॆरियाने चिऱियेनै
आट्कॊण्ड पॆय्कऴऱ्कीऴ्
विरैयार्न्द मलर् तूवेन्
वियन्दलऱेन् नयन्दुरुगेन्
तरियेन् नान् अमाऱॆन्
चावेनान् चावेने।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 69-72)

100. வேனில்வேள் மலர்க்கணைக்கும்
வெண்ணகைச் செவ்வாய்க்கரிய
பானலார் கண்ணியர்க்கும்
பதைத்துருகும் பாழ்நெஞ்சே
ஊனெலாம் நின்றுருகப்
புகுந்தாண்டான் இன்றுபோய்
வானுளான் காணாய்நீ
மாளாவாழ் கின்றாயே. 19

100. वेनिल् वेळ् मलर्क्कणैक्कुम्
वॆण्णगै चॆव्वाय्क्करिय
पानलार् कण्णियर्क्कुम्
पदैत्तुरुगुम् पाऴ्नॆञ्जे
ऊनॆलाम् निन्ऱुरुगप्
पुगुन्दाण्डान् इन्ऱुपोय्
वानुळान् काणाय् नी
माळा वाऴ्किन्ऱाये।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 73-76)

99. *चिदाकाश में रहस्य रूप में*
निराकार विलसते प्रभो !
सुदुर्लभ हो तुम हर किसी के लिए
वही तुम साकार होकर
नर्तन कर रहे चिदंबर की चित्सभा में
इसी रूप में आकर
अपनाया तुमने इस तुच्छ दास को
स्थान दिया अनुग्रह-वर्षा करके
अपने चरणों की छाया में
अहा ! कितनी महान् है तेरी करुणा
ऐसी महती कृपा को बनाये रखने के लिए
न तो मैं अर्चन कर रहा हूँ
तुम्हारे चरणों पर सुमनों से
अद्भुत करुणा पर आश्चर्य करके रोता नहीं
प्रेम में पगकर पिघलता नहीं
कैसे धरूँगा जीवन ? कैसे होगा उद्धार
हाय, ऐसा भार न सहकर मर जाऊँगा मैं।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 69-72)

100. *ओ मेरे कदर्य हृदय ! अभिभूत हो जाते हो तुम*
वसंत में पुष्पशर वर्षित करते कामदेव पर
खो जाते हो कामिनी की धवल मुस्कान पर
मुक्ता सम दंतपंक्ति पर
मर जाते हो अरुणिम अधर पर
श्यामल नयनों पर किंतु इस बीच में क्या हो गया
तुम्हें अपनाने को अनुग्रहीत करने को
अंतर में आए थे नाथ
प्रेम में पग कर पिघल-पिघल जाते तो पा जाते नाथ को
पर आज वह छोड़कर तुम्हें
पहुँच गया है आकाश में
देखो कैसा अनर्थ हो गया !
अब भी क्यों व्यर्थ जी रहे हो
मर क्यों नहीं जाते मेरे हृदय !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 73-76)

101. வாழ்கின்றாய் வாழாத
நெஞ்சமே வல்வினைப்பட்டு
ஆழ்கின்றாய் ஆழாமற்
காப்பானை யேத்தாதே
சூழ்கின்றாய் கேடுனக்குச்
சொல்கின்றேன் பல்காலும்
வீழ்கின்றாய் நீஅவலக்
கடலாய வெள்ளத்தே. 20

101. वाऴ्किन्ऱाय् वाऴाद
नॆञ्जमे वल्विनैप्पट्टु
आऴ्किन्ऱाय् आऴामऱ्
काप्पानै एत्तादे
चूऴ्किन्ऱाय् केडुनक्कुच्
चॊल्किन्ऱेन् पल्कालुम्
वीऴ्किन्ऱाय् नीअवलक्
कडलाय वॆळ्ळत्ते।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 77-80)

101. *फिर भी जी रहे हो तुम मेरे हृदय*
ऐसा जीना भी क्या जीना है
जीवन के सच्चे आनंद के बिना
डूब रहे हो कर्मबंधन में फंसकर
जो डूबने से तुम्हें बचा ले
जो कर्मबंधन तुम्हारा काट दे
ऐसे नाथ का नहीं कर रहे हो स्तुतिगान
न्योता दे रहे हो सर्वनाश को
बारंबार मैं समझाता रहता हूँ
फिर भी तुम हो कि
फिर फिर धंसते जाते हो दुःख-सागर में।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 77-80)

சுட்டறுத்தல் सुट्टरुत्तल्

102. வெள்ளந்தாழ் விரிசடையாய் விடையாய் விண்ணோர்
பெருமானே எனக்கேட்டு வெட்ட நெஞ்சாய்ப்
பள்ளந்தா ழுறுபுனலிற் கீழ்மே லாகப்
பதைத்துருகு மவர்நிற்க என்னை யாண்டாய்க்(கு)
உள்ளந்தாள் நின்றுச்சி யளவும் நெஞ்சாய்
உருகாதால் உடம்பெல்லாங் கண்ணாய் அண்ணா
வெள்ளந்தான் பாயாதால் நெஞ்சங் கல்லாம்
கண்ணிணையும் மரமாம்தீ வினையி னேற்கே. 21

102. वॆळ्ळन्ताऴ् विरिचडैयाय् विडैयाय् विण्णोर्
पॆरुमाने ऍनक्केट्टु वॆट्ट नॆञ्जाय
पळ्ळम् ताऴ् ुरु पुनलिर् कीऴ् मेलागप्
पदैत्तुरुगुमवर् निर्क ऍन्नैयाण्डायक् (कु)
उळ्ळम् ताळ् निन्ऱुच्चि अळवु नॆञ्जाय्
उरुगादाल् उडम्बॆल्लाम् कण्णाय् अण्णा
वॆळ्ळमृतान् पायादाल् नॆञ्जम् कल्लाम्
कण्णिणैयुम् मरमाम् तीविनैयिनेर्कॆ।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 81-84)

बंधन काटना

102. *'गंगाधर ! जटाधर ! परमेश्वर ! वृषभारूढ़' !*
के दिव्य नामों के श्रवणमात्र से
गद्‌गद हो जाते हैं अगणित उपासक
भक्ति-गंगा में डूबकर
नृत्य करते हैं अश्रु बहाते हैं पिघलते हैं
उछलकर लटक जाते हैं अनुग्रह-प्रपात में
और मैं ? – जिसे अपना लिया तुमने
आगे बढ़कर अकस्मात् ही
प्रतीक्षा में रखकर अपने भक्तगण को
इतनी महती कृपा के लिए
मैं द्रवित हुआ नहीं
एड़ी से चोटी तक हृदय बनकर
अश्रु नहीं बहा रहा हूँ
संपूर्ण गात्र को नेत्र बनाकर
हे प्रभो ! हृदय मेरा पत्थर
जिसमें प्रवेश नहीं करता है जल
और नेत्र मेरे बने हैं काठ से
जिनसे छलकते नहीं प्रेम के अश्रु
कितना घोर है मेरा दुष्कर्म !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 81-84)

103. வினையிலே கிடந்தேனைப் புகுந்து நின்று
போதுநான் வினைக்கேடன் என்பாய் போல
இனையன்நான் என்றுன்னை அறிவித் தென்னை
ஆட்கொண்டெம் பிரானானாய்க் கிரும்பின் பாவை
அனையநான் பாடேன்நின் றாடேன் அந்தோ
அலறிடேன் உலறிடேன் ஆவி சோரேன்
முனைவனே முறையோநான் ஆன வாறு
முடிவறியேன் முதலந்தம் ஆயினானே! 22

103. विनैयिले किडन्देनैप् पुगुन्दु निन्ऱु
पोदुनान् किनैक्केडन् ऍन्पाय् पोल
इनैयन् नानन्ऱुन्नै अऱिवित्तन्नै
आट्कोण्डु ऍम्पिरान् आनाय्क्कु इरुम्पिन्पावै
अनैय नान् पाडेन् निन्ऱाडेन् अन्दो
अलऱिडेन् उलऱिडेन् आवि चोरेन्
मुनैवने मुऱैया नान् आनवाऱु
मुडिवऱियेन् मुदलन्तम् आयिनाने !
(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 85-88)

104. ஆயநான் மறையவனும் நீயே யாதல்
அறிந்துயான் யாவரினுங் கடைய னாய
நாயினேன் ஆதலையும் நோக்கிக் கண்டு
நாதனே நானுனக்கோ ரன்ப னென்பேன்
ஆயினேன் ஆதலால் ஆண்டு கொண்டாய்
அடியார்தா மில்லையே அன்றி மற்றோர்
பேயனேன் இதுதான்நின் பெருமை யன்றே
எம்பெருமான் என்சொல்லிப் பேசு கேனே? 23

104. आय नान्मऱैयवनुम् नीये आदल्
अऱिन्दु यान् यावरिनुम् कडैयनाय
नायिनेन् आदलैयुम् नोक्किक् कण्डुम
नातने नानुनक्कोरन्बन् ऍन्पेन्
आयिनेनादलाल् आण्डु कॉण्डाय्
अडियार् नाम् इल्लैये अन्ऱि मट्रोर्
पेयनेन् इदुतानिन् पॅरुमैयै अन्ऱे
ऍम्पॅरुमान् ऍन् चॉल्लिप् पेशुकेने ?
(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 89-92)

103. *कर्म के दलदल में फँसा पड़ा था मैं*
हे करुणामय प्रभु ! तुम आए मेरे पास
बोले, 'आओ वत्स ! ईश हूँ मैं
कर्म को जड़मूल से काट दूँगा,'
यों कहते हुए अपना बना लिया मुझे
तुम बने मेरे नाथ-स्वामी
इतनी अपार करुणा पाकर भी
खड़ा रहा मैं लौह-प्रतिमा की भांति
नहीं करता तुम्हारा यशोगान
नाचता नहीं, बहाता नहीं अश्रु
सुध-बुध नहीं भूलता आनंद की मूर्च्छा में
ओ आदिदेव !
पता नहीं मैं कैसे गति पाऊँगा
ओ आद्यंत-विहीन नाथ
बोलो ! इस प्रमाद का क्या अंत होगा ?

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 85-88)

104. *विचार करने पर यही निकलता है निष्कर्ष*
चतुर्वेदों में संस्तुत परमेश्वर तुम्हीं हो
यह भी स्पष्ट है
मुझ सम खोटा अन्य कोई नहीं
श्वान तुल्य सबसे निकृष्ट हूँ
फिर भी मैं दावा करता हूँ
मैं तुम्हारा प्रिय दास हूँ
हे करुणामय ! तुमने मेरी बात रखी
अपना लिया मुझे प्रिय दास रूप में
कितने ही प्रेमी भक्त तुम्हारे नहीं
फिर भी अपना लिया मुझे उदारता से
हे नाथ ! कैसे बखान करूँ
तुम्हारी महिमा का।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 89-92)

105. பேசிற்றாம் ஈசனே யெந்தா யெந்தை
பெருமானே யென்றென்றே பேசிப் பேசிப்
பூசிற்றாம் திருநீறே நிறையப் பூசிப்
போற்றியெம் பெருமானே யென்று பின்றா
நேசத்தாற் பிறப்பிறப்பைக் கடந்தார் தம்மை
ஆண்டானே அவாவெள்ளக் கள்வ னேனை
மாசற்ற மணிக்குன்றே எந்தாய் அந்தோ
என்னைநீ ஆட்கொண்ட வண்ணந் தானே! 24

105. पेशिट्रामीशने एन्तार्यन्तै
पॆरुमाने ऍन्ऱॆन्ऱे पेशिप् पेशिप्
पूशिट्राम् तिरुनीऱे निऱैयप् पूशिप्
पोट्रि ऍम्पॆरुमाने ऍन्ऱु पिन्ऱा
नेशत्ताऱ् पिऱप्पिऱप्पैक् कडन्दाऱ् तम्मै
आण्डाने अवा वॆळ्ळम् कळ्वनेनै
माशट्र मणिक्कुन्ऱे ऍन्ताय् अन्दो
ऍन्नै नी आट्कॊण्ड वण्णम् ताने !

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 93-96)

106. வண்ணம்தான் சேயதன்று வெளிதே யன்று
அநேகனேகன் அணுவணுவி லிறந்தா யென்றங்(கு)
எண்ணந்தான் தடுமாறி யிமையோர் கூட்டம்
எய்துமா றறியாத எந்தா யுன்றன்
வண்ணந்தா னதுகாட்டி வடிவு காட்டி
மலர்க்கழல்க ளவைகாட்டி வழியிற் றேனைத்
திண்ணம்தான் பிறவாமற் காத்தாட் கொண்டாய்
எம்பெருமான் என்சொல்லிச் சிந்திக் கேனே? 25

106. वण्णम् तान् चेयदन्ऱु ऍळिदेयन्ऱु
अनेकन् एकन् अणुवणुविल् इऱन्दायन्ऱङ्गु
ऍण्णम् तान् तुडमाऱि इमैयोर् कूट्टम्
ऍय्दुमाऱऱियाद ऍन्ताय् उन्तन्
वण्णम् तान् अदुकाट्टि वडिवु काट्टि
मलर्क्कऴल्गळ् अवै काट्टि वऴि अट्रेनैत्
तिण्णम् तान् पिऱवामल् कात्ताट्कॊण्डाय्
ऍम्पॆरुमान् ऍन्चॊल्लिच् चिन्तिक्कने ?

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 97-100)

105. *सच्चे भक्त हैं तुम्हारे उपासक*
जब भी मुँह खोलें कुछ बोलने के लिए
यही बोलते हैं – 'हे ईश्वर
मेरे तात ! मात ! नाथ ! प्रभो !'
यों बोलते हुए लेपन कर लेते हैं
धवलोज्ज्वल भस्म सकल देह पर
तुम्हारे प्रेम में पगे-सने वे
पार कर जाते हैं जनन-मरण को
ऐसे भक्तों को अपना लेते हो
और मैं ? खल कामी चोर हूँ
ऐसे मुझे भी उनके संग
अपना लिया दास रूप में
हे मणिरत्नों के शैल ! मेरे नाथ !
हा ! कैसे वर्णन करूँ
किस भांति तुमने अपनाया मुझे !

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 93-96)

106. *तर्क-वितर्क में उलझे थे देवगण*
प्रभु अरुणिम हैं – नहीं गौरांग है
एक है वह – नहीं अनेक है
अणु तुल्य है – नहीं, सूक्ष्म है अणु से भी
भ्रमजाल में पड़े देवगण
पहुँच नहीं पाये तुम तक
हे मेरे तात ! ऐसे तुम
आए मेरे समीप अपार करुणा से
दिखाया अपना रंग और रूप यथातथ्य रूप में
दिखाया सुमन सरिस निज चरण युगल
गति हीन को राह दिखाकर
मुक्त किया जनन-मरण के चक्र से
मेरे नाथ कैसे करूँ वर्णन तुम्हारी महिमा का ?

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 97-100)

107. சிந்தனைநின் தனக்காக்கி நாயி னேன்தன்
கண்ணிணைநின் திருப்பாதப் போதுக் காக்கி
வந்தனையும் அம்மலர்க்கே யாக்கி வாக்குன்
மணிவார்த்தைக் காக்கிஐம் புலன்க ளார
வந்தனைஆட் கொண்டுள்ளே புகுந்த விச்சை
மாலமுதப் பெருங்கடலே மலையே யுன்னைத்
தந்தனைசெந் தாமரைக்கா டனைய மேனித்
தனிச்சுடரே யிரண்டுமிலித் தனிய னேற்கே. 26

107. चिन्तनै निन् तनक्काक्कि नायिनेन् तन्
कण्णिणै निन् तिरुप्पादम् पोदुक्काक्कि
वन्दनैयुम अम्मलर्क्के आक्कि वाक्कुन्
मणि वार्त्तैक्काक्कि ऐम्पुलन्गाळार
वन्दनै आट्कोण्डु उळ्ळे पुगुन्द विच्चै
मालमुदप् पॅरुङ्कडले मलैये उन्नैत्
तन्दनै चॅन्तामरैक् काडनैय मेनित्
तनिच्चुडरे इरण्डुमिलित् तनियनेर्के।

(तिरुमुरै आठ -5 पंक्ति 101-104)

108. தனியனேன் பெரும்பிறவிப் பௌவத் தெவ்வத்
தடந்திரையால் எற்றுண்டு பற்றொன் றின்றிக்
கனியைநேர் துவர்வாயா ரென்னுங் காலாற்
கலக்குண்டு காமவான் சுறவின் வாய்ப்பட்டு
இனியென்னே உய்யுமா றென்றென் றெண்ணி
அஞ்செழுத்தின் புணைபிடித்துக் கிடக்கின் றேனை
முனைவனே முதலந்தம் இல்லா மல்லற்
கரைகாட்டி ஆட்கொண்டாய் மூர்க்க னேற்கே. 27

108. तनियनेन् पॅरुम्पिरविप् पौवत्तॅव्वत्
तटन्तिरैयाल् ऍट्रुण्ड पट्टॉन्रिन्रि
कनियै नेर् तुवर् वायार् ऍन्नुम् कालार्
कलक्कुण्डु कामवान् चुरविन् वाय्प्पट्टु
इनि ऍन्ने उय्युमारु ऍन्रु एन्रॅण्णि
अञ्चॅळुत्तिन् पुणैपिडित्तुक् किडक्किन्रेनै
मुनैवने मुदल् अन्तम् इल्लामल्लर्
करै काट्टि आट्कॉण्डाय् मूर्क्कनेर्के।

(तिरुमुरै आठ -5 पंक्ति 105-108)

107. *सरसिज वन-निभ अरुणाभ मेरे नाथ !*
अभिभूत हूँ तुम्हारे अनुग्रह से
एकाग्र करा लिया तुमने
मेरे मन को चिंतन को निज पर
इस दास के नयनों को
केंद्रित करा लिया अपने चरण-पंकज पर
ताकि मेरे नयन लगे रहें वंदना में
सतत तेरे चरणांबुज की
बना लिया मेरी वाणी को
अपनी प्रशस्तिगान के योग्य
आए तुम मेरे पंचेन्द्रियों को पुलकित करते हुए
पैठ कर मेरे अंतस् में
अपना लिया मुझे दास रूप में
ओ करुणामृत के विशाल सागर !
मणिमय शैल ! धन्य हूँ मैं
प्रदान किया तुमने निज को मुझे
जिसके पास न विद्या है न अनुभव
किन शब्दों में वर्णन करूँ तुम्हारी महिमा का
ओ ज्योतिस्वरूप !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 101-104)

108. *एकाकी मैं फँसा हूँ दुःख के सागर में*
ऊब डूब कर रहा हूँ विशाल भवसागर में
कोई सहारा नहीं आश्रय नहीं दूर दूर तक
बिंबाधरा ललनाओं का मोह
चक्रवात बन डगमगा रहा है मन को
काम-मोह का तिमिंगल मुँह बाये
आ रहा है निगल जाने को
चिंतामग्न था कैसे पाऊँ उद्धार
इतने में तुम्हारी असीम करुणा से अनुग्रह से
पंचाक्षर-नौका का मिल गया आश्रय
हे आदिमूल प्रभु ! तुमने यों
पहुँचा दिया मुक्ति के सुंदर समतल पर
और अपना लिया मुझ मूर्ख को।

109. கேட்டாரும் அறியாதான் கேடொன் றில்லான்
கிளைமிலான் கேளாதே யெல்லாங் கேட்டான்
நாட்டார்கள் விழித்திருப்ப ஞாலத் துள்ளே
நாயினுக்குத் தவிசிட்டு நாயி னேற்கே
காட்டா தனவெல்லாங் காட்டிப் பின்னும்
கேளா தனவெல்லாங் கேட்பித் தென்னை
மீட்டேயும் பிறவாமற் காத்தாட் கொண்டான்
எம்பெருமான் செய்திட்ட விச்சை தானே. 28

109. केट्टारु मरियादान् केडॊन्रिल्लान्
किळैयिलान् केळादे ऍल्लाम् केट्टान्
नाट्टार्गळ् विऴित्तिरुप्प ञालत्तुळ्ळे
नायिनुक्कुत् तविसिट्टु नायिनेऱ्के
काट्टादन ऍल्लाम् काट्टिप् पिन्नुम्
केळादन ऍल्लाम् केट्पित्तॆन्नै
मीट्टेयुम् पिरवामल् कात्ताट्कॊण्डान्
ऍम्पॆरुमान् चॆय्दिट्ट विच्चै ताने।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 109-112)

110. விச்சைதான் இதுவொப்ப துண்டோ கேட்கின்
மிகுகாதல் அடியார்தம் அடிய னாக்கி
அச்சந்தீர்த் தாட்கொண்டான் அமுத மூறி
அகம்நெகவே புகந்தாண்டான் அன்பு கூர
அச்சன்ஆண் பெண்ணலிஆ காச மாகி
ஆரழலாய் அந்தமாய் அப்பால் நின்ற
செச்சைமா மலர்புரையும் மேனி யெங்கள்
சிவபெருமான் எம்பெருமான் தேவர் கோவே. 29

110. विच्चै तानिदु वॊप्पदुण्डो केट्किन्
मिगु कादलडियार् तम्मडियनाक्कि
अच्चम् तीर्त्ताट्कॊण्डान् अमुदमूरि
अगम्नॆगवे पुगुन्दाण्डान् अन्बुकूर
अच्चनाण् पॆण्णलि आकाश मागि
आरळलाय् अन्तमाय् अप्पाल् निन्र
चॆच्चै मामलर् पुरैयुम् मेनि ऍङ्गळ्
शिवपॆरुमान् ऍम्पॆरुमान् देवर्कोवे।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 113-116)

109. अगम अगोचर है परमेश्वर
ज्ञेय नहीं है श्रुति से श्रवण से
अजर अमर वह निर्विकार
रूप-रंग बिन परिपूर्ण
सुन लेता है वह सब कुछ बिना श्रवण के
जग के निवासी जब लगे थे लोक-बोध में
इस तुच्छ दास को चुना प्रभु ने
आसन देकर जगाया आत्मबोध
दिखा दिया सब कुछ जो कभी देखा न था
सुना दिया सब कुछ जो कभी सुना न था
मुक्त कर दिया जन्म-मरण के बंधन से
और अपना लिया मुझे अपना बना लिया
नाथ की यह अपार महिमा
कैसे बखान करूँ मैं ?

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 109-112)

110. देखा सुना है ऐसा अद्भुत चमत्कार
जो मेरे तात-नाथ ने किया
वह नर नारी है क्लीव है आकाश भी
ज्वलंत ज्योति-स्तंभ है
सकल सृष्टि के अंत से परे जो व्याप्त है
भव भय दूर किया मेरा
अंतस् में हुई अमृत-वर्षा की अनुभूति
प्रवेश कर गए मेरे हृदय में
पिघल उठा मैं, अपना बना लिया मुझे
स्थान दिया मुझे अपने प्रेमी भक्तों की पंक्ति में
देवाधिदेव प्रभु ने
कनकाभ है जिनकी देहकांति।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 113-116)

111. தேவர்கோ அறியாத தேவ தேவன்
செழும்பொழில்கள் பயந்துகாத் தழிக்கும் மற்றை
மூவர்கோன் ஆய்நின்ற முதல்வன் மூர்த்தி
மூதாதை மாதாளும் பாகத் தெந்தை
யாவர்கோன் என்னையும்வந் தாண்டு கொண்டான்
யாமார்க்குங் குடியல்லோம் யாதும் அஞ்சோம்
மேவினோம் அவனடியார் அடியா ரோடும்
மேன்மேலும் குடைந்தாடி யாடு வோமே.

111. तेवर् को अऱियाद तेवतेवन्
चॆऴुम्पॊऴिल्गळ् पयन्दु कात्तऴिक्कुम् मट्रै
मूवर् कोनाय् निन्ऱ् मुदल्वन् मूर्त्ति
मूतादै माताळुम् पागत्तॆन्दै
यावर् कोनॆन्नैयुम् वन्दाण्डु कॊण्डान्
यामार्क्कुम् कुडियल्लोम् यादुमञ्जोम्
मेविनोम् अवनडियार् अडियारोडु
मेन्मेलुम् कुडैन्दाडि आडुवोमे।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 117-120)

111. *देवाधिदेव प्रभु अज्ञेय है देवेंद्र के लिए भी*
त्रिमूर्तियों के भी प्रभु जो हैं
स्त्रष्टा पालक संहर्ता सकल भुवन के
सबके आदि पुरुष मेरे तात
वाम भाग में राज कर रही है माँ
नाथ ने आकर अपना लिया मुझे भी
अब किसी की प्रजा नहीं
भय नहीं है मुझे मृत्यु से भी
सम्मिलित मैं नाथ की भक्तमंडली में
आनंदसागर में डूबकर
गोता लगा रहा हूँ उल्लास से।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 117-120)

ஆன்ம சுத்தி — आन्म शुत्ति

112. ஆடுகின்றிலை கூத்துடை யான்கழற்
கன்பிலை என்புருகிப்
பாடுகின்றிலை பதைப்பதும் செய்கிலை
பணிகிலை பாதமலர்
சூடுகின்றிலை சூட்டுகின் றதுமிலை
துணையிலி பிணநெஞ்சே
தேடுகின்றிலை தெருவுதோ றலறிலை
செய்வதொன் றறியேனே. 31

112. आडुकिन्ऱिलै कूत्तुडैयान् कऴऱ्कु
अन्बिलै ऍन्बुरुगिप्
पाडुकिन्ऱिलै पदैप्पदुम् चॅय्किलै
पणिगिलै पादमलर्
चूडुकिन्ऱिलै चूट्टुकिन्ऱदुमिलै
तुणैयिलि पिणैनॅञ्जे
तेडुकिन्ऱिलै तॅरुवुतोऱु अलऱिलै
चॅय्वदॊन्ऱरियेने।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 121-124)

आत्मशुद्धि

112. *ओ मेरे मूर्ख मन !*
नाचता नहीं है, स्नेह नहीं है
नर्तित नटराज के चरण-युगल से
गाता नहीं है प्रेम में पग कर
विरह में तड़पता नहीं
नमन नहीं करता प्रभु के चरण-युगल पर
अलंकृत नहीं करता सुरभित सुमनों से
प्रभु के दिव्य चरणों को
धारण नहीं करता प्रभु चरणों को अपने सिर पर
ढूँढता नहीं ईश के आश्रय को
घूमता नहीं गली-गली में
प्रभु नाम का कीर्तिगान करते हुए
पता नहीं चल रहा है
क्या करूँ मैं
जड़तुल्य तुझे संग रखकर।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 121-124)

113. அறிவி லாத எனைப் புகுந் தாண்டுகொண்
டறிவதை யருளிமேல்
நெறியெ லாம்புல மாக்கிய எந்தையப்
பந்தனை யறுப்பானைப்
பிறவி லாதஇன் னருள்கள்பெற் றிருந்துமா
றாடுதி பிணநெஞ்சே
கிறியெ லாம்மிகக் கீழ்ப்படுத் தாய்கெடுத்
தாயென்னைக் கெடுமாறே. 32

113. अऱिविलाद ऍनैप् पुगुन्दाण्डु कॉण्डु
अऱिवै अरुळिमेल्
नॅऱियॅलाम् पुलमाक्किय ऍन्तैयैप्
पन्दनै अऱुप्पनैप्
पिरिविलाद इन्नरुळ्गळ् पॅट्रिरिन्दुमा
नॅऱाडुदि पिणनॆञ्जे
किरियॅलामिगक् कीऴ्प्पडुत्ताय् कॅडुत्
तायॅन्नैक् कॅडुमाऱे।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 125-128)

114. மாறி நின்றெனைக் கெடக்கிடந் தனையையெம்
மதியிலி மடநெஞ்சே
தேறு கின்றிலம் இனியுனைச் சிக்கெனச்
சிவனவன் திரள்தோள்மேல்
நீறு நின்றது கண்டனை யாயினும்
நெக்கிலை யிக்காயம்
கீறு கின்றிலை கெடுவதுன் பரிசிது
கேட்கவுங் கில்லலேனே. 33

114. मारि निन्ऱॆनैक् कॅडक् किडन्दनैयै ऍम्
मतियिलि मडनॆञ्जे
तेऱुकिन्ऱलम् इनि उनैच् चिक्कॅनच्
चिवन् तिरळ् तोळ् मेल्
नीऱु निन्ऱदु कण्डनै आयिनुम्
नॅक्किलै इक्कायम्
कीऱुकिन्ऱलै कॅडुवदुन् परिशिदु
केट्कवुम् किल्लेने।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 129-132)

113. *मुझ मतिहीन के हृदय में*
प्रवेश कर अपना लिया प्रभु ने
स्फुरित किया सकल ज्ञान
दिग्दर्शन किया सन्मार्ग का
हमारा तात वह काटता है कर्म-बंधन
अनुगृहीत किया दिव्य अनुभूतियों से
फिर भी ओ मेरे जड़ हृदय
तू बदला नहीं अपनी पुरानी मिथ्या लीक से
ऐसे नीचतापूर्ण कार्यों में लगा है
सर्वनाश करता हुआ।

(तिरुमुरै आठ -5 पंक्ति 125-128)

114. *मतिहीन मूढ़ हृदय !*
मेरे अंदर दुबके रहकर
सर्वनाश करने पर तुला हुआ है शत्रु के समान
अब कभी नहीं करूँगा विश्वास तुझ पर
स्वयं तूने देखा था नाथ को
भस्म-लेपित सुदीर्घ बाहु के संग
विराज रहे थे शिवराज
तब भी तू प्रेम में पिघल नहीं रहा
समझ गया मैं
छूटा नहीं देश-पाश तुझ से
अधोगति ही तेरी नियति है
असह्य है इसे सुनना भी।

(तिरुमुरै आठ -5 पंक्ति 129-132)

115. கிற்றவா மனமே! கெடுவா யுடை
யானடி நாயேனை
விற்றெலாம் மிக ஆள்வதற்குரியவன்
விரைமலர்த் திருப்பாதம்
முற்றிலா இளந்தளிர் பிரிந்திருந்து நீ
யுண்டன எல்லாமுன்
அற்றவாறும் நின்னறிவும் நின்பெருமையும்
அளவறுக்கில்லேனே. 34

115. किट्रवा मनमे कॅडुवाय् उडै –
यानडि नायेने
विट्रॅला मिग आळ्वदर्कुरियवन्
विरैमलर्त् तिरुप्पादम्
मुट्रिला इळम्तळिर् पिरिन्दिरुन्दु नी
युण्डन ऍल्लामुन्
अट्रवारुम् निन्नरिवुम् निन् पॅरुमैयुम्
अळवरुक्किल्लेने।

(तिरुमुरै आठ -5 पंक्ति 133-136)

116. அளவ றுப்பதற் கரியவன் இமையவர்க்
கடியவர்க் கெளியான்நம்
களவ றுத்துநின் றாண்டமை கருத்தினுட்
கசிந்துணர்ந் திருந்தேயும்
உளக றுத்துனை நினைந்துளம் பெருங்களன்
செய்தது மிலைநெஞ்சே
பளக றுத்துடை யான்கழல் பணிந்திலை
பரகதி புகுவானே. 35

116. अळवरुप्पदर्कु अरियवन् इमैयवर्क्कु
अडियवर्क्कु ऍळियान्नम्
कळवु अरुत्तु निन्रु आण्डमै करुत्तिनुट्
कशिन्दुणर्न्दिरुन्देयुम्
उळगरुत्तुनै निनैन्दुळम् पॅरुङ्कळन्
चॅय्ददुमिलै नॅञ्जे
पळगरुत्तुडैयान् कऴल् पणिन्दिलै
परगति पुगुवाने।

(तिरुमुरै आठ -5 पंक्ति 137-140)

115. *विषय सुखों में आसक्त मन !*
इस मार्ग पर चलेगा तो
तेरा सर्वनाश ही होगा
सुन, मैं दास हूँ
अजर अमर प्रभु के दिव्य चरणों का
उन्हें अधिकार है
चाहे मुझे बेच डालें चाहे कुछ भी करें
उपेक्षा करता हुआ आद्यंत-विहीन प्रभु की
तू अल्प सुखों में भूला रहता है
तेरी बुद्धि भी छोटी है तदनुरूप ही
तनिक विचार करके देख
कितनी महान् विभूतियों से
हाथ धो रहा है तू।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 133-136)

116. *अगम है अप्रमेय है प्रभु देवगण के लिए भी*
किंतु भक्तजनों के लिए सहज सुलभ है
दूर कर सकल दोष
अपनाया हमें, इसे जानता है तू भी
फिर भी मूर्ख मन !
तूने अपने को उनके लिए आलय नहीं बनाया
घृणा नहीं करता पाप-विचारों से
नाथ के चरणों पर नमन भी नहीं किया
जिससे मिल जाए अक्षय मुक्ति।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 137-140)

117. புகுவ தாவதும் போதர வில்லதும்
பொன்னகர் புகப்போதற்
குகுவ தாவதும் எந்தையெம் பிரானென்னை
யாண்டவன் கழற்கன்பு
நெகுவ தாவதும் நித்தலும் அமுதொடு
தேனொடு பால்கட்டி
மிகுவ தாவதும் இன்றெனின் மற்றிதற்
கென்செய்கேன் வினையேனே? 36

117. पुगुवदावदुम् पोदरविल्लदुम्
पॉन्नगर् पुगप्पोदर्
कुगुवदावदुम् ऍन्तै ऍम्पिरानॅन्नै
आण्डवन् कऴ्कु अन्बु
नेरुवदावदुम् नित्तलुम् अमुदॉडु
तेनॉडु पाल्कट्टि
मिगुवदावदुम् इन्ऱॅनिन् मट्रिदर्कु
ऍन् चॅय्गेन् विनैयेनै ?

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 141-144)

118. வினையென் போலுடை யார்பிற ராருடை
யானடி நாயேனைத்
தினையின் பாகமும் பிரிவது திருக்குறிப்
பன்றுமற் றதனாலே
முனைவன் பாதநன் மலர்பிரிந் திருந்தும்நான்
முட்டிலேன் தலைகீறேன்
இனையன் பாவனை யிரும்புகல் மனஞ்செவி
யின்னதென் றறியேனே. 37

118. विनैयॅन्पोलुडैयार् पिऱरारुडै
यानडि नायेनैत्
तिनैयिन् पागमुम् पिरिवदु तिरुक्कुरिप्पु
अन्रु मट्रदनाले
मुनैवन् पाद नन्मलर् पिरिन्दिरुन्दुम् नान्
मुट्टिलेन् तलै कीरेन्
इनैयन् पावनै इरुम्बु कल्मनम् चॅवि
इन्नदॅन्ऱरियेने।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 145-148)

117. *यदि तेरे भाग्य में बदा नहीं*
प्रवेश करना शिव-साम्राज्य के स्वर्णिम नगर में
जहाँ पहुँचकर कभी लौटना नहीं होता
परम कृपालु तात की प्रेमाभक्ति में
तड़प तड़प कर पिघलना
चरण-कमलों पर आसक्त होकर
प्रेम में पगने सनने से
संवर्धित करना परम आनंद को
मधु-मिश्री के संग अमृत घुला मिला हो
ऐसा शिवानंद पाना
तुम्हारी नियति नहीं तो
ओ मेरे मन ! क्या कर सकता हूँ तेरे लिए ?

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 141-144)

118. *मैं नहीं जानता*
मेरे सम कर्म का मारा कोई है ?
फिर भी इस तुच्छ दास को
तनिक भी दूर रखना
प्रभु को अभीष्ट नहीं है
किंतु मैं स्वयं विलग रहता हूँ
आदिमूल प्रभु के चरणकमल से
अपने ही दुष्कर्म से
और इस दुष्कर्म पर दुःखित होकर
मैं टकरा नहीं लेता सिर को किसी शिला से
फुड़वा नहीं लेता सिर
लौह सम जड़ हूँ मैं
पत्थर के समान कठोर है हृदय
और क्या कहूँ अपने कानों के बारे में ?

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 145-148)

119. ஏனை யாவரும் எய்திட லுற்றுமற்
றின்னதென் றறியாத
தேனை ஆன்நெயைக் கரும்பின்இன் தேறலைச்
சிவனையென் சிவலோகக்
கோனை மான்அன நோக்கிதன் கூறனைக்
குறுகிலேன் நெடுங்காலம்
ஊனையானிருந் தோம்புகின் றேன்கெடு
வேனுயி ரோயாதே. 38

119. एनै यावरुम् एय्दिडलुट्रु मट्रु
इन्नदंन्ररियाद
तेनै आन्नॅयैक् करुम्बिनिन् तेरलैच्
चिवनैयॅन् चिवलोकक्
कोनै मानन नोक्कितन् कूरनै
कुरुगिलेन् नॅडुङ्कालम्
ऊनै यानिरुन्दोम्बुकिन्रेन् कॅडु –
वेनुयिर् ओयादे।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 149-152)

120. ஓய்வி லாதன உவமனில் இறந்தன
ஒண்மலர்த் தாள்தந்து
நாயி லாகிய குலத்தினுங் கடைப்படும்
என்னைநன் னெறிகாட்டித்
தாயி லாகிய இன்னருள் புரிந்தஎன்
தலைவனை நனிகாணேன்
தீயில் வீழ்கிலேன் திண்வரை உருள்கிலேன்
செழுங்கடல் புகுவேனே. 39

120. ओय्विलादन उवमनिल् इरन्दन
ऑण्मलरत्ताळ् तन्दु
नायिलागिय कुलत्तिनुम् कडैप्पडुम्
ऍन्नै नन्नॅरि काट्टित्
तायिलागिय इन्नरुळ् पुरिन्द ऍन्
तलैवनै ननि काणेन्
तीयिल् वीऴ्गिलेन् तिण्वरै उरुळ्गिलेन्
चॅऴुङ्कडल् पुगुवेने।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 153-156)

119. *भक्तों को छोड़कर*
अन्य जन ने भी प्रयास किया पहुँचने के लिए
किंतु वे कहाँ जानें कि कैसा है परम आनंद
भक्ति के साथ उपासना करने वालों को
वह मधु सम घृत सम इक्षुरस सम मधुरिम है
शिवलोक नायक सबका मंगलकारक है
जिसके वाम भाग में विलस रही है
हरिण लोचना उमा सुकुमारी
ऐसे महिमायुत प्रभु के समीप
मैं नहीं गया चिरकाल से
वरन् लगा रहा अपने शरीर पोषण में
हा ! सर्वनाश हो मेरा
क्यों नहीं करता मैं प्राणत्याग ?

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 149-152)

120. *प्रदान किये मुझे निज चरणकमल*
शाश्वत और अनुपम चरणयुगल
ज्योतिर्मय सुमन-से प्रकाशित दिव्य चरण
श्वान से भी निकृष्ट मुझ पर
अनुग्रह की वर्षा कर दी
ऐसे महिमामय प्रभु के
मेरे नाथ तात के दर्शन किये बिना
मैं कैसे प्राण धर रहा हूँ
आग में क्यों न गिर जाता
तुंग शैल से क्यों लुढ़क न जाता
विशाल सागर की गोद में क्यों न समा जाता।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 153-156)

121. வேனில் வேள்கணை கிழித்திட மதிசுடும்
அதுதனை நினையாதே
மான்நி லாவிய நோக்கியிர் படிறிடை
மத்திடு தயிராகித்
தேன்நி லாவிய திருவருள் புரிந்தவென்
சிவனகர் புகப்போகேன்
ஊனில் ஆவியை ஓம்புதற் பொருட்டினும்
உண்டுடுத் திருந்தேனே. 40

121. वेनिल् वेळ्कणै किऴित्तिड मति चुडुम्
अदुतनै निनैयादे
मान्निलाविय नोक्कियिर् पडिरिडै
मत्तिडु तयिरागित्
तेन्निलाविय तिरुवरुळ् पुरिन्दवॅन्
शिवनगर पुगप् पोगेन्
ऊनिल् आवियै ओम्बुदऱ् पॊरुट्टिनुम्
उण्डु उडुत्तु इरुन्देने।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 157-160)

கைம்மாறு கொடுத்தல் — कैम्मारु कोडुत्तल्

122. இருகை யானையை ஒத்திருந் தென்னுளக்
கருவை யான்கண்டி லேன்கண்ட தெவ்வமே
வருக வென்று பணித்தனை வானுளோர்க்(கு)
ஒருவ னேகிற்றி லேன்கிற்பன் உண்ணவே. 41

122. इरुकै यानैयै ऑत्तिरुन्दॅन्नुळक्
करुवै यान् कण्डिलेन् कण्ड दॅव्वमे
वरुग वॅन्रु पणित्तनै वानुळोर्क्कु
ऑरुवने किट्रिलेन् किर्पन् उण्णवे।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 161-164)

121. *वसंत में कामदेव ने संधान किये पुष्पशर*
हृदय का घाव झुलसा शशि किरणों से
चकित मन मथित दधि सम उद्वेलित हुआ
मृगनयना रमणियों के काममोहित दृगों से
इसी काम-मोह में फँसा रहा
सुध नहीं रही आनंदमय शिवपुर जाने की
जहाँ होती है प्राणों में मधुसम अमृत वर्षा
बस मैं तो लगा रहा शरीर-पोषण में
खाने के लिए सुस्वादु भोजन और
पहनने के लिए सुरुचिर वस्त्र के
व्यामोह में गंवा दिया शिव-साम्राज्य।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 157-160)

बदला चुकाना

122. *दो हाथों वाले हाथी की भांति*
मैं खाता-पिता फिरता हूँ वृथा ही
प्रवृत्त नहीं होता आदिब्रह्म के ज्ञान में
जो कुछ देखा है दुख ही देखा है
हे देवाधिदेव प्रभो !
तुमने कृपापूर्वक मुझे बुलाया
'आओ वत्स ! प्राप्त कर लो दिव्य ज्ञान'
किंतु मैं उस के लिए अयोग्य
डूबा रहता हूँ जगत् के अल्प सुखों में।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 161-164)

123. உண்டொர் ஒண்பொரு ளென்றுணர் வார்க்கெலாம்
பெண்டிர் ஆண்அலி யென்றறி யொண்கிலை
தொண்ட னேற்குள்ள வாவந்து தோன்றினாய்
கண்டுங் கண்டிலேன் என்னகண் மாயமே! 42

123. उण्डॊरॊण्पॊरुळ् ऍन्ऱुणर्वार्क्कॆलाम्
पॆण्डिराणलि ऍन्ऱऱि ऑण्किलै
तॊण्डनेर्कुळ्ळवा वन्दु तॊन्ऱिनाय्
कण्डिडुम् कण्डिलेन् ऍन्न कण्मायमे !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 165-168)

124. மேலை வானவ ரும்மறி யாததோர்
கோல மேயெனை ஆட்கொண்ட கூத்தனே
ஞால மேவிசும் பேயிவை வந்துபோம்
கால மேயுனை யென்றுகொல் காண்பதே? 43

124. मेलै वानवरुम् मऱियाददोर्
कोलमे ऍनैयाट्कॊण्ड कूत्तने
ञालमे विशुम्पे यिवै वन्दु पोम्
कालमे उनै ऍन्ऱु कॊल् काण्पदे ?

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 169-172)

125. காண லாம்பர மேகட் கிறந்ததோர்
வாணி லாப்பொரு ளேயிங்கொர் பார்ப்பெனப்
பாண னேன்படிற் றாக்கையை விட்டுனைப்
பூணு மாற்றி யேன்புலன் போற்றியே. 44

125. काणलाम् परमे कट्किऱन्ददोर्
वाणिलाप् पॊरुळे इङ्गोर् पार्प्पॆनप्
पाणनेन् पडिट्राक्कैयै विट्टुनैप्
पूणुमाऱऱियेन् पुलन् पोट्रिये।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 173-176)

123. *अगणित साधक ऐसे हैं*
जिन्हें इतना तो बोध अवश्य है
कि जगन्नियंता परमतत्त्व का अस्तित्व है
किंतु वे जानते नहीं
कि वह नर है नारी है या कि क्लीव
हे परम दयालु !
इस सेवक पर दया करके
तुमने दिखा दिया अपना स्वरूप
हे महिमामय ! तुम्हारे दिव्य दर्शन के बाद भी
मेरी स्थिति न देखने वाले जैसी है।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 165-168)

124. *अगम हो अज्ञेय हो*
अमरलोक के निवासियों के लिए भी
हे नटराज ! प्रकट हुए मेरे समक्ष
अपना लिया मुझे प्रेम से करुणा से
कालकाल हो तुम ! बारंबार
आवागमन होता है धरती का अंबर का
तुममें, हे महाकाल !
कब होंगे दर्शन ?

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 169-172)

125. *हे अनंत रमणीय !*
अगोचर हो नयनों के लिए
ज्ञेय हो केवल ज्ञानमार्ग से
नभ में जाज्वल्यमान ज्योतिराट् !
ज्यों पक्षी-शावक पड़ा होता है नीड़ में
उड़ने का ढंग नहीं आता
मैं भी असमर्थ हूँ
शरीर का पिंजर तोड़कर
तुमने मिलने का मार्ग नहीं आता
बस पड़ा हूँ इंद्रियों का पोषण करता हुआ।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 173-176)

126. போற்றி யென்றும் புரண்டும் புகழ்ந்தும்நின்(று)
ஆற்றன் மிக்கஅன் பாலழைக் கின்றிலேன்
ஏற்று வந்தெதிரி தாமரைத் தாளுறுங்
கூற்ற மன்னதொர் கொள்கையென் கொள்கையே. 45

126. पोट्रि यॅन्ऱुम् पुरण्डुम् पुगऴ्न्दु निन्ऱु
आट्रन् मिक्कअन् पालऴैक् किन्ऱिलेन्
ऍट्रु वन्दॅदिरि तामरैत् ताळुऱुम्
कूट्र मन्नदॉर् कॉळ्गैयॅन् कॉळ्गैये।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 177-180)

127. கொள்ளுங் கில்லெனை யன்பரிற் கூய்ப்பணி
கள்ளும் வண்டும் அறாமலர்க் கொன்றையான்
நள்ளுங் கீழுளும் மேலுளும் யாவுளும்
எள்ளும் எண்ணெயும் போல்நின்ற எந்தையே. 46

127. कॉळ्ळुङ् किल्लॅनै अन्बरिऱ् कूय्प्पणि
कळ्ळुम् वण्डुम् अऱामलर्क् कॉन्ऱैयान्
नळ्ळुम् कीऴ्ुळुम् मेलुळुम् यावुळुम्
ऍळ्ळुम् ऍण्णॅयुम् पोल् निन्ऱ ऍन्तैये।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 181-184)

128. எந்தை யாயெம் பிரான்மற்றும் யாவர்க்குந்
தந்தை தாய்தம் பிரான்தனக் கஃதிலான்
முந்தி யென்னுள் புகுந்தனன் யாவருஞ்
சிந்தை யாலும் அறிவருஞ் செல்வனே. 47

128. ऍन्तैयाय् ऍम्पिरान् मट्रुम् यावर्क्कुम्
तन्दैताय् तम्बिरान् तनक्कह्दिलान्
मुन्दि यॅन्नुळ् मुगुन्दनन् यावरुम्
चिन्तैयालुम् अऱिवरुम् चॅल्वने।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 185-188)

126. *प्रेम विह्वलता में भूलुंठित होकर*
तड़पता नहीं पुकारता नहीं नाम लेकर
करता नहीं प्रशस्ति गान
भक्ति की दृढ़ता में पुकारने का ढंग नहीं
मेरी स्थिति तो उस भक्त जैसी है
जो मृत्यु को आसन्न देखकर
प्रणत होता है चरण-कमल पर।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 177-180)

127. *तिल में तेल की भांति*
व्याप्त हो प्रभु सब पदार्थों के
मध्य में नीचे और ऊपर
धारण किये हो निज जटा पर
मधु और मधुप युत कोन्नै पुष्प को
पुकार कर बुला लो मुझे
हे आनंदस्वरूप तात !
अपने प्रेमी भक्तों के मध्य में।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 181-184)

128. *तात मात है नाथ है मेरे लिए*
प्रभु सबका ही तात-मात और नाथ है
किंतु उसके लिए ऐसा कोई संबंध नहीं
मन और वाणी के लिए अगोचर प्रभु
ज्ञान-ऐश्वर्य का धनी
जान लूँ उसे यथातथ्य रूप में उससे पूर्व ही
घर कर लिया मेरे मानस में।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 185-188)

129. செல்வம் நல்குர வின்றிவிண் ணோர்புழுப்
புல்வரம் பின்றி யார்க்கும் அரும்பொருள்
எல்லை யில்கழல் கண்டும் பிரிந்தனன்
கல்வ கைமனத் தேன்பட்ட கட்டமே. 48

129. चॅल्वम् नल्कुरविन्ऱि विण्णोर् पुऴु़प
पुल्वरम्बिन्ऱि पार्क्कुम् अरुम्पॉरुळ्
ऍल्लै यिल्कऴल् कण्डुम् पिरिन्दनन्
कल्वकै मनत्तेन् पट्ट कट्टमे।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 189-192)

130. கட்ட றுத்தெனை யாண்டுகண் ணாரநீறு
இட்ட அன்பரொ டியாவருங் காணவே
பட்டி மண்டபம் ஏற்றினை ஏற்றினை
எட்டி னோடிரண் டும்அறி யேனையே. 49

130. कट्टरुत्तॅनै याण्डु कण्णार नीरु
इट्ट अन्बरॉडियावरुम् काणवे
पट्टि मण्डपम् एट्रिनै एट्रिनै
ऍट्टिनोडिरण्डुम् अऱियेनैये।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 193-196)

131. அறிவ னேயமு தேஅடி நாயினேன்
அறிவ னாகக் கொண் டோஎனை ஆண்டது
அறிவி லாமையன் றேகண்ட தாண்டநாள்
அறிவ னோவல்ல னோஅரு ளீசனே. 50

131. अऱिवने यमुदे अडि नायिनेन्
अऱिवनागक् कॉण्डो ऍनै याण्डदु
अऱिविलामैयन्ऱे कण्डदाण्ड नाळ्
अऱिवनो वल्लनो अरुळीशने।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 197-200)

129. *हे प्रभो ! देवगण से लेकर*
कीट-पतंग और तृण तक में व्याप्त हो तुम
धनी-निर्धन के भेद के बिना
फिर भी सब के लिए दुर्लभ हो
सुकृत से पाए असीम चरणों के दर्शन
इसके बाद हाय ! मैं बिछुड़ गया तुमसे
बिछुड़कर कितना कष्ट पाया
पाषाण-हृदय में।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 189-192)

130. *प्रभो ! काट दिए कर्म बंधन सारे*
और अपना लिया मुझे दास रूप में
इतने से रुके नहीं,
सकल देह पर भस्म लेपन से विभूषित
परिपक्व शिवभक्तों की मंडली में
बिठा दिया मुझे जो
इतना तक नहीं जानता था
कि आठ और दो का योग क्या होता है।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 193-196)

131. *हे ज्ञानशैल अमृतस्वरूप !*
इस तुच्छ दास को
ज्ञानी बनाने के लक्ष्य से ही तो
प्रभो तुमने अपनाया !
पहले मैं निपट अज्ञानी ही था
इसमें संशय का लेश भी नहीं
क्या इस समय मैं ज्ञानी बना
या वही अज्ञानी का अज्ञानी रहा
हे नाथ ! तुम्हीं बताओ ।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 197-200)

அநுபோக சுத்தி | अनुबोह शुत्ति

132. ஈச னேயென் எம்மானே
யெந்தை பெருமான் என்பிறவி
நாச னேநான் யாதுமொன்
றல்லாப் பொல்லா நாயான
நீச னேனை ஆண்டாய்க்கு
நினைக்க மாட்டேன் கண்டாயே
தேச னேஅம் பலவனே
செய்வ தொன்றும் அறியேனே. 51

132. ईशने ऍन् एम्माने
एन्तै पेरुमान् ऍन् पिऱवि
नाशने नान् यादुमॉन्ऱु
अल्लाप् पॉल्ला नायान
नीचने ऍनै याण्डाय्क्कु
निनैक्क माट्टेन् कण्डाये
तेशने अम्बलवने
चॅय्वदॉन्ऱुमऱियेने।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 201-204)

अनुभव शुद्धि

132. *हे परमेश्वर ! मेरे वरेण्य तात !*
जन्म-मरण के रोगनाशक नाथ !
अपना लिया करुणा से
इस नीच श्वान को
जो तुम्हारी कृपा के लिए अयोग्य रहा सर्वथा
देखो कितना कृतघ्न हूँ
स्मरण तक नहीं करता तुम्हारा
चित्-अंबर के ज्योतिराट् !
इस नीच मन को लेकर
पता नहीं क्या करूँगा मैं
कैसे पाऊँगा उद्धार।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 201-204)

132. செய்வ தறியாச் சிறுநாயேன்
செம்பொற் பாத மலர்காணாப்
பொய்யர் பெறும்பே றத்தனையும்
பெறுதற் குரியேன் பொய்மிலா
மெய்யர் வெறியார் மலர்ப்பாதம்
மேவக் கண்டுங் கேட்டிருந்தும்
பொய்ய னேன் நான் உண்டுடுத்திங்
கிருப்ப தானேன் போரேறே! 52

133. चॆय्वदऱियाच् चिऱुनायेन्
चॆम्पॊऱ् पादमलर् काणाप्
पॊय्यर् पॆरुम् पेऱत्तनैयुम्
पॆऱुदर्कुरियेन् पॊय्यिला
मॆय्यर् वॆऱियार् मलर्प्पादम्
मेवक्कण्डुम् केट्टिरुन्दुम्
पॊय्यनेन् उण्डुण्डुडुत्तिङ्गु
इरुप्पदु आनेन् पोरेऱे !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 205-208)

134. போரே றேநின் பொன்னகர்வாய்
நீபோந் தருளி இருள்நீக்கி
வாரே றிளமென் முலையாளோ
டுடன்வந் தருள அருள்பெற்ற
சீரே றடியார் நின்பாதஞ்
சேரக் கண்டுங் கண்கெட்ட
ஊரே றாமிங் குழல்வேனோ
கொடியேன் உயிர்தான் உலவாதே. 53

134. पोरेऱे निन् पॊन्नगरवाय्
नी पोन्दरुळि इरुळ् नीक्कि
वारेऱ् इळ मॆन्मुलैयाळोडु
उडन् वन्दरुळ अरुळ् पॆट्र
चीरेऱ् अडियार् निन् पादम्
चेरक्कण्डुम् कण्कॆट्ट
ऊरेऱ् आयिङ्कुऴल्वेनो
कॊडियेन् उयिर्तान् उलवादे।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 209-212)

133. *अज्ञान तिमिर के प्रभंजक*
महायोद्धा ! परमेश्वर !
इस कला से अनभिज्ञ मैं
ज्ञानस्वरूप तुम्हारे
चरणकमल पर प्रणत हुए बिना
डूबा हुआ हूँ इन्द्रियजनित क्षणिक् सुख में
देखता हूँ नित्य ही
तुम्हारे उत्तम साधकों को
जो सत्यवस्तु तुम पर आसक्त हैं
सुना है उनका पुण्य चरित
फिर भी छोड़कर उनका सन्मार्ग
लगा हुआ हूँ शरीर-पोषण में
मस्त हूँ सुस्वादु भोजन में सुरुचिर वस्त्र में।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 205-208)

134. *हे पुरुष सिंह ! देखा मैंने*
सन्निधि में खड़े साधक-वृंद
अभिभूत हुए तुम्हारी अनुग्रह-वर्षा से
जब तुम प्रकट हुए सुवर्ण-खचित द्वार पर
सुमृदुलस्तनी उमा सुकुमारी के संग
देखा तुम्हारे भक्त पहुँच गए
तुम्हारे चरणकमल पर
यह अनुपम दृश्य देखने के बाद भी
इस तुच्छ दास की यही नियति है
कि अंध बनकर मूर्ख बनकर
यहाँ खाता पीता वृथा जीवन यापन करूँ ?

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 209-212)

135. உலவாக் காலந் தவமெய்தி
உறுப்பும் வெறுத்திங் குனைக்காண்பான்
பலமா முனிவர் நனிவாடப்
பாவி யேனைப் பணிகொண்டாய்
மலமாக் குரம்பை யிதுமாய்க்க
மாட்டேன் மணியே உனைக்காண்பான்
அலவா நிற்கும் அன்பிலேன்
என்கொண் டெழுகேன் எம்மானே. 54

135. उलवाक् कालम् तवमॅय्दि
उरुप्पुम् वॅरुत्तिङ्कुनैक् काण्पान्
पल मामुनिवर् ननि वाडप्
पावियेनैप् पणिकॉण्डाम्
मलमाक् कुरम्बै यिदु मायक्क
माट्टेन् मणिये उनैक् काण्पान्
अलवा निर्कुम् अन्बिलेन्
ऍन्कॉण्डॅऴुकेन् ऍम्माने।

(तिरुपुरै आठ - 5 पंक्ति 213-216)

136. மானேர் நோக்கி உமையாள்
பங்கா வந்திங் காட்கொண்ட
தேனே அமுதே கரும்பின்
தெளிவே சிவனே தென்தில்லைக்
கோனே உன்தன் திருக்குறிப்புக்
கூடு வார்நின் கழல்கூட
ஊனார் புழுக்கூ டிதுகாத்திங்
கிருப்ப தானேன் உடையானே! 55

136. मानेर् नोक्कि उमैयाळ्
पङ्गा वन्दिङ्गाट्कॉण्ड
तेने अमुदे करुम्बिन्
तॅळिवे शिवने तॅन्तिल्लैक्
कोने उन्ऱन् तिरुक्कुऱिप्पुक्
कूडुवार् निन् कऴल् कूड
ऊनार् पुऴुक्कूडिदु कात्तिङ्
किरुप्पदा नेन् उडैयाने !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 217-220)

135. *ईश ! अगणित ऋषि मुनि*
तुम्हें प्राप्त करने के लिए
अपना देह-बोध छोड़कर
कठिन तपोनुष्ठान में लीन हुए
शरीर उनका म्लान बन गया
उन्हें छोड़कर हे करुणामय
इस अकर्मण्य को अपनाया
लीन हूँ मैं मलमय देह के बोध में
हे अनुग्रह महाज्योति !
मुझ में ललक नहीं उठ रही है
तुम्हारे दर्शन की – क्या करूँ
कैसे उद्धार पाऊँ ओ मेरे नाथ !

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 213-216)

136. *मृगनयनी उमा महेश्वरी के*
दक्षिण भाग में विलस रहे नाथ !
बरबस आकर तुमने अपनाया मुझे
हे मधुमय ! अमृतस्वरूप !
इक्षु-रस के निचोड़ ! तुम्हारी
चिन्मुद्रा देखकर साधकोत्तमों ने जान लिया
कि तुम्हें प्राप्त करना ही
चरम लक्ष्य है मानव-जीवन का
इस शिक्षा का अनुसरण करते हुए
प्रेमाभक्ति से पा लिया साधकों ने तुम्हें
और मैं – तुम्हारा स्वत्व होते हुए भी
देह-चिंता में लीन होकर
इहलोक सुख का प्रेमी बना हूं।

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 217-220)

137. உடையா னேநின் றனையுள்கி
உள்ளம் உருகும் பெருங்காதல்
உடையா ருடையாய் நின்பாதஞ்
சேரக் கண்டிங் கூர்நாயிற்
கடையா னேன்நெஞ் சுருகாதேன்
கல்லா மனத்தேன் கசியாதேன்
முடையார் புழுக்கூ டிதுகாத்திங்
கிருப்ப தாக முடித்தாயே! 56

137. उडैयाने निऩ्ऱनै उळ्गि
उळ्ळ मुरुगुम् पॆरुङ्कादल्
उडैयार् उडैयाय् निऩ्पादम्
चेरक् कण्डिङ्कूर् नायिऱ्
कडैयाने नॆञ्जुरुगादेन्
कल्ला मनत्तेन् कशियादेन्
मुडैयार् पुऴुक्कूडिदु कात्तिङ्
किरुप्पदाग मुडित्ताये !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 221-224)

138. முடித்த வாறும் என்றனக்கே
தக்க தேமுன் னடியாரைப்
பிடித்த வாறுஞ் சோராமற்
சோர னேனிங் கொருத்திவாய்
துடித்த வாறுந் துகிலிறையே
சோர்ந்த வாறும் முகங்குறுவேர்
பொடித்த வாறு மிவையுணர்ந்து
கேடென் றனக்கே சூழ்ந்தேனே! 57

138. मुडित्तवाऱुम् ऍऩ्तनक्के
तक्कदे मुन्नडियारैप्
पिडित्तवाऱुम् चेरामल्
चोरनेन् इङ्कॊरुत्ति वाय्
तुडित्तवाऱुम् तुगिलिरैये
चेर्न्दवारु मुगङ्कुरुवेर्
पॊडित्तवाऱुम् इवैयुणर्न्दु
केडॆन् तनक्के चूऴ्न्देने !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 225-228)

137. *हे स्वामी ! अगणित हैं तुम्हारे भक्तगण*
जो प्रेमासक्ति में सुधबुध खोकर
सतत लीन रहते हैं सुरति में ध्यान में
हे नाथ ! धन्यात्मा उन भक्तों को
तुम्हारे चरणकमल में लीन होते देखकर भी
मेरा हृदय प्रेम में पसीजता नहीं
श्वान से भी अधम हूँ मैं
और कैसे पिघलता यह हृदय
यह तो पाषाण का बना है
लगता है, मलमय शरीर ढोते हुए
यहीं रहने की मेरी नियति है।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 221-224)

138. *उचित ही लिया तुमने निर्णय*
मेरे विषय में, जो मैंने निष्ठाहीन होकर
तज दिया तुम्हारे साधकों का प्रशस्त पथ
अधम मैं रीझ गया था
कामिनी के अधरों पर थिरकती मुस्कान पर
वक्ष के उभार से सटे चारुतर पट पर
फँसा उसकी घुंघराली अलकावली पर
प्रेम-संकेत ढूँढता रहा उसके दृगों पर
यों ठगी कर ली मैंने स्वयं के साथ
इसलिए उचित ही था
मेरे प्रति तुम्हारा तिरस्कार।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 225-228)

139. தேனைப் பாலைக் கன்னலின்
தெளியை ஒளியைத் தெளிந்தார்தம்
ஊனை உருக்கும் உடையானை
உம்ப ரானை வம்பனேன்
நானின் னடியேன் நீயென்னை
ஆண்டா யென்றால் அடியேற்குத்
தானுஞ் சிரித்தே யருளலாந்
தன்மை யாமென் தன்மையே! 58

139. तेनैप् पालैक् कन्नलिन्
तॆळियै ऑळियै तॆळिन्दार् तम्
ऊनै उरुक्कुम् उडैयानै
उम्बरानै वम्बनेन्
नान् निन्नडियेन् नीयॆन्नै
आण्डाय् ऍन्राल् अडियेर्कुत्
तानुम् चिरित्ते अरुळलाम्
तन्मैयाम् ऍन् तन्मैये।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 229-232)

140. தன்மை பிறரா லறியாத
தலைவா பொல்லா நாயான
புன்மை யேனை ஆண்டையா
புறமே போக விடுவாயோ
என்னை நோக்கு வார்யாரே
என்நான் செய்கேன் எம்பெருமான்
பொன்னே திகழுந் திருமேனி
எந்தா யெங்குப் புகுவேனே. 59

140. तन्मै पिऱराल् अरियाद
तलैवा पॉल्ला नायान
पुनैयेनै आण्डैया
पुऱमे पोग विडुवायो
ऍन्नै नोक्कुवार् यारे
ऍन्नान् चॆय्केन् ऍम्पॆरुमान्
पॉन्ने तिगऴुम् तिरुमेनि
ऍन्ताय् ऍङ्गुप् पुगुवेने।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 233-236)

139. *हे नाथ ! अतीव प्रियंकर हो*
पहुँचे हुए अपने भक्तगण के लिए
स्मरण मात्र से पसीज उठता है
प्रेम में पगा तुम्हारा हृदय
सच है, मधु, दुग्ध, मिश्री से भी मधुरिम हो
ज्योतिस्वरूप तुम ज्ञानदाता हो भक्तों के हित
और ज्ञानशून्य मैं जब
दावा करता हूँ तुम्हारे सामने
'तुम मेरे स्वामी हो और मैं तुम्हारा दास'
सुनकर तुम मुस्कान भरते हो
अद्भुत है निरस्त करने की बानगी।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 229-232)

140. *कोई नहीं जानता तुम्हारी प्रकृति को*
स्वयं तुम्हें छोड़ कर मेरे नाथ !
धृष्ट श्वान सम लघु जन को
दास रूप में अपना कर
प्रभो ! आज निकाल दोगे बाहर ?
ऐसे में कौन करेगा मेरी देखभाल
कनकाभ देहकांति के मेरे स्वामी !
मेरे तात ! कहाँ जाऊँ मैं ?

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 233-236)

141. புகுவே னெனதே நின்பாதம்
போற்றும் அடியா ருள்நின்று
நகுவேன் பண்டு தோணோக்கி
நாண மில்லா நாயினேன்
நெகுமன் பில்லை நினைக்காண
நீயாண் டருள அடியேனுந்
தகுவ னேயென் தன்மையே
எந்தாய் அந்தோ தரியேனே.

141. पुगुवेन् ऍनदे निन् पादम्
पोट्रुम् अडियायारुळ् निन्रु
नगुवेन् पण्डु तोळ् नोक्कि
नाणम् इल्ला नायिनेन्
नेगुम् अन्बिल्लै निनैक्काण
नी आण्डरुळ अडियेनुम्
तगुवने ऍन् तन्मैये
एन्ताय् अन्दो तरियेने।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 237-240)

141. *कितना निर्लज्ज था मैं*
जो खड़ा होकर भक्तमंडली के मध्य में
अपने भुजबल पर दर्प करता था
और इसी दर्प में हँसता था
लज्जा-रहित श्वान की भांति
तुम्हारा आनंदमय स्वरूप देखकर
पसीज जाने के लिए प्रेम नहीं हृदय में
क्या मैं इस योग्य हूँ
कि तुम मुझे अपना लो अनुग्रह करो
सह न पाता हूँ इस स्थिति को
हे तात ! अनुगृहीत करो जिससे
प्राप्त करूँ तुम्हारे दिव्य चरण
जो मेरे अपने हैं।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 237-240)

காருணியத்து இரங்கல் कारुणियत्तु इरङ्गल्

142. தரிக்கிலேன் காய வாழ்க்கை
சங்கரா போற்றி வான
விருத்தனே போற்றி எங்கள்
விடலையே போற்றி ஒப்பில்
ஒருத்தனே போற்றி உம்பர்
தம்பிரான் போற்றி தில்லை
நிருத்தனே போற்றி எங்கள்
நின்மலா போற்றி போற்றி! 61

142. तरिक्किलेन् काय वाऴ्क्कै
शङ्करा पोट्रि वान
विरुत्तने पोट्रि ऍङ्गळ्
विडलैये पोट्रि ऑप्पिल्
ऑरुत्तने पोट्रि उम्बर
तम्बिरान् पोट्रि तिल्लै
निरुत्तने पोट्रि ऍङ्गळ्
निन्मला पोट्रि पोट्रि !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 241-244)

कारुण्य से अभिभूत होना

142. *धरा नहीं जा रहा है प्रभु*
असहनीय है जग-जीवन
नमन करता हूँ शिवशंकर
अमरलोक के आदि पुरुष
नमन है तुम्हारे चरणों पर
अग जग में प्रतापी वीर
अनुपम अद्वितीय तुम्हें नमन है
देवों के अधीश नमन है बारंबार
तिल्लै चिदम्बर में
नर्तित नटराजराज !
निर्मल सच्चिदानंद प्रभु
नमन करता हूँ दिव्य चरणों पर।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 241-244)

143. போற்றியோ நமச்சி வாய
புயங்கனே மயங்கு கின்றேன்
போற்றியோ நமச்சி வாய
புகலிடம் பிறிதொன் றில்லை
போற்றியோ நமச்சி வாய
புறனெனைப் போக்கல் கண்டாய்
போற்றியோ நமச்சி வாய
சமசய போற்றி போற்றி! 62

143. पोट्रियो नमच्चिवाय
पुयंगने मयंगु किन्ऱेन्
पोट्रियो नमच्चिवाय
पुगलिडम् पिऱिदॊन्ऱिल्लै
पोट्रियो नमच्चिवाय
पुऱमॆनैप् पोक्कल् कण्डाय्
पोट्रियो नमच्चिवाय
जय जय पोट्रि पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 245-248)

144. போற்றியென் போலும் பொய்யர்
தம்மைஆட் கொள்ளும் வள்ளல்
போற்றிநின் பாதம் போற்றி
நாதனே போற்றி போற்றி
போற்றிநின் கருணை வெள்ளப்
புதுமதுப் புவனம் நீர்தீக்
காற்றிய மானன் வானம்
இருசுடர்க் கடவு ளானே! 63

144. पोट्रि यॆन्पोलुम् पॊय्यर्
तम्मै याट्कॊळ्ळुम् वळ्ळल्
पोट्रि निन् पादम् पोट्रि
नातने पोट्रि पोट्रि
पोट्रि निन् करुणै वॆळ्ळप्
पुदु मदुप् पुवन नीर् तीक्
काट्रिय मानन् वानम्
इरुचुडर्क् कडवुळाने !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 249-252)

143. *ॐ नमश्शिवाय मंत्र स्वरूप !*
अंग अंग उरग विभूषित नाथ !
भ्रम में पड़ा मैं चकित हूँ
ॐ नमश्शिवाय प्रभो !
अन्य कोई शरण नहीं मेरे लिए
तुम्हारे चरणों को छोड़कर
ॐ नमश्शिवाय प्रभु !
मुझे तिरस्कृत न करना
ॐ नमश्शिवाय प्रभु
बारंबार नमन है
जय हो तुम्हारी सदा विजय हो।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 245-248)

144. *मिथ्या देह पर आसक्त*
मुझ जैसों को भी अपनाते हो
हे नाथ ! परम उदार ! तुम्हारी जय हो
नमन है तुम्हारे चरणों पर
बारंबार नमन है, नाथ तुम्हारी जय हो
मधुसम मधुरिम है तुम्हारी
करुणा वारिधारा जय हो जय जय हो
पंचभूत सूर्य चंद्र और जीव
यों अष्टमूर्ति रूप में विलसे
मेरे परमेश्वर तुम्हारी जय हो।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 249-252)

145. கடவுளே போற்றி யென்னைக்
கண்டுகொண் டருளு போற்றி
விடவுளே உருக்கி யென்னை
ஆண்டிட வேண்டும் போற்றி
உடலிது களைந்திட் டொல்லை
உம்பர்தந் தருளுபோற்றி
சடையுளே கங்கை வைத்த
சங்கரா போற்றி போற்றி! 64

145. कडवुळे पोट्रि यन्नैक्
कण्डुकॉण्डरुळु पोट्रि
विडवुळे उरुक्कि यन्नै
आण्डिड वेण्डुम् पोट्रि
उडलिदु कळैन्दिट्टॉल्लै
उम्बर् तन्दरुळु पोट्रि
चडैयुळे कङ्गै वैत्त
शङ्करा पोट्रि पोट्रि !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 253-256)

146. சங்கரா போற்றி மற்றோர்
சரணிலேன் போற்றி கோலப்
பொங்கரா அல்குற் செவ்வாய்
வெண்ணகைக் கரிய வாட்கண்
மங்கையோர் பங்க போற்றி
மால்விடை யூர்தி போற்றி
இங்கிவ்வாழ் வாற்ற கில்லேன்
எம்பிரான் இழித்திட் டேனே. 65

146. शङ्करा पोट्रि मट्रोर्
शरणिलेन् पोट्रि कोलप्
पॉङ्गरा अल्गुर् चॅव्वाय्
वॅण्णगैक् करिय वाट्कण्
मङ्गैयोर् पङ्ग पोट्रि
माल्विडै ऊर्दि पोट्रि
इङ्गिव्वाळ् वाट्रकिल्लेन्
ऎम्पिरान् इळिन्दिट्टेने।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 257-260)

145. *हे परमेश्वर ! नमन करता हूँ मैं*
निहारो मुझे कृपा-कटाक्ष से
अनुग्रह बरसाओ प्रभो ! नमन है
पिघला दो मेरे मन को भीतर ही भीतर
और अपना लो मुझे, ओ मेरे नाथ
तुम्हें नमन है
ऐसी कृपा हो कि
मैं काया का पिंजर छोड़कर
मिलूँ तुमसे, एकाकार हो जाऊँ
आनंदमय सायुज्य का अनुभव करूँ
हे शंकर ! तुम्हें नमन है
जटा पर गंगा धरे ओ गंगाधर !
बारंबार नमन है।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 253-256)

146. *नमन है ओ शिवशंकर !*
प्रभो ! अन्य कोई शरण नहीं है
तुम्हें छोड़ कर, हे नाथ ! तुम्हें नमन है
कटितट पर शोभित है फणिराज भुजंग
वाम भाग में विलस रही उमा सुकुमारी
धवलोज्ज्वल मुस्कान और
नील नीलिम नयनों के संग !
हे अर्धनारी प्रभु ! तुम्हें नमन है
वृषभारूढ़ महेश्वर नमन है तुम्हें
हे नाथ ! ऊब गया हूँ
जग-जीवन से, मुझे उबारो
बारंबार तुम्हें नमन है।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 257-260)

147. இழித்தனன் என்னை யானே
எம்பிரான் போற்றி போற்றி
பழித்திலேன் உன்னை என்னை
ஆளுடைப் பாதம் போற்றி
பிழைத்தவை பொறுக்கை எல்லாம்
பெரியவர் கடமை போற்றி
ஒழித்திடிவ் வாழ்வுபோற்றி
உம்பர்நாட் டெம்பி ரானே! 66

147. इऴित्तनन् ऍन्नै याने
ऍम्बिरान् पोट्रि पोट्रि
पऴित्तिलेन् उन्नै ऍन्नै
आळुडैप् पादम् पोट्रि
पिऴैत्तवै पॊरुक्कै ऍल्लाम्
पॆरियवर् कडमै पोट्रि
ऑऴित्तिडिव्वाऴ्वु पोट्रि
उम्बर् नाट्टॆम्पिराने !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 261-264)

148. எம்பிரான் போற்றி வானத்
தவரவர் ஏறு போற்றி
கொம்பரார் மருங்குல் மங்கை
கூறவெண் ணீற போற்றி
செம்பிரான் போற்றி தில்லைத்
திருச்சிற்றம் பலவ போற்றி
உம்பரா போற்றி என்னை
ஆளுடை ஒருவ போற்றி! 67

148. एम्पिरान् पोट्रि वानत्तु
अवरवर् एऱु पोट्रि
कॉम्बरार् मरुङ्गुन् मङ्गै
कूर वॆण्णीऱ पोट्रि
चॆम्पिरान् पोट्रि तिल्लैत्
तिरुच्चिट्रम्बलव पोट्रि
उम्बरा पोट्रि यॆन्नै
आळुडै ऑरुव पोट्रि !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 265-268)

147. *धिक्कारता हूँ मैं स्वयं को ही*
अधोगति यह स्वयंकृति है इसके लिए
दोष नहीं दूँगा तुम्हें लेश भी
प्रणत हूँ तुम्हारे चरण-युगल पर
जिन चरणों ने शरण दी
अपनाया मुझे दास रूप में
नमन है बारंबार नमन है
जो भी अपराध होता है छोटों से
क्षमा करना धर्म है बड़ों का
देवाधिदेव प्रभु नमन करता हूँ
यही प्रार्थना यही दुहाई
उबारो मुझे इस प्रपंच से।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 261-264)

148. *जय हो परमेश्वर ! देवगणों के नाथ !*
नमन करता हूँ तुम्हें
स्थान दिया तुमने वामभाग में
तन्वंगी उमा सुकुमारी को
जय हो ! भस्म लेपित प्रभु की।
सकल गुणगणों से विभूषित प्रभु की।
तिल्लै की चित्सभा में विराजे
नटराजराज ? नमन है तुम्हारे चरणों पर
अमर लोक के अधीश ?
मेरे एकैकनायक ! नमन है
तुम्हारे चरणों पर बारंबार।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 265-268)

149. ஒருவனே போற்றி ஒப்பில்
அப்பனே போற்றி வானோர்
குருவனே போற்றி எங்கள்
கோமளக் கொழுந்து போற்றி
வருகவென் றென்னை நின்பால்
வாங்கிட வேண்டும் போற்றி
தருகநின் பாதம் போற்றி
தமியனேன் தனிமை தீர்த்தே. 68

149. ऑरुवने पोट्रि ऑप्पिल्
अप्पने पोट्रि वानोर्
गुरुवने पोट्रि ऍङ्गळ्
कोमळक् कॉऴुन्दु पोट्रि
वरुग ऍन्ऱन्नै निन्पाल्
वाङ्गिड वेण्डुम् पोट्रि
तरुग निन् पादम् पोट्रि
तमियनेन् तनिमै तीर्त्ते।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 269-272)

150. தீர்ந்தஅன் பாய அன்பர்க்
கவரினும் அன்ப போற்றி
பேர்ந்து மென் பொய்மை யாட்கொண்
டருளிடும் பெருமை போற்றி
வார்ந்தநஞ் சயின்று வானோர்க்
கமுதம்ஈ வள்ளல் போற்றி
ஆர்ந்தநின் பாதம் நாயேற்
கருளிட வேண்டும் போற்றி! 69

150. तीर्न्द अन्बाय अन्बर्क्कु
अवरितुम् अन्ब पोट्रि
पोन्दम् ऍन् पॉरुमै आट्कॉण्डु
अरुळिडुम् पॅरुमै पोट्रि
वार्न्द नञ्जयिन्रु वानोर्क्कु
अमुदमी वळ्ळल् पोट्रि
आर्न्द निन् पादम् नायेर्कु
अरुळिड वेण्डुम् पोट्रि !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 273-276)

149. *तात मेरे ! एकैकनायक हो तुम*
अनुपम अद्वितीय भी
चरणों पर नमन है
जय हो तुम्हारी सदा विजय हो
देवों अमरगणों के गुरुमणि
चरणों पर सदा नमन है
चिरंतन हो नित नूतन भी
नमन है नाथ ! खड़ा हूँ इसी प्रतीक्षा में
बुलाओगे मुझे 'आओ वत्स'
बुलाकर अपने पास
स्थान दोगे निज चरणों पर
हरण करोगे इस एकाकी के
सकल दुःख-संताप।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 269-272)

150. *गद्गद हो जाते हो ओ भोलेनाथ प्रभु !*
प्रेमाभक्ति में परिपक्व साधकों को देखकर
हे परमोदार ! उन पर तुम्हारी आसक्ति
उनकी भक्ति से कहीं अधिक है
औढरदानी तुम बरसाते हो अपरिमित अनुग्रह
अहह ! अनुपम है तुम्हारा औदार्य
स्वयं आगे बढ़कर मुझे अपना लिया
मिटा कर मिथ्या मोह और जीव-बोध को
अशन करके हलाहल स्वयं
प्रदान किया अमृत देवगण को
नमन करता हूँ प्रभो ! इस तुच्छ जन को
प्रदान करो अपने दिव्य चरण।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 273-276)

151. போற்றியிப் புவனம் நீர்தீக்
காலொடு வான மானாய்
போற்றியெவ் வுயிர்க்குந் தோற்றம்
ஆகிநீ தோற்ற மில்லாய்
போற்றியெல் லாவு யிர்க்கும்
ஈறாயீ றின்மை யானாய்
போற்றியைம் புலன்கள் நின்னைப்
புணர்கிலாப் புணர்க்கை யானே!

151. पोट्रि यिप्पुवन नीर् तीक्
कालॊडु वानमानाय्
पोट्रि ऍव्वुयिर्क्कुम् तोट्रम्
आगि नी तोट्रमिल्लाय्
पोट्रि ऍल्ला उयिर्क्कुम्
ईऱाय् ईऱिन्मै यानाय्
पोट्रि ऐम्पुलन्गळ् निन्नैप्
पुणर्गिलाप् पुणर्कैयाने !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 277-280)

151. *जय हो परात्पर ! पंचभूत स्वरूप हो*
धरती भी सलिल भी
अनिल अनल के संग आकाश भी तुम्हीं हो।
बारंबार नमन करता हूँ
सकल चराचर पाते हैं आकार तुम से
किंतु तुम स्वयं निराकार हो
सकल जीव के अंत तुम्हीं हो
किंतु स्वयं अंतहीन
पंचेंद्रियों को शक्ति मिलती है तुमसे
जिससे उनकी पहुँच होती है सर्वत्र
किंतु तुम उनके लिए अगम्य हो
हे नाथ ! बारंबार नमन करता हूँ।

(तिरुमुरै आठ -5 पंक्ति 277-280)

ஆனந்தத்து அழுந்தல் आनन्दत्तु अऴ्ुन्दल्

152. புணர்ப்ப தொக்க எந்தை யென்னை
யாண்டு பூண நோக்கினாய்
புணர்ப்ப தன்றி தென்றபோது
நின்னோ டென்னோ டென்னிதாம்
புணர்ப்ப தாக அன்றி தாக
அன்பு நின்க ழற்கணே
புணர்ப்ப தாக அங்க ணாள
புங்க மான போகமே. 71

152. पुणर्प्प दोक्क ऍन्दै ऍन्नै
आण्डु पूण नोक्किनाय्
पुणर्प्प दऩ्रि दॆऩ्ऱ पोदु
निन्नोडॆन्ना डॆन्नि ताम्
पुणर्प्पदाग अऩ्रिदाग
अन्पु निन् कऴ्ऱ्कणे
पुणर्प्पदाग अङ्कणाळ !
पुङ्गमान पोगमे !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 281-284)

आनन्द में निमज्जन

152. *आश्लेष-पाश में लेते हुए मुझे*
अनुग्रह पूर्वक देखा कटाक्ष से
पुलकित होकर आनंद पाया
अनुभव पाया सायुज्य का
फिर छोड़ दिया तुमने मुझको
लोक-जीवन में रहने के लिए कुछ काल
ओ सुंदर नयन के धनी !
निरंतर मेरी आसक्ति जो है
तुम्हारे चरणों पर वह मुझे
प्रदान करे शिवानंद सर्वदा।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 281-284)

153. போகம் வேண்டி வேண்டி லேன்பு
ரந்த ராதி யின்பமும்
ஏக நின்க ழலி ணைய
லாதி லேனென் எம்பிரான்
ஆகம் விண்டு கம்பம் வந்து
குஞ்சி யஞ்ச லிக்கணே
ஆக என்கை கண்கள் தாரை
யாற தாக ஐயனே! 72

153. पोगम् वेण्डि वेण्डिलेन्
पुरन्दरादि इन्बमुम्
एक निन्कऴल् इणैयलादु
लादिलेन् ऍम्पिरान्
आकम् विण्डु कम्बम् वन्दु
कुञ्जि अञ्जलिक्कणे
आग ऍन् कै कण्गळ् तारै
आऱदाग ऐयने !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 285-288)

154. ஐய நின்ன தல்ல தில்லை
மற்றொர் பற்று வஞ்சனேன்
பொய்க லந்த தல்ல தில்லை
பொய்ம்மை யேனென் எம்பிரான்
மைக லந்த கண்ணி பங்க
வந்து நின்க ழற்கணே
மெய்க லந்த அன்ப ரன்பெ
னக்கு மாக வேண்டுமே! 73

154. अय्य निन्नदल्ल दिल्लै
मट्रोर् पट्रु वञ्जनेन्
पॉय् कलन्ददल्ल दिल्लै
पॉय्म्मैयेर्नन् ऍम्पिरान्
मै कलन्द कण्णि पङ्क
वन्दुं निन् कऴ्रकणे
मॅय् कलन्द अन्बरन्बु
ऍनक्कुमाग वेणुमे !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 289-292)

153. *सुखभोगों का अनुभव करने के लिए*
अभिलाषा नहीं करता मैं
इंद्रलोक जैसी भोग-भूमियों की
मेरे तात ! एकैकनायक !
तुम्हारे चरणकमल बिन
कहीं नहीं मेरी शरण
त्रस्त शरीर काँप रहा है थर थर
अंजलिबद्ध कर सिर पर धरे हैं
और आँखों से प्रवहित है
अजस्र अश्रुधार।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 285-288)

154. *हे तात ! मेरे नाथ ! तुम्हें छोड़कर*
कहीं शरण नहीं है मेरे लिए
सत्य वस्तु तुम्हें छोड़कर
मिथ्या देहासक्ति में भूला रहूँ
प्रवंचक कहलाऊँगा
झूठा कहलाऊँगा मेरे नाथ !
अंजन शोभित नयना उमा के
दक्षिण भाग में विराजे प्रभु !
ऐसी कृपा करो कि स्थान पाऊँ मैं
सच्चे साधकों की मंडली में।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 289-292)

155. வேண்டும் நின்க ழற்க ணன்பு
பொய்ம்மை தீர்த்து மெய்ம்மையே
ஆண்டு கொண்டு நாயி னேனை
ஆவ வென்ற ருளுநீ
பூண்டுகொண் டடிய னேனும் போற்றி
போற்றி யென்று மென்றும்
மாண்டு மாண்டு வந்து வந்து
மன்ன நின்வ ணங்கவே! 74

155. वेण्डुम् निन् कऴऱ्कणन्बु
पॉय्म्मै तीर्त्तु मॅय्म्मैये
आण्डु कॉण्डु नायिनेनै
आव ऍन्ऱरुळु नी
पूण्डु कॉण्डु अडियनेनुम् पोट्रि
पोट्रि ऍन्ऱुमॅन्ऱुम्
माण्डु माण्डु वन्दु वन्दु
मन्न निन् वणङ्गवे !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 293-296)

156. வணங்கும் நின்னை மண்ணும் விண்ணும்
வேத நான்கும் ஓலமிட்(டு)
உணங்கு நின்னை எய்த லுற்று
மற்றொருண்மை யின்மையின்
வணங்கி யாம்வி டேங்க ளென்ன
வந்து நின்ற ருளுதற்(கு)
இணங்கு கொங்கை மங்கை பங்க
என்கொ லோறி னைப்பதே? 75

156. वणङ्गु निन्नै मण्णुम् विण्णुम्
वेदनान्गुम् ओलमिट्टु
उणङ्गु निन्नै ऍय्दलुट्रु
मट्रॉरुण्मै इन्मैयिन्
वणङ्गि याम् विडैङ्गळॅन्न
वन्दु निन्ऱरुळुदर्कु
इणङ्गु कॉङ्गै मङ्गै पङ्ग
ऍन्कॉलो निनैप्पदे ?

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 297-300)

155. *नाथ मेरे ! चाहता हूँ मैं प्रेम*
तुम्हारे नूपुर शिंजित चरणों पर
अविचल आसक्ति ! हे प्रभो !
मिटा दो मिथ्या मोह को
जो हावी हो रहा है मुझ पर
और मुझ पर कृपा करके
अनुग्रह करो
कि यह जन उत्कर्ष पाए
जय जयकार करता रहूँ
मर मर पुनः-पुनः जीवन पाऊँ
प्रणत होने के लिए तुम्हारे चरणों पर।

(तिरुमुरै आठ -5 पंक्ति 293-296)

156. *नमन करते हैं तुम्हें*
पृथ्वी के संग अंबर-भू और स्वर्ग भी
उच्च स्वर से घोष करते
ढूँढते रहे चतुर्वेद, किंतु पार नहीं पाया
चूँकि हम जानते हैं
वरेण्य सत्यवस्तु स्वयं तुम्हीं हो
यही प्रतिज्ञा लेकर आए हैं हम
सेवा में लगे रहेंगे, छोड़ेंगे नहीं कभी भी
ऐसे में सुभग स्तनी उमा के संगी
हे अर्धनारीश्वर प्रभु ! तुम्हारे मन में
क्यों नहीं आ रहा विचार
हमारे उद्धार का, अनुग्रह बरसाने का।

(तिरुमुरै आठ -5 पंक्ति 297-300)

157. நினைப்ப தாக சிந்தை செல்லு
மெல்லை யேய வாக்கினால்
தினைத்த னையு மாவதில்லை
சொல்ல லாவ கேட்பவே
அனைத் துலகு மாய நின்னை
ஐம்பு லன்கள் காண்கிலா
எனைத்தெ னைத்த தெப்பு றத்த
தெந்தை பாத மெய்தவே! 76

157. निनैप्पदाग चिन्तै चॅल्लु
मॅल्लैयेय वाक्किनाल्
तिनैत्तनैयुम् आवदिल्लै
चॉल्ललाव केट्पवे
अनैत्तुलगुमाय निन्नै
ऐम्पुलन्गळ् काण्गिला
ऍनैत्तनैत दॅप्पुऱत्त
दॅन्तै पादम् ऍय्दवे !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 301-304)

158. எய்த லாவ தென்று நின்னை
யெம்பி ரானிவ் வஞ்சனேற்கு
உய்த லாவ துன்க ணன்றி
மற்றொ ருண்மை யின்மையிற்
பைத லாவ தென்று பாது
காத்தி ரங்கு பாவியேற்கு
ஈத லாது நின்க ணொன்றும்
வண்ண மில்லை ஈசனே. 77

158. ऍय्दलाव दॅन्ऱु निन्नै
ऍम्पिरानिव्वञ्जनेर्कु
उय्दलाव दुन्कणन्ऱि
मट्रॉरुण्मै इन्मैयिर्
पैदलावदॅन्ऱु पादु
कात्तिरङ्गु पवियेर्कु
ईदलादु निन्कणॉन्ऱुम्
वण्णमिल्लै ईशने !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 305-308)

157. *हे परमेश्वर ! निश्चय ही अगम हो तुम*
मन के लिए वाक् और इंद्रिय के लिए
ध्यान में डूबकर मन
तुम्हें खोजने के बजाए
भटकता है शब्द के बनाए जाल में
वाक् भी विफल हो जाता है
चतुर्दश भुवन-स्वरूप हो तुम
वर्णनातीत हो वाणी से
इंद्रियों से भी ग्राह्य नहीं हो
हे तात ! नाथ ! कैसे पाऊँ
कैसे देखूँ तुम्हारे चरणकमल
जो सकल विश्व में व्याप्त होकर
उसके पार भी हैं।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 301-304)

158. *हे परमेश्वर ! तात मेरे !*
कब पाऊँगा मैं तुम्हें
अन्य कोई आश्रय नहीं
उद्धार के लिए तुम्हें छोड़कर
इसलिए प्रभो !
दया करो इस पापी पर
जो यहीं भटकते रहने के लिए विवश है
कर्मबंधन में फँसकर
तुम्हारी करुणा से अनुग्रह से ही
हे ईश्वर ! मैं उबर पाऊँगा।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 305-308)

159. ஈச னேநீ அல்ல தில்லை
இங்கும் அங்கு மென்பதும்
பேசி னேனொர் பேத மின்மை
பேதை யேனென் எம்பிரான்
நீச னேனை ஆண்டு கொண்ட
நின்ம லாவொர் நின்னலால்
தேச னேயொர் தேவ ருண்மை
சிந்தி யாது சிந்தையே. 78

159. ईशने नी अल्ल दिल्लै
इङ्गु मङ्गु मंन्पदुम्
पेशिनेनार् पेदमिन्मै
पेदैयेन् ऍनंम्बिरान्
नीचनेनै आण्डु कांण्ड
निन्मला वार् निन्नलाल्
तेसनेयार् तेवरुण्मै
चिन्तियादु चिन्तैये।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 309-312)

160. சிந்தை செய்கை கேள்வி வாக்குச்
சீரில் ஐம்பு லன்களான்
முந்தை யான காலம் நின்னை
எய்தி டாத மூர்க்கனேன்
வெந்தை யாவி முந்தி லேனென்
உள்ளம் வெள்கி விண்டிலேன்
எந்தை யாய நின்னை யின்னம்
எய்த லுற்றி ருப்பனே. 79

160. चिन्नै चंय्गै केळ्वि वाक्कुच्
चीरिल् ऐम्पुलन्गाळाल्
मुन्दैयान काल निन्नै
ऍय्दिडाद मूर्क्कनेन्
वंन्दैया विळुन्दिलेन् ऍन्
उळ्ळम् वंळ्गि विण्डिलेन्
ऍन्तैयाय निन्नै इन्नम्
ऍय्दलुट्रिरुप्पने।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 313-316)

159. *अबोध होते हुए भी*
सदा यही कहता रहता हूँ मैं
हे परमेश्वर ! व्याप्त हो तुम्हीं
यहाँ, वहाँ और सब कहीं
निर्भेद रूप में
मेरे तात ! निर्मल सच्चिदानंद !
इस नीच को अपना कर
अनुगृहीत किया
हे तेजोमय ! मेरा मन
अन्य देवता का ध्यान नहीं कर सकता
तुम्हें छोड़कर।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 309-312)

160. *महामूर्ख ठहरा मैं*
जो अपने चिंतन को कर्म और श्रवण को
पंचेंद्रियों को तुम पर केंद्रित कर
पा न सका तुम्हें
जो आदि मूल हो महाकाल हो
इसकी ग्लानि और लज्जा में
स्वयं को झोंका नहीं आग में
न मेरा हृदय विदीर्ण हुआ
हाय ! इसी आशा के साथ प्राण धरे हूँ
कि कभी तो प्राप्त कर लूँगा तुम्हें
अपने तात को।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 313-316)

161. இருப்பு நெஞ்ச வஞ்ச னேனை
ஆண்டு கொண்ட நின்னதாள்
கருப்பு மட்டு வாய்ம டுத்தெ
னைக்க லந்து போகவும்
நெருப்பு முண்டு யானு முண்டி
ருந்த துண்ட தாயினும்
விருப்பு முண்டு நின்கண் என்கண்
என்ப தென்ன விச்சையே.

161. इरुप्पु नॅञ्ज वञ्जनेनै
आण्डुकॉण्डु निन्नताद्
करुप्पु मट्टु वाय् मडुत्तॅ
नैक्कलन्दु पोगवुम्
नॅरुप्पु मुण्डि यानु मुण्डि
रुन्द दुण्ड दायिनुम्
विरुप्पु मुण्डु निन् कर्णन्नाण्
ऍन्पदॅन्न विच्चैये।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 317-320)

161\. *लौह सम कठिन हृदय था मैं*
और वंचक भी तब भी
हे करुणामय ! बरबस आकर
तुमने अपनाया मुझे अपना बनाया
संयोग की वेला में
प्रदान किये निज चरणकमल
परम आनंद मिला इक्षु-रस जैसा
किंतु जब से वियोग हुआ
सुलभ थी वह्नि और मैं भी था
निज को झोंका नहीं आग में
साँस लेता हूँ खाता-पीता हूँ
और यदि दावा करूँ
कि अब भी तुम पर आसक्त हूँ
तो यह कैसी छलनामय उक्ति होगी
मेरे तात !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 317-320)

ஆனந்த பரவசம் आनन्द परवसम्

162. விச்சுக் கேடு பொய்க்காகா
தென்றிங் கெனைவைத்தாய்
இச்சைக் கானா ரெல்லாரும்
வந்துன் தாள்சேர்ந்தார்
அச்சந் தாலே ஆழ்ந்திடு
கின்றே னாரூரெம்
பிச்சைத் தேவா என்னான்
செய்கேன் பேசாயே! 81

162. विच्चुक्केडु पॉयक्कागादु
ऍन्रिङ्गु ऍनैवैत्ताय्
इच्चैक्कानार् ऍल्लारुम्
वन्दुन् ताळ् चेर्न्दार्
अच्चत्ताले आऴ्न्दिडु
किन्रेन् आरूरॅम्
पिच्चैत्तेवा ऍन्नान्
चॅय्गेन् पेशाये !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 321-324)

आनन्द में सुध-बुध खोना

162. *'माया का प्रपंच मिटा नहीं*
मन से' — यों कहकर
बाध्य कर दिया मुझे
यहीं रहने को
जिन पर तुम्हारी कृपा रही
सारे पा गए सायुज्य
तुम्हारे चरणों में
तिरुवारूर के हे भिक्षाटन देव !
मेरे नाथ ! काँप रहा हूँ मैं भयकातर होकर
बताओ, क्या करूँ ? कैसे उद्धार पाऊँ ?

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 321-324)

163. பேசப் பட்டேன் நின்னடி
யாரில் திருநீறே
பூசப் பட்டேன் பூதல
ராலுன் அடியானென்று
ஏசப் பட்டேன் இனிப்படு
கின்ற தமையாதால்
ஆசைப் பட்டேன் ஆட்பட்
டேனுன் அடியேனே. 82

163. पेशप्पट्टेन् निन्नडि
यारिल् तिरुनीऱे
पूशप्पट्टेन् पूतल
रालुन्नडियानॆन्ऱु
एशप्पट्टेन् इनिप्पडु
किन्ऱ दमैयादाल्
आशैप्पट्टेन् आट्पट्
टेनुन्नडियाने।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 325-328)

164. அடியேன் அல்லேன் கொல்லோதானெனை
ஆட்கொண் டிலைகொல்லோ
அடியா ரானா ரெல்லாரும்
வந்துன் தாள்சேர்ந்தார்
செடிசேர் உடலமிது நீக்கமாட்டேன்
எங்கள் சிவலோகா
கடியேன் உன்னைக் கண்ணாரக்
காணுமாறு காணேனே. 83

164. अडियेनल्लेन् कॊल्लो तानॆनै
आट्कॊण्डिलै कॊल्लो
अडियारानार् ऍल्लारुम्
वन्दुन् ताळ् चेर्न्दार्
चॆडिचेर् उडलम् इदुनीक्कमाट्टेन्
ऍङ्गळ् शिवलोका
कडियेनुन्नैक् कण्णारक्
काणुमारु काणेने।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 329-332)

163. *सज्जनों ने की प्रशंसा*
कि मैं तुम्हारे भक्तगण में एक हूँ
ज्ञानगुरु ने किया भस्मलेपन
कृपा से अनुग्रह से
किंतु बुद्धिहीन जन निंदा करते हैं
कि मैं तुम्हारा दास हूँ
सहन नहीं होती यह दुविधा
अदम्य है कामना तुम्हें पाने की
क्योंकि मैं तुम्हारा ही दास हूँ
बना रहूँगा तुम्हारा दास ही।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 325-328)

164. *हे नाथ ! बोलो –*
क्या मैं तुम्हारा दास नहीं ?
क्या तुमने मुझे अपना बनाया नहीं ?
तुम पर अनुरक्त सकल भक्तगण
पा गए शरण तुम्हारे चरणकमल में
तज नहीं पाता पापमय देह को
हे शिवलोक-नाथ !
बोलो, क्या इस पाषाण-हृदय को
लाभ मिलेगा तुम्हारे दर्शनों का ?

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 329-332)

165. காணுமாறு காணேன் உன்னை
அந்நாள் கண்டேனும்
பாணே பேசி என்தன்னைப்
படுத்ததென்ன பரஞ்சோதி
ஆணே பெண்ணே ஆரமுதே
அத்தாசெத்தே போயினேன்
ஏணா ணில்லா நாயினேன்
என்கெண்டெழுகேன் எம்மானே! 84

165. काणुमाऱु काणेन् उन्नै
अन्नाळ् कण्डेनुम्
पाणे पेशि ऍन्तन्नैप्
पडुत्तदॅन्न परञ्जोति
आणे पॅण्णे आरमुदे
अत्ता चॅत्ते पोयिनेन्
एण् नाणिल्ला नायिनेन् ऍन् कॉण्डु
ऍ़ळ्ुगेन् ऍम्माने !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 333-336)

166. மானேர் நோக்கி யுமையாள்பங்கா
மறையீறறியா மறையோனே
தேனே அமுதே சிந்தைக்கரியாய்
சிறியேன் பிழைபொறுக்குங்
கோனே சிறிதே கொடுமைபறைந்தேன்
சிவமா நகர்குறுகப்
போனா ரடியார் யானும்பொய்யும்
புறமே போந்தோமே! 85

166. मानेर् नोक्कि उमैयाळ् पङ्गा
मऱैयीऱऱिया मऱैयोने
तेने अनुदे चिन्तैक्करियाय्
चिऱियेन् पिऴै पॉऱुक्कुम्
कोने चिऱिदे कॉडुमै पऱैन्देन्
शिवमानगर् कुऱुकप्
पोनारडियार् यानुम् पॉय्युम्
पुऱमे पोन्दोमे !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 337-340)

165. *तरस रहा हूँ नाथ !*
किस विधि दर्शन पाऊँ
उस दिन दर्शन दिए थे तुमने
किंतु व्यर्थ की वितंडा में पड़कर
अपना ही अनिष्ट कर लिया
हे परंज्योति ! अमृतस्वरूप !
अर्धनारीश्वर प्रभु !
मृतप्राय श्वान सा पड़ा हूँ
नीचता पर ग्लानि नहीं है
उबरने की शक्ति भी नहीं
हे करुणामय ! कैसे पाऊँ उद्धार ?

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 333-336)

166. *हे वेदस्वरूप प्रभु ! तुमने दिया है*
निज वामभाग मृगनयनी उमा को
अगम अज्ञेय हो वेद-वेदांत के लिए
मधुमय अमृतनाथ ! अगोचर हो
तुम मन के लिए वाक् के लिए
प्रभु तुम परमोदार हो
क्षमा करो इस जन के सकल अपराध
हे नाथ ! सुना रहा हूँ तनिक
अपनी व्यथा की कथा
कि सकल भक्त पहुँच गए
आनंदमय शिवपुरी में
किंतु इस प्रपंच के संग
मैं बचा हूँ पुर-द्वार के बाहर।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 337-340)

167. புறமே போந்தோம் பொய்யும்
யானும் மெய்யன்பு
பெறவே வல்லேன் அல்லா
வண்ணம் பெற்றேன்யான்
அறவே நின்னைச் சேர்ந்தஅடியார்
மற்றொன் றறியாதார்
சிறவே செய்து வழி வந்துசிவனே
நின்தாள் சேர்ந்தாரே! 86

167. पुऱमे पोन्दोम् पॊय्युम्
यानुम् मॆय्यन्बु
पॆऱवे वल्लेन् अल्ला
वण्णम् पॆट्रेन् यान्
अऱवे निन्नैच् चेर्न्द अडियार्
मट्रॊन्ऱु अऱियादार्
चिऱवे चॆय्दु वऴिवन्दु शिवने
निन् ताळ् चेर्न्दारे !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 341-344)

168. தாராய் உடையாய் அடியேற்
குன்தா ளிணையன்பு
பேரா வுலகம் புக்காரடியார்
புறமே போந்தேன்யான்
ஊரா மிலைக்கக் குருட்டா மிலைத்தாங்
குன்தா ளிணையன்புக்கு
ஆரா அடியேன் அயலே
மயல்கொண் டழுகேனே. 87

168. ताराय् उडैयाय् अडियेर्कु
उन् ताळिणैयन्बु
पेरा उलगम् पुक्कारडियार्
पुऱमे पोन्देन् यान्
ऊरा मिलैक्कक् कुरुट्टामिलैत्तिङ्
गुन् ताळिणैयन्बुक्कु
आरा अडियेन् अयले
मयल् कॊण्डऴुगेने।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 345-348)

167. दैवी संपदा से विहीन मुझे
पराभक्ति करने का ढंग न आया
अनन्य भाव से प्रणत रहे जो
तुम्हारे चरण-कमल पर
श्रेय पूर्ण सन्मार्ग पर अडिग रहे
अन्य पा गए सायुज्य तुम्हारे चरणों में
हे परमेश्वर ! मैं खड़ा रहा बाहर
मायामय प्रपंच के संग।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 341-344)

168. हे नाथ ! मेरे स्वामी ! प्रदान करो
प्रेमाभक्ति निज चरण-कमल पर
परिपक्व भक्तगण पहुँचे
पुण्यमय शिवलोक
जहाँ से लौटना नहीं होगा
किंतु मैं खड़ा हूँ बहिर्भाग में
गाँव की गैया को रंभाते सुन
अंधी गाय भी ज्यों रंभाती है
तुम्हारी भक्ति के लिए तृषित मैं
गुहार मचा रहा हूँ
रो रहा हूँ तुम्हारे प्रेम के लिए
अनभिज्ञ हूँ शिव-सन्मार्ग से।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 345-348)

169. அழுகேன் நின்பால் அன்பாம்
மனமாய் அழல்சேர்ந்த
மெழுகே அன்னார் மின்னார்
பொன்னார் கழல்கண்டு
தொழுதே யுன்னைத் தொடர்ந்தா
ரோடுந் தொடராதே
பழுதே பிறந்தேன் என்கொண்
டுன்னைப் பணிகேனே. 88

169. अऴ्ुगेन् निन्पाल् अन्बाय्
मनमाय् अऴल् चेर्न्द
मॅऴ्ुगे यन्नार् मिन्नार्
पॉन्नार् कऴल्कण्डु
तॉऴ्ुदे युन्नैत् तॉडर्न्दा
रोडुम् तॉडरादे
पऴ्ुदे पिऱन्देनॅन्कॉण्डु
उन्नैप् पणिगेने।

(तिरुमुरै आठ -5 पंक्ति 349-352)

170. பணிவார் பிணிதீர்த் தருளிப்
பழைய அடியார்க்குன்
அணியார் பாதங் கொடுத்தி
அதுவும் அரிதென்றால்
திணியார் மூங்கி லனையேன்
வினையைப் பொடியாக்கித்
தணியார் பாதம் வந்தொல்லை
தாராய் பொய்தீர்மெய்யானே! 89

170. पणिवार् पिणि तीर्त्तरुळिप्
पऴैय अडियार्क्कुन्
अणियार् पादम् कॉडुत्ति
अदुवुम् अरिदॅन्ऱाल्
तिणियार् मूङ्गिलनैयेन्
विनैयैप् पॉडियाक्कित्
तणियार् पादम् वन्दॉल्लै
ताराय् पॉय्तीर् मॅय्याने !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 353-356)

169. *खड़ा रहा मैं रोता कलपता*
उधर तुम्हारे अनन्य उपासक
प्रेम में पिघलते रहे अनल में पड़े मोम-से
लगे रहे कनकाभ चरणयुगल के ध्यान में
और समर्थ हुए वे तुम्हारे अनुसरण में
असमर्थ रहा मैं उनके अनुसरण में
किस अर्थ हुआ मेरा जन्म अहो !
नाथ ! समझ में नहीं आता
किस विधि करूँ उपासना तुम्हारी।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 349-352)

170. *हे परमेश्वर ! प्रदान किये तुमने*
अपने समलंकृत चरण-युगल
उन परिपक्व साधकों को
प्रणत रहे जो चिरकाल से
तुम्हारे पुण्यचरणों पर
यदि ऐसी कृपा दुर्लभ हो मेरे लिए
जो अनम्र अविनीत हूँ बाँस सदृश
प्रार्थना है कि कृपा करके
चूर कर दो मेरे कर्मबंधन
और प्रदान करो शीतल चरण
हे सत्यवस्तु ! तुम्हीं समाप्त कर सकते हो
मिथ्या प्रपंच वासना को।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 353-356)

171. யானே பொய்என் நெஞ்சும்
பொய்என் அன்பும்பொய்
ஆனால் வினையேன் அழுதால்
உன்னைப் பெறலாமே
தேனே அமுதே கரும்பின்
தெளிவே தித்திக்கும்
மானே அருளாய் அடியேன்
உனைவந் துறுமாறே. 90

171. याने पॉय्यॅन् नॆञ्जुम्
पॉय्यॅन् अन्बुम् पॉय्
आनाल् विनैयेन् अऴुदाल्
उन्नैप् पॆऱलामे
तेने अमुदे करुम्बिन्
तॆळिवे तित्तिक्कुम्
माने अरुळायडियेन्
उनै वन्दुरुमाऱे।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 357-360)

171. *झूठा हूँ मैं, प्रवंचक है मेरा हृदय*
यह प्रेम-नाटक भी मिथ्या है
किंतु इतना सत्य है
यदि कर्म का मारा मैं रोदन करूँ
तो तुम्हें पा सकता हूँ सत्य में
हे मेरे मधुमय ! अमृतनाथ !
मधुरिम हो तुम मिश्री-से इक्षुरस से
मधुरिम हो प्रिय तुम सबसे
हे करुणामय ! ऐसा अनुग्रह करो
कि मैं पा सकूँ तुम्हारे चरण-युगल।

(तिरुमुरै आठ -5 पंक्ति 357-360)

ஆனந்தாதீதம் आनंदातीतम्

172. மாறி லாதமாக் கருணை வெள்ளமே
வந்து முந்திநின் மலர்கொள் தாளிணை
வேறி லாப்பதப் பரிசு பெற்றநின்
மெய்ம்மை அன்பருன் மெய்ம்மை மேவினார்
ஈறி லாதநீ எளியை யாகிவந்
தொளிசெய் மானுட மாக நோக்கியுங்
கீறி லாதநெஞ் சுடைய நாயினேன்
கடைய னாயினேன் பட்ட கீழ்மையே! 91

172. मारि़लाद माक्करुणै वॆळ्ळमे
वन्दु मुन्दि निन् पलर् कॊळ् ताळिणै
वेरि़लाप् पदप्परिसु पॆट्रनिन्
मॆय्म्मै अन्बरुन् मॆय्म्मै मेविनार्
ईरि़लाद नी ऍळियै आगि वन्दु
ऑळि चेय् मानुडमाग नोक्कियुम्
कीरि़लाद नॆञ्जुडैय नायिनेन्
कडैयनायिनेन् पट्ट कीऴ्मैये !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 361-364)

आनंदातिरेक

172. *सदा एकरस करुणा के वारिधि !*
धन्य थे वे परिपक्व भक्तगण
अव्याज अनन्य आसक्ति से चरणांबुज पर
सच्ची भक्ति से सायुज्य पा गए
आदि-अंत विहीन प्रभो !
धर कर ज्योतिर्मय मानुष रूप
आ गए तुम मेरे समक्ष
अनुग्रह बरसाया कृपा कटाक्ष से
किंतु श्वान तुल्य अभागा था मैं
नियति का मारा हुआ
अधम का अधम ही रहा।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 361-364)

173. மைமி லங்குநற் கண்ணி பங்கனே
வந்தெ னைப்பணி கொண்ட பின்மழக்
கைமி லங்குபொற் கிண்ண மென்றலால்
அரியை யென்றுனைக் கருது கின்றிலேன்.
மெய்மி லங்குவெண் ணீற்று மேனியாய்
மெய்ம்மை அன்பருன் மெய்ம்மை மேவினார்
பொய்மி லங்கெனைப் புகுத விட்டுநீ
போவ தோசொலாய் பொருத்த மாவதே? 92

173. मैथिलङ्गु नर्कण्णि पङ्गने
वन्दैनैप् पणिकॊण्ड पिन् मऴक्
कैयिलङ्गु पॊऱ्किण्ण मॆन्ऱलाल्
अरियै एन्ऱुनैक् करुदुकिन्ऱिलेन्
मॆय्यिलङ्गु वॆण्णीट्ऱु मेनियाय्
मॆय्म्मै अन्बर् उन् मॆय्म्मै मेविनार्
पॊय्यिल् अङ्गॆनैप् पुगुद विट्टु नी
पोवदो चॊलाय् पॊरुत्तमावदे ?

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 365-368)

174. பொருத்த மின்மையேன் பொய்மை யுண்மையேன்
போத என்றெனைப் புரிந்து நோக்கவும்
வருத்த மின்மையேன் வஞ்ச முண்மையேன்
மாண்டி லேன்மலர்க் கமல பாதனே
அரத்த மேனியாய் அருள்செய் அன்பரும்
நீயும் அங்கெழுந் தருளி இங்கெனை
இருத்தி னாய்முறை யோவெ னெம்பிரான்
வம்ப னேன்வினைக் கிறுதி யில்லையே! 93

174. पॊरुत्तमिन्मैयेन् पॊय्म्मै युण्मैयेन्
पोद ऍन्ऱॆनैप् पुरिन्दु नोक्कवुम्
वरुत्तमिन्मैयेन् वज्जमुण्मैयेन्
माण्डिलेन् मलर्क् कमल पादने
अरत्त मेनियाय् अरुळ् चॆयन्बरुम्
नीयुमङ् गॆऴुन्दरुळि इङ्गॆनै
इरुत्तिनाय् मुऱैयो ऍन्नॆम्पिरान्
वम्बनेन् विनैक्किऱुदि इल्लैये !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 369-372)

173. *अंजन-नयना उमा को*
वाम भाग में धरे मेरे नाथ !
तुमने आकर मुझे बरबस अपनाया
जैसे बालक के हाथ में
दिया हो कनक-चषक
वैसे ही जान न पाया मैं
तुम्हारी महिमा को
उज्ज्वल विभूत से शोभित नाथ !
एकाकार होकर मिल गए तुमसे
पहुँचे हुए भक्तजन
बोलो नाथ ! यों मुझे छोड़कर
मायामय प्रपंच में
क्या तुम रहोगे पराङ्मुख ?
उचित होगा ऐसा कार्य ?

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 365-368)

174. *मिथ्या को सत्य मान रहा मैं*
योग्य नहीं हूँ तुम्हारे अनुग्रह के लिए
बरबस आकर कटाक्ष-वीक्षण किया
और संकेत किया 'आओ वत्स'
उदासीन रहा प्रवंचक मैं
अब तक जीवित कैसे हूँ
हे सुमन सरिस मृदुल-चरण !
अरुणिम देहकांति युत मेरे स्वामी !
देख रहा हूँ तुम्हारे भक्तगण
एकाकार हो गए हैं तुम्हारे संग
अयोग्य ही सही, किंतु
मुझे यों प्रपंच में छोड़ रखना
उचित है क्या ? कर्मबंधन का
अंत नहीं क्या ?

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 369-372)

175. இல்லை நின்கழற் கன்ப தென்கணே
ஏலம் ஏலுநற் குழலி பங்கனே
கல்லை மென்கனி யாக்கும் விச்சைகொண்
டென்னை நின்கழற் கன்ப னாக்கினாய்
எல்லை யில்லைநின் ருணை யெம்பிரான்
ஏது கொண்டுநான் ஏதுசெய்யினும்
வல்லை யேயெனக் கின்னும் உன்கழல்
காட்டி மீட்கவும் மறுவில் வானனே! 94

175. इल्लै निन् कऴर्कन्ब दॅन् कणे
एलम् एलुनऱ् कुऴलि पङ्गने
कल्लै मॅन्कनि याक्कुम् विच्चै कॉण्डु
ऍन्नै निन् कऴर्कन्बनाक्किनाय्
ऍल्लै यिल्लै निन् करुणै ऍम्पिरान्
एदुकॉण्डु नानेदु चॅय्यिनुम्
वल्लैये ऍनक्किन्नुम् उन्कऴल्
काट्टि मीट्कवुम् मरुविन् वानने !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 373-376)

176. வான நாடரும் அறியொ ணாதநீ
மறையி லீறுமுன் தொடரொ ணாதநீ
ஏனை நாடருந் தெரியொ ணாதநீ
என்னை யின்னிதாய் ஆண்டு கொண்டவா
ஊனை நாடகம் ஆடு வித்தவா
உருகி நான்உனைப் பருக வைத்தவா
ஞான நாடகம் ஆடு வித்தவா
நைய வையகத் துடைய விச்சையே! 95

176. वान नाडरुम् अऱियॉणाद नी
मऱैयिलीऱु मुन् तॉडरॉणाद नी
एनै नाडरुम् तॅरियॉणाद नी
ऍन्नै इन्निदाय् आण्डुकॉण्डवा
ऊनै नाटकम् आडुवित्तवा
उरुगि नानुनैप् परुग वैत्तवा
ञान नाटकम् आडुवित्तवा
नैय वैयगत्तुडैय विच्चैये !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 377-380)

175. सुगंध कुंतला उमा के
दक्षिण भाग में विलसे प्रभु !
आसक्त नहीं हुआ तुम्हारे चरणों पर
फिर भी करुणामय नाथ
तुमने पर-ज्ञान के बल पर
पाषाण हृदय को बनाया पक्व फल
असीम है अपरंपार है
तुम्हारी करुणा हे परमेश्वर !
जिस किसी भी साधन से
मैंने जो भी किया था
आराधना मान कर स्वीकार किया तुमने
ओ मेरे नाथ ! चिदाकाश रूप !
दर्शन दो चरणकमल का
और उद्धार करो सायुज्य देकर।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 373-376)

176. अज्ञेय हो प्रभु ! अमरलोक के लिए भी
अगम अगोचर हो वेद-वेदांत के लिए
अविदित ही रहे सकल जीव के लिए
ऐसे महिमामय तुमने
अपनाया – अपना बना लिया मुझे
कि मैं जान लूँ तुम्हें यथातथ्य रूप में
परिपक्व बनाया लगा दिया अपनी सेवा में
नचा रहे हो तुम मैं खेल रहा हूँ नाटक
ऐसा अनुग्रह कि प्रेम में पग कर
पान करूँ मैं प्रेम-रस का
हे नटराजराज ! ऐसा नाटक हुआ
कि मेरा अपर-ज्ञान बदल गया
पर-ज्ञान में।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 377-380)

177. விச்ச தின்றியே விளைவு செய்குவாய்
விண்ணும் மண்ணகம் முழுதும் யாவையும்
வைச்சு வாங்குவாய் வஞ்ச கப்பெரும்
புலைய னேனையுன் கோயில் வாயிலிற்
பிச்ச னாக்கினாய் பெரிய அன்பருக்
குரிய னாக்கினாய் தாம்வ ளர்த்ததோர்
நச்சு மாமர மாயி னுங்கொலார்
நானும் அங்ஙனே உடைய நாதனே! 96

177. विच्चदिन्रिये विळैवु चॅय्गुवाय्
विण्णु मण्णगम् मुऴुदुम् यावैयुम्
वैच्चु वाङ्गुवाय् वञ्चकप् पॅरुम्
पुलैयनेनै उन् कोयिल् वायिलिर्
पिच्चनाक्किनाय् पॅरिय अन्बरुक्
कुरियनाक्किनाय् ताम् वळर्त्तदोर्
नच्चु मामरम् आयिनुम् कॉलार्
नानुम् अङ्ङने उडैय नादने !

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 381-384)

178. உடைய நாதனே போற்றி நின்னலால்
பற்று மற்றெனக் காவ தொன்றினி
உடைய னோபணி போற்றி உம்பரார்
தம்ப ராபரா போற்றி யாரினுங்
கடைய னாயினேன் போற்றி என்பெருங்
கருணை யாளனே போற்றி யென்னைநின்
அடிய னாக்கினாய் போற்றி ஆதியும்
அந்த மாயினாய் போற்றி யப்பனே! 97

178. उडैय नादने पोट्रि निन्नलाल्
पट्रु मट्रॅनक्कावदॉन्रिनि
उडैयनो पणि पोट्रि उम्बरार्
तम् परापरा पोट्रि यारिनुम्
कडैयनायिनेन् पोट्रि ऍन्पॅरुम्
करुणैयाळने पोट्रि ऍन्नै निन्
अडियनाक्किनाय् पोट्रि आदियुम्
अन्तम् आयिनाय् पोट्रि अप्पने !

(तिरुमुऱै आठ -5 पंक्ति 385-388)

177. *बीज बिना ही सृजन करते हो*
धरती और अंबर को, सकल भुवन को
सृजन ही नहीं पालन और संहार करते हो
तुम पर आसक्त हुए बिना
वंचक मैं आसक्त हुआ लौकिक सुख पर
फिर भी इस नीच को अधम को
अपना बावला बनाया तुमने
रखा अपने मंदिर के द्वार पर
लगाया भक्तजन की सेवा में
भले ही अपना रोपा पौधा
विषवृक्ष के रूप में बढ़ जाए
पेड़ लगाने वाले उसे काटते नहीं
वैसे ही ओ मेरे नाथ !
तुम्हारा बनाया हुआ हूँ
तिरस्कार न करो मेरा।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 381-384)

178. *नमन करता हूँ मेरे नाथ !*
जय हो ! तुम्हारी सदा विजय हो !
बोलो तुम बिन कोई आश्रय है मेरा ?
दास हूँ मैं लगाओ अपनी सेवा में
हे देवाधिदेव प्रभु ! नमन करता हूँ
सबसे निम्न हूँ मैं, नमन है
करुणा के वरुणालय ! नमन है
दास बनाया अपनाया मुझे करुणा से
मेरे लिए आदि भी तुम हो अंत भी तुम हो
तुम्हारे चरणों पर बारंबार नमन है।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 385-388)

179. அப்ப னேயெனக் கமுத னேஆ
னந்த னேஅகம் நெகஅள் ளூறுதேன்
ஒப்ப னேஉனக் குரிய அன்பரில்
உரிய னாயுனைப் பருக நின்றதோர்
துப்ப னேசுடர் முடிய னேதுணை
யாள னேதொழும் பாள ரெய்ப்பினில்
வைப்ப னேயெனை வைப்ப தோசொலாய்
நைய வையகத் தெங்கள் மன்னனே! 98

179. अप्पने ऍनक्कमुदने आ
नन्दने अगम् नॆग अळ्ळूरु तेन्
ऒप्पने उनक्कुरिय अन्परिल्
उरियनायुनैप् परुग निन्ऱदोर्
तुप्पने चुडर्मुडियने तुणै
याळने तॊळ्ुम्पाळर् ऍय्प्पिनिल्
वैप्पने ऍनै वैप्पदो चॊलाय्
नैय वैयगत्तॆङ्गळ् मन्नने !

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 389-392)

180. மன்ன எம்பிரான் வருக என்னெனை
மாலும் நான்முகத் தொருவன் யாரினும்
முன்ன எம்பிரான் வருக என்னெனை
முழுதும் யாவையும் இறுதி யுற்றநாள்
பின்ன எம்பிரான் வருக என்னெனைப்
பெய்க ழற்கண்அன் பாயென் நாவினாற்
பன்ன எம्பிரான் வருக என்னெனைப்
பாவ நாசநின் சீர்கள் பாடவே. 99

180. मन्न वॆम्पिरान् वरुग ऍन्नॆनै
मालु नान्मुगत्तॊरुवन् यारिनुम्
मुन्न वॆम्पिरान् वरुग ऍन्नॆनै
मुळ्ुदुम् यावैयुम् इऱुदि युट्र नाळ्
पिन्न ऍम्पिरान् वरुग ऍन्नॆनैप्
पॆय् कळ्ऱ्कण्न् पायॆनाविनाल्
पन्न वॆम्पिरान् वरुग ऍन्नॆनैप्
पावनाश निन् चीर्गळ् पाडवे।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 393-396)

179. *मेरे तात ! अमृतनाथ ! आनंदकंद !*
मधुर तुम मधुरिम लगते हो ह्रदय में
रिस रहा मधु जिह्वामूल में
अन्य तुम्हारे प्रिय भक्तों के समान
पहुँचा हूँ मैं भी प्रेमरस के पान हेतु
आनंदकंद तुम्हारा अथन करके
आनंदसागर में डूबने हेतु
ज्योतिर्मय मुकुट-भूषित
भक्तजनों के आर्तिहर ! अविरत साथी !
बोलो, मेरे नाथ ! मायामय प्रपंच में
दुःख भोगने के लिए मुझे छोड़ना
उचित है ?

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 389-392)

180. *सकल चराचर के शाश्वत प्रभु !*
मेरे नाथ ! बुला लो मुझे अपने पास
विष्णु और चतुर्मुख के लिए
आदिनाथ ! अपना लो इस दास को
प्रलयकाल में सबका विलय होगा
तुममें, तब हे नाथ ! बुंला लो इस दास को
प्रणत जनों के दुःख-संताप हर
पापनाशक प्रभु ! बुला लो मुझे अपने पास
और मैं गाता रहूँ तुम्हारा प्रशस्ति गान।

(तिरुमुऱै आठ - 5 पंक्ति 393-396)

181. பாட வேண்டும்நான் போற்றி நின்னையே
பாடி நைந்துநைந் துருகி நெக்குநெக்(கு)
ஆட வேண்டும்நான் போற்றி அம்பலத்
தாடு நின்கழற் போது நாயினேன்
கூடவேண்டும்நான் போற்றி யிப்புழுக்
கூடு நீக்கெனைப் போற்றி பொய்யெலாம்
வீட வேண்டும்நான் போற்றி வீடுதந்
தருளு போற்றிநின் மெய்யர் மெய்யனே!

181. *पाड वेण्डुम् नान् पोट्रि निन्नैये*
पाडि नैन्दु नैन्दुरुगि नेक्कु नेक्कु
आड वेण्डुम् नान् पोट्रि अम्बलत्तु
आडु निन् कळऱ् पोदु नायिनेन्
कूडवेण्डुम् नान् पोट्रि इप्पुऴुक्
कूडु नीक्कनैप् पोट्रि पॉय्यॅलाम्
वीड वेण्डुम् नान् पोट्रि वीडु तन्
दरुळु पोट्रि निन् मॅय्यर् मॅय्यने !

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 397-400)

181. *सच्चे साधकों के सतत साथी !*
गाता रहूँ मैं केवल तुम्हारा प्रशस्ति गान
गाते गाते मन मेरा पिघल जाए
पिघल कर बह जाए और मैं
नृत्य करता रहूँ आनंद से
चिदाकाश में ऊर्ध्व तांडव करते
तुम्हारे साथ मिल जाऊँ एकाकार होकर
छूट जाए काया का पिंजर अभी यहीं
नमन करता हूँ प्रभु !
वर्षित कर दो अनुग्रह मुझ पर
अपना लो सायुज्य देकर।

(तिरुमुरै आठ - 5 पंक्ति 397-400)



स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.
Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

My frame before Thy fragrant foot is quivering like an opening bud ;—
My hands above my head I raise ;—while tears pour down, my melting soul.
The false renouncing, praises Thee ;—with songs of triumph praises Thee,—
Nor suffer I adoring hand to rest ;—O Master, look on me !

I ask not bliss of Indra, Māl, or Ayan ;—though my house and home
Be ruin'd, friendship form I none save with Thine own ;—though hell's abyss
I enter, I unmurmuring go, if grace divine appoint my lot ;—
O King ! no other god save Thee I ponder, our Transcendent Good !

Transcendent Good ! Owner and Sire ! Thy servant melting thinks on Thee ;
In raptures meet I utter forth my fever'd soul's ecstatic joys,
Still wandering from town to town ; while men cry out, 'A madman this ;'
And each one speaks, with mind distraught, discordant words. O when comes death ?

Erewhile was Dakshan's offering death. They ate the flesh, and poison feared !
'Our Father,' cried our friends and worshipt Him with suppliant voice.
And yet 'Three are the gods that rule in heaven and earth,' they vainly deem.
What sin is this your haughty minds breathe out, ye erring penitents ?

No penance have I done, nor bowed, with hand unstinting scatt' ring flowers ;
Born all in vain , —to 'cruel deeds' a thrall, —the bliss of Çivan's heav'n,
Amongst Thy loving ones, I've fail'd to gain ; see, and in grace bestow
On me, Thy slave, consummate life beneath Thy feet, Supernal Lord !

They roam'd and cull'd choice varied flowers to lay in worship at Thy feet,
They deemed that all they sought they should obtain ; and from these loving hearts
In mystic guile Thou hidest still, abiding not ! In grace bestow,
Love to Thy glorious foot, that I may ceaseless praise with perfect song !

Erewhile the Maker's maker bowed, brought blooming flowers, and everywhere
Sought for Th' All-seeing One, nor found. Our mighty One, Who dwells beyond,
Here in the wilds with demons danced, a homeless, friendless one ; and there
In tiger-skin arrayed Himslef, as madman wand' ring to and fro !

The wand' ring wind, the fire, the flood, the earth, the heaven, a time shall be,
When these adown the gulf shall go ! After that hour unknown has come
The deeds—mighty the soul to bind — Thy slave in wand' ring days has done,—
Let the time come for these to pass ! Guard us from these, our Guardian then !

Lines : 1 - 32

6

நீத்தல் விண்ணப்பம்

नीत्तल् विण्णप्पम्

பிரபஞ்ச வைராக்கியம்

पिरपञ्च वैराक्कियम्

182. கடையவ னேனைக் கருணையி
னாற்கலந் தாண்டுகொண்ட
விடையவ னேவிட் டிடுதிகண்
டாய்விறல் வேங்கையின்தோல்
உடையவ னேமன்னும் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
சடையவ னேதளர்ந் தேன்எம்
பிரான்என்னைத் தாங்கிக் கொள்ளே! 1

182. कडैयवनेनैक् करुणैयि
नाऱ्कलन्दाण्डु कॉण्ड
विडैयवने विट्टिडुदि कण्
डायविऱल् वेङ्गैयिन् तोल्
उडैयवने मन्नुम् उत्तर
कोश मङ्गैक्करशे
चडैयवने तळर्न्देन् ऍम्पिरान्
ऍन्नैत् ताङ्गिक् कॉळ्ळे !

(तिरुमुरै आठ -6 पंक्ति 1-4)

6

निर्वेद निवेदन

प्रपंच वैराग्य

182. *हे वृषवाहन प्रभु ! तुमने*
करुणा से अपनाया दास बनाया
इस अधम नीच को
छोड़ो नहीं, रक्षा करो
व्याघ्र-चर्म-धर जटाधर शंकर !
उत्तरकोशमंगै धाम के अधीश
थक गया हूँ लोक जीवन से
फिर इसमें नहीं फँसूं
सहारा देकर रक्षा करो।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 1-4)

183. கொள்ளேர் பிளவக லாத்தடங்
கொங்கையர் கொவ்வைச்செவ்வாய்
விள்ளேன் எனினும் விடுதிகண்
டாய்நின் விழுத்தொழும்பின்
உள்ளேன் புறமல்லேன் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
கள்ளேன் ஒழியவும் கண்டுகொண்
டாண்டதெக் காரணமே? 2

183. कॉळ्ळेर् पिळवकलात् तडम्
कॉङ्गैयर् कॉव्वैच् चॅव्वाय्
विळ्ळेननिनुम् विडुदि कण्
डायनिन् विऴुत्तॉऴुम्पिन्
उळ्ळेन् पुऱमल्लेन् उत्तर
कोश मङ्गैक्करशे
कळ्ळेन् ऑऴियवुम् कण्डुकॉण्डु
आण्डदॅक्कारणमे ?

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 5-8)

184. காருறு கண்ணியர் ஐம்புலன்
ஆற்றங் கரைமரமாய்
வேருறு வேனை விடுதிகண்
டாய்விளங் குந்திருவா
ரூருறை வாய்மன்னும் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
வாருறு பூண்முலை யாள்பங்க
என்னை வளர்ப்பவனே! 3

184. कारुऱु कण्णियर् ऐम्पुलन्
आट्रङ्करै मरमाय्
वेरुऱुवेनै विडुदि कण्डाय्
विळङ्गु तिरुवारूर्
उऱैवाय् मन्नुम् उत्तर
कोशमङ्गैक्करशे
वारुऱु पूण्मुलैयाळ् पङ्ग
ऍन्नै वळर्प्पवने !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 9-12)

183. *लिप्त रहा मैं कामवासना से*
क्षण भर विलग रहा नहीं
कुंभस्तनी कामिनी के अधरामृत से
फिर भी मेरे नाथ ! मेरा परित्याग न करो
इसलिए कि मैं तुम्हारी
भक्तमंडली में हूँ, उससे बाहर नहीं
उत्तरकोशमंगै धाम के नाथ !
चोर मैं तुमसे बिलग रहा
फिर भी तुमने बरबस अपनाया था
अब मुझे छोड़ दोगे तो
कहीं मेरी गति नहीं।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 5-8)

184. *सुनयना सुंदरियों के संग*
कामकेलि में पंचेंद्रिय थक गए
जड़मूल से नष्ट हो गया मैं
जैसे नदी किनारे खड़े तरु की जड़ें
जलधार से कटती जाती हैं धीरे धीरे
हे नाथ ! मुझे सहारा दो
बचाओ गिरने से
ओ जाज्वल्यमान तिरुवारूर के अधीश
सुंदर उत्तरकोशमंगै के प्रभु !
तुमने वामभाग में स्थान दिया है
सुभगस्तनी उमा को
छोड़ो नहीं मुझे
मेरे रक्षक पालनकर्ता तुम्हीं हो।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 9-12)

185. வளர்கின்ற நின்கரு ணைக்கையில்
வாங்கவும் நீங்கிமிப்பால்
மிளிர்கின்ற என்னை விடுதிகண்
டாய்வெண் மதிக்கொழுந்தொன்று
ஒளிர்கின்ற நீள்முடி உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
தெளிகின்ற பொன்னுமின் னும்அன்ன
தோற்றச் செழுஞ்சுடரே! 4

185. वळर्ऱिन्ऱ् निन् करुणैक्कैयिल्
वाङ्गवु नीङ्गियिप्पान्
मिलिर्किन्ऱ् ऍन्नै विडुदि कण्
डाय्वॅण्मदिक् कॉऴ़ुन्दॉन्ऱु
ऑलिर्किन्ऱ् नीळ्मुडि उत्तर
कोश मङ्गैक्करशे
तॅलिकिन्ऱ् पॉन्नु मिन्नुम्अन्न
तोट्रच् चॅऴ़ुञ्चुडरे !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 13-16)

186. செழிகின்ற தீப்புகு விட்டிலிற்
சின்மொழி யாரிற்பன்னாள்
விழுகின்ற என்னை விடுதிகண்
டாய்வெறி வாயறுகால்
உழுகின்ற பூமுடி உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
வழிநின்று நின்னரு ளாரமு
தூட்ட மறுத்தனனே! 5

186. चॅऴ़िकिन्ऱ् तीप्पुगु विट्टिलिर्
चिन्मॉऴ़ियारिल् पन्नाळ्
विऴ़ुकिन्ऱ् ऍन्नै विडुदि कण्
डाय्वॅऱिवाय् अऱुकाल्
उऴ़ुकिन्ऱ् पूमुडि उत्तर
कोश मङ्गैक्करशे
वऴ़ि निन्ऱु निन्नरुळारमु
दूट्ट मऱुत्तनने !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 17-20)

185. *हे नाथ ! वर्धित होती रहती*
करुणा से तुम्हारी दिव्य भुजाओं ने
जो आगे बढ़कर सहारा दिया मुझे
और फिर हट गईं मुझे तरसाती हुई
हे तात ! मुझे छोड़ो नहीं
ओ उत्तरकोशमंगै धाम के अधीश
जिन के मुकुट पर विलस रहा
धवल चंद्र
कनक और विद्युत् सम जाज्वल्यमान
अग्निज्वाल ! परित्याग न करो मेरा।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 13-16)

186. *मधुबैनी ललनाओं के मोह में*
पड़ा हूँ मैं चिरकाल से
उठ रही लपट में बार बार
गिरते कीट-पतंग ज्यों,
हे नाथ ! मुझे त्याग न दो
उत्तरकोशमंगै धाम के अधीश
जिनके मुकुट पर विलसित है
मधुपगुंजित सुंगधित सुमन
अपना बनाकर मुझे
खिलाने आए मधुरिम अमृत
मूढ़ मैंने कर दिया निरस्त।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 17-20)

187. மறுத்தனன் யானுன் அருளறி
யாமையில் என்மணியே
வெறுத்தெனை நீவிட் டிடுதிகண்
டாய்வினை யின்தொகுதி
ஒறுத்தெனை ஆண்டுகொள் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
பொறுப்ப ரன்றேபெரி யோர்சிறு
நாய்கள்தம் பொய்யினையே? 6

187. मरुत्तनन् नानुन्नरुळरि
यामैयिल् ऍन् मणिये
वॆरुत्तनै नी विट्टिडुदि कण्
डायविनैयिन् तॊगुदि
ऒरुत्तनै आण्डुकॊळ् उत्तर
कोश मङ् गैक्करशे
पॊरुप्परन्रे पॆरियोर्चिरु
नायगळ् तम् पॊय्यिनैये ?

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 21-24)

188. பொய்யவ னேனைப் பொருளென
ஆண்டொன்று பொத்திக்கொண்ட
மெய்யவ னேவிட் டிடுதிகண்
டாய்விட முண்மிடற்று
மையவ னேமன்னும் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
செய்யவ னேசிவ னேசிறி
யேன்பவந் தீர்ப்பவனே! 7

188. पॊय्यवनेनैप् पॊरुळॆन
आण्डॊन्रु पॊत्तिक्कॊण्ड
मॆय्यवने विट्टिडुदि कण्
डायविडमुण् मिडट्रु
मैयवने मन्नुम् उत्तर
कोश मङ्गैक्करशे
चॆय्यवने शिवनेचिरि
येन् पवम् तीर्प्पवने !

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 25-28)

187. *निरस्त किया मैंने अज्ञानवश*
तुम्हारी अपार करुणा को, अनुग्रह को
जो मेरे शिवमणि ! मेरे तात !
तुमने भी अनिच्छुक होकर
छोड़ दिया मुझे
हे उत्तरकोशमंगै के अधीश !
करुणामय प्रभु ! चूर करके मेरे कर्मबंधन
स्वीकारो मुझे, अपना बना लो
क्या महान् लोग क्षमा नहीं करते
लघु जन के अपराधों को।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 21-24)

188. *हे नित्य-सत्य परमेश्वर !*
मिथ्या को सत्य मानकर
भ्रम में पड़े इस लघु जन को
अपना मानकर तुमने अपनाया
तनिक भी ध्यान न दिया
मेरी निष्ठाहीनता पर
हे उत्तरकोशमंगै के अधीश !
प्रभु ! आज मेरा परित्याग न करो
जगत के परित्राण के हित
विषपायी नीलकंठ !
अरुणाभ देहकांति के धनी शिवराज !
मेरे भव-दुःख को ध्वस्त करने वाले
प्रभो ! छोड़ो नहीं मुझे।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 25-28)

189. தீர்க்கின்ற வாறென் பிழையைநின்
சீரருள் என்கொலென்று
வேர்க்கின்ற என்னை விடுதிகண்
டாய்விர வார்வெருவ
ஆர்க்கின்ற தார்விடை உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
ஈர்க்கின்ற அஞ்சொடச் சம்வினை
யேனை இருதலையே! 8

189. तीर्क्किन्ऱवाऱॆन् पिऴैयै निन्
चीररुळ् ऍन्कॊल् ऍन्ऱु
वेर्क्किन्ऱ ऍन्नै विडुदिकण्
डाय्विरवार् वॆरुव
वार्क्किन्ऱ तार्विडै उत्तर
कोशमङ्गैक्करशे
ईर्क्किन्ऱ अञ्जॊडच्चम्विनै
येनै इरुतलैये !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 29-32)

190. இருதலைக் கொள்ளியின் உள்ளெறும்
பொத்து நினைப்பிரிந்த
விரிதலை யேனை விடுதிகண்
டாய்வியன் மூவுலகுக்கு
ஒருதலை வாமன்னும் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
பொருதலை மூவிலை வேல்வலன்
ஏந்திப் பொலிபவனே! 9

190. इरुतलैक् कॊळ्ळियिन् उळ् ऍरुम्
पॊत्तु निनैप् पिरिन्द
विरितलैयेनै विडुदि कण्
डाय्वियन् मूवुलगुक्कु
ऑरुतलैवा मन्नु उत्तर
· कोशमङ्गैक्करशे
पॊरुतलै मूविलै वेल्वलन्
एन्दिप् पॊलिपवने !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 33-36)

189. *हे मेरे नाथ ! मेरे गुरुतर अपराधों को*
किस विधि तुम क्षमा करोगे करुणा से
अथवा उद्धार किये बिना छोड़ दोगे मुझे ?
इसी चिंता-द्विविधा में भयकातर
मेरा शरीर प्रकंपित है, छूट रही स्वेद-धार
मुझे इस तरह छोड़ना नहीं
ओ उत्तरकोशमंगै के अधीश !
तुम्हारे वृष के गले पर बंधी
घुंघरुओं की माला का निनाद ही
पर्याप्त है शत्रुओं को भयभीत करने के लिए
मेरे पंचेंद्रिय शत्रु खींच रहे हैं
मुझे लौकिक सुखों की ओर
उधर अपराधबोध खींच रहा दूसरी ओर
द्विविधा में हूँ, रक्षा करो हे नाथ ?

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 29-32)

190. *त्रैलोक्य के एक नायक !*
उत्तरकोशमंगै धाम के अधीश !
हे नित्य सत्य परमेश्वर !
विलस रहा है दक्षिण हस्त में त्रिशूल !
प्रभो ! मेरा परित्याग न करो
जिसने कर दी थी तुम्हारी उपेक्षा
अब तुमसे बिछुड़कर
मेरी वही गति हो रही है
जैसे कोई चींटा ईंधन की लकड़ी पर फँसा हो
जिसके दोनों ओर
जल रही हो आग।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 33-36)

191. பொலிகின்ற நின்தாள் புகுதப்பெற்
றாக்கையைப் போக்கப்பெற்று
மெலிகின்ற என்னை விடுதிகண்
டாய்அளி தேர்விளரி
ஒலிநின்ற பூம்பொழில் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
வலிநின்ற திண்சிலை யாலெரித்
தாய்புரம் மாறுபட்டே! 10

191. पॉलिकिन्ऱ् निन्ताळ् पुगुदप् पॅट्ऱु
आक्कैय् पोक्कप् पॅट्ऱु
मॅलिकिन्ऱ् ऍन्नै विडुदि कण्
डाय्अळि तेर् विळरि
ऑलिकिन्ऱ् पू पॉऴिल् उत्तर
कोशमङ्गैक्करशे
वलि निन्ऱ् तिण्शिलैयाल् ऍरित्
तायपुरमारुपट्टे !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 37-40)

192. மாறுபட் டஞ்சென்னை வஞ்சிப்ப
யானுன் மணிமலர்த்தாள்
வேறுபட் டேனை விடுதிகண்
டாய்வினை யேன்மனத்தே
ஊறுமட் டேமன்னும் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
நீறுபட் டேயொளி காட்டும்பொன்
மேனி நெடுந்தகையே! 11

192. मारुपट्टञ्चॅन्नै वञ्जिप्प
यानुन् मणि मलर्त्ताळ्
वेरुपट्टेनै विडुदि कण्
डाय्विनैयेन् मनत्ते
ऊरु मट्टे मन्नुम् उत्तर
कोश मङ्गैक्करशे
नीरु पट्टे ऑळिकाट्टुम्पॉन्
मेनि नॅडुन्तगैये !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 41-44)

191. *अंकित हुए हृदय देश में*
तुम्हारे शोभित चरणकमल
देहबोध खोकर
शिवानंद के अनुभव की घड़ी आई
किंतु इस अभागे ने समझी नहीं महिमा
हृदय मुरझा उठा और
तुमने छोड़ दिया मुझे
हे तात ! परित्याग न करो मेरा
ओ उत्तरकोशमंगै के अधीश
जिसके उपवन गुंजायमान है
विळरिराग में मधुपों के झंकार से
हे परात्पर ! पुराकाल में तुमने
बलिष्ठ मेरु को धनुष बनाकर
ध्वस्त किया त्रिपुर को।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 37-40)

192. *मेरे हृदय में मधुरिम लगते मधुमय !*
उत्तरकोशमंगै धाम के अधीश !
कनकाभ देहकांति के धनी
भस्म-विलेपित करुणामय !
कर्मबंधन से छूटा नहीं मैं
प्रभो ! मेरा परित्याग न करना
ये पंचेन्द्रिय भ्रमित करते हैं मन को
बड़े ठग हैं ये ! दिखाते नहीं सत्यवस्तु को
विलग करते हैं मुझे तुम्हारे चरणकमल से।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 41-44)

193. நெடுந்தகை நீயென்னை ஆட்கொள்ள
யான்ஐம் புலன்கள்கொண்டு
விடுந்தகை யேனை விடுதிகண்
டாய்விர வார்வெருவ
அடுந்தகை வேல்வல்ல உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
கடுந்தகை யேன்உண்ணுந் தெண்ணீர்
அமுதப் பெருங்கடலே! 12

193. नॆडुन्दगै नीयॆन्नै आट्कॊळ्ळ
यान्ऐम्पुलन्गळ् कॊण्डु
विडुन्तगैयेनै विडुदि कण्
डाय्वरवार् वॆरुव
अडुन्तगै वेल् वल्ल उत्तर
कोशमङ्गैक्करशे
कडुन्तगैयेन् उण्णुम् तॆण्णीर्
अमुदप्पॆरुङ् कडले !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 45-48)

194. கடலினுள் நாய்நக்கி யாங்குன்
கருணைக் கடலினுள்ளம்
விடலரியேனை விடுதிகண்
டாய்விட லில்லடியார்
உடலில மேமன்னும் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
மடலின்மட் டேமணி யேஅமு
தேயென் மதுவெள்ளமே! 13

194. कडलिनुळ् नाय्नक्कि आङ्गुन्
करुणैक्कडलिन् उळ्ळम्
विडलरियेनै विडुदि कण्
डाय्विडल् इल् अडियार्
उडल् इलमे मन्नुम् उत्तर
कोशमङ्गैक्करशे
मडलिन् मट्टे मणिये अमुदे
ऎन् मदु वॆळ्ळमे !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 49-52)

193. *हे उत्तरकोशमंगै के अधीश !*
करतल पर शोभा पाता है त्रिशूल
शत्रुओं को भयभीत करता है जो,
करुणा के अमृत के सागर हो
जिसे पान कर जी रहा है यह अभागा
तुमने मुझे अपनाया, दास बनाया
अपरंपार है तुम्हारी करुणा
किंतु पंचेन्द्रियों से लिप्त होकर
कृतघ्न मैं तुम्हें बिसर गया था
प्रभो ! दुहाई है
परित्याग न कर देना मेरा।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 45-48)

194. *रमते हो आनंद से*
ऐसे भक्त जनों के हृदय में
जो आसक्त रहते हैं तुम पर
पुष्प में रिसते हो मधुसम
हे तेजोमयानंद प्रभु ! अमृतनाथ
करुणामृत के महासागर हो तुम
किंतु मेरी वृत्ति श्वान तुल्य है
जो चाटकर पान करता है
तब भी उपयोग नहीं कर पा रहा मैं
अपरंपार तुम्हारी करुणा का
प्रभु ! परित्याग न कर देना मेरा।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 49-52)

195. வெள்ளத்துள் நாவற் றியாங்குன்
அருள்பெற்றுத் துன்பத்தின்றும்
விள்ளக்கி லேனை விடுதிகண்
டாய்விரும் பும்அடியார்
உள்ளத்துள் ளாய்மன்னும் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
கள்ளத்து ளேற்கரு ளாய்களி
யாத களியெனக்கே! 14

195. वॆळ्ळत्तुळ् नावट्रि आङ्गुन्
अरुळ् पॆट्रुत् तुन्बत्तिन्ऱुम्
विळ्ळक्किलेनै विडुदि कण्
डायविरुम्बुम् अडियार्
उळ्ळत्तुळ्ळाय् मन्नुम् उत्तर
कोशमङ्गैक्करशे
कळ्ळत्तुळेर्कु अरुळायकळि
याद कळि ऍनक्के !

(तिरुमुरै आठ -6 पंक्ति 53-56)

196. களிவந்த சிந்தையொ டுன்கழல்
கண்டுங் கலந்தருள
வெளிவந்தி லேனை விடுதிகண்
டாய்மெய்ச் சுடருக்கெல்லாம்
ஒளிவந்த பூங்கழல் உத்ர
கோசமங் கைக்கரசே
எளிவந்த எந்தைபி ரான்என்னை
ஆளுடை என்னப்பனே! 15

196. कळिवन्द चिन्तैयॊडुन् कऴल्
कण्डुम् कलन्दरुळ
वॆळिवन्दिलेनै विडुदि कण्
डायमॆय्च्चुडरुक्कु ऍल्लाम्
ऑळिवन्द पूङ्कऴल् उत्तर
कोशमङ्गैक्करशे
ऍळिवन्द ऍन्तै पिरानॆन्नै
आळुडै ऍन्नप्पने !

(तिरुमुरै आठ -6 पंक्ति 57-60)

195. *प्रभो ! परित्याग न कर देना मेरा*
सच ही में मैं अभागा हूँ
जो जल-प्रवाह के मध्य रहते हुए भी
तृषित हूँ, सूख गई है जिह्वा मेरी
अनुग्रह का महासागर सामने है
किंतु छूट नहीं पाता दुःख-सागर से
हे उत्तरकोशमंगै के अधीश
वास करते हो तुम सदा
आसक्त भक्तजन-हृदय में
इस प्रवंचक को प्रदान करो अनुग्रह
ऐसा आनंद दो मुझे
जिसे चखा न हो कभी भी।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 53-56)

196. *विलोके थे मैंने*
आनंदपूरित हृदय के साथ तुम्हारे चरण
आए थे तुम मुझे उबारने के हित
किंतु मैं खोल तजकर आया न बाहर
तुममें एकाकार होकर मिलने को
ओ ज्योतियों में ज्योति ! परंज्योति !
उत्तरकोशमंगै के अधीश !
जिनके चरण सुमन सरिस हैं
मेरे सहज सुलभ तात !
रक्षक प्रभु ! परित्याग न करना मेरा।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 57-60)

197. என்னைஅப் பாஅஞ்சல் என்பவர்
இன்றிநின் றெய்த்தலைந்தேன்
மின்னையொப் பாய்விட் டிடுதிகண்
டாயுவ மிக்கின்மெய்யே
உன்னையொப் பாய்மன்னும் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
அன்னையொப் பாய்எனக் கத்தனொப்
பாய்என் அரும்பொருளே ! 16

197. ऍन्नैयप्पा अञ्जल् ऍन्पवर्
इऩ्ऱिनिन्ऱु ऍय्त्तलैन्देन्
मिन्नैयॉप्पाय् विट्टिडुदि कण्
डाय्उवमिक्किन् मॅय्ये
उन्नैयॉप्पाय् मन्नुम् उत्तर्
कोश मङ्गैक्करशे
अन्नैयॉप्पाय् ऍनक्कु अत्तनॉप्
पाय्ऍन्नरुम् पॉरुळे !

(तिरुमुऱै आठ -6 पंक्ति 61-64)

198. பொருளே தமியேன் புகலிட
மேநின் புகழிகழ்வார்
வெருளே யெனைவிட் டிடுதிகண்
டாய்மெய்ம்மை யார்விழுங்கும்
அருளே அணிபொழில் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
இருளே வெளியே இகபர
மாகி இருந்தவனே ! 17

198. पॉरुळे तमियेन् पुगलिड
मेनिन् पुगऴ् इगऴ्वार्
वॅरुळे ऍन्नै विट्टिडुदि कण्
डाय्मॅय्म्मैयार् विऴुङ्गुम्
अरुळे अणिपॉऴिल् उत्तर
कोशमङ्गैक्करशे
इरुळे वॅळिये इगपर
मागि इरुन्दवने !

(तिरुमुऱै आठ -6 पंक्ति 65-68)

197. *विद्युत् सम कांतियुत मेरे प्रभु !*
दुहाई है, परित्याग न करना मेरा
कोई नहीं है यहाँ जो मुझे अभय दे
और कहे, 'वत्स डरना नहीं।'
भटकता ही रहा मैं
हे उत्तरकोशमंगै के अधीश !
मेरे लिए तुम मातृ समान हो
तात समान हो करुणामय !
अक्षय महार्ह निधि हो
अनुपम हो अद्वितीय हो
अपनी उपमा तुम स्वयं हो।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 61-64)

198. *अग-जग में अंतराय बिन*
व्याप्त नित्य सत्य ! मेरे
एकमेव शरणालय !
भीतिकर हो निंदकों के लिए
सौम्य सरल हो आसक्त जन हित
पान करते हैं अनुग्रह रस को आनंद से
उपवन वलयित
उत्तरकोशमंगै के अधीश !
रहस्यमय तुम अज्ञान-तम हो
ज्ञान का प्रकाश भी हो
प्रपंच स्वरूप हो प्रपंचातीत भी
हे प्रभो ! परित्याग न कर देना मेरा।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 65-68)

199. இருந்தென்னை ஆண்டுகொள் விற்றுக்கொள்
ஒற்றிவையென்னினல்லால்
விருந்தின னேனை விடுதிகண்
டாய்மிக்க நஞ்சமுதா
அருந்தின னேமன்னும் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
மருந்தின னேபிற விப்பிணிப்
பட்டு மடங்கினர்க்கே! 18

199. इरुन्दॅन्नै आण्डुकॉळ् विट्रुक्कॉळ्
ऑट्रिवै ऍन्निन् अल्लाल्
विरुन्दिननेनै विडुदि कण्
डाय्मिक्क नञ्जमुदाय्
वरुन्दिनने मन्नुम् उत्तर
कोश मंगैक्करशे
मरुन्दिनने पिऱविप्पिणिप्
पट्टुमडङ्गिनक्के !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 69-72)

200. மடங்களன் வல்வினைக் காட்டைநின்
மன்னருள் தீக்கொளுவும்
விடங்களன் தன்னை விடுதிகண்
டாய்என் பிறவியையவே
ரோடுங்களைந் தாண்டுகொள் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
கொடுங்கரிக் குன்றுரித் தஞ்சுவித்
தாய்வஞ்சிக் கொம்பினையே! 19

200. मडङ्ग ऍन् वल्विनैक् काट्टैनिन्
मन्नरुळ् तीक्कॉळुवुम्
विडङ्ग ऍन्तन्नै विडुदि कण्
डाय्ऍन् पिऱवियै वे
रोडुम् कळैन्दु आण्डुकॉळ् उत्तर
कोश मङ्गैक्करशे
कॉडुङ्करिक् कुन्ऱुरित्तञ्जुवित्
तायवञ्जिक् कॉम्बिनैये !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 73-76)

199. *हे नाथ ! मेरे तात !*
अपना लो मुझे दास बना लो अपना
चाहे बेच डालो चाहे गिरवी रखो
कुछ भी करो अपनी इच्छा से
किंतु प्रभो ! परित्याग न कर देना मेरा
मैं तुम्हारी शरण में आया अतिथि हूँ
शरणागत की रक्षा करना धर्म है
हे उत्तरकोशमंगै के अधीश !
अशन किया तुमने विष को अमृत सम
जगत् के त्राण के हित
ओ भवरोग पीड़ितों के लिए
औषधि स्वरूप प्रभो ! छोड़ो नहीं मुझे।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 69-72)

200. *उस दिन जब तुमने*
हताहत किया युद्धोन्मत हाथी को
झटिति में चीर डाला धर लिया चर्म को
देख कर भीतभीत हो गई
वंजिलता सी सुकुमारी उमा
हे अप्रतिम पौरुष के धनी !
देखो मेरा दुष्कर्म निबिड़ वन-सा है
जला कर भस्म कर डालो ज्ञानाग्नि से
जड़ मूल से नष्ट करो कर्म-बंधन
और अपना लो मुझे
उत्तरकोशमंगै के अधीश !
परित्याग न करो मेरा।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 73-76)

201. கொம்பரில் லாக்கொடிபோல் அல
மந்தனன் கோமளமே
வெம்புகின் றேனை விடுதிகண்
டாய்விண்ணர் நண்ணுகில்லா
உம்பருள் ளாய்மன்னும் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசே
அம்பர மேநில னேஅனல்
காலொடப் பானவனே. 20

201. कोंम्बरिल्लाक् कोडिपोल्अल
मन्दनन् कोमळमे
वंम्बुकिन्ऱेनै विडुदि कण्
डाय्विण्णर् नण्णु किल्ला
उम्बरुळ्ळाय् मन्नुम् उत्तर
कोश मङ्गैक्करशे
अम्बरमे निलने अनल्
कालोंड अप्पानवने।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 77-80)

202. ஆனைவெம் போரிற் குறுந்தூ
றெனப்புல னால்அலைப்புண்
டேனையெந் தாய்விட் டிடுதிகண்
டாய்வினை யேன்மனத்துத்
தேனையும் பாலையுங் கன்னலை
யும்அமு தத்தையும்ஒத்து
ஊனையும் என்பினை யும்உருக்
காநின்ற ஒண்மையனே! 21

202. आनै वंम्पोरिऱ् कुऱुन्तू
ऱेनप्पुलनाल् अलैप्पुण्
डेनै ऍन्ताय् विट्टिडुदि कण्
डाय्विनैयेन् मनत्तुत्
तेनैयुम् पालैयुम कन्नलै
युम्अमुदत्तैयुम् ऑत्तु
ऊनैयुम् ऍम्बिनैयुम् उरुक्
कानिन्ऱ ऑण्मैयने !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 81-84)

201. देखो मेरे नाथ ! डगमगा रहा हूँ मैं
आश्रय हीन लतिका के समान
मेरा परित्याग न कर देना
तुम ऊँचे हो ऊपर हो बहुत ऊपर
देव गण की पहुँच के बाहर
ओ उत्तरकोशमंगै के अधीश
धरती और अम्बर ! अनिल-अनल !
चिदाकाश स्वरूप !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 77-80)

202. हाथियों के गुत्थमगुत्था होने पर
लघु पौध मसले जाते हैं ज्यों
पंच इंद्रियाँ ध्वस्त करती हैं मुझे
इधर उधर खींच कर
हे मेरे तात ! परित्याग न कर देना मेरा
कर्म का मारा अवश्य हूँ
स्फुरित हो जाओ मेरे ह्वदय में ज्योति बनकर
मधु-दुग्ध इक्षुरस अमृत बनकर
परमानंद की बाढ़ कर दो
पिघला दो मेरे तन-मन को
एक एक हड्डी पिघलकर बह जाए
और अपना लो मुझे दास रूप में।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 81-84)

203. ஒண்மைய னேதிரு நீற்றையுத்
தூளித் தொளிமிளிரும்
வெண்மைய னேவிட் டிடுதிகண்
டாய்மெய் யடியவர்கட்கு
அண்மைய னேயென்றுஞ் சேயாய்
பிறர்க்கறி தற்கரிதாம்
பெண்மைய னேதொன்மை ஆண்மைய
னேஅலிப்பெற்றியனே! 22

203. ऑ॑ण्मैयने तिरुनीट्रैयुन्
तूळित्तॉ॑ळि मिळिरुम्
वॅ॑ण्मैयने विट्टिडुदि कण्
डाय्मॅ॑य्य डियवर्कट्
अकण्मैयने ऍॅन्ऱुम् चेयाय्
पिऱर्कऱिदर्करिदाम्
पॅ॑ण्मैयने तॉ॑न्मैयाण्मैय
ने अलिप्पॅ॑ट्रियने !

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 85-88)

204. பெற்றது கொண்டு பிழையே
பெருக்கிச் சுருக்குமன்பின்
வெற்றடியேனை விடுதிகண்
டாய்விடி லோகெடுவேன்
மற்றடி யேன்தன்னைத் தாங்குநர்
இல்லையென் வாழ்முதலே
உற்றடி யேன்மிகத் தேறிநின்
றேனெனக் குள்ளவனே! 23

204. पॅ॑ट्रदु कॉ॑ण्डु पिऴैये
पॅ॑रुक्किच् चुरुक्कुमन्बिन्
वॅ॑ट्रडियेनै विडुदि कण्
डाय्विडिलो कॅ॑डुवेन्
मट्रडियेन् तन्नैत् ताङ्गुनऱ्
इल्लैऍॅन् वाऴ्मुदले
उट्रडियेन् मिगत्तेऱि निन्
ऱेन्ऍॅनक्कुळ्ळवने !

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 89-92)

203. ज्योतिराट् ! जाज्वल्यमान ज्ञान प्रकाश !
धवलोज्ज्वल भस्म से विलेपित है सकल देह !
प्रिय भक्तों के लिए अति समीप, सहज सौम्य हो
अगम अगोचर हो अज्ञेय हो इतरजनों के लिए
कोई नहीं जानता तुम्हारा रहस्य
नर हो नारी हो और क्लीव भी हो
मेरे तात ! परित्याग न कर देना मेरा।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 85-88)

204. दुर्लभ मानुष शरीर पाकर भी
प्रमाद किया तुच्छ सुखों में डूब कर
विस्तार नहीं किया प्रेमाभक्ति का
हे प्रभो ! इस अयोग्य को
छोड़ो नहीं निराधार
परित्याग कर दोगे
तो कहाँ जाऊँ मैं ?
कोई आश्रय नहीं तुम्हें छोड़कर
ओ मेरे जीवनाधार !
पाकर तुम्हें सुलझ गई मति
समझ गया हूँ तुम मेरे हो
और मैं तुम्हारा अपना हूँ।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 89-92)

205. உள்ளன வேறிற்க இல்லன
செய்யுமை யற்றுழனி
வெள்ளன லேனை விடுதிகண்
டாய்வியன் மாத்தடக்கைப்
பொள்ளனல் வேழத் துரியாய்
புலனின்கட் போதலொட்டா
மெள்ளனவே மொய்க்கும் நெய்க்குடந்
தன்னை எறும்பெனவே. 24

205. उळ्ळनवे निर्क इल्लन
चंय्युम् मैयट्रुऴनि
वंऴ्ळनलेनै विडुदि कण्
डाय्वियन् मात्तडक्कैप्
पांऴ्ळल् नल्वेऴ्त्तुरियाय्
पुलन् निन् कण्णेदलोट्टा
मंऴ्ळंनवे मांय्क्कु नंय्क्कुडम्
तन्नै ऍरुम्बंनवे।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 93-96)

206. எறும்பிடை நாங்கூ ழெனப்புல
னாலரிப் புண்டலந்த
வெறுந்தமி யேனை விடுதிகள்
டாய்வெய்ய கூற்றொடுங்க
உறுங்கடிப் போதவை யேயுணர்
வுற்றவர் உம்பரும்பர்
பெறும்பத மேயடி யார்பெய
ராத பெருமையனே! 25

206. ऍरुम्बिडै नाङ्कूऴ् ऍनप्पुल
नालरिप्पुण्डु अलन्द
वंरुम् तमियेनै विडुदि कण्
डाय्वंय्य कूट्रांडुङ्ग
उरुम् कडिप्पोदु अवैये उणर्
वुट्रवर् उम्बरुम्बर्
पंरुम्पदमे अडियार् पंय
राद पंरुमैयने !

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 97-100)

205. *नित्य सत्य वस्तु के रहते*
उसे छोड़कर भ्रमवश मैं
रीझा रहा मिथ्या मायामय प्रपंच में
सब तरह से अपात्र मेरा
परित्याग न करना मेरे तात !
विशाल नासाद्वार सहित
सुदीर्घ सूंड से युत
सुभग हस्ती के चर्मधर !
पंचेंद्रिय मुझे मिलने न देते तुमसे
चींटियाँ जिस भांति
घृत भरे घट पर धावा बोलती हैं
पंचेंद्रियों से निष्क्रिय बन गया हूँ मैं।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 93-96)

206. *ज्यों खाया जाता है केंचुआ*
चींटियों के आक्रामक दल से
पीड़ित हूँ मैं पंचेंद्रियों से
हे मेरे तात ! परित्याग न करना इस अपात्र का
काल को भी निष्क्रिय बनाने में समर्थ हैं
सुगंधित सुमन निभ तुम्हारे दिव्यचरण
इन पुण्य चरणों में निरंतर ध्यानमग्न
देवगण के लिए भी अगोचर तुम
सहज सुलभ हो साधकों के लिए
जो पा गए शिवपद
जो पा गए हैं तुम्हें प्रेमाभक्ति से
तुम कभी विलग न होते उनके हृदय से।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 97-100)

207. பெருநீ ரறச்சிறு மீன்துவண்
டாங்கு நினைப்பிரிந்த
வெருநீர்மை யேனை விடுதிகண்
டாய்வியின் கங்கைபொங்கி
வருநீர் மடுவுள் மலைச்சிறு
தோணி வடிவின்வெள்ளைக்
குருநீர் மதிப்பொதி யுஞ்சடை
வானக் கொழுமணியே! 26

207. पॆरुनीरऱच् चिरुमीन् तुवण्
डाङ्गु निनैप्पिरिन्द
वॆरुनीर्मैयेनै विडुदिकण्
डाय्वियन् कङ्गै पॊङ्गि
वरुनीर् मडुवुण् मलैच्चिऱु
तोणि वडिविन् वॆळ्ळैक्
कुरुनीर् मति पॊदियुम् चडै
वानक् कॊऴु मणिये !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 101-104)

208. கொழுமணி யேர்நகை யார்கொங்கைக்
குன்றிடைச் சென்றுகுன்றி
விழுமடி யேனை விடுதிகண்
டாய்மெய்ம் முழுதுங்கம்பித்து
அழுமடி யாரிடையார்த்துவைத்
தாட்கொண் டருளியென்னைக்
கழுமணி யேயின்னுங் காட்டுகண்
டாய்நின் புலன்கழலே! 27

208. कॊऴुमणियेर् नगैयार् कॊङ्गैक्
कुन्ऱिडैच् चॆन्ऱु कुन्ऱि
विऴुमडियेनै विडुदिकण्
डाय्मॆय्म्मुऴुदुम् कम्बित्तु
अऴुमडियारिडै आर्त्तु वैत्
ताट्कॊण्डरुळि ऍन्नैक्
कऴुमणिये इन्नुम् काट्टु कण्
डायनिन् पुलन् कऴले !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 105-108)

207. जलाशय के सूख जाने के दौर में
छोटी छोटी मछलियाँ ज्यों तड़पती हैं
हे नाथ ! मैं कलपता हूँ तुम्हारे विरह में
तात ! मेरा परित्याग न कर देना
ऐसी संकट की घड़ी में
उफनती गंगा के अपार जल में
लघु नौका सम डगमगाते
शुभ्र चंद्रकला को धारण किये हो
निज जटाभार में !
हे देवलोक के ज्योतिराट् !
उबारो मुझे ! छोड़ न देना मंझधार में।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 101-104)

208. मतिहीन होकर गिर पड़ा मैं
मुक्ता सम दंतपंक्ति में कलहासिनी
ललनाओं के पर्वत निभ स्तनभार मध्य में
हा, मैं पतित हो गया
ओ मेरे तात ! परित्याग न करना मेरा
हे महार्ह रत्न ! मिला दो मुझे
निज भक्तजन की मंडली में
प्रेम में द्रवित जो प्रकंपित गात्र हैं
प्रवहित है नयनों से अश्रुधार
और फिर से दर्शन करा दो
अपने ज्ञानदायक चरणयुगल
और अपना लो बनालो अपना।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 105-108)

209. புலன்கள்திகைப் பிக்க யானுந்
திகைத்திங்கொர் பொய்ந்நெறிக்கே
விலங்குகின் றேனை விடுதிகண்
டாய்விண்ணும் மண்ணுமெல்லாங்
கலங்கமுந் நீர்நஞ் சமுதுசெய்
தாய்கரு ணாகரனே
துலங்குகின் றேனடி யேனுடை
யாயென் தொழுகுலமே! 28

209. पुलन्गळ् तिगैप्पिक्क यानुम्
तिगैत्तिङ्गोर् पॉय्न्नॆरिक्के
विलङ्गुकिन्ऱेनै विडुदिकण्
डाय्विण्णुम् मण्णुम् ऍल्लाम्
कलङ्ग मुन्नीर् नञ्जमुदु चॅय्
दाद्करुणाकरने
तुलङ्गुकिन्ऱेन् अडियेन् उडै
यार्यन् तॉऴुकुलमे !

(तिरुमुऱै आठ -6 पंक्ति 109-112)

210. குலங்களைந் தாய்களைந் தாய்என்னைக்
குற்றங்கொற் றச்சிலையாம்
விலங்கலெந் தாய்விட் டிடுதிகண்
டாய்பொன்னின் மின்னுகொன்றை
அலங்கலந் தாமரை மேனியப்
பாவொப்பி லாதவனே
மலங்களைந் தாற்சுழல் வன்தயி
ரிற்பொரு மத்துறவே. 29

210. कुलम् कळैन्दाय् कळैन्दाय् ऍन्नैक्
कुट्रम् कॉट्रच्चिलैयाम्
विलङ्गळ् ऍन्नाय् विट्टिडुदि कण्
डायपॉन्निन् मिन्नु कॉन्ऱै
अलङ्गलन् तामरै मेनियप्
पाऑप्पिलादवने
मलङ्गळ् ऐन्दाल् चुळ्ल्वन् तयि–
रिर् पॉरु मत्तुऱवे।

(तिरुमुऱै आठ -6 पंक्ति 113-116)

209. *भ्रमित होकर पंचेंद्रियों से*
अनर्थ के पथ पर अग्रसर हुआ मैं
तात ! परित्यक्त हुआ मैं तुम से भी
पुराकाल में जब धरती और अंबर
भीत हुए प्रकंपित हुए
तुमने अशन किया विष को अमृत सम
हे करुणामय प्रभु !
मेरे इष्टदेव ! उद्धार करो मेरा भी
मैं भी भीत हूँ प्रकंपित हूँ।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 109-112)

210. *मुक्त हो प्रभु ! तुम सकल बंधनों से*
मुक्त किया मुझे कर्मबंधन से
शिवराज प्रभु ! करतल पर शोभित है मेरु धनुष
जटा पर शोभित कनक सम कोन्रै माल्य
हे अनुपम अद्वितीय !
कहीं मेरा परित्याग न कर दो
दधि-भांड में डाली मथनी ज्यों
चक्कर खाता रहता हूँ
पंच-पाश के बीच फंस कर
ओ मेरे तात ! रक्षा करो मेरी।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 113-116)

211. மத்துறு தண்தயி ரிற்புலன்
தீக்கது வக்கலங்கி
வித்துறு வேனை விடுதிகண்
டாய்வெண் டலைமிலைச்சிக்
கொத்துறு போது மிலைந்து
குடர்நெடு மாலைசற்றித்
தத்துறு நீறுட னாரச்செஞ்
சாந்தணி சச்சையனே! 30

211. मत्तुरु तण्डयिर् पुलन्
तीक्कदुवक् कलङ्गि
वित्तुरुवेनै विडुदि कण्
डाय्वॆण्तलै मिलैच्चिक्
कॊत्तुरु पोदु मिलैन्दु
कुडर् नॆडुमालै चुट्रित्
तत्तुरु नीरुडन् आरच्चॆञ्
चान्दणि चच्चैयने !

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 117-120)

212. சச்சையே னேமிக்க தண்புனல்
விண்கால் நிலம்நெருப்பாம்
விச்சைய னேவிட் டிடுதிகண்
டாய்வெளி யாய்கரியாய்
பச்சைய னேசெய்ய மேனிய
னேயொண் படஅரவக்
கச்சைய னேகடந் தாய்தடந்
தாள அடற்கரியே! 31

212. चच्चैयने मिक्क तण्पुनल्
विण्काल् निलनॆरुप्पाम्
विच्चैयने विट्टिडुदि कण्
डाय्वॆळियाय् करियाय्
पच्चैयने चॆय्य मेनिय
नेऒण् पडवरवक्
कच्चैयने कडन्ताय् तडम्
ताळ अडर्करिये !

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 121-124)

211. *मैं उसी भांति उद्वेलित हूँ पंचेंद्रियों से*
जिस तरह टूट जाता है दही ऊपर नीचे होता है
मथनी द्वारा मथन की प्रक्रिया में
इंद्रियों की आग जला रही है मुझे
मेरे नाथ ! मेरा यों परित्याग न करो
शुभ्र कपालमालाधर ! तुम्हारी
जटा में शोभित है कनक तुल्य कौन्ऱै माल्य
गरदन पर अंतड़ियों की माला
भस्मलेपित सकल देह पर
चंदन चर्चित हे नित्य सत्य
उद्धार करो मेरा।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 117-120)

212. *हे नित्य सत्य ! आदिमूल प्रभु !*
सर्वस्वरूप हो तुम, शीतल सलिल हो नभ हो
अनिल-अनल हो अवनी भी
पंचरंगी आत्मा में शोभित हो
हरित श्यामल अरुणाभ हो
नील नीलिम और गौरांग भी
कटि तट पर विलस रहा
उरग मेखला भरण रूप में
अहा ! तुमने ध्वस्त कर दिया
समरोद्धत भीमकाय हस्ती को
प्रभो ! मेरा यों परित्याग न करो।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 121-124)

213. அடற்கரி போல்ஐம் புலன்களுக்
கஞ்சி அழிந்தஎன்னை
விடற்கரி யாய்விட் டிடுதிகண்
டாய்விழுத் தொண்டர்க்கல்லால்
தொடற்கரி யாய்சுடர் மாமணி
யேசுடு தீச்சுழலக்
கடற்கரிதாயெழு நஞ்சமு
தாக்குங் கறைக்கண்டனே! 32

213. अडऱ्करि पोलैम्पुलन्गळुक्कु
अञ्जि अऴिन्द ऍन्नै
विडऱ् करियाय् विट्टिडुदि कण्
डाय्विऴ् ुत्तॊण्डर्क्कल्लाल्
तॊडर्करियाय् चुडऱ्मामणि
येचुडु तीच्चुऴलक्
कडऱ्करिदाय् ऍऴ् ुनञ्जमु
दाक्कुम् कऱैक्कण्डने !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 125-128)

214. கண்டது செய்து கருணைமட்
டுப்பரு கிக்களித்து
மிண்டுகின் றேனை விடுதிகண்
டாய்நின் விரைமலர்த்தாள்
பண்டுதந் தாற்போற் பணித்துப்
பணிசெயக் கூவித்தென்னைக்
கொண்டெநெஞ் தாய்களை யாய்களை
யாய குதுகுதுப்பே! 33

214. कण्डदु चॅय्दु करुणै मट्
टुप्परुगिक् कळित्तु
मिण्डुकिन्ऱेनै विडुदि कण्
डायनिन् विरै मलर्त्ताळ्
पण्डु तन्दार्पोल् पणित्तुप्
पणिचॅय्यक् कूवित्तॆनैक्
कॊण्डॅन् ऍन्ताय् कळै
याय कुदुळुदुप्पे !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 129-132)

213. *हे नाथ ! परित्याग न करो मेरा*
ध्वस्त हो गया हूँ इन्द्रियों से
जो आक्रमण करती हैं कुंजर सम
सब विधि पस्त हो गया हूँ
पहुँचे हुए भक्तों को छोड़कर
इतर के लिए अगम अगोचर हो
जाज्वल्यमान महामणि !
विस्मय-प्रद है तुम्हारा रूप !
चतुर्दिक् घूम रही थी अग्नि-ज्वाल
सागर से उत्थित हुआ नील हलाहल
जिसे पान कर लिया अमृत सम
जगत के त्राण के हित
मेरे तात ! उद्धार करो मेरा भी।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 125-128)

214. *अलभ्य अनुग्रह मधु पीकर*
मैं उन्मत्त हो गया था, उतर आया था
मनमानी करने पर
तात ! मेरा परित्याग न करो
जिस भांति उस दिन प्रदान किये थे
सुंगंध पूरित सुमनचरण
फिर से प्रदान करो वही चरणयुगल
बुलाकर लगा लो सेवकाई में
दूर करो लौकिक लघुता के दोष
अपनाओ मुझे बना लो अपना।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 129-132)

215. குதுகுதுப் பின்றிநின் றென்குறிப்
பேசெய்து நின்குறிப்பில்
விதுவிதுப் பேனை விடுதிகண்
டாய்விரை யார்ந்தினிய
மதுமதுப் போன்றென்னைவாழைப்
பழத்தின் மனங்கனிவித்து
எதிர்வதெப் போது பயில்வி
கயிலைப் பரம்பரனே? 34

215. कुदुकुदुप्पिऩ्ऱि निऩ्ऱॅऩ् कुऱिप्
पेचॅय्दु निऩ् कुऱिप्पिल्
विदुविदुप्पेनै विडुदिकण्
डाय्विरैयार्न्दिनिय
मदुमदुप् पोऩ्ऱॅऩ्नै वाऴैप्
पऴत्तिऩ् मनम् कनिवित्तु
ऍंदिर्वदु ऍंप्पोदु पयिल्विक्
कयिलैप् परमने !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 133-136)

216. பரம்பர னேநின் பழஅடி
யாரொடும் என்படிறு
விரும்பர னேவிட் டிடுதிகண்
டாய்மென் முயற்கறையின்
அரும்பர நேர்வைத் தணிந்தாய்
பிறவிஐ வாயரவம்
பொரும்பெரு மான்வினை யேன்மனம்
அஞ்சிப் பொதும்புறவே! 35

216. परम्परने निऩ् पऴवडि
यारॉडुमॅऩ् पडिऱु
विरुम्परने विट्टिडुदि कण्
डाय्मॅऩ्मुयल् कऱैयिऩ्
अरुम्बर नेर्वैत्तणिन्दाय्
पिऱवि ऐवायरवम्
पॉरुम् पॅरुमान् विनैयेन् मनम्
अञ्जिप् पॉदुम्बुऱवे !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 137-140)

215. मत्त रहा मैं निज मन के उल्लास में
सत्यवस्तु तुमसे मिलने की ललक न रही
करता रहा वही जो मन में आया
कहता रहा फिर सब प्रभु इच्छा थी
यों विसंगति से भरा हूँ मैं
नाथ ! परित्याग न कर दो मेरा
कैलाश में विराजे मेरे तात !
बोलो कब बनाओगे मेरे मन को पक्व
परिपक्व कदली के समान
स्वच्छ मधु के समान
कब सिखाओगे इसको साधना।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 133-136)

216. हे परात्पर ! परमेश्वर !
मिला लिया मुझ अपात्र साधक को
अपने परिपक्व भक्तों के संग
जैसे धारण किये हो
उरग को और शशांक-अंकित चंद्र को
जो सब विधि असमान हैं
ओ महिमामय प्रभु
परित्याग न कर दो मेरा
पुनर्जन्म डरा रहा है मुझे
पंच फण फैलाये उरग की भांति
पंचेंद्रिय रूप में
कर्म का मारा मूषक सम मैं
दुबकने को ढूँढ रहा हूँ बिल।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 137-140)

217. பொதும்புறு தீப்போற் புகைந்தெரி
யப்புலன் தீக்கதுவ
வெதும்புறு வேனை விடுதிகண்
டாய்விரை யார்நறவம்
ததும்புமந் தாரத்தில் தாரம்
பயின்றுமந் தம்முரல்வண்டு
அதும்புங் கொழுந்தேன் அவிர்சடை
வானத் தடலரைசே! 36

217. पॉदुम्बुरु तीप्पोल् पुगैन्दॅरि
यप्पुलन् तीक्कदुव
वॅदुम्बुरुवेनै विडुदि कण्
डाय्विरैयार् नऱवम्
तदुम्बुम् मन्दारत्तिल् तारम्
पयिन्ऱुमन्दम् मुरल् वण्डु
अदुम्बुम् कॉऴुन्तेनविर् चडै
वानत्तडल् अरैशे !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 141-144)

218. அரைசே அறியாச் சிறியேன்
பிழைக்கஞ்ச லென்னினல்லால்
விரைசேர் முடியாய் விடுதிகண்
டாய்வெண் ணகைக்கருங்கண்
திரைசேர் மடந்தை மணந்த
திருப்பொற் பதப்புயங்கா
வரைசேர்ந் தடர்ந்தென்ன வல்வினை
தான்வந் தடர்வனவே. 37

218. अरैशे अऱियाच्चिऱियेन्
पिऴैक्कञ्जल् ऍन्निलल्लाल्
विरैचेर् मुडियाय् विडुदि कण्
डाय्वॅण्णगैक् करुङ्कण्
तिरैचेर् मडन्तै मणन्द
तिरुप्पॉन् पदम् पुयङ्गा
वरै चेन्दडर्त्तॅन्न वल्विनै
तान् वन्दडर्वनवे।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 145-148)

217. *हे तात ! मेरा परित्याग न करो*
उद्धार करो देखो मैं
झुलस रहा हूँ पंचेंद्रियों की आग से
दावानलं से ज्वलित वृक्ष ज्यों
ओ देवलोक के ऐकैकनायक !
चिदाकाश रूप में विराजे प्रभु
तुम्हारी जाज्वल्यमान जटा से
रिस रहा मंदार कुसुम का सुगंधित मधु
जिसके पान के लिए आगत भ्रमर
सांद्र मधुर स्वर में कर रहे झंकार।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 141-144)

218. *सुगंध पूरित जटाभार से भूषित*
प्रभो ! क्षमा नहीं करते अज्ञान कृत अपराध को
अभय नहीं देते इस लघुजन को
क्या मेरा परित्याग ही कर दोगे यों ?
हे नाथ ! वाम भाग दिये हो उमा सुकुमारी को
कलहासिनी समुद्र निभ नीलनयना को
हाटक सरिस दिव्यचरण ! भुजंगधर !
देखो पिस कर कलप रहा हूँ
पुण्य-पाप के दो पर्वतों के मध्य में
प्रभो ! उबारो मुझे इस प्रपंच से।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 145-148)

219. அடர்புல னால்நிற் பிரிந்தஞ்சி
அஞ்சொல்நல் லாரவர்தம்
விடர்விட லேனை விடுதிகண்
டாய்விரிந் தேயெரியுஞ்
சுடரனை யாய்சுடு காட்டர
சேதொழும் பர்க்கமுதே
தொடர்வரி யாய்தமி யேன்தனி
நீக்குந் தனித்துணையே! 38

219. अडर् पुलनाल् निन्पिरिन्दञ्जि
अञ्चॊल् नल्लारवर् तम्
विडर् विडलेनै विडुदि कण्
डाय् विरिन्दे ऍरियुम्
चुडरनैयाय् चुडुकाट्टर
शेतॊऴुम्बर्क्कमुदे
तॊडर्वरियाय् तमियेन् तनि
नीक्कुम् तनित्तुणैये !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 149-152)

220. தனித்துணை நீநிற்க யான்தருக்
கித்தலை யால்நடந்த
வினைத்துணை யேனைவிடுதிகண்
டாய்வினை யேனுடைய
மனத்துணை யேஎன்தன் வாழ்முத
லேஎனக் கெய்ப்பில்வைப்பே
தினைத்துணை யேனும் பொறேன்
துயராக்கையின் திண்வலையே. 39

220. तनित्तुणै नी निर्क यान्तरुक्
कित्तलैयाल् नडन्द
विनैत्तुणैयेनै विडुदि कण्
डाय्विनैयेनुडैय
मनत्तुणैये ऍन्ऱन् वाऴ्मुद
लेऍनक्कॅय्प्पिल् वैप्पे
तिनैत्तुणैयेनुम् पॊऱेन्
तुयराक्कैयिन् तिण्वलैये।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 153-156)

219. फँसकर इंद्रियों के मायापाश में
छोड़ दिया तुम्हें और लगा रहा
मधुबैनियों के मायाजाल से
हे तात ! जाज्वल्यमान ज्योति
परित्याग न कर दो मेरा
रुद्रभूमि में नर्तित प्रभु !
अमृतस्वरूप हो सच्चे भक्तों के हित
अगम अगोचर हो ! हारे हुए
इस एकाकी के एकमेव साथी !
उद्धार करो मुझे इस प्रपंच से।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 149-152)

220. आश्रयभूत आदिमूल तुम सुलभ थे
किंतु मैं माया के चंगुल में फँसकर
निज दर्प में झूमता रहा तुम्हें भूलकर
कर्म का मारा हूँ हे प्रभो
मेरा परित्याग न कर देना
मेरे प्राणों के प्राण ! मेरे
भविष्य के क्षेमनिधि !
जन्मकारक दुःख-दुरित में फँसा हूँ
लेश भी सहन नहीं कर पाऊँगा
पिंजर का भार सहा न जाता
नाथ ! उबारो मुझे इस प्रपंच से।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 153-156)

221. வலைத்தலை மானன்ன நோக்கியர்
நோக்கின் வலையிற்பட்டு
மிலைத்தலைந் தேனைவிடுதிகண்
டாய்வெண் மதியின்ஒற்றைக்
கலைத்தலை யாய்கரு ணாகர
னேகயி லாயமென்னும்
மலைத்தலை வாமலை யாள்மண
வாளஎன் வாழ்முதலே! 40

221. वलैत्तलै मानन्न नोक्कियर्
नोक्किन् वलैयिर् पट्टु
मिलैत्तलैन्देनै विडुदिकण्
डाय्वॆण्मतियिन् ऑट्रैक्
कलैत्तलैयाय् करुणा कर
नेकयिलायम् ऍन्नुम्
मलैत्तलैवा मलैयान् मण
वाळऍन् वाऴ् मुदले !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 157-160)

222. முதலைச்செவ் வாய்ச்சியர் வேட்கைவெந்
நீரிற் கடிப்பமூழ்கி
விதலைச்செய் வேனை விடுதிகண்
டாய்விடக் கூன்மிடைந்த
சிதலைச்செய் காயம் பொறேன்சிவ
னேமுறை யோமுறையோ
திதலைச்செய் பூண்முலை மங்கைபங்
காஎன் சிவகதியே! 41

222. मुदलैच् चॆव्वाय्च्चियर् वेट्कै
वॆन्नीरिल् कडिप्प मूऴ्गि
विदलैच् चॆय्वेनै विडुदि कण्
डाय्विडक्कून् मिडैन्द
चिदलैच् चॆय्कायम् पॊऱेन्शिव
नेमुऱैयो मुऱैयो
तिदलैच् चॆय् पूण्मुलै मंगै पंगा
ऍन् शिव गतिये !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 161-164)

221. *जालबद्ध मृगनयनियों के दृग-विक्षेप से*
रीझकर मैं भटकता रहा प्रपंच में
चंद्रकलाधर प्रभो
मेरा परित्याग न कर दो
करुणाकर कृपासिंधो !
कैलाश के अधीश ! पार्वतीपते !
मेरे जीवन के आधार !
उद्धार करो मेरा।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 157-160)

222. *भोगासक्ति की कवोष्ण-धार में*
लपका मैं और आ गया
बिंबाधरा मादा नक्रों के शिकंजे में
अब कांप रहा हूँ थर-थर
प्रभो ! मेरा परित्याग न कर देना
अब न सह पाऊँगा
रोग-कारण इस काया के पिंजर को
समलंकृत सुभग स्तनी उमा को
वामभाग दिये प्रभो ! उबारो मुझे
मायामय इस प्रपंच से।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 161-164)

223. கதியடி யேற்குன் கழல்தந்
தருளவும் ஊன்கழியா
விதியடி யேனை விடுதிகண்
டாய்வெண் தலைமுழையிற்
பதியுடை வாளரப் பார்த்திறை
பைத்துச் சுருங்கஅஞ்சி
மதிநெடு நீரிற் குளித்தொளிக்
குஞ்சடை மன்னவனே. 42

223. कति यडियेर्कुन् कऴल् तन्
दरुळवुमून् कऴिया
विदि यडियेनै विडुदि कण्
डाय्वॆण्डलै मुऴैयिल्
पति उडैवाळरप्पार्त्तु इऱै
पैत्तुच्चुरुङ्ग अञ्जि
मति नॆडु नीरिऱ् कुळित्तॊळिक्
कुञ्चडै मन्नवने !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 165-168)

224. மன்னவ னேயென்று மாறறி
யாச்சிறி யேன்மகிழ்ச்சி
மின்னவ னேவிட் டிடுதிகண்
டாய்மிக்க வேதமெய்ந்நூல்
சொன்னவ னேசொற் கழிந்தவ
னேகழி யாத்தொழும்பர்
முன்னவ னேபின்னும் ஆனவ
னேயிம் முழுதையுமே! 43

224. मन्नवने ऒन्ऱुम् आऱरि
याच्चिऱियेन् मगिऴ्च्चि
मिन्नवने विट्टिडुदि कण्
डायमिक्क वेदमॆय्न्नूल्
चॊन्नवने चॊल् कऴिन्दव
नेकऴियात् तॊऴुम्बर्
मुन्नवने पिन्नुमानव
नेइम्मुऴुदैयुमे !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 169-172)

223. *शीर्ष पर धृत कपाल गह्वर से*
निकलकर नाचने लगा
चमचमाता सर्प
जिससे भीत हुआ चंद्र
दुबक गया जटास्थित गंगा में
एक दूसरे से वैर करते
इन दोनों को समान रूप से धरे
महेश्वर ! तुमने अनुग्रह बरसाकर
प्रदान किये थे मुझे निज चरणकमल
किंतु देहासक्त मैंने लाभ न उठाया
तुम्हारी अपार करुणा का
कर्म का मारा अब तड़प रहा हूँ
प्रभो ! मुझे उबारो परित्याग न करो।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 165-168)

224. *प्रभो ! गया बीता हूँ मैं*
मार्ग नहीं जानता उपासना का
हे आनंदज्योति !
परित्याग न कर दो मेरा
विस्तार किया तुमने सत्य वेद का
शब्द और वाक् के अतीत परमेश्वर !
प्रत्यक्ष दैवत हो अचंचल भक्तों के लिए
खड़े हो उनके पीछे भी रक्षा करते हुए
सर्वस्वरूप हो ! तात !
मुझे उबारो इस प्रपंच से।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 169-172)

225. முழுதயில் வேற்கண் ணியரென்னும்
மூரித் தழல்முழுகும்
விழுதனை யேனை விடுதிகண்
டாய்நின் வெறிமலர்த்தாள்
தொழுதுசெல் வான்நல் தொழும்பரிற்
கூட்டிடு சோத்தெம்பிரான்
பழுதுசெய் வேனை விடேலுடை
யாய்உன்னைப் பாடுவனே. 44

225. मुऴ्ु दयिल् वेर्कण्णियर् ऍन्नुम्
मूरित्तऴल् मुऴ्ुगुम्
विऴ्ु दनैयेनै विडुदिकण्
डायनिन् वॅरि मलर्त्ताळ्
तॊऴ्ु दुचॅल् वानत् तॊऴ्ु म्बरिर्
कूट्टिडु चोत्तॅम्पिरान्
पऴ्ु दुचॅय्वेनै विडेलुडै
यायउन्नैप् पाडुवने।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 173-176)

226. பாடிற்றி லேன்பணி யேன்மணி
நீயொளித் தாய்க்குப்பச்சூன்
வீடிற்றி லேனை விடுதிகண்
டாய்வியந் தாங்கலறித்
தேடிற்றி லேன்சிவ னெவ்விடத்
தான்எவர் கண்டனரென்று
ஓடிற்றி லேன்கிடந் துள்ளுரு
கேன்நின் றுழைத்தனனே. 45

226. पाडिट्रिलेन् पणियेन् मणि
नी ऑळित्तायक्कुप् पच्चून्
वीडिट्रिलेनै विडुदि कण्
डायवियन्दाङ्गु अलरित्
तेडिट्रिलेन् शिवर्नव्विडत्
तान्ऍवन् कण्डन रॅन्रु
ओडिट्रिलेन् किडन्दुळ्ळुरु
गेन्निन्रुऴैत्तनने।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 177-180)

225. रीझा था तरुणियों के सुभग नयनों में
जानता नहीं था कि वह कामानल है
अनल में पिघलते नवनीत सम
क्षय हो रहा है मेरा
क्या तुम भी परित्याग कर दोगे मेरा ?
प्रणत हुए अचंचल भक्त
तुम्हारे सुरभित चरणकमलों पर
और पा गए सायुज्य
माना कि मुझ से हो गया प्रमाद
यही प्रार्थना है मुझे छोड़ देना नहीं
करूँगा तुम्हारा कीर्तन भक्तिभाव से।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 173-176)

226. हे माणिक्य मणि ! मैंने तुम्हारी
स्तुति नहीं की न ही उपासना
जब से तुम बिछुड़ गए
तजी नहीं निज देह न इस की आसक्ति
बिछुड़ने से रोया-कलपा नहीं
सकपकाकर इधर-उधर भाग कर
खोजा नहीं अपने नाथ को
'हा ! कहाँ चले गए शिव ?'
'क्या तुमने शिव को देखा नहीं ?'
पूछते हुए डगर डगर भटका नहीं
प्रेम में पग कर पसीजा नहीं
मेरा हृदय
क्या होगा अब व्यर्थ में दुखी होने से
हे मेरे तात ! मेरा परित्याग न कर दो।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 177-180)

227. உழைதரு நோக்கியர் கொங்கைப்
பலாப்பழத் தீயினொப்பாய்
விழைதரு வேனை விடுதிகண்
டாய்விடின் வேலைநஞ்சுண்
மழைதரு கண்டன் குணமிலி
மானிடன் தேய்மதியன்
பழைதரு மாபர னென்றென்
றறைவன் பழிப்பினையே! 46

227. उऴैतरु नोक्कियर् कॊङ्गैप्
पलाप्पऴ त्तीयिनॊप्पाय्
विऴैतरुवेनै विडुदि कण्
डाय्विडिन् वेलै नञ्जुण्
मऴैतरु कण्डन् कुणमिलि
मानिडन् तेय्मदियन्
पऴैतरु मापरनॆन्
ऱॆऱैवन् पऴिप्पिनैये !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 181-184)

228. பழிப்பில்நின் பாதப் பழந்தொழும்
பெய்தி விழப்பழித்து
விழித்திருந் தேனை விடுதிகண்
டாய்வெண் மணிப்பணிலம்
கொழித்துமந்தாரமந் தாகினி
நுந்தும்பந் தப்பெருமை
தழிச்சிறை நீரிற் பிறைக்கலஞ்
சேர்தரு தாரவனே! 47

228. पऴिप्पिन् पादप् पऴन्तॊऴुम्
पॆय्दि विऴिप्पऴित्तु
विऴित्तिरुन्देने विडुदिकण्
डाय्वॆण्मणिप् पणिलम्
कॊऴित्तु मन्दारम् मन्दागिनि
नुन्दुम् पन्दम् पॆरुमै
तऴिच्चिऱै नीरिल् पिऱैक्कलञ्
चेर्तरु तारवने !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 185-188)

227. *पुनः-पुनः पके कटहल पर बैठती मक्खी की तरह*
रीझा रहता हूँ मृगनयनियों के स्तनभार से
फिर भी मेरा परित्याग नहीं करना
यदि तुम तजोगे मुझे
तो जग भर में घूमकर निंदा करूँगा तुम्हारी
कि तुम्हारे कंठ पर नीला दाग है
कि तुम गुण रहित हो, निरा मनुष्य हो
कि म्लान चंद्र को सिर पर रखकर
घूम रहे सठियाये मतिहीन हो।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 181-184)

228. *हे गंगाधर ! महेश्वर !*
लुढ़काये लाई है शंख मोती और गंध-सुमन
अपनी धारा के संग गंगा
रोके हुए है गंगा को तुम्हारे जटाभार का बांध
तिर रहा है नौका की भांति चंद्रमा इस जलौध में
शोभित हो जयमाल पहने सुन्दरेश तुम
ऐसे तुम्हारे अनिंद्य चरणों की
वंदना आराधना करता रहा मैं
परंपरागत विधि-विधान से
किंतु मति मारी गई मेरी
निंदा करने लगा तुम्हारी
हे करुणामय ! दया करो !
परित्याग न कर देना मेरा।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 185-188)

229. தாரகை போலும் தலைத்தலை
மாலைத் தழலரப்பூண்
வீரஎன் தன்னை விடுதிகண்
டாய்விடி லென்னைமிக்கார்
ஆரடி யானென்னின் உத்தர
கோசமங் கைக்கரசின்
சீரடி யாரடி யானென்று
நின்னைச் சிரிப்பிப்பனே! 48

229. तारकै पोलुम् तलैत्तलै
मालैत्तऴल् अरप्पूण्
वीर ऍन् तन्नै विडुदि कण्
डाय्विडिन् ऍन्नै मिक्कार्
आर् अडियान् ऍन्निन् उत्तर
कोश मंगैक्कु अरशिन्
चीर् अडियार् अडियान् ऍन्रु
निन्नैच् चिरिप्पिप्पने !

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 188-192)

230. சிரிப்பிப்பன் சீறும் பிழைப்பைத்
தொழும்பையும் ஈசற்கென்று
விரிப்பிப்ப னென்னை விடுதிகண்
டாய்விடின் வெங்கரியின்
உரிப்பிச்சன் தோலுடைப் பிச்சன்நஞ்
சூண்பிச்சன் ஊர்ச்சுடுகாட்டு
எரிப்பிச்சன் என்னையும் ஆளுடைப்
பிச்சனென் றேசுவனே! 49

230. चिरिप्पिप्पिन् चीरुम् पिऴैप्पैत्
तॊऴुम्बैयुम् ईशर् कॅन्रु
विरिप्पिप्पन् ऍन्नै विडुदि कण्
डाय्विडिन् वॆङ्करियिन्
उरिप्पिच्चन् तोलुडैय पिच्चन्नञ्
चूण् पिच्चन् ऊर्च्चुडुकाट्टु
ऍरिप्पिच्चन् ऍन्नैयुम् आऌुडैप्
पिच्चनॅन्रु एशुवने !

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 193-196)

229. *शोभायमान कपाल-माल शीर्ष पर*
नक्षत्र माल के समान
नाच रही करतल पर वह्नि-ज्वाल
अंग अंग पर चमचमाते हैं
विषधर आभूषण की भांति
ऐसे महिमामय तुम अतिशूर-पराक्रमी हो
इसमें संदेह नहीं; किन्तु
तुम यदि मुझे निचले स्तर पर रखोगे
तो मेरा परिचय पूछने वालों से
यही कहूँगा
महिमामय उत्तरकोशमंगै के
दासों का दास हूँ मैं
तब हास्यास्पद न होगी
तुम्हारी स्थिति ? इसलिए
प्रभो ! छोड़ो नहीं, उबारो मुझे।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 189-192)

230. *अपराधी मानकर*
यदि तुम करोगे मेरा तिरस्कार
तो मैं भी छोड़ूँगा नहीं; सब जगह
घूम घूम कर जगहँसाई कराऊँगा तुम्हारी
विस्तार देकर फैलाऊँगा प्रवाद
कि तुम बावरे हो
भीमकाय हाथी का चर्म चीर कर पहने हो
बुद्धु भोले हो तुम जिसने
जाकर अशन किया हलाहल का
कि तुम इतने सुंदर स्थानों के रहते
श्मशान में जाकर रहते हो
कि तुम मुझ जैसे तुच्छ जन को
निज दास बनाते हो; कहूँगा
तुम बावरे नहीं तो क्या हो।

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 193-196)

231. ஏசினும் யானுன்னை யேத்தினும்
என்பிழைக் கேகுழைந்து
வேசறுவேனை விடுதிகண்
டாய்செம் பவளவெற்பின்
தேசுடை யாயென்னை ஆளுடை
யாய்சிற் றுயிர்க்கிரங்கிக்
காய்சின ஆலமுண் டாய்அமு
துண்ணக் கடையவனே!

231. एशिनुम् यानुन्नै एत्तिनुम्
ऍन् पिऴैक्के कुऴैन्दु
एशरुवेनै विडुदि कण्
डाय्चॅम्पवल वॅर्पिन्
तेशुडैयाय् ऍन्नै आलुडै
याय्चिट्रुयिर्क्किरङ्गि
काय्चिन वालम् उण्डाय् अमु
दुण्णक्कडैयवने !

(तिरुमुऱै आठ - 6 पंक्ति 197-200)

231. *चाहे मैं निंदा करूँ चाहे स्तुति करूँ तुम्हारी*
तथ्य यही है कि मैं अपराधी हूँ
अतएव खिन्न एवं परितप्त हूँ
तात ! मेरा परित्याग न कर देना
प्रवाल-शैल सम शोभित है तुम्हारी देहकांति
तुमने मुझे अपनाया, हाँ बनाया अपना
करुणावारिधि तुमने जगत्राण हेतु
भयंकर हलाहल को पान किया अमृत सम
मैं नीच हूँ तुच्छ हूँ अधम हूँ
तात ! छोड़ो नहीं, उबारो इस प्रपंच से।

(तिरुमुरै आठ - 6 पंक्ति 197-200)



स्रोत : तिरुवाचकम् - टी. एन. रामचन्द्रन्

Source : Tiruvaachakam by T.N. Ramachandran

O my God and Lord-Owner ! Lo, damsels sport eyes
Which are ever-keen like the spear; I am like butter
Sunk in their eyes which are great and blazing fire.
Will You forsake me ? I will sing Your praises.
Do link me with Your ethereal servitors who adore
Your fragrant and lotus-like feet and flourish.
I am a wrong-doer; pray, do not give me up.
I offer my humble obeisance to You, O God.

I do not sing of Your praises, O Ruby ! I do not adore You.
You have concealed Yourself from me; for Your sake
I have not cast away my body of raw flesh.
Will You forsake me ? Struck with wonder, I do not
Cry aloud and go in quest of You. I do not run about
Asking : "Where indeed is Siva ? Who has beheld Him ?"
I do not melt in love for You. I but grieve in vain.

Like flies swarming over the drupels of jack-fruit
My thoughts hover over the buxom breasts of belles
Whose eyes are like the antelope's. Will You forsake me ?
If You abandon me, I will deride and say that You are
The One whose throat is dark as You quaffed
The oceanic venom, the One who is virtueless, the One
Who is a mere man, the One who is of waning intellect
And the great and hoary Mendicant. Thus and thus
Will I leer at You, fleer at You and sneer at You.

The Ganga that flows in the crest of Siva,
Shores up white pearls, conches and *Mandaara* flowers.
In its dammed waters, the crescent floats as a barkentine.
You, O Lord, wear a wreath of *Kondrai* flowers.

I gained the hoary servitorship of Your blameless
And sacred feet; yet I let it slip away
I deride You bewildered. Will You forsake me ?

O Hero who wears on Your head a chaplet of skulls
Like unto a wreath of stars, You are adorned with
Jewels — the serpents firece as fire. Will You forsake me ?
If You abandon me, when the lofty ones question me thus :
"Whose servitor are You ?" I will tell them : "I am the servitor
Of the glorious servitors of the
King of Uttharakosamangkai"
And cause them laugh at You.

Will You forsake me ? If You do so, for the fault of ditching me
I will cause other to deride You. I will eke make all men
Say that I am solely dedicated to the service of the Lord-God.
Lo, I will rail You thus : "He indeed is the mad One
Who is clad in the skin of a firerce tusker; He is
The frenzied One who is robed in the skin
Of a tiger; He is the demented One who ate the venom;
He is the crazy One who dances in the fire
Of the rural crematorium; He is the lunatic
That has me as His servitor."

O One whose divine frame sports the sheen of a ruddy
Coral hill ! O One who has me as Your slave !
As of right, You are entitled to feast on Nectar.
Yet, pitying the petty beings, You quaffed
The *Halahala* venom that rose up with murderous speed.
Whether I, the basest, praise You or dispraise You,
I will rue my offense and will grieve distressed.
Will You alas, forsake me, poor me ?

Lines : 173 - 200

7

திருவெம்பாவை

तिरु ऍम्बाबै

சத்தியை வியந்தது

सत्तियै वियन्ददु

232. ஆதியும் அந்தமும் இல்லா அரும்பெரும்
சோதியை யாம்பாடக் கேட்டேயும் வாள்தடங்கண்
மாதே வளருதியோ வன்செவியோ நின்செவிதான்
மாதேவன் வார்கழல்கள் வாழ்த்திய வாழ்த்தொலிபோய்
வீதிவாய்க் கேட்டலுமே விம்மிவிம்மி மெய்ம்மறந்து
போதார் அமளியின்மேல் நின்றும் புரண்டிங்ஙன்
ஏதேனும் ஆகாள் கிடந்தா ளென்னேயென்னே
ஈதே யெந்தோழி பரிசேலோ ரெம்பாவாய்! 1

232. आदियुमन्तमुम् इल्ला अरुम्परुम्
चोतियै याम् पाडक् केट्टेयुम् वाळ्तडम् कण्
माते वळरुतियो वन्र्चवियो निन्र्चवितान्
मातेवन् वार्कऴल्गळ् वाऴ्त्तिय वाऴ्त्तॊलिपोय्
वीतिवाय्क् केट्टलुमे विम्मि विम्मि मॅय्म्मरन्दु
पोतार् अमळियिन् मेल् निन्ऱुम् पुरण्डिङ्ङन्
एतेनुम् माकाळ् किडन्ताळॅन्ने यॅन्ने
ईत ऍम् तोऴि परिशेलोरॅम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ -7 पंक्ति 1-8)

7

तिरुवेम्बावै

ईश-शक्ति से चमत्कृत होना

232. *आद्यंतरहित अनुग्रह परंज्योति का*
कीर्तिगान करती हुई आ रहीं हम वीथी पर
किंतु द्युतिमय विशाल नयनों की सखी !
कीर्तिगान सुनती हुई भी तुम
निद्रालीन कैसी हो
बोल, क्या तुम्हारे कान भी मंद हो गए
सुनो तो, जभी हम इधर आ रही थीं
महादेव के महिमामय चरणों का गान करती हुई
हठात् उठी एक सखी
सुबुक सुबुक कर रोने लगी
सुधबुध खो गई भक्ति-परवशता में
लोटती रही कुसुम-शय्या पर
अहा, प्रेमदशा वह कैसी थी !
क्या कहूँ मेरी प्रतिमा से सुंदर सलोनी सखी !

(तिरुमुरै आठ -7 पंक्ति 1-8)

233. பாசம் பரஞ்சோதிக் கென்பாய் இராப்பகல்நாம்
பேசும்போ தெப்போதிப் போதார் அமளிக்கே
நேசமும் வைத்தனையோ நேரிழையாய் நேரிழையீர்
சீசீ யிவையுஞ் சிலவோ விளையாடி
ஏசு மிடமீதோ விண்ணோர்கள் ஏத்துதற்குக்
கூசு மலர்ப்பாதந் தந்தருள வந்தருளும்
தேசன் சிவலோகன் தில்லைச்சிற் றம்பலத்துள்
ஈசனார்க் கன்பார்யாம் ஆரேலோ ரெம்பாவாய்! 2

233. पाशम् परञ्जोतिकॅन्बाय् इराप्पगल् ताम्
पेशुम्पोदॅप्पोदिप्पोदार् अमळिक्के
नेशमुम् वैत्तनैयो नेरिऴैयाय् नेरिऴैयीर्
चीची इवैयुम् चिलवो विळैयाडि
एशुमिडमीदो विण्णोर्गकेत्तुतर्कुक्
कूसु मलर्प्पादम् तन्दरुळ वन्दरुळुम्
तेशन् शिवलोकन् तिल्लैच् चिट्रम्बलत्तुळ्
ईशनार्क्कॅन्बर यामारेलोरॅम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ -7 पंक्ति 9-16)

234. முத்தன்ன வெண்ணகையாய் முன்வந் தெதிரெழுந்தென்
அத்தன் ஆனந்தன் அமுதனென் றள்ளூறித்
தித்திக்கப் பேசுவாய் வந்துன் கடைதிறவாய்
பத்துடையீர் ஈசன் பழஅடியீர் பாங்குடையீர்
புத்தடியோம் புன்மைதீர்த் தாட்கொண்டாற் பொல்லாதோ
எத்தோநின் அன்புடைமை எல்லோம் அறியோமோ
சித்தம் அழகியார் பாடாரோ நஞ்சிவனை
இத்தனையும் வேண்டும் எமக்கேலோ ரெம்பாவாய்! 3

234. मुत्तन्न वॅण्णगैयाय् मुन्वन्दॅदिरॅऴुन्दॅन्
अत्तन् आनन्दन् अमुदनॅन्रु अळ्ळूरित्
तित्तिक्कप् पेशुवाय् वन्दुन् कडै तिऱवाय्
पत्तुडैयीरीशन् पऴवडियीर् पाङ्गुडैयीर्
पुत्तडियोम् पुन्मै तीर्त्ताट्कॉण्डाऱ् पॉल्लादो
ऍत्तो निन्नन्बुडैमै ऍल्लाम् अऱियोमो
चित्तमऴगियार् पाडारोनम् शिवनै
इत्तनैयुम् वेण्डुम् ऍमक्केलो रॅम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ -7 पंक्ति 17-24)

233. *बात बात में कहा करती थी तुम निशिदिन*
लगन लगी है तो एक उसी परंज्योति स्वरूप से
सर्वालंकार - भूषिता तुम्हारी
आज आसक्ति हो गई सुमनशय्या से ?
सुरुचिर आभूषणों से युत सखियो !
धत् छोड़ो इन छोटी-छोटी बातों को
क्रीड़ा-विनोद के लिए यहाँ समय कहाँ ?
देवगण भी हिचकते हैं सोचते हैं दो बार -
कि हममें पात्रता है प्रभु-उपासना की
ऐसे परमेश्वर पधारे हुए हैं
तिल्लै चिदम्बरम् की चित्सभा में हमें अनुगृहीत करने के हित
ज्ञान नहीं है तो क्या ? प्रेम है भक्ति है हृदय में
प्रतिमा सम सुंदर सलोनी सखी !

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 9-16)

234. *"मोती सरिस दाँतों वाली सखी !*
अभी कल परसों कह रही थी सबके सामने
मधुमत्तमा जिह्वा से मधुरिम हृदय से
कि मेरे तात हैं आनंदमय अमृतस्वरूप
कैसी निद्रा में पड़ी हो ऐसी भक्तिन ?
आओ शय्या तजकर और खोलो कपाट"
"मान लिया सखियो पहले से ही अनुरक्ता हो तुम सभी जन
निष्ठा में कर्मठता में संदेह नहीं
यह भी सत्य है दोषों पर ध्यान दिए बिना
अपनाया है नाथ ने हम नई भक्तिनों को
क्या हानि हो गई ? बोलो तो !"
"बहकाना मत सखी ! हमें भी विदित है
नाथ पर तुम्हारी आसक्ति कितनी गहरी है"
"इन बातों में क्या रखा है ?
पात्र हैं सभी जन शिव का कीर्तिगान करने के लिए
जिनका चित्त भक्ति से पका हुआ है
पुतली सी सुकुमार सखी ! मान लो इस बात को"।

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 17-24)

235. ஒண்ணித் திலநகையாய் இன்னம் புலர்ந்தின்றோ
வண்ணக் கிளிமொழியா ரெல்லாரும் வந்தாரோ
எண்ணிக்கொ டுள்ளவா சொல்லுகோம் அவ்வளவுங்
கண்ணைத் துயின்றவமே காலத்தைப் போக்காதே
விண்ணுக் கொருமருந்தை வேத விழுப்பொருளைக்
கண்ணுக் கினியானைப் பாடிக் கசிந்துள்ளம்
உண்ணெக்கு நின்றுருக யாம்மாட்டோம் நீயேவந்து
எண்ணிக் குறையில் துயிலேலோ ரெம்பாவாய்! 4

235. ऑण्णित्तिल नगैयाय् इन्नम् पुलर्न्दिन्ऱो
वण्णम् किळिमॊऴियार् ऍल्लारुम् वन्दारो
ऍण्णिक्कॊडु उळ्ळवा चॊल्लुगोम् अव्वळवुम्
कण्णैत्तुयिन्ऱवमे कालत्तैप् पोक्कादे
विण्णुक्कॊरु मरुन्दै वेद विऴुप्पॊरुळै
कण्णुक्किनियानैप् पाडिक्कशिन्दुळ्ळम्
उळ् नॆक्कु निन्ऱुरुग याम् माट्टोम् नीये वन्दु
ऍण्णिक् कुऱैयिल् तुयिलेलोरॆम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 25-32)

236. மாலறியா நான்முகனுங் காணா மலையினைநாம்
போலறிவோ மென்றுள்ள பொக்கங்க ளேபேசும்
பாலூறு தேன்வாய்ப் படிறீ கடைதிறவாய்
ஞாலமே விண்ணே பிறவே அறிவரியான்
கோலமும் நம்மைஆட் கொண்டருளிக் கோதாட்டும்
சீலமும் பாடிச் சிவனே சிவனேயென்று
ஓலம் இடினும் உணராய் உணராய்காண்
ஏலக் குழலி பரிசேலோ ரெம்பாவாய்! 5

236. मालरिया नान्मुगनुम् काणा मलैयिनै नम्
पोलरिवोमॆन्ऱुळ्ळ पॊक्कङ्गळे पेशुम्
पालूऱु तेन्वाय्प् पडिरी कडै तिऱवाय्
ञालमे मण्णे पिऱवे अऱिवरियान्
कोलमुम् नम्मै आट्कॊण्डरुळिक् कोदाट्टुम्
शीलमुम् पाडिच्चिवने शिवने ऍन्ऱु
ओलमिडिनुम् उणराय् उणराय् काण्
एलक् कुऴलि परिशेलोरॆम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 33-40)

235. *"मुक्ता सरिस कलहासिनी, सखी*
क्या तुम्हारे लिए अभी नहीं फटी पौ"
"बोलो सभी शुकबैनियाँ आ जुटीं ?"
"अच्छा गिनकर बता रही हैं अभी
पर इस बीच में कहीं झपकी न ले लेना
नींद में व्यर्थ न करो अमूल्य समय को
प्रेम में पग कर हृदय पसीज कर
कीर्तिगान करो परमेश्वर का
देवगण के लिए जो अमृतमय है
वेदों के लिए जो आराध्य है
नयनों के लिए आनंददायक है"
"अरी फिर सोने का उपक्रम है
उठकर आना गिन लेना अपने आप
सभी शुकबैनियाँ आ गई कि नहीं,
गिनती में कम निकलें तो सो लेना फिर से
पुतली सी सलोनी मेरी सखी !"

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 25-32)

236. *अलख अदृश्य रहा वह ज्योति-पर्वत*
पालक विष्णु और सर्जक विरिंचि के लिए भी
हम साधारण मनुष्यों की क्या औकात ?
अरी दुग्धसम मधुसम मधुरवचनी !
नाथ - उपासना में ठगी करने वाली
सखी उठकर आओ तो कपाट खोलो तो
गा रही हैं हम उसका कीर्तिगान
अविदित जो है धरती-अंबर के लिए
इतर सकल भुवन के लिए
गा रही हैं कैसे हमारे नाथ ने
अपनाया हमें अपनी शक्ति से शील-सौंदर्य से
करती हैं हर हर शिव शिव जय का उद्घोष
अरी सुगंध कुंतला निद्राप्रिय सखी
तब भी सुनती नहीं हो जागती नहीं हो
पुतली सी सुंदर सलोनी सखी हमारी !

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 33-40)

237. மானேநீ நென்னலை நாளைவந் துங்களை
நானே யெழுப்புவன் என்றலும் நாணாமே
போன திசைபகரா யின்னம் புலர்ந்தின்றோ
வானே நிலனே பிறவே அறிவரியான்
தானேவந் தெம்மைத் தலையளித்தாட் கொண்டருளும்
வான்வார் கழல்பாடி வந்தோர்க்குன் வாய்திறவாய்
ஊனே உருகா யுனக்கே உறும்எமக்கும்
ஏனோர்க்குந் தங்கோனைப் பாடலோ ரெம்பாவாய்! 6

237. माने नीं नंन्नलै नाळै वन्दुङ्गळै
नाने ऍऴुप्पुवन् एन्ऱलुम् नाणामे
पोन तिशै पगराय् इन्नम् पुलर्न्दिन्ऱो
वाने निलने पिऱवे अऱिवरियान्
ताने वन्दॅम्मैत् तलैयळित्ताट्कॉण्डरुळुम्
वान् वार् कऴल् पाडि वन्दोर्क्कुन् वाय् तिऱवाय्
ऊने उरुगा उनक्के उऱुम् ऍमक्कुम्
एनोर्क्कुम् तम् कोनैप् पाडेलोरॅम्बाय् !

(तिरुमुऱै आठ -7 पंक्ति 41-48)

238. அன்னே யிவையுஞ் சிலவோ பலஅமரர்
உன்னற் கரியான் ஒருவன் இருஞ்சீரான்
சின்னங்கள் கேட்பச் சிவனென்றே வாய்திறப்பாய்
தென்னாஎன் னாமுன்னந் தீசேர் மெழுகொப்பாய்
என்னானை யென்னரையன் இன்னமுதென் றெல்லோமும்
சொன்னோங்கேள் வெவ்வேறாய் இன்னந் துயிலுதியோ
வன்னெஞ்சப் பேதையர்போல் வாளா கிடத்தியால்
என்னே துயிலின் பரிசேலோ ரெம்பாவாய்! 7

238. अन्नेयिवैयुम् चिलवो पलअमरर्
उन्नदर्क्कअरियान् ऑरुवन् इरुम् चीरान्
चिन्नङ्गळ् केट्पच् शिवनॅन्ऱे वाय् तिऱप्पाय्
तॅन्ना ऍन्ना मुन्नम् तीचेर् मॆऴुगॊपाय्
ऍन्नानै ऍन् अरैयन् इन्नमुदॅन्ऱॅल्लोमुम्
चॉन्नोम् केळ् वॅव्वेराय् इन्नम् तुयिलुदियो
वन् नॅञ्जप् पेदैयर् पोल् वाळा किडत्तियाल्
ऍन्ने तुयिलिन् परिशेलो रॅम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ -7 पंक्ति 49-56)

237. *हिरनी सी बाले ! बड़ी हाँक रही थी डींग*
कि कल उषःकाल में आके स्वयं जगाऊँगी सब को
निर्लज्जता की कोई सीमा है ?
किस दिशा को चली गई वह तुम्हारी डींग ?
लगता है पौ नहीं फटी अब भी तुम्हारे लिए
देखती नहीं कीर्तिगान कर रही हैं हम
परमेश्वर के तुंग चरणों का जो अगम है अग्राह्य हैं
पृथ्वी अंबर और इतर लोक के लिए
हमारी श्लाघा में एक शब्द भी नहीं ?
लगता है यही है तुम्हारी प्रकृति
कम से कम हमारे लिए कीर्तिगान करो प्रभु का
द्वार पर आकर जो हम गा रही हैं
पुतली सम सुंदरी सखी
इस बात को मान लो यह ढंग
शोभा नहीं देती किसी भक्तिमती के लिए।

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 41-48)

238. *अरी माँ, तुम्हारी यह प्रकृति नई निराली है*
पूर्व में जब दूर पर सुनाई देती काहल-ध्वनि
अमरगणों के लिए भी अग्राह्य
अनुपम अद्वितीय महादेव के आगमन को
सूचित करती काहल-ध्वनि -
सुनते ही तुम सबसे पहले घोषणा करती
'पधार रहे हैं शिवराज हमारे नाथ'
नाथ-नाम के श्रवण मात्र से पिघल जाती पसीज जाती
अनल में पड़े मोम के समान
किंतु आज तुम्हें यह क्या हो गया ?
पृथक् पृथक् से हम सभी पुकार रही हैं
हे मेरे प्रिय नाथ ! प्रभु ! अमृत स्वरूप !
फिर भी अनसुनी करती हुई सो रही हो
पाषाण हृदय मतिहीना सी
प्रतिमा सी सलोनी हमारी सखी !
बोलो, यह कैसी निद्रा है।

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 49-56)

239. கோழி சிலம்பச் சிலம்புங் குருகெங்கும்
ஏழில் இயம்ப இயம்பும்வெண் சங்கெங்கும்
கேழில் பரஞ்சோதி கேழில் பரங்கருணை
கேழில் விழுப்பொருள்கள் பாடினோங் கேட்டிலையோ
வாழியீ தென்ன உறக்கமோ வாய்திறவாய்
ஆழியான் அன்புடைமை ஆமாறும் இவ்வாறோ
ஊழி முதல்வனாய் நின்ற ஒருவனை
ஏழைபங் காளனையே பாடலோ ரெம்பாவாய்! 8

239. कोऴि चिलम्बच् चिलम्बुम् कुरुगॅङ्गुम्
एऴिलियम्ब इयम्बुम् वॆण् चङ्गॅङ्गुम
केऴिल् परञ्जोति केऴिल् परङ्करुणै
केऴिल् विऴुप्पॊरुळ्गळ् पाडिनोम् केट्टिलैयो
वाऴि ईदॆन्न उऱक्कमो वाय् तिऱवाय्
आऴियान् अन्बुडैमै आमाऱुम् इव्वाऱो
ऊऴि मुदल्वनाय् निन्ऱ ऒरुवनैं
एऴै पङ्गाळनैये पाडेलोरॅम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ -7 पंक्ति 57-64)

240. முன்னைப் பழம்பொருட்கு முன்னைப் பழம்பொருளே
பின்னைப் புதுமைக்கும் பேர்த்துமப் பெற்றியனே
உன்னைப் பிரானாகப் பெற்றவுன் சீரடியோம்
உன்னடியார் தாள்பணிவோம் ஆங்கவர்க்கே பாங்காவோம்
அன்னவரே எங்கண ராவார் அவருகந்து
சொன்ன பரிசே தொழும்பாய்ப் பணிசெய்வோம்
இன்ன வகையே யெமக்கெங்கோன் நல்குதியேல்
என்ன குறையு மிலோமேலோ ரெம்பாவாய்! 9

240. मुन्नैप् पऴम्पॊरुट्कु मुन्नैप् पऴम् पोरुळे
पिन्नैप् पुदुमैक्कुम् पेर्त्तुम् पॆट्रियने
उन्नैप् पिरानागप् पॆट्रवुन् चीरडियोम्
उन्नडियार् ताळ्पणिवोम् आङ्गवर्क्के पाङ्गावोम्
अन्नवरे एङ्कणवर् आवारवरुगन्दु
चॊन्न परिशे तॊऴुम्बाय्प् पणिचॆय्वोम्
इन्न वगैये ऍम क्कॅङ्गो नल्गुदियेल्
ऍन्न कुऱैवु मिलोम् एलोरॅम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ -7 पंक्ति 65-72)

239. कूजन कर रहे हैं कुक्कुट
चहक रहे हैं विहगकुल सप्त स्वर में
मधुर स्वर में गुंजायमान है शुभ्र शंख भी
यशोगान कर रही हैं हम
अनुपम परंज्योति का
अद्‌भुत करुणा सागर का
अद्वितीय परमेश्वर का
क्या तुम्हारे कान में नहीं पड़ते कीर्तिगान
जुग जुग जियो सखि ! तनिक बता तो सही
ऐसी भी होती है निद्रा
क्या यही ढंग होता है शिव के प्रति आसक्ति का
प्रतिमा सदृश सुंदर सखी
सकल सृष्टि के आदि पुरुष का
कीर्तिगान करो अनाथ-नाथ का
यशोगान करो प्रेम से।

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 57-64)

240. सनातन पुरुष वह चिरंतन भी है
पुरातन वस्तुओं से अति पुरातन
नवीन से नवीन के लिए अतिनूतन भी
ऐसे महिमामय प्रभो ! धन्य हैं हम
जो तुम्हें नाथ रूप में पा गई हैं
चरणकमल पर सतत प्रणत हैं
नमन करेंगी तुम्हारे भक्तों के चरण पर
धन्यात्मा उन्हें मानेंगी पति रूप में
जैसा वे कहें सेवा करेंगी निष्ठा से
हे नाथ ऐसा अनुग्रह करो
कोई अभाव रहेगा नहीं हमारे लिए
प्रतिमा सरिस सलोनी सखी
सुन कर समझ लो मन में गुन लो।

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 65-72)

241. பாதாளம் ஏழினுங்கீழ் சொற்கழிவு பாதமலர்
போதார் புனைமுடியும் எல்லாப் பொருள்முடிவே
பேதை ஒருபால் திருமேனி ஒன்றல்லன்
வேதமுதல் விண்ணோரும் மண்ணும் துதித்தாலும்
ஓத உலவா ஒருதோழந் தொண்டருளன்
கோதில் குலத்தரன்றன் கோயிற் பிணாப்பிள்ளைகாள்
ஏதவனூர் ஏதவன்பேர் ஆருற்றார் ஆரயலார்
ஏதவனைப் பாடும் பரிசேலோ ரெம்பாவாய்! 10

241. पाताळमेऴिनुम्कीऴ् चॊऱ्कऴिवु पादमलर्
पोदार् पुनै मुडियुम् ऍल्लाप् पॊरुळ् मुडिवे
पेदैयॊरुपाल् तिरुमेनि ऒन्ऱल्लन्
वेदमुदल् विण्णोरुम् मण्णुम् तुतित्तालुम्
ओद उलवा ऒरुतोऴन् तॊण्डरुळन्
कोदिल् कुलत्तरन् तन् कोयिर् पिणाप्पिळ्ळैकाळ्
एदवनूर् एदवन् पेर् आरुट्रार् आरयलार्
एदवनैप् पाडुम् परिशेलोरॆम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ -7 पंक्ति 73-80)

242. மொய்யார் தடம்பொய்கை புக்கு முகேரென்னக்
கையாற் குடைந்து குடைந்துன் கழல்பாடி
ஐயா வழியடியோம் வாழ்ந்தோங்காண் ஆரழல்போற்
செய்யாவெண் ணீறாடி செல்வா சிறுமருங்குல்
மையார் தடங்கண் மடந்தை மணவாளா
ஐயா நீ ஆட்கொண் டருளும் விளையாட்டின்
உய்வார்கள் உய்யும் வகையெல்லாம் உய்ந்தொழிந்தோம்
எய்யாமற் காப்பாய் எமையேலோ ரெம்பாவாய்! 11

242. मॊय्यार् तडम् पॊय्गै पुक्कु मुगेरॆन्नक्
कैयार् कुडैन्दु कुडैन्दुन् कऴल् पाडि
ऐया वऴियडियोम् वाऴ्न्दोम् काणारऴल् पोल्
चॆय्या वॆण्णीराडि चॆल्वा चिरुमरुङ्गुल्
मैयार् तडङ्कण् मडन्दै मणवाळा
ऐया नी आट्कॊण्डरुळुम् विळैयाट्टिन्
उय्वार्गळ् उय्युम् वगै ऍल्लाम् उयन्दॊऴिन्दोम्
मॆय्यामर् काप्पायमै एलोलेरॆम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ -7 पंक्ति 81-88)

241. *व्याप्त हैं पाताल लोक तक*
प्रभु के दिव्य चरण वर्णनातीत चरण
पुष्पालंकृत शीर्ष में होता है सकल चराचर का विलय
विलसित है देह के अर्धांग में माँ उमा
एक नहीं वह विविध रूप हैं अनेक हैं
चारों वेद स्तुतिरत हैं निरंतर
गान करते रहते हैं भू और स्वर्ग के निवासी
तब भी उसकी महिमा होती नहीं पूर्ण
इतनी महिमा का धनी सबका मित्र है सेवक भी
निष्कलंक बैभव का धनी है मंदिर में समागत सखियो,
सुन लो धाम नहीं है उसका नाम भी नहीं है
बंधु-बांधव नहीं है अपना-पराया नहीं
वाचामगोचर महिमा को सुन लो
प्रतिमा सम सुंदरी सलोनी सखी सुनकर समझो मन में गुन लो।

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 73-80)

242. *निमज्जन हेतु आई हैं हम अनुग्रह-सर में*
उतर रही हैं जलपूरित गहिर सरोवर में
हमारे उछलने से निकल रही है चपाक-चपाक ध्वनि जल में
भुजाएँ मार मार कर गोता लगा रही हैं
यशोगान कर रही हैं तुम्हारे चरणयुगल का
हे तात ! हम दासी हैं तुम्हारी जन्म जन्मांतरों से
सनी-पगी हैं प्रेम के माधुर्य में
कुटी हुई हैं निष्ठा से एकतानता से ध्यान में
ज्वलित लपट सम अरुण देहकांति के धनी
धवल भस्म से भूषित है सकल देह समस्त विभूतियों के धाम हो तुम
प्रिय पति हो तन्वंगी उमा के शोभित हैं जिनके अंजनरंजित नयन
प्रभो ! भक्तों पर अनुग्रह करना लीलामात्र है
इसी लीला से उन्नत पद पा गई हैं हम
निमग्न हैं आनन्द के वारिधार में बस इतना अनुग्रह करो नाथ
कि शाश्वत रहे हमारी यह अनुरक्ति
प्रतिमा सी सुंदर सलोनी सखी गुन लिया न इन मधुमय वचनों को?

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 81-88)

243. ஆர்த்த பிறவித் துயர்கெடநாம் ஆர்த்தாடும்
தீர்த்தன்நற் றில்லைச்சிற் றம்பலத்தே தீயாடும்
கூத்தனிவ் வானுங் குவலயமும் எல்லோமும்
காத்தும் படைத்துங் கரந்தும் விளையாடி
வார்த்தையும் பேசி வளைசிலம்ப வார்கலைகள்
ஆர்ப்பரவஞ் செய்ய அணிகுழல்மேல் வண்டார்ப்பப்
பூத்திகழும் பொய்கை குடைந்துடையான் பொற்பாதம்
ஏத்தி இருஞ்சுனைநீ ராடேலோ ரெம்பாவாய்! 12

243. आर्त्त पिऱवित् तुयर् कॅड नामार्त्ताडुम्
तीर्त्तन्नल् तिल्लैच्चिट्रम्बलत्ते तीयाडुम्
कूत्तानिव्वानुम् कुवलयमुम् ऍल्लोमुम्
कात्तुम् पडैत्तुम् करन्दुम् विडैयाडि
वार्त्तैयुम् पेशि वळै चिलम्ब वार् कलैकळ्
आर्प्परवम् चॅय्य वणिकुऴल् मेल् वण्डार्प्पप्
पूत्तिगऴुम् पॉय्गै कुडैन्दुडैयान् पॉऱ्पादम्
एत्ति इरुञ्चुनै नी नीराडे लोरॅम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 89-96)

244. பைங்குவளைக் கார்மலராற் செங்கமலப் பைம்போதால்
அங்கங் குருகினத்தாற் பின்னும் அரவத்தால்
தங்கள் மலங்கழுவு வார்வந்து சார்தலினால்
எங்கள் பிராட்டியும் எங்கோனும் போன்றிசைந்த
பொங்கு மடுவிற் புகப்பாய்ந்து பாய்ந்துநம்
சங்கஞ் சிலம்பச் சிலம்பு கலந்தார்ப்பக்
கொங்கைகள் பொங்கக் குடையும் புனல்பொங்கப்
பங்கயப் பூம்புனல்பாய்ந் தாடேலோ ரெம்பாவாய்! 13

244. पैङ्कुवळैक् कार्मलराल् चॅङ्कमलप् पैम्पोदाल्
अङ्गम् कुरुगिनत्तार् पिन्नुमरवत्ताल्
तङ्गळ् मलङ् कऴुवार् वन्दु चार्दलिनाल्
ऍङ्गळ् पिराट्टियुम् ऍङ्कोनुम् पोन्ऱिशैन्द
पॉङ्गु मडुविऱ् पुगप्पाय्न्दु पाय्य्न्दु नम्
चङ्गम् चिलम्बच् चिलम्बु कलन्दार्प्प
कॉङ्गैगळ् पॉङ्गक् कुडैयुम् पुनल् पॉङ्गप्
पङ्गयप् पूम्पुनल् पाय्न्दाडेलो रॅम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 97-104)

243. *भव बंधन हमारा कट जाए इसके लिए*
नाच रही हैं हम उल्लसित होकर प्रभु-प्रेम में
गोता लगा रही हैं प्रेमानुग्रह सर में
तीर्थपाद वह तीर्थस्वरूप है अति पावन तिल्लै चिदंबरम् में
नर्तित है नाच रही करतल पर वह्निज्वाल
लीला से कर रहा है पंचकृत्य
सृष्टि स्थिति संहार तिरोधान और अनुग्रह
आओ सखियो, यशोगान करते हुए नाथ का
गोता लगाएँ सुमन मंडित शीतल सरोवर में
खनक उठें चूडियाँ कर में
उमगते कटितट पर खनके मेखला के घुंघरू
झंकार करें सुभग कुंतल पर भ्रमर कुल
यशोगान करते हुए कणकमय चरणयुगल का
गोता लगाएँ अनुग्रह सरोवर में उल्लास से
प्रतिमा सी सुकुमारी सखी सुविचार यह सुनने गुनने के लिए है।

(तिरुमुऱै आठ -7 पंक्ति 89-96)

244. *शिवशक्ति स्वरूप है यह पावन तड़ाग*
विकसे हैं अरुण कमल के संग नीलोत्पल
चहक रहे हैं सुभग मनोहर खगकुल
वेणी रचा रहे हैं उरगगण परस्पर गुंथकर
शिवशक्ति स्वरूप इस सरोवर में
एकत्र हुए हैं ईश पर आसक्त जन दूर करने को देह का मल
झपट पड़ें जल में उछल कूद मचाएँ
गोता लगा-लगाकर उद्वेलित करें जल को
किलक उठें शंख की चूडियाँ कर में
झनक उठें नूपुर युगल पाँवों में स्फीत हो जाएँ आह्लाद से स्तनभार
आओ जी भर स्नान करें गोता लगाएँ
प्रेम की अनुग्रह की इस वारिधार में
उमग उठे उल्लास से सरोवर का जल भी
प्रतिमा सम सुकुमारी सखी !
सुनो उठो स्नान करो गुन लो इन बातों को।

(तिरुमुऱै आठ -7 पंक्ति 97-104)

245. காதார் குழையாடப் பைம்பூண் கலனாடக்
கோதை குழலாட வண்டின் குழாமாடச்
சீதப் புனலாடிச் சிற்றம் பலம்பாடி
வேதப் பொருள்பாடி அப்பொருளா மாபாடிச்
சோதி திறம்பாடிச் சூழ்கொன்றைத் தார்பாடி
ஆதி திறம்பாடி அந்தமா மாபாடிப்
பேதித்து நம்மை வளர்த்தெடுத்த பெய்வளைதன்
பாதத் திறம்பாடி ஆடேலோ ரெம்பாவாய்! 14

245. कादार् कुऴैयाडप् पैम्पूण् कलनाडक्
कोदै कुऴलाड वण्डिन् कुऴामाड
शीतप् पुनलाडि चिट्रम्बलम् पाडि
वेदप् पॊरुळ्पाडि अप्पॊरुळामापाडिच्
चोति तिऱम् पाडि चूऴ्कॊन्ऱैत् तार् पाडि
आदि तिऱम् पाडि अन्तमा मापाडिप्
पेदित्तु नम्मै वळर्त्तॆडुत्त पॆय्वळैतन्
पादत्तिऱम् पाडि आडेलोरॆम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 105-112)

246. ஓரொருகால் எம்பெருமான் என்றென்றே நம்பெருமான்
சீரொருகால் வாயோவாள் சித்தங் களிகூர
நீரொருகா லோவா நெடுந்தாரை கண்பனிப்பப்
பாரொருகால் வந்தனையாள் விண்ணோரை தான்பணியாள்
பேரரையற் கிங்ஙனே பித்தொருவ ராமாறும்
ஆரொருவ ரிவ்வண்ணம் ஆட்கொள்ளும் வித்தகர்தாள்
வாருருவப் பூண்முலையீர் வாயார நாம்பாடி
ஏருருவப் பூம்புனல்பாய்ந் தாடேலோ ரெம்பாவாய்! 15

246. ओरॊरु कालॆम्पॆरुमान् ऍन्ऱॆन्ऱे नम्पॆरुमान्
चीरॊरुकाल् वायोवाळ् चित्तम् कळिकूर
नीरॊरुकालोवा नॆडुन्तारै कण्पनिप्पप्
पारॊरुकाल् वन्दनैयाळ् विण्णोरैत्तान् पणियाळ्
पेररैयर् किङ्ङने पित्तॊरुवरामाऱुम्
आरॊरुवर् इव्वण्णम् आट्कॊळ्ळुम् वित्तगर् ताळ्
वारुरुवप् पूण्मुलैयीर् वायार नाम् पाडि
एरुरुवप् पूम्पुनल् पायन्दाडेलोरॆम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 113-120)

245. आओ गोता लगाएँ सरोवर जल में जी भर कर
डोलें कानों पर ये मकर कुंडल डोलें अंग अंग पर कनक के गहने
डोलें कुसुम सुवासित कुंतल भी
डोलें फूलों की चाहत लेकर आए भ्रमर भी
आओ गोता लगाएँ शीतल जल में सब कुछ भूलकर
फिर गाएँ स्तवन करें चिदम्बरनाथ का
वेदवेद्य वेद-स्वरूप वह प्राप्य है हमारे लिए
जाज्वल्यमान ज्योतिराट् परमज्ञान का
शोभित जिसके जटामुकुट पर कोन्रै माल्य आद्यंतविहीन
एक वही रहता है सृष्टि के पूर्व भी प्रलय के बाद भी
प्रपंच से विलग करके हम पर बरसाता है अनुग्रह की वारिधार
विलस रहा महादेव कनक-वलय भूषित महादेवी के संग
गाएँ कीर्तिगान माँ के संग तात की गाएँ चरणकमल की महिमा
नाचें आनंद से भक्ति-परवशता में, पुतली सम सुकुमारी सखी
आओ प्रेम वारिधार में गोता लगाएँ, गाएँ, नाचें।

(तिरुमुरै आठ -7 पंक्ति 105-112)

246. कभी प्रलाप करती है मेरे नाथ ! मेर नाथ !
कभी बखान करती है नाथ की महिमा का निरंतर ही
और कभी तो हृदय में होता है आनंद का उत्स
बह रही ही वारिधारा नयन से आनंद की
फिर भी निरी धरती पर पड़ी मिलेगी
किसी समागत का नहीं करती आदर
चाहे वह कितना ही बुजुर्ग देव ही क्यों न हो
बावली सी दिग्भ्रमित रहेगी यों नाथ के प्रेम में मग्न वह
इस तरह किसी जीव को अनुगृहीत करने वाला
वह कौन होगा परमेश्वर को छोड़कर ?
तुंग स्तनों की धनी सखियो आओ स्तुतिगान करते हुए नाथ की
कूद पड़ें हम सुमन-मंडित सरोवर में
गोता लगाते हुए विलोड़ित करें जल को।

(तिरुमुरै आठ -7 पंक्ति 113-120)

247. முன்னிக் கடலைச் சுருக்கி யெழுந்துடையாள்
என்னத் திகழ்ந்தெம்மை ஆளுடையா ளிட்டிடையின்
மின்னிப் பொலிந்தெம் பிராட்டி திருவடிமேற்
பொன்னஞ் சிலம்பிற் சிலம்பித் திருப்புருவம்
என்னச் சிலைகுலவி நந்தம்மை ஆளுடையாள்
தன்னிற் பிரிவிலா எங்கோமான் அன்பர்க்கு
முன்னி அவள்நமக்கு முன்சுரக்கும் இன்னருளே
என்னப் பொழியாய் மழையேலோ ரெம்பாவாய்! 16

247. मुन्निक् कडलैच् चुरुक्कि ऍऴ् ुन्दुडैयाळ्
ऍन्नत् तिगऴ्न्दॅम्मै आळुडैयाळिट्टिडैयिन्
मिन्निप् पॉलिन्दॅम् पिराट्टि तिरुवडि मेऱ्
पॉन्नञ्चिलम्बिऱ् चिलम्बित् तिरुप्पुरुवम्
ऍन्नच् चिलैकुलवि नन्तम्मै आळुडैयाळ्
तन्निऱ् पिरिविला ऍङ्कोमानन्बर्क्कु
मुन्नि अवळ् नमक्कु मुन् चुरक्कु इन्नरुळे
ऍन्नप् पॉऴियाय् मऴैयेलोरॅम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 121-128)

248. செங்க ணவன்பால் திசைமுகன்பால் தேவர்கள்பால்
எங்கும் இலாததோர் இன்பம்நம் பாலதாக்
கொங்குண் கருங்குழலி நந்தம்மைக் கோதாட்டி
இங்குநம் இல்லங்கள் தோறும் எழுந்தருளிச்
செங்கமலப் பொற்பாதந் தந்தருளுஞ் சேவகனை
அங்கண் அரசை அடியோங்கட் காரமுதை
நங்கள் பெருமானைப் பாடி நலந்திகழப்
பங்கயப் பூம்புனல்பாய்ந் தாடேலோ ரெம்பாவாய்! 17

248. चॅङ्कणवन् पाल् तिशैमुगन् तेवर्गळ् पाल्
ऍङ्गुमिलाददोर् इन्बम् नम्पालदाक्
कॉङ्गुण् करुङ्कुऴलि नन्तम्मैक् कोदाट्टि
इङ्गुनम् इल्लङ्गळ् तोऱुम् ऍऴ् ुन्दरुळिच्
चॅङ्कमलप् पॉऱ्पादम् तन्दरुळुम् चेवकनै
अङ्कणरशै अडियोङ्कट् कारमुदै
नङ्गळ् पॅरुमानैप् पाडि नलम् तिगऴ्
पङ्कयप् पूम्पुनल पायन्दाडेलोरॅम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 129-136)

247. ओ वारिद ! सागर को सोख कर पान कर लिया नीर तुमने
अब जब ऊपर उठ रहे हो
लिये हो माँ परमेश्वरी की श्यामल द्युति को
जब तड़ित् चमकती है तुम पर
देखती हैं हम उमा का सुसूक्ष्म कटितट
जब तुम गर्जन करते हो मंद-मंद
सुनते हैं कनकमय नूपुर की खनक
महादेवी के पावन चरणों पर फेंकते हो अंबर तल पर इंद्रधनुष
अहा, स्मरण हो आती हैं अंबिका की भौंहें
हम पर अनुग्रह करती स्वामिनी है जिनसे विलग न होते प्रभु भी
हे वारिद ! जाके बरसो मां के भक्तों पर पहले
फिर हमें नहलाओ निज वारिधार में
प्रतिमा सी सलोनी सखी गोता लगाओ अनुग्रह-सर में
सुन लो गुन लो तत्त्व की बातें।

(तिरुमुऱै आठ -7 पंक्ति 121-128)

248. निसर्ग रूप से सुगंधित कुंतले ! सुनो !
मिल रहा है हमें ऐसा परम आनंद सहज ही
जो सुदुर्लभ था देवगण के लिए विष्णु के लिए भी
नाथ जब आकर दूर करता है त्रिमल
प्रिय का सान्निध्य अनुभूति में आता है
बरसाने के लिए अनुग्रह
पधार रहा है प्रभु गेह-गेह में और प्रदान करता है हमें
अरुणकमल सरिस चरणयुगल
करुणापूरित प्रभु के नयन
हम दास जनों के लिए पूर्ण अमृत है
इसी से प्राप्त होता है शिवज्ञान का पुण्य
आओ सखी ! कमलमंडित सरोवर में
गोता लगाएँ, यशोगान करें प्रभु-चरणों का
प्रतिमा निभ सलोनी सखी
आओ गोता लगाएँ अनुग्रह-सर में।

(तिरुमुऱै आठ -7 पंक्ति 129-136)

249. அண்ணா மலையான் அடிக்கமலஞ் சென்றிறைஞ்சும்
விண்ணோர் முடியின் மணித்தொகைவீ றற்றாற்போல்
கண்ணார் இரவி கதிர்வந்து கார்கரப்பத்
தண்ணார் ஒளிமழுங்கித் தாரகைகள் தாமகலப்
பெண்ணாகி ஆணாய் அலியாய்ப் பிறங்கொளிசேர்
விண்ணாகி மண்ணாகி யித்தனையும் வேறாகிக்
கண்ணா ரமுதமுமாய் நின்றான் கழல்பாடிப்
பெண்ணேயிப் பூம்புனல்பாய்ந் தாடேலோ ரெம்பாவாய்! 18

249. अण्णामलैयान् अडिक्कमलम् चॅन्ऱिरैञ्जुम्
विण्णोर् मुडियिन् मणित्तॉगै वीऱ्ट्राल् पोल्
कण्णारिरवि कदिर्वन्दु कार् करप्पत्
तण्णारॉळि मऴुङ्गित् तारकैगळ् तामगलप्
पॅण्णागि आणागि अलियायुप् पिऱङ्गॉळिचेर्
विण्णागि मण्णागि इत्तनैयुम् वेऱागिक्
कण्णारमुदमाय् निन्ऱान् कऴल् पाडिप्
पॅण्णे इप्पूम्पुनल् पाय्न्दाडेलोरॅम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 137-144)

250. உங்கையிற் பிள்ளை உனக்கே அடைக்கலமென்று
அங்கப் பழஞ்சொற் புதுக்குமெம் அச்சத்தால்
எங்கள் பெருமான் உனக்கொன் றுரைப்போங்கேள்
எங்கொங்கை நின்னன்ப ரல்லார்தோள் சேரற்க
எங்கை உனக்கல்லா தெப்பணியுஞ் செய்யற்க
கங்குல் பகலெங்கண் மற்றொன்றுங் காணற்க
இங்கிப் பரிசே எமக்கெங்கோன் நல்குதியேல்
எங்கெழிலென் ஞாயி றெமக்கேலோ ரெம்பாவாய்! 19

250. उङ्कैयिर् पिळ्ळै उनक्के अडैक्कलमॅन्ऱ्
अङ्गप्पऴञ्चॉल् पुदुक्कुम् ऎम् अच्चत्ताल्
ऎङ्गळ् पॅरुमान् उनक्कॉन्ऱु उरैप्पोम्केळ्
ऎम् कॉङ्गै निन्नन्बर् अल्लार् तोळ् चेरर्क
एम् कै उनक्कल्लादु ऎप्पणियुम् चॅय्यर्क
कङ्गुल् पगल् ऎम् कण् मट्रॉन्ऱुम् काणर्क
इङ्गिप्परिशे ऎमक्कु एङ्कोन् नल्गुदियेल्
ऎङ्कॅऴिलॅन् ञायिरॅमक्केलोरॅम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 145-152)

249. *कांतिहीन हो जाते हैं उनके किरीट के रत्न*
प्रणत होते हैं जब देवगण
अरुणाचलेश्वर के चरणकमल पर
प्रभाहीन हो जाता है प्रभु-सान्निध्य में
तमस को ध्वंस करता दिनकर भी
मंदमंद हो जाते हैं सुभग शीतल तारक भी
विलसित है प्रभु नर नारी क्लीव रूप में
सर्वस्वरूप वह इन सब से परे भी है
द्युतिमय नभ और अवनी सहित
पंचभूत स्वरूप वह इनके अतीत भी है
अनश्वर नित्यवस्तु वह महार्ह है
प्रतिमा सी सुंदर सलोनी सखी
आओ गोता लगाएँ प्रभु के अनुग्रह-सर में
यशोगान करते हुए चरणकमल का
सखी ! सुन लो और गुन लो तत्त्व की बातों को।

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 137-144)

250. *लोकोक्ति यह प्रसिद्ध है —*
तुम्हारे हाथ का शिशु तुम्हारे ही आश्रय में
सर्वज्ञ हे प्रभु ! हम काहे याद दिलाएं तुम्हें
इस लोकोक्ति के आशय की
हमारे नाथ ! सुनोगे ? एक निवेदन है चरणकमल पर
ऐसा अनुग्रह करो प्रभु
सेवा करें हम केवल तुम्हारे चरणकमल की
तुम्हारे भक्तों को छोड़ कर किसी से परिणय न करें हम
तुम्हारे चरणकमल छोड़कर किसी की सेवा न करें हम
तुम्हारे दिव्यदर्शन छोड़ कोई दृश्य न देखें निशिदिन
कृपा करके ऐसा अनुग्रह करोगे नाथ,
तो हम निवृत्त होंगे सकल मल से
पाएँगे तुम्हारे ही चरणकमल अंत में
प्रतिमा सरिस सुंदर सलोनी सखी
जान लो इस तत्त्व को गुन लो मन में बारंबार।

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 145-152)

251. போற்றி அருளுகநின் ஆதியாம் பாதமலர்
போற்றி அருளுகநின் அந்தமாஞ் செந்தளிர்கள்
போற்றியெல் லாவுயிர்க்குந் தோற்றமாம் பொற்பாதம்
போற்றியெல் லாவுயிர்க்கும் போகமாம் பூங்கழல்கள்
போற்றியெல் லாவுயிர்க்கும் ஈறாம் இணையடிகள்
போற்றிமால் நான்முகனுங் காணாத புண்டரிகம்
போற்றியாம் உய்யஆட் கொண்டருளும் பொன்மலர்கள்
போற்றியாம் மார்கழிநீ ராடேலோ ரெம்பாவாய்! 20

251. पोट्रि अरुळुग निन्नादियाम् पादमलर्
पोट्रि अरुळुग निन्नन्तमाम् चॅन्तळिर्गळ्
पोट्रि ऍल्ला उयिर्क्कुम् तोट्रमाम् पॉर्पादम्
पोट्रि ऍल्ला उयिर्क्कुम् पोगमाम् पूङ्कऴल्गळ्
पोट्रि ऍल्ला उयिर्क्कुम् ईऱामिणैयडिगळ्
पोट्रि माल् नान्मुगनुम् काणाद पुण्डरिकम्
पोट्रि यामुय्य आट्कॉण्डरुळुम् पॉन्मलर्गळ्
पोट्रि याम् मार्गऴिनीर् आडेलोरॅम्बावाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 7 पंक्ति 153-160)

251. सकल जगत् के आदिनाथ हो
नमन करते हैं तुम्हें प्रेमाभक्ति से
नमन है तुम्हारे चरणसुमन पर
स्थिर शाश्वत हैं ये चरण प्रपंच के बाद भी
प्रभो ! अनुग्रह बरसाएँ ये अरुणिम चरण
सकल जगत् का उदय स्थान जो हैं
नमन है कनकचरण पर
सकल जगत् के भोगस्वरूप ये चरण
नमन है कुसुम-निभ इन चरणों पर
सकल जगत् का विलय होता है इन चरण पर
बारंबार नमन है चरणयुगल पर
ऐसे पुंडरीक सुमन ये चरणकमल
अलख है आज तक विष्णु विरिंचि के लिए
इन चरणों पर सतत नमन है
कनकमय ये चरण अनुग्रह करते हैं
उद्धार करते हैं इन पर सदा नमन है
प्रतिमा सम सलोनी सुंदरी सखी
आओ गोता लगाएँ सरोवर में
मार्गशीर्ष के सुभग विहान पर।

(तिरुमुरै आठ - 7 पंक्ति 153-160)



स्रोत : तिरुवाचकम् - वर्ड बीटिफिक ; एस. ए. शंकरनारायनन्

Source : Tiruvacagam : Word Beatific by S.A. Sankaranarayanan

Light inlaid long eye-lashed dame ! having heard
unawares our singing the Great Lumen
dear to our eyes, without beginning,
of end bereft, why you sleep still ? Are you
stone deaf to what's said ? We hail the long
ankleted feet of Great Lord passaging
through the street. One like you (hears) wakes up convulsing;
in abandon falls from the floral foam;
swoons on the floor fit for nothing.
See, of what make hers is, whereas you wake not
still. Is it proper O pupil of the eye ?
What then ? May you heed us and do soul-search.

'Choice jewell'd dame ! Reposing love that binds us
to the great lumen, our lord, melting to
the bone night and day, when are we to speak
His praise ?, if you are but bed ridden thus ?'
sleep-crushed dame tells back : 'Tush, Friends, of your taunts
these are few. Is this the hour for chide and play ?
'Blabber not in sleep. Dear pupil like
fellow girl. Sivalokan, the Great lord
preceptor viewless to celestials
has deigned to grace us showing His feet.
Aren't we to love our lord, Tillai Gnostic
court ruler ?, we His vassals, Think, Listen.'

'O Pearly white teeth'd dame ! Gone are days
when you got up early; came to our front;
hailed Him 'Father mine, sheer Joy, Ambrosia;'
praised Him to your palate's delight; now
though we call you, you still haven't got up

and opened your doors.' Disturbed she says
'Devoted deeply to lord you are. In
the fold of servitors ancient, you have
great claim over Him. Condoning my meanness,
for I'm fresher, would it be wrong to accept ?'
'Is your love untrue ? we know. The pure sing
The lord and sing you must. Pupil like one. Think, listen'.

'Lustrous pearly smiled dame ! Has it not dawned
yet for you ?' Asked thus, she of beautiful
psittacine speech wondered if all have come.
Others assure her. We shall reckon all
that have reported. But meanwhile close not
your eyes and vain waste away this dawn.
Till hearts mellow let us all melt by singing
Him who is the matchless ambrosia
to the celestials, Him the Great Ens
preaching the Gnosis-scripture, granting darshan
dear to our eyes. Count them we can't; you might
rise up. If all aren't there, (you may) slip again into sleep.

O Dame of unguented locks ! Teasing one !
milk and honey oozing lipped, speaking false
as if we all would know the hill like mien
measureless of Him, whose feet Hari couldn't
reach, whose crest Ayan couldn't even see.
O you are still to shed you sleep, heedless
of our surrendering voices spelling out
in awe proclaiming 'Civane Civane'
craving His magnanimity to waive
our guilt, take us mean slaves, while He is of
a holy frame rare to eye for us, Devas,
others. Pupil-like one. Is it proper ? Heed us, think over.

Lines : 1 - 40

8

திருவம்மானை

तिरु अम्मानै

ஆனந்தக் களிப்பு

आनंदक्कळिप्पु

252. செங்கண் நெடுமாலுஞ் சென்றிடந்துங் காண்பரிய
பொங்கு மலர்ப்பாதம் பூதலத்தே போந்தருளி
எங்கள் பிறப்பறுத்திட் டெந்தரமும் ஆட்கொண்டு
தெங்கு திரள்சோலைத் தென்னன் பெருந்துறையான்
அங்கணன் அந்தணனாய் அறைகூவி வீடருளும்
அங்கருணை வார்கழலே பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 1

252. चॆंङ्कण् नॆडुमालुम् चॆन्ऱिडन्दुम् काणपरिय
पॊंङ्गु मलर्प्पादम् पूतलत्ते पोन्दरुळि
ऍङ्गळ् पिऱप्परुत्तिट्टु एन्तरमुम् आट्कॊण्डु
तॆङ्गु तिरळ् चोलैत् तॆन्नन् पॆरुन्तुऱैयान्
अङ्कणन् अन्तणनाय् अऱैकूवि वीडरुळुम्
अङ्करुणै वार् कऴले पाडुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 1-6)

8

तिरु अम्मानै

आनंदोल्लास

252. आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'
यशोगान करती हुई सुंदर चरणकमलों का
अलख अबूझ थे जो चरण कमलनयन के लिए भी
जो खराहरूप में धरणी खोदते नीचे तक चले थे
ऐसे महिमामय प्रभु
धरणी पर पग धर कर पधारे और
इस लघुजन को अपनाया भवताप हरकर
नारिकेल वृक्षों से वलयित
तिरुप्पंरुन्तुरै का अधीश वह
सुन्दर नयनों का धनी सुंदरेश है
जिन नयनों से बरसता है ज्ञानामृत
करुणाकर प्रभु ने बरबस बुलाया मुझे
और अनुग्रह दिया सायुज्य का
आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'
यशोगान करते हुए ऐसे महिमामय चरणों का।

(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 1-6)

253. பாரார் விசும்புள்ளார் பாதாளத் தார்புறத்தார்
ஆராலுங் காண்டற் கரியான் எமக்கெளிய
பேராளன் தென்னன் பெருந்துறையான் பிச்சேற்றி
வாரா வழியருளி வந்தென் உளம்புகுந்த
ஆரா அமுதாய் அலைகடல்வாய் மீன்விசிறும்
பேராசை வாரியனைப் பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 2

253. पारार् विशुम्बुळ्ळार् पाताळत्तार् पुऱत्तार्
आरालुम् काण्डर्करियान् ऍमक्कॅळिय
पेराळन् तॅन्नन् पॅरुन्तुऱैयान् पिच्चेट्रि
वारा वऴियरुळि वन्दॅन्नुळम् पुगुन्द
आरा अमुदाय् अलैकडलवाय् मीन्विशिऱुम्
पेराशै वारियनैप् पाडुदुम्काण् अम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 7-12)

254. இந்திரனும் மாலயனும் ஏனோரும் வானோரும்
அந்தரமே நிற்கச் சிவனவனி வந்தருளி
எந்தரமும் ஆட்கொண்டு தோட்கொண்ட நீற்றனாய்ச்
சிந்தனையை வந்துருக்குஞ் சீரார் பெருந்துறையான்
பந்தம் பறியப் பரிமேற்கொண் டான்தந்த
அந்தமிலா ஆனந்தம் பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 3

254. इन्दिरनु मालयनु मेनोरुम् वानोरुम्
अन्तरमे निर्कच् चिवन् अवनिवन्दरुळि
ऍन्तरमुम् आट्कॉण्डु तोट्कॉण्ड नीट्रनाय्च्
चिन्तनैयै वन्दुरुक्कुम् चीरार् पॅरुन्तुऱैयान्
पन्दम् परियप् परिमेल् कॉण्डान् तन्द
अन्तमिला आनन्दम् पाडुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 13-18)

253. *आओ सखियो, खेलें अम्मानै*
यशोगान करते हुए शिवराज प्रभु का
जो अलख अगम है
भूतल, स्वर्ग, पाताल के साथ
इतर लोक के निवासियों के लिए
किंतु हमारी पहुँच में है
सहृदय वह दक्षिण देश का अधीश
तिरुप्पंरुन्तुरै धाम में विराजे प्रभु
अनुगृहीत किया स्वयं आकर
बावली बना दिया मुझे प्रभु-प्रेम की
दिखा दिया मुक्ति का प्रशस्त मार्ग
आनन्दपूर्ण है अमृतस्वरूप की छवि
कभी नहीं अघाओगे दर्शन करती रहो
सुनी है उसकी लीला ?
मछुआरों के कुलपति के हित
जाल फैलाकर मत्स्य-बंधन भी किया था एक बार
महासागर में - हाँ भक्तों के लिए
वह करुणा का सागर है।

(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 7-12)

254. *पधारे थे प्रभु अश्वारूढ़ होकर मेरे समक्ष*
दक्षिणपति, तिरुप्पंरुन्तुरै के अधीश
धवल भस्म से विलेपित था अंगअंग
विस्मय से देख रहे थे नभतल पर खड़े
विष्णु विरिंचि और इंद्रादि सकल देव
आए प्रभु और अपना लिया मुझे
देवों की तुलना में मैं कहीं नहीं हूँ
काटकर सारे भवबंधन
प्रदान किया मुझे असीम आनंद
प्रभु महिमा का गान करें हम
आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'।

(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 13-18)

255. வான்வந்த தேவர்களும் மாலயனோ டிந்திரனும்
கான்நின்று வற்றியும் புற்றெழுந்துங் காண்பரிய
தான்வந்து நாயேனைத் தாய்போல் தலையளித்திட்டு
ஊன்வந் துரோமங்கள் உள்ளே உயிர்ப்பெய்து
தேன்வந் தமுதின் தெளிவின் ஒளிவந்த
வான்வந்த வார்கழலே பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 4

255. वान् वन्द तेवर्गलुम् मालयनोडिन्दिरनुम्
कान् निन्रु वट्रियुम् पुट्रॅऴुन्दुम् काणपरिय
तान् वन्दु नायेनैत् ताय् पोल् तलैयलित्तिट्टु
ऊन् वन्दु उरोमङ्गळ् उळ्ळे उयिर्प्पॅय्दु
तेन् वन्दमुदिन् तॅळिविन् ऑळिवन्द
वान् वन्द वार् कऴले पाडुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 19-24)

256. கல்லா மனத்துக் கடைப்பட்ட நாயேனை
வல்லாளன் தென்னன் பெருந்துறையான் பிச்சேற்றிக்
கல்லைப் பிசைந்து கனியாக்கித் தன்கருணை
வெள்ளத் தழுத்தி வினைகடிந்த வேதியனைத்
தில்லை நகர்புக்குச் சிற்றம் பலம்மன்னும்
ஒல்லை விடையானைப் பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 5

256. कल्ला मनत्तुक् कडैप्पट्ट नायेनै
वल्लाळन् तॅन्नन् पॅरुन्दुऱैयान् पिच्चेट्रिक्
कल्लैप् पिशैन्दु कनियाक्कित् तन्करुणै
वॅळ्ळत्तऴुत्ति विनै कडिन्द वेदियनैत्
तिल्लै नगर् पुक्कुच् चिट्रम्बलम् मन्नुम्
ऑल्लै विडैयानैप् पाडुड्डुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 25-30)

255. *आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'*
यशोगान करती हुई प्रभु चरणों का
जिनसे स्त्रवित होता है अमृत
जाज्वल्यमान दिव्य चरणों का
सुदुर्लभ है विष्णु विरिंचि इंद्रादि के लिए भी
ऋषि-मुनियों के लिए भी
शुष्क हो चली जिनकी काया
तपस्या करते करते वन वनांतरों में
उग आये चींटियों के बिल-वल्मीक-
ढकते हुए उनके शरीर
तब भी दर्शन न मिल पाए प्रभु के
किन्तु प्रभो, स्वयं आए तुम मेरे पास
बरसाया वात्सल्य माँ के समान
पुलकित हुए अंग-अंग रोमांच हो गया
हर कोशिका में स्त्रवित हुआ आनंदामृत
ज्योतिस्वरूप ! गाएँगे तुम्हारी महिमा को।

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 19-24)

256. *आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'*
यशोगान करते हुए करुणामय प्रभु का
निपट अज्ञान में पड़ी थी श्वान तुल्य होकर मैं
दक्षिणपति पेरुन्तुरै-अधीश ने
आकर ऐसा अनुग्रह बरसाया
कि बावली हो गई मैं उनके पीछे
दैया रे ! कैसा चमत्कार कर दिया
पाषाण सम मेरे हृदय को
मसल कर गूंथ कर
पक्व फल के समान मृदुल बना दिया
करुणा के सरोवर में दबोचकर मुझे
दूर कर दिया कर्म-ताप
आओ सखि गाएँ यशोगान परमोदार का।

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 25-30)

257. கேட்டாயோ தோழி கிறிசெய்த வாறொருவன்
தீட்டார் மதில்புடைசூழ் தென்னன் பெருந்துறையான்
காட்டா தனவெல்லாங் காட்டிச் சிவங்காட்டித்
தாள்தா மரைகாட்டித் தன்கருணைத் தேன்காட்டி
நாட்டார் நகைசெய்ய நாம்மேலை வீடெய்த
ஆள்தான்கொண் டாண்டவா பாடுதுங்காண்
அம்மானாய்! 6

257. केट्टायो तोऴि किरिचॅय्दवारॊरुवन्
तीट्टार् मदिल् पुडै चूऴ् तॅन्नन् पॅरुन्तुरैयान्
काट्टादन ऍल्लाम् काट्टिच् चिवम् काट्टित्
ताळ् तामरैकाट्टित् तन् करुणैत् तेन् काट्टि
नाट्टार् नगै चॅय्य नाम् मेलै वीडॅय्द
आळ्तान् कॉण्डाण्डका पाडुदुङ् काणम्मानाय् !
(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 31-36)

258. ஓயாதே உள்குவார் உள்ளிருக்கும் உள்ளானைச்
சேயானைச் சேவகனைத் தென்னன் பெருந்துறையின்
மேயானை வேதியனை மாதிருக்கும் பாதியனை
நாயான நந்தம்மை ஆட்கொண்ட நாயகனைத்
தாயான தத்துவனைத் தானே உலகேழும்
ஆயானை ஆள்வானைப் பாடுதுங்கான் அம்மானாய்! 7

258. ओयादे उळ्गुवार् उळ्ळिरुक्कुम् उळ्ळानैच्
चेयानैच् चेवकनैत् तॅन्नन् पॅरुन्तुरैयिन्
मेयानै वेदियनै मादिरुक्कुम् पादियनै
नायान नन्तम्मै आट्कॉण्ड नायकनैत्
तायान तत्तुवनैत् ताने उलगेऴुम्
आयानै आळ्वानैप् पाडुदुम् काणम्मानाय् !
(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 37-42)

257. *सुना मेरी प्रिय सखी !*
कैसा मायाजाल किया प्रभु ने ?
दक्षिणपति, प्राचीर-वलयित
तिरुप्पंरुन्तुरै के सुन्दरेश महाप्रभु ने
ऐसा दृश्य दिखा जो कभी देखा न था मैंने
अपना नित्य सत्य शिवस्वरूप दिखाया
दिखाया अरुणकमल से चरणयुगल
और अहा, आलोड़ित करुणा की मधुमय धार में
क्या जाने जग के निवासी इन बातों को
निमग्न जो हैं मायामय प्रपंच में
अनुगृहीत किया परमेश्वर ने
प्रदान करके मुक्ति-साम्राज्य
आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'
गान करती हुई प्रभु-महिमा का।

(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 31-36)

258. *आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'*
कीर्तिगान करती हुई प्रभु सुंदरेश का
विराजता है जो सहज ही में आकर
निरंतर ध्यान करते साधक-हृदय में
दूरस्थ प्रभु वह निकट आ जाता है
दक्षिणपति विराजे हैं पंरुन्तुरै में
वेदों से संस्तुत महादेव
जिनके वामभाग में लसित हैं उमा
ऐसे महिमामय प्रभु ने सहजता से
अनुगृहीत किया श्वानतुल्य इस जन को भी
मातृतुल्य हैं ममता-वात्सल्य में
विराजमान हैं एक साथ सप्त भुवन में
शासन करते हुए सब पर।

(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 37-42)

259. பண்சுமந்த பாடற் பரிசு படைத்தருளும்
பெண்சுமந்த பாகத்தன் பெம்மான் பெருந்துறையான்
விண்சுமந்த கீர்த்தி வியன்மண்ட லத்தீசன்
கண்சுமந்த நெற்றிக் கடவுள் கலிமதுரை
மண்சுமந்து கூலிகொண்டு அக்கோவால் மொத்துண்டு
புண்சுமந்த பொன்மேனி பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 8

259. पण्चुमन्द पाडऱ् परिशु पडैत्तरुळुम्
पॅण्चुमन्द पागत्तन् पॅम्मान् पॅरुन्तुऱैयान्
विण् चुमन्द कीर्ति वियन्मण्डलत्तीशन्
कण् चुमन्द नॅट्रिक्कडवुळ् कलिमदुरै
मण् चुमन्दु कूलि कॉण्डक् कोवान् मॉत्तुण्डु
पुण् चुमन्द पॉन्मेनि पाडुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 43-48)

260. துண்டப் பிறையான் மறையான் பெருந்துறையான்
கொண்ட புரிநூலான் கோலமா ஊர்தியான்
கண்டங் கரியான்செம் மேனியான் வெண்ணீற்றான்
அண்டமுத லாயினான் அந்தமிலா ஆனந்தம்
பண்டைப் பரிசே பழவடியார்க் கீந்தருளும்
அண்டம் வியப்புறுமா பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 9

260. तुण्डप्पिऱैयान् मऱैयान् पॅरुन्तुऱैयान्
कॉण्ड पुरिनूलान् कोलमा ऊर्दियान्
कण्डङ्करियान् चेम्मेनियान् वॅण्णीट्रान्
अण्डमुद्रलायिनान् अन्तमिला आनन्दम्
पण्डैप् परिशे पऴ वडियार्क्कीन्दरुळुम्
अण्डम् वियप्पुरुमा पाडुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 49-54)

259. *आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'*
गान करती हुई प्रभु की अनंत लीला का
जिन्होंने घोषित किया श्रेष्ठ काव्य के लिए
अगणित स्वर्ण मुद्राओं का उपहार
अपने ढंग का एक मात्र विलक्षण
जिसका वामभाग शासित है नारी से
नाथ वह अधीश है पंरुन्तुरै का
व्याप्त है कीर्ति नभोमंडल में
सकल भुवन अंतरिक्ष के अधीश
भाल पर विभूषित है तृतीय नयन
भालनेत्र प्रभु खेल-खेल में
वेश बदलकर आए थे श्रमिक बनकर
ढोया मिट्टी रेत मदुरापुरी में
पीटा भी गया मदुरै नृपति के हाथ
जिससे ढोना पड़ा निशान
अपनी हिरण्मय काया पर
आओ गाएँ प्रभु-लीला को नाथ महिमा को।

(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 43-48)

260. *आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'*
यशोगान करते हुए चंद्रशेखर प्रभु का
जो वेदों में निहित है
अधीश है पंरुन्तुरै का
वक्ष पर विभूषित है यज्ञोपवीत
आरूढ़ है गांभीर्य से उन्नत वृषभ पर
श्यामल कंठ अरुणिम देह
विलेपित है धवल भस्म अंगों पर
आदि मूल है सकल ब्रह्माण्ड का
प्रदान करता है असीम आनंद
अपने पुरातन आराधकों को अनुग्रह-पूर्वक
देखकर विस्तित रहता है अंड-बहिरंड।

(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 49-54)

261. விண்ணாளுந் தேவர்க்கு மேலாய வேதியனை
மண்ணாளும் மன்னவர்க்கு மாண்பாகி நின்றானைத்
தண்ணார் தமிழளிக்குந் தண்பாண்டி நாட்டானைப்
பெண்ணாளும் பாகனைப் பேணு பெருந்துறையிற்
கண்ணார் கழல்காட்டி நாயேனை ஆட்கொண்ட
அண்ணா மலையானைப் பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 10

261. विण्णाळुम् तेवक्कु मेलाय वेदियनै
मण्णाळु मन्नवक्कुम् माण्बागि निन्ऱानैट्त्
तण्णार् तमिऴळिक्कुम् तण् पाण्डि नाट्टानैप्
पॆण्णाळुम् पागनैप् पेणु पॆरुन्तुरैयिल्
कण्णार् कऴल्काट्टि नायेनै आट्कॊण्ड
अण्णामलैयानैप् पाड्डुदुम् काणम्मानाय्।

(तिरुमुऱै आठ -8 पंक्ति 55-60)

262. செப்பார் முலைபங்கன் தென்னன் பெருந்துறையான்
தப்பாமே தாளடைந்தார் நெஞ்சுருங்கும் தன்மையினான்
அப்பாண்டி நாட்டைச் சிவலோகம் ஆக்குவித்த
அப்பார் சடையப்பன் ஆனந்த வார்கழலே
ஒப்பாக வொப்புவித்த உள்ளத்தா ருள்ளிருக்கும்
அப்பாலைக் கப்பாலைப் பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 11

262. चॆप्पार् मुलैपङ्गन् तॆन्नन् पॆरुन्तुऱैयान्
तप्पामे ताळडैन्दार् नॆञ्चुरुक्कुम् तन्मैयिनान्
अप्पाण्डि नाट्टैच् चिवलोक माक्कुवित्त
अप्पार् चडैयप्पन् आनन्द वार्कऴले
ऒप्पाग ऒप्पुवित्त उळ्ळत्तार् उळ्ळिरुक्कुम्
अप्पालैक्कप्पालैप् पाड्डुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ -8 पंक्ति 61-66)

261. *आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'*
यशोगान करती हुई देवाधिदेव प्रभु का
वेदों से संस्तुत महादेव का
पांड्य देश के अधीश सुंदरेश रूप में
आदर्श रखा जिन्होंने नृपतियों के लिए
जिनकी उपस्थिति से
धन्य हुआ पांड्यदेश शस्य-श्यामल होकर
धन्य हुई तमिल भी मधुरिम बनकर
नारी को अर्धभाग देकर
स्थापित किया प्रभु ने नारी-अधिकार को
अरुणाचल प्रभु वह
विराजे हैं पेरुन्तुरै में सकलजन-आराधित होकर
अहा, प्रदान कर निज चरणकमल
अपना लिया श्वानतुल्य दासी को
सखियो गाएँ यशोगान महिमामय।

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 55-60)

262. *आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'*
यशोगान करती हुई अर्धनारीश्वर प्रभु का
वाम भाग दिया उमा सुकुमारी को
सुगठित है वक्ष जिनका
गाएँ दक्षिणपति पेरुन्तुरै अधीश को
पिघला देते हैं पास में पहुँचे
साधकों के हृदय को
बना दिया प्रभु ने शिवलोक
इस पांड्य देश को अपनी उपस्थिति से
जलपूरित जटाधर तात
आनन्ददायक हैं जिनके सुंदर चरणयुगल
कुंदन बना देते हैं उनको
सौंप देते हैं जो निज को
गाएँ प्रभु की अपार महिमा को।

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 61-60)

263. மைப்பொலியுங் கண்ணிகேள் மாலயனோ டிந்திரனும்
எப்பிறவி யுந்தேட என்னையுந்தன் இன்னருளால்
இப்பிறவி ஆட்கொண்டு இனிப்பிறவா மேகாத்து
மெய்ப்பொருட்கண் தோற்றமாய் மெய்யே நிறைபேறாய்
எப்பொருட்குந் தானேயாய் யாவைக்கும் வீடாகும்
அப்பொருளாம் நஞ்சிவனைப் பாடுதுங்காண்
அம்மானாய்! 12

263. मैप्पॉलियुम् कण्णिकेळ् मालयनोडिन्दिरनुम्
ऍप्पिऱवियुम् तेड ऍन्नैयुम् तन्निन्नरुळाल्
इप्पिऱवि आट्कॉण्डिनिप् पिऱवामे कात्तु
मॆय्प्पॉरुट् कण्तोट्रम् आम् मॆय्ये निऱै पॆराय्
ऍप्पॉरुट्कुम् तानेयाय् यावैक्कुम् वीडागुम्
अप्पॉरुळा नञ्चिवनैप् पाडुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ -8 पंक्ति 66-72)

264. கையார் வளைசிலம்பக் காதர் குழையாட
மையார் குழல்புரளத் தேன்பாய வண்டொலிப்பச்
செய்யானை வெண்ணீ றணிந்தானைச் சேர்ந்தறியாக்
கையானை எங்குஞ் செறிந்தானை அன்பர்க்கு
மெய்யானை அல்லாதார்க் கல்லாத வேதியனை
ஐயா றமர்ந்தானைப் பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 13

264. कैयार् वळै चिलम्बक् कादार् कुऴैयाड
मैयार् कुऴल् पुरळत् तेन् पाय वण्डॉलिप्पच्
चॆय्यानै वॆण्णीऱणिन्दानैच् चेर्न्दऱियाक्
कैयानै ऍङ्गुम् चॆऱिन्दानै अन्बर्क्कु
मॆय्यानै अल्लादार्क्कुक्कल्लाद वेदियनै
ऐयाऱमर्न्दानैप् पाडुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ -8 पंक्ति 73-78)

263. *आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'*
अंजन-भूषित नयने सुनले,
जन्म-जन्मांतरों से खोज रहे हैं
विष्णु और विरिंचि के संग इन्द्र भी
ढूँढ-ढूँढ कर थक गए वे
ऐसे महिमामय प्रभु आए सहज ही मेरे पास
अनुग्रह से अपनाया
मुक्त किया जन्म-मरण के चक्र से
और दिखा दिया अपना सत्य-स्वरूप
जो चिर शाश्वत है नित्य है
सब के लिए मोक्षधाम है
ऐसे महिमामय शिवनाथ का
यशोगान करती हुई खेलें अम्मानै।

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 66-72)

264. *आओ सखियो खेलें अम्मानै*
खनक उठें चूड़ियाँ और कंगन कर में
डोल उठें कर्णफूल और कुंडल कान में
बिखर उठें दिशि-दिशि में श्यामल कुंतल
स्त्रवित रहे मधु वेणी के फूलों से
झंकार करें सुमन की चाह में आए मधुपकुल
नाचती हुई गान करें हम
अरुणिम देहकांति के धनी का
धवल भस्म से विभूषित प्रभु का
निकट जनों के लिए भी अविज्ञेय का
अबूझ प्रकृति के चतुर सर्वव्यापी का
सत्यवस्तु जो है प्रेमी भक्तों के लिए
इतरों के लिए अनस्तित्व सम भासित मायामय को
गाएँ तिरुवैयार-अधीश को।

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 73-78)

265. ஆனையாய்க் கீடமாய் மானுடராய்த் தேவராய்
ஏனைப் பிறவாய்ப் பிறந்திறந் தெய்த்தேனை
ஊனையும் நின்றுருக்கி என்வினையை ஒட்டுகந்து
தேனையும் பாலையுங் கன்னலையும் ஒத்தினிய
கோவன்போல் வந்தென்னைத் தன்தொழும்பிற்
கொண்டருளும்
வானவன் பூங்கழலே பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 14

265. आनैयाय्क् कीटमाय् मानडराय् तेवराय्
एनपिऱ्वाय्प् पिऱन्दिऱन्दु ऍय्त्तेनै
ऊनैयु निन्ऱुरुक्कि ऍन्विनैयै ओट्टुगन्दु
तेनैयुम् पालैयुम् कन्नलैयुम् ऑत्तिनिय
कोनवन् पोल् वन्दॆन्नैत् तन्तॊऴुम्बिल् कॊण्डरुळुम्
वानवन् पूङ्कऴले पाडुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 79-84)

266. சந்திரனைத் தேய்த்தருளித் தக்கன்தன் வேள்வியினில்
இந்திரனைத் தோள்நெரித்திட் டெச்சன் தலையரிந்து
அந்தரமே செல்லும் அலர்கதிரோன் பல்தகர்த்துச்
சிந்தித் திசைதிசையே தேவர்களை ஓட்டுகந்த
செந்தாப் பொழில்புடைசூழ் தென்னன் பெருந்துறையான்
மந்தார மாலையே பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 15

266. चन्तिरनैत् तेय्त्तरुळित् तक्कन् तन् वेळ्वियिनिल्
इन्दिरनैत् तोळ् नॆरित्तिट्टु ऍच्चन् तलैयरिन्दु
अन्तरमे चॆल्लु मलर्क्कदिरोन् पल् तगर्त्तुच्
चिन्तित् तिशै तिशैये तेवर्गळै ओट्टुगन्द
चॆन्तार् पॊऴिल् पुडै चूऴ् तॆन्नन् पॆरुन्तुऱैयान्
मन्दार मालैयैप् पाडुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 85-90)

265. आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'
यशोगान करती हुई देवाधिदेव के
सुमन सरिस चरणकमल का
करुणामय आए मेरे पास सहज ही
काट डाले सकल कर्मबंधन
मुक्त किया जननमरण के चक्र से
हा, दुःखी थी थकी-हारी थी
जन्म लेकर विविध योनियों में
कीट से लेकर हाथी तक
और फिर मानुष देव जाने क्या क्या
सखि ! पधारे मधुमय प्रभु
मधु सम दुग्ध सम इक्षुरस सम मधुरिम
नाथ आए और अपना लिया मुझे
लगा लिया निज सेवकाई में।

(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 79-84)

266. आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'
यशोगान करते हुए दक्षिणपति शिवराज का
उपवन वलयित पेरुन्तुरै-अधीश का
मन्दारहार से विभूषित प्रियनाथ का
जिन्होंने पुराकाल में
दक्ष प्रजापति से आयोजित यज्ञ में
दबोच डाला था क्रीड़ा से चंद्र को पाँवों तले
चरमरा कर रख दिया इंद्र की भुजाओं को
काट डाला था शीर्ष यजमान दक्ष का
तोड़ डाले थे प्रभा-किरण दिवाकर के
जो बचके निकलने वाला था अंतरिक्ष में
और देवों को खदेड़ खदेड़ कर भगा दिया था
दिशा-दिशा में विनोद में
ऐसे महिमामय प्रभु का करें हम कीर्तिगान।

(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 85-90)

267. ஊனாய் உயிராய் உணர்வாய்என் னுட்கலந்து
தேனாய் அமுதமுமாய்த் தீங்கரும்பின் கட்டியுமாய்
வானோ ரறியா வழியெமக்குத் தந்தருளும்
தேனார் மலர்க்கொன்றைச் சேவகனார் சீரொளிசேர்
ஆனா அறிவாய் அளவிறந்த பல்லுயிர்க்கும்
கோனாகி நின்றவா கூறுதுங்காண் அம்மானாய்! 16

267. ऊनायुयिराय् उणर्वाय् ऍन्नुट्कलन्दु
तेनाय् अमुदाय् तीङ्करुम्बिन् कट्टियुमाय्
वानोरऱिया वऴियॆमक्कुत् तन्दरुळुम्
तेनार् मलर्क्कॊन्ऱैच् चेवकनार् चीरॊळिचेर्
आना अऱिवाय् अळविऱन्द पल्लुयिर्क्कुम्
कोनागि निन्ऱवा कूऱुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 91-96)

268. சூடுவேன் பூங்கொன்றை சூடிச் சிவன்திரள்தோள்
கூடுவேன் கூடி முயங்கி மயங்கிநின்று
ஊடுவேன் செவ்வாய்க் குருகுவேன் உள்ளுருகித்
தேடுவேன் தேடிச் சிவன்கழலே சிந்திப்பேன்
வாடுவேன் பேர்த்து மலர்வேன் அனலேந்தி
ஆடுவான் சேவடியே பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 17

268. चूडुवेन् पूङ्कॊन्ऱै चूड़िच्चिवन् तिरळ् तोळ्
कूडुवेन् कूडि मुयङ्गि मयङ्गि निन्ऱु
ऊडुवेन् चॆव्वाय्क्कुरुगुवेन् उळ्ळुरुगित्
तेडुवेन् तेडिच् चिवन् कऴले चिन्तिप्पेन्
वाडुवेन् पेर्त्तु मलर्वेन् अनलेन्दि
आडुवान् चेवडिये पाडुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 97-102)

267. आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'
यशोगान करती हुई सुंदरेश प्रभु का
जो धारण किये है मधु स्त्रवित कॉन्रै-माल्य
अहा, वह एकाकार हो मिल गया मुझ में
मज्जा बन कर, प्राणों में प्राण बनकर
भावना और अनुभूति बनकर
रुचिर होता है जैसे मधु हो अमृत हो
मधुरिम इक्षु-रस हो
वर्षित करता है अवाच्य आनंद
शिव का प्रशस्त पथ
अनजान है देवों के लिए
ज्योतिर्मय प्रभु आनन्दस्वरूप है
पशुपति वह सकल जीव का पति है
आओ सखियो गाएँ प्रभु का कीर्तिगान।

(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 91-96)

268. धारण करूँगी अपनी वेणी में
शिवनाथ के लिए प्रिय कोन्रै माल्य
लग जाऊँगी प्रियनाथ के
सुपुष्ट कंधों के संग
आश्लेषित कर आनंद पाऊँगी
आनन्द में मदमत्त हो भूलूँगी निज को
फिर रूठूँगी प्रिय से अकारण ही
बिछुड़ जाने पर
तरसूँगी नाथ के अरुणिम अधरों के लिए
विह्वल चित्त से खोजूँगी शिवराज को
भटकूँगी दरदर शिव को खोजते हुए
चिंतन करूँगी शिव के चरणकमल का
फिर आह्लादित हो जाऊँगी उन्हें पाकर
जो नर्तन करता है वह्निज्वाल ले निजकर में
आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'
यशोगान करती हुई शिव के पावन चरणों का।

(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 97-102)

269. கிளிவந்த மென்மொழியாள் கேழ்கிளரும் பாதியனை
வெளிவந்த மாலயனுங் காண்பரிய வித்தகனைத்
தெளிவந்த தேறலைச் சீரார் பெருந்துறையில்
எளிவந் திருந்திரங்கி எண்ணரிய இன்னருளால்
ஒளிவந்தென் உள்ளத்தின் உள்ளே ஒளிதிகழ
அளிவந்த அந்தணனைப் பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 18

269. किळि वन्द मॅन्मॉऴियाळ् केऴ्किळरुम् पादियनै
वॅळिवन्द मालयनुम् काण्परिय वित्तगनैत्
तॅळिवन्द तेऱलैच् चीरार् पॅरुन्तुऱैयिल्
ऍळिवन्दु इरुन्दिरङ्गि ऍण्णरिय इन्नरुळाल्
ऑळिवन्दॅनुळ्ळत्तिन् उळ्ळेयॉळि तिगऴ
अळिवन्द अन्दणनैप् पाडुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 103-108)

270. முன்னானை மூவர்க்கு முற்றுமாய் முற்றுக்கும்
பின்னானைப் பிஞ்ஞகனைப் பேணு பெருந்துறையின்
மன்னானை வானவனை மாதியலும் பாதியனைத்
தென்னானைக் காவானைத் தென்பாண்டி நாட்டானை
என்னானை என்னப்பன் என்பார்கட் கின்னமுதை
அன்னானை அம்மானைப் பாடுதுங்காண் அம்மானாய்! 19

270. मुन्नानै मूवक्कुम् मुट्रुमाय् मुट्रुक्कुम्
पिन्नानैप् पिञ्ञगनैप् पेणुम् पॅरुन्तुऱैयिन्
मन्नानै वानवनै मादियलुम् पादियनै
तॅन्नानैक् कावानैत् तॅन्पाण्डि नाट्टानै
ऍन्नानै ऍन्नप्पन् ऍन्बार्गट् किन्नमुदै
अन्नानै अम्मानै पाडुदुम् काण् अम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 109-114)

269. *आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'*
यशोगान करते हुए परमेश्वर का
जिसकी काया का अर्धभाग
जाज्वल्यमान है अम्बिका की द्युति से
जो शुक सरिस मधुर वचन की धनी है
निकले थे विष्णु विरिंचि हर की खोज में
अलख अदृश्य है उनके लिए
परिपक्व साधकों के लिए मधुमय है
सहज रूप में विराजे हैं
पेरुन्तुरै धाम में आकर
बरसा दिया मुझ पर अपना अपार अनुग्रह
प्रकट हुए ज्योतिरूप में
करुणामय प्रभु ज्योतिस्वरूप बनकर
विराजे हैं मेरे अंतरतम में।

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 103-108)

270. *आओ सखियो खेलें 'अम्मानै'*
यशोगान करती हुई प्रभु का
जो पुरातन है त्रिदेवों से भी
सर्वभूत स्वरूप वह अक्षुण्ण रहता है
प्रलय में सबके विलय के अनंतर भी
स्वर्णिम देहकांति का धनी है
सकल जनप्रिय पेरुंतुरै का अधीश है देवाधिदेव
नारी का शासन है उसके अर्ध शरीर पर
दक्षिण तिरुवानैक्का में विलसे हैं
दक्षिण पांड्य देश के अधीश
मेरे हैं वे और यदि कोई पुकारे उन्हें
'हे मेरे तात' तो सुनकर पुकार
अमृत बरसा देता है प्रेम से
ऐसे महिमामय परमेश्वर का
गान करते हुए खेलें 'अम्मानै'।

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 109-114)

271. பெற்றி பிறர்க்கரிய பெம்மான் பெருந்துறையான்
கொற்றக் குதிரையின்மேல் வந்தருளித் தன்னடியார்
குற்றங்கள் நீக்கிக் குணங்கொண்டு கோதாட்டிச்
சுற்றிய சுற்றத் தொடர்வறுப்பான் தொல்புகழே
பற்றியிப் பாசத்தைப் பற்றறநாம் பற்றுவான்
பற்றியபே ரானந்தம் பாடுதுங்காண் அம்மானாய்!

271. पॆट्रि पिऱक्करिय पॆम्मान् पॆरुन्तुऱैयान्
कॊट्रक् कुदिरैयिन्मेल् वन्दरुळित् तन्नडियार्
कुट्रङ्गळ् नीक्किक् कुणङ्कॊण्डु कोदाट्टिच्
चुट्रिय चुट्रत्तॊडर्वऱुप्पान् तॊल्पुगऴे
पट्रियिप् पाशत्तैप् पट्रऱ नाम् पट्रुवान्
पट्रिय पेरानन्दम् पाडुदुम् काणम्मानाय् !

(तिरुमुऱै आठ - 8 पंक्ति 115-120)

271. आओ समर्पित करें अव्याज निष्ठा-भक्ति को
अनन्य गुणगणों के धनी
कालातीत परात्पर के दिव्य चरणों पर
पंरुन्तुरै के अधीश सुंदरेश
विजयप्रद अश्व पर आरूढ़ होकर
आते हैं भक्तजनों के पास
दूर करते हैं सकल दोष और मल
काटते है वलय करते बंधपाश को
आओ सखियो, आश्रय लें उनके विश्रुत अनुग्रह का
फिर देखो, पाश यह समूल कट जाए
इस तरह पाश के पीछे पड़कर
प्रदान करेगा परमानंद मधु
प्रभु परमेश्वर।

(तिरुमुरै आठ - 8 पंक्ति 115-120)



स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

As elephant, as worm, in human shapes, in forms divine,
In other births diverse,—I lived and died,—was wearied sore ;
He stood in flesh revealed, melted my soul ; and joyous drove
My sin away ; with every sweetness filled ; and, as a king
In grace appearing, in His service me received :
That Heavenly-One's foot-flower SING we ! AMMĀNAY, SEE !

He made the moon grow dim in Dakshan's sacrifice ;
He Indra's shoulder crushed ; cut off the 'Ecchan's' head ;
Teeth of the bright-beamed sun, that rides the sky, He broke '
Dispersed the gods, and drove away to every point ;
Lord of South Perun-turrai's shrine with flow'ry groves
Begirt ; the Fragrant-garlanded, SING we ! AMMĀNAY, SEE !

His Presence mingled in my body, soul, and thought ;
As honey, rare ambrosia, every choicest sweet
He gave His grace, in ways the heavenly ones know not :
The WARRIOR crowned with cassia's honied flowers ; as glorious light
Of wisdom known, with souls in number infinite,
Their KING He dwells ; this tell we out ! AMMĀNAY, SEE !

I'll wear the flow'ry 'cassia' wreath, and wearing join myself
To Çivan's mighty arm ; and joining cling in rapture lost ;
Then shrinking shall I melt with love of His red lip ;
I'll seek Him,—seeking I'll ponder Çivan's jewell'd foot ;
I'll faint and droop, and yet again revive. The ruddy foot
Of Him who dances there 'mid fire SING we ! AMMĀNAY, SEE !

In light He gleams, Her Half whose words as Parrot's note are soft,
The Sage whom Māl and Ayan coming forth could not discern ;
In glorious Perun-turrai's grove with honied fragrance filled,
In mercy affable, and sweetest grace transcending thought,
In light He came, caused light within my soul to shine ;
The Brāhman full of tenderness SING we ! AMMĀNAY, SEE !

The Primal One, End of the Three ; beyond the End
The After One, with braided lock ; of Perun-turrai which He guards
The King, the Heavenly-One, the Partner of the Queen ;
Who dwells in southern Ānai-kā ; the southern Pāṇḍi-land
Who owns ; Ambrosia sweet to those who call Him theirs ;
To such an one, the Father, SING we praise ! AMMĀNAY, SEE !

The mighty Lord Whose nature others know not—Perun-turrai's king
In grace upon victorious charger riding came ;
His servant's faults removed; gave virtue ; cleaned from stain ;
Severed the clinging cords of earthly ties ! His praises old
We cling to,—so may earthly bonds be loosed ; the mighty bliss
Of Him to whom we cling, SING we ! AMMĀNAY, SEE !

Lines : 79 - 114

9

திருப்பொற்சுண்ணம்

तिरुप्पॉर्चुण्णम्

ஆனந்த மனோலயம்

आनंद मनोलयम्

272. முத்துநல் தாமம்பூ மாலைதூக்கி
முளைக்குடந் தூபம்நல் தீபம்வைம்மின்
சக்தியும் சோமியும் பார்மகளும்
நாமக ளோடுபல் லாண்டிசைமின்
சித்தியுங் கௌரியும் பார்ப்பதியுங்
கங்கையும் வந்து கவரிகொண்மின்
அத்தன் ஐயாறன்அம் மானைப்பாடி
ஆடப்பொற் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 1

272. मुत्तु नट्रामम् पूमाले तूक्कि
मुळैक्कुडम् तूपम् नट्रीपम् वैम्मिन्
शक्तियुम् चोमियुम् पार्मगळुम्
नामगळोडु पल्लाण्डिशैमिन्
चित्तियुम् गौरियुम् पार्प्पतियुम्
कङ्गैयुम् वन्दु कवरि कॉळ्मिन्
अत्तन् ऐयाऱन् अम्मानै पाडि
आडप् पॉर्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ -9 पंक्ति 1-8)

9

मंगल चूर्ण कूटना

आनन्द तन्मयता

272. *लटकाओ नाथ-मंदिर के वितान से*
उज्ज्वल मुक्तामाल और पुष्पमालाएँ
सजाएँ मंगल कलश जहाँ तहाँ
जिनपर लहलहाएँ धान की बालियाँ
सजाएँ सुगंधित धूप के संग घृतदीप भी
शक्ति सोमा और भूमा देवियो
आओ वाग्देवी के संग
गाएँ मंगलगान 'जुगजुग जिएँ हमारे नाथ'
सिद्धि गौरी गंगा देवियाँ
आकर चंवर डुलाएँ
आओ सखियो सब मिल गाएँ 'अम्मानै'
तात का तिरुवैयार-अधीश का प्रशस्ति गान
और कूटें सुरभित मंगल चूर्ण उबटन के लिए।

(तिरुमुरै आठ -9 पंक्ति 1-8)

273. பூவியல் வார்சடை எம்பிராற்குப்
பொற்றிருச் சுண்ணம் இடிக்க வேண்டும்
மாவின் வடுவகி ரன்ன கண்ணீர்
வம்மின்கள் வந்துடன் பாடுமின்கள்
கூவுமின் தொண்டர் புறநிலாமே
குனிமின் தொழுமினெங் கோனெங்கூத்தன்
தேவியுந் தானும் வந் தெம்மையாளச்
செம்பொன் செய் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 2

273. पूवियल् वार्चडै ऍम्पिरार्कुप्
पॉन् तिरुच्चुण्णम् इडिक्क वेण्डुम्
माविन् वडुवगिरन्न कण्णीर्
वम्मिन्गळ् वन्दुडन् पाडुमिन्गळ्
कूवमिन् तॉण्डर्पुरम निलामे
कुनिमिन् तॉऴुमिन् एङ्कोन् ऍङ्कूत्तन्
तेवियुम् तानुम् वन्दॆम्मै याळच्
चॆम्पॉन्चॆय् चुण्णमिडित्तु नामे !

(तिरुमुरै आठ -9 पंक्ति 9-16)

274. சுந்தர நீறணிந் தும்மெழுகித்
தூயபொன் சிந்தி நிதிபரப்பி
இந்திரன் கற்பகம் நாட்டியெங்கும்
எழிற்சுடர் வைத்துக் கொடியெடுமின்
அந்தரர் கோன்அயன் தன்பெருமான்
ஆழியான் நாதன்நல் வேலன்தாதை
எந்தரம் ஆளுமை யாள்கொழுநற்
கேய்ந்தபொற் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 3

274. सुन्दर नीरणिन्दुम् मॆऴुगित्
तूय पॉन् चिन्दि निति परप्पि
इन्दिरन् कर्पगम् नाट्टि ऍङ्गुम्
ऍऴिल् चुडर् वैत्तुक् कॉडि ऍडुमिन्
अन्तरर् कोनयन् तम्पॆरुमान्
आऴियान् नातन् नल्वेलन् तादै
एन्नरमाळ् उमैयाळ् कॉऴुनर्कु
ऍय्न्द पॉन् चुण्णमिडित्तु नामे !

(तिरुमुरै आठ -9 पंक्ति 17-24)

273. *सुभग सुंदर सुदीर्घ जटा के धनी*
शिवराज के अभिषेक के हित
कूटना है सुगंधित कदम्ब चूर्ण
अमौरी के फाँक सी सुनैनियो
आएँ आकर गाएँ हमारे संग मंगलगान
उद्घोष कर बुलाएँ सब सखियन को
प्रांगण में कोई न रह जाए
सब आएँ अंदर नाचें गाएँ
नर्तित नटराज के स्तुतिगान
प्रणत होकर चरणयुगल में
ताकि पधारें हमारे नाथ देवी के संग
पधार कर अपना लें हम सब को
गाती हुई प्रशस्ति-गान
कूटें हम सुरभित कदंब चूर्ण
नाथ के अभिषेक के लिए।

(तिरुमुरै आठ -9 पंक्ति 9-16)

274. *धारण कर लें धवलोज्ज्वल भस्म ललाट पर*
स्वच्छ करें पोंछें मंदिर के प्रांगण और प्रत्येक कक्ष
बिखेर दें सुरभित मकरंद नवधान और नवमणियाँ
गाड़ दें ध्वजस्तंभ इंद्रलोक के कल्पवृक्ष का
सजाएँ मंगलदीप जहाँ-तहाँ
और फहराकर वृषभ-ध्वज गांभीर्य से
कूटें हम सुरभित कदम्ब चूर्ण
नाथ के अभिषेक के लिए
देवाधिदेव यह नाथ है
पुरंदर और विरिंचि के संग विष्णु का
स्कंद-तात वह उमापति है
जो अपनाता है हम जैसों को भी
आओ सखियो कूटें सुरभित कदंब चूर्ण
नाथ के उबटन के लिए।

(तिरुमुरै आठ -9 पंक्ति 17-24)

275. காசணி மின்கஞு லக்கையெல்லாங்
காம்பணி மின்கள் கறையுரலை
நேச முடைய அடியவர்கள்
நின்று நிலாவுக என்று வாழ்த்தித்
தேசமெல் லாம்புகழ்ந் தாடுங்கச்சித்
திருவேகம் பன்செம்பொற் கோயில்பாடிப்
பாசவி னையைப் பறித்துநின்று
பாடிப்பொற் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 4

275. काशणि मिन्नाळ् उलक्कैयॆल्लाम्
काम्बणि मिन्नाळ् करै उरलै
नेशमुडैय अडियवर्गळ्
निन्ऱु निलावुग ऍन्ऱु वाऴ्त्तित्
तेशमॆल्लाम् पुगऴ्न्दाडुम् कच्चित्
तिरु एकम्बन् चॆम्पॊन् कोयिल् पाडिप्
पाशम् विनैयैप् परित्तु निन्ऱु
पाडिप् पॊर्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ -9 पंक्ति 25-32)

276. அறுகெடுப் பார்அய னும்அரியும்
அன்றிமற் றிந்திர னோடமரர்
நறுமுறு தேவர்க ணங்களெல்லாம்
நம்மிற்பின் பல்லதெ டுக்கவொட்டோம்
செறிவுடை மும்மதில் எய்தவில்லி
திருவேகம் பன்செம்பொற் கோயில்பாடி
முறுவற்செவ் வாயினீர் முக்கணப்பற்
காடப்பொற் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 5

276. अऱुगॆडुप्पार् अयनुम् अरियुम्
अन्ऱि मट्रिन्दिरनोडमरर्
नऱुमुऱु देवर् गणङ्गळॆल्लाम्
नम्मिल् पिन्बल्लदॆडुक्क ओट्टोम्
चॆऱिवुडै मुम्मदिल् ऍय्द विल्लि
तिरुवेकम्बन् चॆम्पॊऱ् कोयिल् पाडि
मुऱुवर् चॆव्वायिनीर् मुक्कण् अप्पर्कु
आडप् पॊन्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ -9 पंक्ति 33-40)

275. *बाँधें सखियो ! मणिमय माल*
मूसल - मूसल पर
आवेष्टित करें पट पीतांबर से
प्रत्येक ओखली को
खड़े हो जाएँ समस्त स्नेहीजन मंडलाकार
गाएँ प्रशस्तिगान सब
जगवंदित ताम्रखचित
कांची के एकाम्रनाथ के मंदिर का
गाते गाते उधड़ जाएँ बंधपाश हमारे
गाते गाते कूटें हम कदम्ब चूर्ण
नाथ के उबटन के लिए अभिषेक के लिए।

(तिरुमुरै आठ -9 पंक्ति 25-32)

276. *नाथ की सेवा में हाथ में लिये मंगलदीप*
भले ही चलें विष्णु विरिंचि हमारे आगे आगे
उनके बाद हमारी ही बारी होगी
हमारे पीछे ही आएँगे दीपदान के संग
इन्द्रादि समस्त देव चाहे वे बड़बड़ाएँ
नहीं चलने देंगी उन्हें अपने आगे
गाएँ हम प्रशस्ति-गान नाथ का
ताम्र-खचित एकाम्रनाथ के मंदिर का
अतिशय शौर्य है नाथ का
जिसने एक ही शर से
कर दिए धराशायी त्रिपुर
अरुणिम अधर पर खिलते मंदहास युत सखियो !
त्रिनेत्र प्रभु के अभिषेक हित
कूटें हम सुरभित कदंब चूर्ण जयगान करते हुए।

(तिरुमुरै आठ -9 पंक्ति 33-40)

277. உலக்கை பலஒச்சு வார்பெரியோர்
உலகமெ லாம்உரல் போதாதென்றே
கலக்க அடியவர் வந்துநின்றார்
காண உலகங்கள் போதாதென்றே
நலக்க அடியோமை ஆண்டுகொண்டு
நாண்மலர்ப் பாதங்கள் சூடத்தந்த
மலைக்கு மருகனைப் பாடிப்பாடி
மகிழ்ந்துபொற் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 6

277. उलक्कै पलवोच्चुवार् पॆरियोर्
उलगमॆलाम् उरल् पोदादॆन्ऱे
कलक्क अडियवर् वन्दु निन्ऱार्
काण उलगङ् गळ् पोदादॆन्ऱे
नलक्क अडियोमै आट्कॊण्डु
नाण्मलर्प्पादङ्गळ् चूडत्तन्द
मलैक्कु मरुमगनैप् पाडिप् पाडि
मगिऴ्न्दु पॊर्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ -9 पंक्ति 41-48)

278. சூடகந் தோள்வளை ஆர்ப்பஆர்ப்பத்
தொண்டர் குழாமெழுந் தார்ப்பஆர்ப்ப
நாடவர் நந்தம்மை ஆர்ப்பஆர்ப்ப
நாமும் அவர்தம்மை ஆர்ப்பஆர்ப்பப்
பாடகமும் மெல்லடி யார்க்குமங்கை
பங்கினன் எங்கள் பராபரனுக்கு
ஆடகமாமலை அன்னகோவுக்
காடப்பொற் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 7

278. चूडकम्· तोळ्वळै आर्प्प आर्प्पत्
तॊण्डर् कुऴामॆऴुन्दु आर्प्प आर्प्प
नाडवर् नन्तम्मै आर्प्प आर्प्प
नामुम् अवर् तम्मै आर्प्प आर्प्पप्
पाडकमुम् मॆल्लडियार्क्कु मङ्गै
पङ्गिनन् ऍङ्गळ् परापरनुक्कु
आडक मामलैयन्न कोवुक्कु
आडप् पॊर्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ -9 पंक्ति 49-56)

277. *नाथ के अभिषेक के हित*
स्वर्णिम कदंब चूर्ण कूटने को
आ जुटे हैं प्रेमासक्त भक्तजन
चमक रहे हैं अंतरिक्ष में मूसल
उछल उछल कर उठे मूसलों के लिए
पर्याप्त नहीं है निखिल धरणी की ओखली !
सम्मिलित होने को इस महोत्सव में
आए अगणित भक्तजन
पर्याप्त नहीं सकल भुवन उनके लिए
ऐसे में नाथ ने बढ़ाए निज चरणकमल
और अपना लिया हम सब को
नाथ वह महान् है
जामाता है पर्वतराज का
आओ सखियो, गाएँ प्रशस्ति-गान
और कूटते रहें स्वर्णिम कदम्ब चूर्ण
नाथ के अभिषेक के हित।

(तिरुमुऱै आठ - 9 पंक्ति 41-48)

278. *खनकें कलाई पर कनक वलय*
खनक उठें भुजबंद भी
हो रहा कदम्ब चूर्ण कूटन का उत्सव
भक्तजन के हर्षारव के मध्य
उपहास कर रहे हैं लोक
अपेक्षा में उठ रहा हमारा अट्टहास
आओ सखियो ! गाएँ प्रशस्ति-गान
परात्पर परमेश्वर का
वाम भाग दिया जिन्होंने
मृदुलचरणा उमा सुकुमारी को प्रेम से
कनकशैल निभ है हमारे प्रभु
जिनके अभिषेक हित
कूटें हम स्वर्णिम कदम्ब चूर्ण
आनंद से गाते हुए।

(तिरुमुऱै आठ - 9 पंक्ति 49-56)

279. வாட்டங் கண்மட மங்கைநல்லீர்
வரிவளை ஆர்ப்பவண் கொங்கைபொங்கத்
தோட்டிரு முண்டந் துதைந்திலங்கச்
சோத்தெம்பி ரானென்று சொல்லிச்சொல்லி
நாட்கொண்ட நாண்மலர்ப் பாதங்காட்டி
நாயிற் கடைப்பட்ட நம்மையிம்மை
ஆட்கொண்ட வண்ணங்கள் பாடிப்பாடி
ஆடப்பொற் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 8

279. वाळ् तडम् कण् मडमङ्गै नल्लीर्
वरिवळै आर्प्प वण्कॊङ्गै पॊङ्गत्
तोळ् तिरुमुण्डम् तुदैन्दु इलङ्गच्
चोत्तॆम्पिरानॆन्रु चॊल्लिच् चॊल्लि
नाट्कॊण्ड नाण्मलर्प् पादम् काट्टि
नायिन् कडैप्पट्ट नम्मै इम्मै
आट्कॊण्ड वण्णङ्गळ् पाडिप् पाडि
आडप् पॊर्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ - 9 पंक्ति 57-64)

280. வையகம் எல்லாம் உரலதாக
மாமேரு என்னும் உலக்கைநாட்டி
மெய்யெனும் மஞ்சள் நிறையஅட்டி
மேதகு தென்னன் பெருந்துறையான்
செய்ய திருவடி பாடிப்பாடிச்
செம்பொன் உலக்கை வலக்கைபற்றி
ஐயன் அணிதில்லை வாணனுக்கே
ஆடப்பொற் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 9

280. वैयगम् ऍल्लाम् उरलदाग
मामेरु ऍन्नुम् उलक्कै नाट्टि
मॆय्यॆनुम् मञ्जळ् निऱैय अट्टि
मेतगु तॆन्नन् पॆरुन्तुऱैयान्
चॆय्य तिरुवडि पाडिप् पाडिच्
चॆम्पॊन् उलक्कै वलक्कै पट्रि
ऐयन् अणि तिल्लै वाणनुक्के
आडप् पॊर्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ - 9 पंक्ति 65-72)

279. *विशाल उज्ज्वल नयनों की धनी*
सुंदरी सखियो आओ !
मिलकर हम कूटें सुरभित कदंब चूर्ण
उछल-उछल कर कूटते हुए
पटकें सुंदर मुंड अपने स्कंधों पर
फूल उठें पृथुल स्तन
कूटें हम 'नाथ नमो नम !' करते हुए
अहा ! बढ़ा दिए नाथ ने
सुमन निभ मृदुल चरणयुगल
इन लघुजनों के उद्धार के हित
गाएँ नाथ के अनुग्रह का प्रशस्तिगान
कूटें अभिषेक के हित सुरभित
कदंब चूर्ण।

(तिरुमुरै आठ -9 पंक्ति 57-64)

280. *बना लें निखिल भुवन को ओखली*
गाड़ें महामेरु का मूसल
भर-भर लें सत्य की हल्दी प्रचुर मात्रा में
और कूटते जाएँ गाते हुए प्रशस्तिगान
पंरुन्तुरै के प्रभु दक्षिणेश के
सुभग चरण कमल का
शोभित दक्षिण हस्त पर स्वर्णिम मूसल
और कूटें हम सखियो
तिल्लै में विराजे
नटराजराज के अभिषेक हित
कूटें सुरभित कदंब चूर्ण।

(तिरुमुरै आठ -9 पंक्ति 65-72)

281. முத்தணி கொங்கைகள் ஆடஆட
மொய்குழல் வண்டினம் ஆடஆடச்
சித்தஞ் சிவனொடும் ஆடஆடச்
செங்கயற் கண்பனி ஆடஆடப்
பித்தெம் பிரானொடும் ஆடஆடப்
பிறவி பிறரொடும் ஆடஆட
அத்தன் கருணையொ டாடஆட
ஆடப்பொற் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 10

281. मुत्तणि कांङ्गैगळाड आड
मांय्कुऴल् वण्डिनमाड आडच्
चित्तम् चिवनांडुमाड आडच्
चंङ्कयर्कण्पनि आड आडप्
पित्तंम्पिरानांडुमाड आडप्
पिऱवि पिऱरांडुमाड आड
अत्तन् करुणैयांडाड आड
आडप् पांर्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ -9 पंक्ति 73-80)

282. மாடு நகைவாள் நிலாவெறிப்ப
வாய்திறந் தம்பவ ளந்துடிப்பப்
பாடுமின் நந்தம்மை ஆண்டவாறும்
பணிகொண்ட வண்ணமும் பாடிப்பாடித்
தேடுமின் எம்பெரு மானைத்தேடிச்
சித்தங் களிப்பத் திகைத்துத் தேறி
ஆடுமின் அம்பலத் தாடினானுக்கு
ஆடப்பொற் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 11

282. माडुनगै वाणिला ऍऱिप्प
वाय्तिऱन्दम्पवळम् तुडिप्पप्
पाडुमिन् नन्तम्मै आण्डवाऱुम्
पणिकांण्ड वण्णमुम् पाडिप् पाडित्
तेडुमिनंम् पंरुमानैत् तेडिच्
चित्तम् कळिप्पत् तिगैत्तुत् तेऱि
आडुमिन् अम्बलत्ताडिनानुक्कु
आडप् पांर्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ -9 पंक्ति 81-88)

281. *झूम उठें मुक्तामाल से*
विभूषित कुचभार
गुंजन करे सुगंध कुंतल पर अलिकुल
विलीन हो जाए चित्त शिवराज पर
छलकें मुक्ता-बिंदु
अरुणाभ मीन-नयन पर
बावली हो जाऊँ मैं शिवनाथ पर
तड़पें भक्तिहीन जन भवसागर पर
अहा ! नृत्यरत हैं नाथ
वर्षित करते हुए अनुग्रह वारिधार
आओ सखियो कूटें हम
नाथ के अभिषेक हित
सुरभित स्वर्णिम कदम्ब चूर्ण।

(तिरुमुरै आठ - 9 पंक्ति 73-80)

282. *कलहास से बिखेरती हुई*
चाँदनी चारों दिशा में
गाओ मेरी सुंदर सखियो !
गाते हुए फड़क उठें प्रवाल सरिस अधर
गाती जाओ नाथ की करुणा-अनुग्रह के गीत
कि किस प्रकार अपनाया हमें नाथ ने
और किस भांति नियुक्त किया सेवकाई में
गाते गाते खोज करो शिवनाथ की
उल्लसित हो जाओ नाथ के सान्निध्य से
सकपका कर व्याकुल बनो विरह में
नाचो नाचो नाम लेते हुए
नर्तित नटराज का
और नाथ के अभिषेक के हित
आओ, कूटें हम सुगंधित कदम्ब चूर्ण।

(तिरुमुरै आठ - 9 पंक्ति 81-88)

283. மையமர் கண்டனை வானநாடர்
மருந்தினை மாணிக்கக் கூத்தன்தன்னை
யையனை ஐயர்பி ரானைநம்மை
அகப்படுத் தாட்கொண் டருமைகாட்டும்
பொய்யர்தம் பொய்யனை மெய்யர்மெய்யைப்
போதரிக் கண்ணிணைப் பொற்றொடித்தோள்
பையர வல்குல் மடந்தைநல்லீர்
பாடிப்பொற் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 12

283. मैयमर् कण्डनै वान नाडर्
मरुन्दिनै माणिक्कक् कूत्तन् तन्नै
ऐयनै ऐयर् पिरानै नम्मै
अगप्पडुत्ताट्कोण्डरुमै काट्टुम्
पॉय्यर् तम् पॉय्यनै मॅय्यर् मॅय्यैप्
पोदरिक् कण्णिणैप् पॉट्रॉडित्तोळ्
पैयरवल्गुल् मडन्दै नल्लीर्
पाडिप् पॉर्चुणम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ -9 पंक्ति 89-96)

284. மின்னிடைச் செந்துவர் வாய்க்கருங்கண்
வெண்ணகைப் பண்ணமர் மென்மொழியீர்
என்னுடை ஆரமு தெங்களப்பன்
எம்பெரு மான்இம வான்மகட்குத்
தன்னுடைக் கேள்வன் மகன்தகப்பன்
தமையன்எம் ஐயன தாள்கள்பாடிப்
பொன்னுடைப் பூண்முலை மங்கைநல்லீர்
பொற்றிருச் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 13

284. मिन्निडैच् चॅन्तुवर् वाय्क्करुङ्कण्
वॅण्णगैप् पण्णमर् मॅन्मॊऴियीर्
ऍन्नुडैयारमुदु ऍङ्गळप्पन्
ऍम्पॅरुमान् इमवान् मगट्कुत
तन्नुडैक् केळ्वन् मगन् तगप्पन्
तमैयन् ऍम्मैयन् नाळ्गळ् पाडिप्
पॉन्नुडैप् पूण्मुलै मङ्गै नल्लीर्
पॉन् तिरुच्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ -9 पंक्ति 97-104)

283. *नीलकंठ प्रभु वह अमृतस्वरूप है*
महार्ध औषध है देवगण के लिए
शोभायमान है माणिक्य-मणि निभ
देहकांति में नर्तित नटराज वह
मिथ्यावादियों के लिए वह मिथ्या है
और सत्यान्वेषियों के लिए नित्यसत्य
ऐसे महिमामय प्रभु ने
बरबस आकर अपनाया हमें प्रेमभाव से
कमल निभ नैनों की धनी
सुंदरी सखियो ! खनक उठें
कनकमय बाजूबंद
आओ गाते हुए कूटें
सुरभित कदम्ब चूर्ण
नाथ के अभिषेक के हित।

(तिरुमुऱै आठ -9 पंक्ति 89-96)

284. *तड़ित्-सी कटि प्रवाल सम अधर*
श्यामल नयन धवलोज्ज्वल हँसी
और रागिनी सी मधुबैनी सखियो !
सुनो ! शिवनाथ मेरे लिए हैं अमूल्य अमृत
नाथ मेरा नाथ है गिरितनया का
वत्स भी है तात-भ्रात भी है माँ भवानी का
कनक भूषणों से खचित सखियो
आओ ! कूटें हम स्वर्णिम चूर्ण
नाथ के अभिषेक के हित।

(तिरुमुऱै आठ -9 पंक्ति 97-104)

285. சங்கம் அரற்றச் சிலம்பொலிப்பத்
தாழ்குழல் சூழ்தரு மாலையாடச்
செங்கனி வாமித ழுந்துடிப்பச்
சேயிழை யீர்சிவ லோகம்பாடிக்
கங்கை இரைப்ப அராஇரைக்குங்
கற்றைச் சடைமுடி யான்கழற்கே
பொங்கிய காதலிற் கொங்கை பொங்கப்
பொற்றிருச் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 14

285. चङ्गमरट्रच् चिलम्बॊलिप्पत्
ताऴ्कुऴल् चूऴ्तरुम् मालैआडच्
चॆङ्कनिवायिदऴ्ुम् तुडिप्पच्
चेयिऴैयीर् चिवलोकम् पाडिक्
कङ्गैयिरैप्प अराविरैक्कुम्
कट्रैच् चडैमुडियान् कऴर्क
पॊङ्गिय कादलिच् कॊङ्गै पॊङ्गप्
पॊन् तिरुच्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ -9 पंक्ति 105-112)

286. ஞானக் கரும்பின் தெளியைப்பாகை
நாடற்கரிய நலத்தைநந்தாத்
தேனைப் பழச்சுவை ஆயினானைச்
சித்தம் புகுந்துதித் திக்கவல்ல
கோனைப் பிறப்பறுத் தாண்டுகொண்ட
கூத்தனை நாத்தழும் பேறவாழ்த்திப்
பானல் தடங்கண் மடந்தைநல்லீர்
பாடிப்பொற் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 15

286. ञानक्करुम्बिन् तॆळिवैप् पागै
नाडर्करिय नलत्तै नन्दात्
तेनैप् पऴच्चुवै आयिनानैच्
चित्तम् पुगुन्दु तित्तिक्क वल्ल
कोनैप् पिऱप्पऱुत्ताट्कॊण्ड
कूत्तनै नात्तऴ्ुम्बेऱ् वाऴ्त्तिप्
पानल् तडङ्कण् मडन्दै नल्लीर्
पाडिप् पॊर्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ -9 पंक्ति 113-120)

285. *खनखना रही हैं शंख की चूड़ियाँ*
झनझना रही है पायल
डोल रही है सुभग वेणी पर पुष्पमाल
फड़क रहे हैं प्रवाल तुल्य अधर
ऐसी भंगिमा की धनी मेरी सखियो
आओ, गाएँ हमें शिवलोक का प्रशस्तिगान
लहरा उठे जटाधर की जटा पर गंगा
और फुफकार उठे फणिराज भी
कीर्तिगान करें गंगाधर जटाधर के
दिव्य चरणों का
विस्फारित हो वक्ष-देश प्रेम से
आओ सखियो गाते हुए हम
कूटें सुगंधित स्वर्णिम चूर्ण
नाथ के अभिषेक के हित।

(तिरुमुरै आठ -9 पंक्ति 105-112)

286. *मधुर मधुरिम लगता है नाथ*
मानों ज्ञान का फल रस हो
रस का परिपाक हो
अनुपम दुर्लभ कल्याण-धाम है
आ बसा है हृदय में अंतर्यामी वह
मधुरिम लगता है दिव्य मधुसम
अनुपमेय फल रस सम
विलस कर हृदय में
अपना लिया नाथ ने
काट कर भवबंधन निश्शेष ही
ऐसे महिमामय नटराजराज का
स्तवन करें हम तब तक
जब तक छाले पड़ें जीभड़ियों पर
आओ श्यामल नयना सखियो
कूटें हम स्वर्णिम कदम्ब चूर्ण
नाथ के अभिषेक के हित।

(तिरुमुरै आठ -9 पंक्ति 113-120)

287. ஆவகை நாமும்வந் தன்பர்தம்மோ
டாட்செயும் வண்ணங்கள் பாடிவிண்மேல்
தேவர்க ளாவிலுங் கண்டறியாச்
செம்மலர்ப் பாதங்கள் காட்டுஞ்செல்வச்
சேவகம் ஏந்திய வெல்கொடியான்
சிவபெரு மான்புரஞ் செற்றகொற்றச்
சேவகன் நாமங்கள் பாடிப்பாடிச்
செம்பொன்செய் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 16

287. आवगै नामुम् वन्दन्बर् तम्मॊडु
आट्चॆय्युम् वण्णङ्गळ् पाडि विण्मेल्
तेवर् कनाविलुम् कण्डऱियाच्
चॆम्मलर्प् पादङ्गळ् काट्टुम् चॆल्वच्
चेवगमेन्दिय वॆल् कॊडियान्
शिवपॆरुमान् पुरम् चॆट्र कॊट्रच्
चेवकन् नामङ्गळ् पाडिप् पाडिच्
चॆम्पॊन् चॆय् चुण्णमिडुत्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ - 9 पंक्ति 121-128)

288. தேனக மாமலர்க் கொன்றைபாடிச்
சிவபுரம் பாடித் திருச்சடைமேல்
வானக மாமதிப் பிள்ளைபாடி
மால்விடை பாடிவ லக்கையேந்தும்
ஊனக மாமழுச் சூலம்பாடி
உம்பரும் இம்பரும் உய்யஅன்று
போனக மாகநஞ் சுண்டல்பாடிப்
பொற்றிருச் சுண்ணம் இடித்து நாமே! 17

288. तेनग मामलर्क् कॊन्ऱै पाडिच्
चिवपुरम् पाडित् तिरुच्चडै मेल्
वानग मामतिप् पिळ्ळै पाडि
माल् विडै पाडि वलक्कै एन्दुम्
उनग मामऴुच् चूलम् पाडि
उम्बरुमिम्बरुम् उय्य अन्ऱु
पोनग माग नञ्जुण्डल् पाडिप्
पॊन् तिरुच्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ - 9 पंक्ति 129-136)

287. आओ सखियो गाएँ महिमा
करुणामय प्रभु की
भक्तजनों के संग
अवनीतल पर पधारे प्रभु
भक्तजन उद्धार हेतु
और बढ़ा दिए अरुणिम चरण युगल
जो सुदुर्लभ है स्वप्न में भी देवगण के लिए
शोभित है करतल पर वृषभ-ध्वज
फहराया था विजय-ध्वज सा
ध्वस्त करके त्रिपुर को
आओ सखियो कीर्तिगान करते हुए
कूटें हम स्वर्णिम कदम्ब चूर्ण
नाथ के अभिषेक हित।

(तिरुमुरै आठ -9 पंक्ति 121-128)

288. सखियो आओ, कूटें हम
स्वर्णिम कदम्ब चूर्ण — गान करते हुए
मधु-स्त्रवित स्वर्णिम कोन्रै पुष्प का
नाथ के प्रियधाम शिवपुर का
जटा पर विलसित चंद्रकला का
नाथ के महिमामय वाहन वृषभ का
दक्षिण हस्त पर विलसित
परशु का - त्रिशूल का
और सबसे बढ़कर नाथ की करुणा का
भूलोक और स्वर्ग के परिरक्षण हित
हलाहल पान करने की करुणा का
गान करते हुए कूटें हम स्वर्णिम कदम्ब चूर्ण।

(तिरुमुरै आठ -9 पंक्ति 129-136)

289. அயன்தலை கொண்டுசெண் டாடல்பாடி
அருக்கன் எயிறு பறித்தல்பாடிக்
கயந்தனைக் கொன்றுரி போர்த்தல்பாடிக்
காலனைக் காலால் உதைத்தல்பாடி
இயைந்தன முப்புரம் எய்தல்பாடி
ஏழை அடியோமை ஆண்டுகொண்ட
நயந்தனைப் பாடிநின் றாடியாடி
நாதற்குச் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 18

289. अयन्ऱलै कॊण्डु चॆण्डाडल् पाडि
अरुक्कनॆयिऱु परित्तल् पाडिक्
कयन्दनैक् कॊन्ऱुरि पोर्त्तल् पाडिक्
कालनैक् कालालुदैत्तल् पाडि
इयैन्दन मुप्पुर मॆय्दल् पाडि
एऴै अडियोमै आण्डु कॊण्ड
नयन्तनैप् पाडि निन्ऱाडि आडि
नादर्कुच् चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ - 9 पंक्ति 137-144)

290. வட்ட மலர்க்கொன்றை மாலைபாடி
மத்தமும் பாடி மதியும்பாடிச்
சிட்டர்கள் வாழுந்தென் தில்லைபாடிச்
சிற்றம் பலத்தெங்கள் செல்வம்பாடிக்
கட்டிய மாசுணக் கச்சைபாடிக்
கங்கணம் பாடிக் கவித்தகைம்மேல்
இட்டுநின் றாடும் அரவம்பாடி
ஈசற்குச் சுண்ணம் இடித்துநாமே! 19

290. वट्टमलर्क्कॊन्ऱै मालै पाडि
मत्तमुम् पाडि मतियुम् पाडिच्
चिट्टर्गळ् वाऴुम् तॆन्तिल्लै पाडिच्
चिट्रम्बलत्तॆङ्गळ् चॆल्वम् पाडिक्
कट्टिय मासुणक्कच्चै पाडिक्
कङ्गणम् पाडिक् कवित्त कैम्मेल्
इट्टु निन्ऱाडुम् अरवम् पाडि
ईशर्कुच् चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुऱै आठ - 9 पंक्ति 145-152)

289. *आओ सखियो, कूटें हम स्वर्णिम कदम्ब चूर्ण*
गान करते हुए नाथ की लीलाओं का
कंदुक-क्रीड़ा वह ब्रह्म-कपाल से
दक्षयज्ञ में दंतक्षय अर्कदेव का
समरोद्धत हस्ती का चर्म चीरना झटिति में
चीर कर आवेष्टित करना निज देह पर
भक्त हेतु धराशायी करना काल को
निज पदाघात से और फिर
एक बाण से ध्वस्त करना त्रिपुर का
गान करें नाथ की अद्‌भुत लीलाओं का
गाएँ असीम करुणा को अनुग्रह को
अपनाया नाथ ने लघुजन हमको
गाते हुए कूटें सखियो
सुरभित कदम्बचूर्ण नाथ के अभिषेक हित।

(तिरुमुरै आठ - 9 पंक्ति 137-144)

290. *आओ सखियो, प्रभु के अभिषेक हित*
कूटें स्वर्णिम कदम्ब चूर्ण
कीर्तिगान करते हुए नाथ-महिमा का
स्वर्णिम जटा पर विलस रहे हैं
गोलाकृति कोन्ऱैमाल और
औदुम्बर कुसुम के संग बालचंद्र
नाथ का प्रियधाम है
शिष्टजन निवसित दक्षिण तिल्लैपुरी
जहाँ कनकसभा में नर्तित हैं प्रभु नटराजराज
जिनके अंग-प्रत्यंग पर आभूषण बन
नाच रहे हैं उरग
कटितट पर मेखलाभरण बनकर
मुकुलित हस्त पर सरक-सरक कर
हाथों पर कंगन भुजबंद बनकर
प्रभु महिमा का गान करें हम
कूटें सुरभित कदम्ब चूर्ण।

(तिरुमुरै आठ - 9 पंक्ति 145-152)

291. வேதமும் வேள்வியும் ஆயினார்க்கு
மெய்ம்மையும் பொய்ம்மையும் ஆயினார்க்குச்
சோதியு மாய்இருள் ஆயினார்க்குத்
துன்பமு மாய்இன்பம் ஆயினார்க்குப்
பாதியு மாய்முற்றும் ஆயினார்க்குப்
பந்தமு மாய்வீடும் ஆயினாருக்
காதியும் அந்தமும் ஆயினாருக்கு
ஆடப்பொற் சுண்ணம் இடித்துநாமே!

291. वेदमुम् वेळ्वियुम् आयिनार्क्कु
मॅय्म्मैयुम् पॉय्म्मैयुम् आयिनार्क्कुच्
चोतियुमाम् इरुळायिनार्क्कुत्
तुन्बमुमाय् इन्बमायिनार्क्कुप्
पातियुमाय् मुट्रुमायिनार्क्कुप्
पन्दमुमाय् वीडुमायिनारुक्कु
आदियुम् अन्तमुम् आयिनारुक्कु
आडप् पॉर्चुण्णम् इडित्तु नामे !

(तिरुमुरै आठ - 9 पंक्ति 153-160)

291. *आओ सखियो कूटें हम*
स्वर्णिम कदम्ब चूर्ण नाथ के लिए
जो वेदरूप हैं यज्ञरूप हैं
सत्य वस्तु हैं मायामय भी
ज्योतिरूप हैं तमस भी हैं
दुःख-सुख भी आनंद-विषाद भी
शक्ति रूप में वे अर्धरूप हैं
शिवशक्ति रूप में पूर्णरूप
बंध भी वही मुक्ति भी वही
आदि के साथ अंत भी वही
ऐसे महिमामय प्रभु का
गान करते हुए कूटें स्वर्णिम कदम्ब चूर्ण।

(तिरुमुरै आठ - 9 पंक्ति 153-160)



स्रोत : तिरुवाचकम् - वर्ड बीटिफिक एस. ए. शंकरनारायनन्

Source : Tiruvacagam : Word Beatific by S.A. Sankaranarayanan

Deck the place with garlands floral
and pearl laces;
set sprouting pots, resin-censers
and ghee-lamps aglow;
may Dames Power, Weal, Earth, Wisdom
hymn: Live many aeons;
Siddi, Gowri, Parvati, Ganga
come forth and wave
the white whisk of bosgrunniens;
sing we may our Father,
Head, Tiruvaiyaaroorist and pound
auric farina to anoint.

For our beauty laden long-locked
Lord's sake we should pound
auric farina. O Damsels
of eyes like halved mangos
tender, come, hie to sing. Call all
servitors in leaving none out.
Dance. Genuflect for our Dancer
Lord to descend
with His consort and grace; and accept
our worship to take us slaves
may we pound this fragrant unguent
aglitter as beaten gold.

Wearing sacred ash fair, leeping
floors, scattering carat-pure
Pollen golden, gems nine spreading,
planting Kalpaka fronds
of Indra's sphere, placing ghee-lamps
all o'er, raise the standards.
For Him the Head of celestials
Prior to Brahma, Lord
of lovely wheel'd Maal, Sire
of handsome Muruga, Uma's

spouse kind to take us e'en, may we
aptly pound scented gold-dust.

Rope the pestles with gem-laces;
robe mortars dark in silken-skirts.
Singing the fine auric fair temple
sacred to Ekamban
in Kaanci city great praised,
propitiated all o'er
the world blessing the servitors
wooing the Lord, with firm
stablished order, breaking shackles
of twe-deededness, may we sing
ever the holy grace, and grind
gold-like fragrant flowers.

Brahma and fair Mall shall pick grass
agrostis. Besides, never
would we have Indra, celestials
murmuring Deva clans pick
that grass before we could. O Red lipp'd
smiling ones singing fine
gold-worked shrine of fair Ekamban,
whose bow missiled a dart at
the triple citadels flying low to
a finish; for our Father
trine-eyed to anoint, may we pound
auric farina to fine pulver.

Lines : 1- 40

10

திருக்கோத்தும்பி

तिरुक्कोतुम्बि

சிவனோடு ஐக்கியம்

शिवनोदु ऐक्कियम्

292. பூவேறு கோனும் புரந்தரனும் பொற்பமைந்த
நாவேறு செல்வியும் நாரணனும் நான்மறையும்
மாவேறு சோதியும் வானவருந் தாமறியாச்
சேவேறு சேவடிக்கே சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 1

292. पूवेऱु कोनुम् पुरन्तरनुम् पॊर्पमैन्द
नावेऱु चॆल्वियुम् नारणनुम् नान्मऱैयुम्
मावेऱु चोतियुम् वानवरुम् तामऱियाच्
चेवेऱु चेवडिक्के चॆन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 1-4)

10

भ्रमर संदेश

शिव-सायुज्य

292. *अविज्ञेय हैं प्रभु परमेश्वर*
सुमन पर आसीन विरिंचि के लिए
पुरंदर इंद्र के संग अमरगण के लिए
सुभग सुंदर वाग्देवी
साक्षात् श्रीमन्नारायण और चतुर्वेद के लिए
विख्यात ज्योति चंद्र सूर्याग्नि के लिए
ऐसे महिमामय वृषवाहन
प्रभु के पास जाकर गुंजन कर
हे मेरे प्रिय भृंगराज !

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 1-4)

293. நானாரென் உள்ளமார்
ஞானங்களார் என்னையாரறிவார்
வானோர் பிரானென்னை
ஆண்டிலனேல் மதிமயங்கி
ஊனா ருடைதலையில்
உண்பலிதேர் அம்பலவன்
தேனார் கமலமே
சென்றூதாய் கோத்தும்பீ.! 2

293. नानारॆन्नुळ्ळमार्
ञानङ्गळार् ऎन्नै याररिवार्
वानोर् पिरानॆन्नै
आण्डिलनेल् मतिमयङ्गि
ऊनार् उडै तलैयिल्
उण् पलितेर् अम्बलवन्
तेनार् कमलमे
चॆन्रूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 5-12)

294. தினைத்தனை உள்ளதோர்
பூவினில்தேன் உண்ணாதே
நினைத்தொறுங் காண்தொறும்
பேசுந்தொறும் எப்போதும்
அனைத்தெலும் புள்நெக
ஆனந்தத் தேன்சொரியுங்
குனிப்புடை யானுக்கே
சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 3

294. तिनैत्तनै युळ्ळदोर्
पूविनिल् तेनुण्णादे
निनैत्तॊरुम् काण्डॊरुम्
पेशुन्तॊरुम् ऎप्पोदुम्
अनैत्तॆलुम्बु उळ्नॆग
आनन्दत् तेन् चॊरियुम्
कुनिप्पुडैयानुक्के
चॆन्रूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 13-20)

293. *देवाधिदेव परमेश्वर ने*
एक पल के विभ्रम में
अपनाया न होता मुझे
कहीं का नहीं रहता मैं
वैसे मेरी क्या हस्ती है
गहन कितना है मेरा ज्ञान
क्या बताऊँ हृदय की प्रेमदशा
मेरे प्रिय भृंगराज !
चलो नाथ के समीप
जो कपाल पर भिक्षान्न का करते हैं अशन
तिल्लै चिदंबरनाथ
विराजे हैं गांभीर्य से
उनके चरणों कमलों का
प्रशस्ति गान कर।

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 5-12)

294. *मेरे प्रिय भृंग ! छोड़ दे लालसा*
पुष्प में निहित ईषन्मात्र मधु की
क्या रखा है इसके माधुर्य में
चल नटराजराज के सान्निध्य में
ज्यों ही उनके समीप जाएगा
सुरति में तड़पते हुए
दर्शन करते हुए हर बार
संलाप करते हुए उनके संग
देख ले हो रहा कैसा कायाकल्प
पिघल उठेंगे अंग-प्रत्यंग
रग-रग में भर उठेगा अनुरागराग
झरेगा हर नस-नाड़ी में
आनंद-मधु का उत्स
छक कर ऐसा आनंद-मधु
प्रशस्ति-गान कर भृंगराज
मेरे प्रभु का।

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 13-20)

295. கண்ணபபன் ஒப்பதோர்
அன்பின்மை கண்டபின்
என்னப்பன் என்னொப்பில்
என்னையும்ஆட் கொண்டருளி
வண்ணப் பணித்தென்னை
வாவென்ற வான்கருணைச்
சுண்ணப்பொன் நீற்றற்கே
சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 4

295. कण्णप्पन् ऑप्पदोऱ्
अन्बिन्मै कण्डपिन्
ऍन्नप्पन् ऍन्नॊप्पिल्
ऍन्नैयुम् आट्कॊण्डरुळि
वण्णप्पणि त्तॆन्नै
वावॆन्ऱ वान्करुणैच्
चुण्णप्पॊन् नीट्रऱ् के
चॆन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 21-28)

296. அத்தேவர் தேவர் அவர்தேவ ரென்றிங்ஙன்
பொய்த்தேவு பேசிப் புலம்புகின்ற பூதலத்தே
பத்தேதும் இல்லாதென் பற்றறநான் பற்றிநின்ற
மெய்த்தேவர் தேவற்கே சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 5

296. अत्तेवर् तेवरवर् तेवरॆन्ऱिङ्ङन्
पॊय्त्तेवु पेशिप् पुलम्बुकिन्ऱ पूतलत्ते
पत्तेदुम् इल्लादॆन् पट्रऱनान् पट्रिनिन्ऱ
मॆय्त्तेवर् तेवर्क्के चॆन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 29-32)

295. जानते थे प्रभु भली भांति
कण्णप्प नायनार् जैसी प्रेमाभक्ति
मुझमें नहीं थी; फिर भी
तात ने असीम करुणा से
मान लिया मेरे प्रेम को भी
बुलाया अपने पास 'आओ वत्स'
कर दी इतनी अनुग्रह-वर्षा
गुणी और योग्य बना कर
लगा लिया निज सेवकाई में
ओ मेरे भृंगराज ! चल
धवल भस्मलेपित मेरे नाथ के पास
और गुंजन करता हुआ
पहुंचा दे मेरा संदेश।

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 21-28)

296. भृंगराज ! तू भृंगों में बड़ा है
सुन ! इस भूतल के लोग
व्यर्थ के तर्क-वितर्क में भ्रमित हैं
यह देव बड़ा है कि वह देव
पहचानते नहीं महादेवदेव को
लौकिकता से अनासक्त मैं
आसक्त हूँ सांचे महादेवदेव पर
सत्यस्वरूप देवाधिदेव के पास जाकर
आनंद से गुंजन कर मेरे भृंगराज !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 29-32)

297. வைத்த நிதிபெண்டிர் மக்கள்குலங் கல்வியென்னும்
பித்த உலகிற் பிறப்போ டிறப்பென்னும்
சித்த விகாரக் கலக்கந் தெளிவித்த
வித்தகத் தேவற்கே சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 6

297. वैत्त निति पॆण्डीर् मक्कळ् कुलम् कल्वियॆन्नुम्
पित्तुवुलगिल् पिऱप्पोडिऱप्पॆन्नुम्
चित्तविकारक् कलक्कम् तॆळिवित्त
वित्तगत् तेवर्के चॆन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 33-36)

298. சட்டோ நினைக்க மனத்தமுதாஞ் சங்கரனைக்
கெட்டேன் மறப்பேனோ கேடுபடாத் திருவடியை
ஒட்டாத பாவித் தொழும்பரைநாம் உருவறியோம்
சிட்டாய சிட்டற்கே சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 7

298. चट्टो निनैक्क मनत्तमुदाम् शङ्करनैक्
कॆट्टेन् मऱप्पेनो केडुपडात् तिरुवडियै
ऒट्टाद पावित् तॊऴुम्बरै नाम् उरुवऱियोम्
चिट्टाय चिट्टर्के चॆन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 37-40)

297. *भ्रममय इस जगत् में*
जनन-मरण के कारण हैं
वृथा अभिमान, अर्जित धन का
दारा-पुत्र का, कुलीनता का
शास्त्र-ज्ञान का
परमदयालु करुणामय प्रभु ने
पोंछ दिया निश्शेष मेरे चित्त से
भव-बंधन की आसक्ति को
ऐसे महिमामय परमेश्वर के पास जाकर
गुंजार कर मेरे भृंगराज !

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 33-36)

298. *क्या मैं भूल सकूँगा करुणामय शंकर को*
लेशमात्र भी जिनका ध्यान करने से
भर जाती है हृदय में अमियधार
नाथ को भूलूँ तो बोल ! मुझसे निकृष्ट कौन
नष्ट हो जाऊँगा मैं इसलिए
भूलूँगा नहीं
देखना तक नहीं चाहता
उन नर-मूर्तियों को
जिनका मन नहीं लगता
अनश्वर परमेश्वर के चरण-युगल पर
शील शालीनता में सर्वश्रेष्ठ
मेरे प्रिय नाथ के समीप जाकर
गुंजन कर मेरे भृंगराज !

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 37-40)

299. ஒன்றாய் முளைத்தெழுந்
தெத்தனையோ கவடுவிட்டு
நன்றாக வைத்தென்னை
நாய்சிவிகை ஏற்றுவித்த
என்தாதை தாதைக்கும்
எம்மனைக்குந் தம்பெருமான்
குன்றாத செல்வற்கே
சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 8

299. ऑन्ऱाय् मुळैत्तॅऴुन्दु
ऍत्तनैयो कवडु विट्टु
नन्ऱाग वैत्तॅन्नै
नाय् चिविगै एट्रुवित्त
ऍन् तातै तातैक्कुम्
ऍम्मनैक्कुम् तम्पॅरुमान्
कुन्ऱाद चॅल्वर्कॆ
चॅन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 41-48)

300. கரணங்கள் எல்லாங்
கடந்துநின்ற கறைமிடற்றன்
சரணங்க ளேசென்று
சார்தலுமே தான்எனக்கு
மரணம் பிறப்பென்
றிவையிரண்டின் மயக்கறுத்த
கருணைக் கடலுக்கே
சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 9

300. कारणङ्गळॅल्लाम्
कडन्दु निन्ऱ करैमिडट्रन्
चरणङ्गळे चॅन्ऱु
चार्दलुमे तानॅनक्कु
मरणम् पिऱप्पॅन्ऱु
इवैयिरण्डिन् मयक्करुत्त
करुणैक्कडलुक्के
चॅन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 49-56)

299. उद्भूत हुआ मूल सत्त्व बनकर
न जाने कितने फूटे अंकुर
फैल गया अग-जग में सकल भुवन में
करुणामय परमदयालु ने
अपनाया मुझे उद्धार करके
दिया ऊँचा पद
ज्यों आरूढ़ किया हो पालकी में श्वान को
करुणाकर वह मेरा तात है
मेरे तात-मात का तात
चल मेरे भृंगराज
ऐसे महिमामय अनश्वर परमेश्वर के समीप
गुंजन करता हुआ सुना उन्हें वीणानाद।

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 41-48)

300. प्रभु नीलकंठ विराजे हैं
मन और अंतःकरण के पार
जब मैं लीन हो जाता हूँ
करुणामय के चरणयुगल पर
अनासक्त होकर जग से
तब वह मुझ पर बरसाता है अनुग्रह
मुक्त कर देता है जन्म-मरण चक्र से
काट देता है सकल भ्रमजाल
ऐसे करुणा वारिधार प्रभु के समीप
जाकर गुंजन कर मेरे भृंगराज !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 49-56)

301. நோயுற்று மூத்துநான் நுந்துகன்றா யிங்கிருந்து
நாயுற்ற செல்வம் நயந்தறியா வண்ணமெல்லாந்
தாயுற்று வந்தென்னை ஆண்டுகொண்ட தன்கருணைத்
தேயுற்ற செல்வற்கே சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 10

301. नोयुट्रु मूत्तु नान् नुन्दुकन्ऱाय् इङ्गिरुन्दु
नायुट्र चॅल्वम् नयन्दऱिया वण्णमॅल्लाम्
तायुट्रु वन्दॅन्नै आण्डुकॉण्ड तन्करुणैत्
तेयुट्र चॅल्वर्के चॅन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 57-60)

302. வன்னெஞ்சக் கள்வன மனவலியன் என்னாதே
கன்னெஞ் சுருக்கிக் கருணையினால் ஆண்டுகொண்ட
அன்னந் திளைக்கும் அணிதில்லை அம்பலவன்
பொன்னங் கழலுக்கே சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 11

302. वन्नॅञ्जक् कळ्वन् मनवलियन् ऍन्नादे
कन्नॅञ्जुरुक्किक् करुणैयिनाल् आण्डुकॉण्ड
अन्नम् तिळैक्कुम् अणितिल्लै अम्बलवन्
पॉन्नङ्कऴलुक्के चॅन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 61-64)

301. *थक गया था रुग्ण मैं*
जरा-वश में पड़कर
अज्ञान में पड़ा गोवत्स सा
श्वान क्या जाने दैवी संपदा ?
किंतु करुणा वरुणालय प्रभु ने
मातृवात्सल्य से मुझे बुलाया
अपना लिया परम उदारता से
ऐसे तेजोमय परमेश्वर के पास
जाकर तू गुंजन कर
मेरे भृंगराज !

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 57-60)

302. *करुणामय प्रभु ने तनिक भी नहीं सोचा*
यह कठिन हृदय का उद्धत चोर है
असीम करुणा से अपना लिया मुझे
पिघलाकर मेरा पाषाण-हृदय
महिमामय प्रभु नटराजराज
विराजे हैं सुभग सुंदर तिल्लै में
जहाँ हो रहा हंसों का कलगान
चल मेरे भृंगराज
गुंजन करता हुआ गान कर
करुणामय के स्वर्णिम चरण का।

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 61-64)

303. நாயேனைத் தன்னடிகள்
பாடுவித்த நாயகனைப்
பேயேன துள்ளப்
பிழைபொறுக்கும் பெருமையனைச்
சீயேதும் இல்லாதென்
செய்பணிகள் கொண்டருளும்
தாயான ஈசற்கே
சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 12

303. नायेनैत् तन्नडिगळ्
पाडुवित्त नायकनैप्
पेये नदुळ्ळप्
पिळै पॊरुक्कुम् पॆरुमैयनैच्
चीयेदुम् इल्लादॆन्
चॆय्पणिगळ् कॊण्डरुळुम्
तायान ईशर्के
चॆन्रूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 65-72)

304. நான்தனக் கன்பின்மை
நானுந்தா னும்அறிவோம்
தானென்னை ஆட்கொண்ட
தெல்லாருந் தாமறிவார்
ஆன கருணையும்
அங்குற்றே தானவனே
கோனென்னைக் கூடக்
குளிர்ந்தூதாய் கோத்தும்பீ! 13

304. नान् तनक्कन्बिन्मै
नानुम् तानुम् अऱिवोम्
तानॆन्नै आट्कॊण्डदु
ऍल्लारुम् तामऱिवार्
आन करुणैयुम्
अङ्गुट्रे तानवने
कोनॆन्नैक् कूडक्
कुळिर्न्दूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 73-80)

303. *महानायक प्रभु ने साधन बनाया*
श्वान तुल्य मुझको
निज महिमा के प्रशस्ति-गान का
कितना निकृष्ट था मैं
महानता से क्षमा कर दिए सकल दोष
लेशमात्र भी अन्यभाव बिना
स्वीकार किया प्रभु ने मेरी सेवकाई को
मातृ तुल्य है परमेश्वर
जाकर ओ भृंगराज
गान कर उनके महिमामय चरणों का।

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 65-72)

304. *मैं कैसा स्नेहशून्य था*
इसे मैं और वे ही जानते थे
स्वीकार कर अपना लिया मुझे
प्रभु ने, यह सारे जग को विदित है
इससे बड़ा निदर्श क्या हो सकता है
उनकी असीम करुणा का अनुग्रह का
ओ मेरे भृंग ! जाकर उनके पास
गुंजन कर कुछ इस तरह
कि कभी न टूटे नाता
मेरा उनका।

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 73-80)

305. கருவாய் உலகினுக் கப்புறமாய் இப்புறத்தே
மருவார் மலர்க்குழல் மாதினொடும் வந்தருளி
அருவாய் மறைபயில் அந்தணனாய் ஆண்டுகொண்ட
திருவான தேவற்கே சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 14

305. *करुवायुलगिनुक्कु अप्पुऱमायिप्पुऱत्ते*
मरुवार् मलर्क्कुऴल् मादिनॊडुम् वन्दरुळि
अरुवाय् मऱैपयिल् अन्तणनाय् आण्डुकॊण्ड
तिरुवान तेवर्के चॆन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 81-84)

306. நானும்என் சிந்தையும்
நாயகனுக் கெவ்விடத்தோம்
தானும்தன் தையலுந்
தாழ்சடையோன் ஆண்டிலனேல்
வானுந் திசைகளும்
மாகடலும் ஆயபிரான்
தேனுந்து சேவடிக்கே
சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 15

306. *नानुमॆन् चिन्तैयुम्*
नायकनुक्कु ऍव्विडत्तोम्
तानुम् तन् तैयलुम्
ताऴ्चडैयोन् आण्डिलनेल्
वानुम् तिशैगळुम्
माकडलुम् आयपिरान्
तेनुन्दु चेवडिक्के
चॆन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 85-92)

305. सकल भुवन का मूल बीज वह
विराजे है परात्पर सबके पार
अरे वही तो बसा है यहाँ
सुगंधकुंतला उमा के संग
अरूप रूप वह वेदस्वरूप है
वेदपाठी द्विज रूप में आकर
मुझे जो अपनाया
वह भी वही है
ऐसे महिमामय सुंदरेश के पास
जाकर गुंजन कर मेरे भृंगराज !

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 81-84)

306. हाय, मैं कितनी दूर पीछे रहा होता
और मेरा चिंतन कैसे बिगड़ा होता
यदि गंगाधर जटाधर परमेश्वर ने
अर्धांगिनी के संग आकर
मुझे न अपनाया होता उस दिन
हे भृंगराज ! दिग्दिगंत के पास
विस्तृत आकाश, दिशाएँ और
तुमुल कोलाहल करते महासागर
सब उसी के रूप हैं
मधु-निःसृत उनके चरणकमल के पास
जाकर प्रशस्ति-गान कर।

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 85-92)

307. உள்ளப் படாத திருவுருவை உள்ளுதலும்
கள்ளப் படாத களிவந்த வான்கருணை
வெள்ளப் பிரான்எம் பிரான்என்னை வேறேஆட்
கொள்ளப் பிரானுக்கே சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 16

307. उळ्ळप्पडाद तिरुवुरुवै उळ्ळुदलुम्
कळ्ळप्पडाद कळिवन्द वान्करुणै
वॆळ्ळप्पिरान् ऍम्पिरानॆन्नै वेऱेयाट्
कॊळ्ळप्पिरानुक्के चॆन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 93-96)

308. பொய்யாய செல்வத்தே புக்கழுந்தி நாள்தோறும்
மெய்யாக் கருதிக் கிடந்தேனை ஆட்கொண்ட
ஐயாவென் ஆருயிரே அம்பலவா என்றவன்றன்
செய்யார் மலரடிக்கே சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 17

308. पॊय्याय चॆल्वत्ते पुगऴुन्दि नाळ्तोऱुम्
मॆय्याक् करुदिक् किडन्देनै आट्कॊण्ड
ऐया ऍन्नारुयिरे अम्बलवा ऍन्ऱवन् तन्
चॆय्यार् मलरडिक्के चॆन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 97-100)

309. தோலுந் துகிலுங் குழையுஞ் சுருள்தோடும்
பால்வெள்ளை நீறும் பசுஞ்சாந்தும் பைங்கிளியும்
சூலமுந் தொக்க வளையு முடைத் தொன்மைக்
கோலமே நோக்கிக் குளிர்ந்தூதாய் கோத்தும்பீ! 18

309. तोलुन्तुगिलुम् कुऴैयुम् चुरुळ् तोडुम्
पाल् वॆळ्ळै नीऱुम् पशुञ्चान्तुम् पैङ्किळियुम्
चूलमुम् तॊक्क वळैयुम् उडैत्तॊन्मैक्
कोलमे नोक्किक् कुळिर्न्दूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 101-104)

307. *ज्योंही मैंने ध्यान किया परात्पर परमेश्वर का*
करुणामय प्रभु अमिय धार बनकर
मेरे हृदय में भर गए
तनिक भी निज को छिपाए बिना
अनुग्रह करुणा की बाढ़ सी आ गई
और आश्वस्त भी किया मुझे
पूर्ण रूप से अपनाएँगे बना लेंगे अपना
ऐसी करुणा के वारिधार हैं परमेश्वर
उनके चरणतल पर जाकर
भृंगराज, गुंजन करता रह
प्रशस्ति-गान कर।

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 93-96)

308. *अनित्य वस्तुओं को सत्य मानकर*
मिथ्या माया में फँसा पड़ा था मैं
इन्हीं में भ्रमित होकर
ऐसे अज्ञान-तिमिर से उद्धार कर दिया करुणामय प्रभु ने
हे भृंगराज ! चलो सुभग सुंदर चरणकमल के समीप
और गुंजार भरते हुए गान कर
हे मेरे नाथ ! प्राणों के प्राण !
चिदंबर में नर्तित नटराजराज !

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 97-100)

309. *अर्धनारीश्वर प्रभु ने*
पहन रखे हैं दाएँ बाएँ
व्याघ्र चर्म और मृदुल पट
रुद्राक्ष कुंडल और कर्ण-भूषण
धवल भस्म और हरित अंगराग
परशु त्रिशूल और शुक-ताटंक
हे भृंग ! प्रभु के इस शाश्वत चिरंतन स्वरूप का
दर्शन करते हुए
सांद्र मधुर शीतल स्वर में
गुंजन कर उनका प्रशस्तिगान।

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 101-104)

310. கள்வன் கடியன் கலதியிவன் என்னாதே
வள்ளல் வரவர வந்தொழிந்தான் என்மனத்தே
உள்ளத் துறுதுய ரொன்றொழியா வண்ணமெல்லாம்
தெள்ளுங் கழலுக்கே சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 19

310. कळ्ळन् कडियन् कलदियिवन् ऍन्नादे
वळ्ळल् वर वर वन्दॊळिन्दान् ऍन्मनत्ते
उळ्ळत्तुरुतुयर् ऒन्ऱॊळिया वण्णमॆल्लाम्
तॆळ्ळुम् कळलुक्के चॆन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 105-108)

311. பூமேல் அயனோடு மாலும் புகலரிதென்று
ஏமாறி நிற்க அடியேன் இறுமாக்க
நாய்மேல் தவிசிட்டு நன்றாய்ப் பொருட்படுத்த
தீமேனி யானுக்கே சென்றூதாய் கோத்தும்பீ! 20

311. पूमेलयनोडु मालुम् पुगलरितॆन्ऱु
एमाऱि निर्क अडियेन् इऱुमाक्क
नाय्मेल् तविसिट्टु नन्ऱाय्प् पॊरुट्पडुत्त
तीमेनियानुक्के चॆन्ऱूदाय् कोत्तुम्बी !

(तिरुमुऱै आठ - 10 पंक्ति 109-112)

310. कठिन हृदय का खल चोर मानकर
मेरा तिरस्कार किये बिना
प्रभु ने अपनाया मुझे अपना बनाकर
सब विधि योग्य और शालीन बनाया
हृदय के अंदर आकर
क्रम-क्रम से भर गया प्राणों में पूर्ण रूप से
दूर कर दिया सकल दुख दुरित संताप
ऐसे करुणामय नाथ के
चरणकमल के समीप जाकर
हे भृंगराज ! कर प्रशस्ति-गान
गुंजन करते हुए।

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 105-108)

311. शिवतत्त्व की यथातथ्य व्याख्या में
असमर्थ रह गए विष्णु विरिंचि भी
और मैं –
आनंद-तुंदिल हो रहा हूँ
नाथ के गुणगणों का विस्तार करते हुए
अबाध गति से निकल रही वाग्धार
यह उसी के अनुग्रह से साधित हुआ
श्वान को आरूढ़ किया पालकी में
नाथ ने अपार करुणा से
हे भृंगराज ! अग्नि सम अरुणिम
देहकांति के धनी नाथ के समीप
जाकर गुंजार कर
विस्तार कर उसकी महिमा का।

(तिरुमुरै आठ - 10 पंक्ति 109-112)



स्रोत : तिरुवाचकम् - टी. एन. रामचन्द्रन्
Source : Tiruvaachakam by T.N. Ramachandran

The sovereign Brahma who is throned on the Lotus,
Indira, the opulent goddess who is seated
In all beautiful tongues, Naarayanan, the four Vedas,
Rudra, the magnificent Flame,
And the celestials know not the salvific feet
Of the Rider of the Bull. Go and hover over
Those feet, O King-tumpi and bombinate.

Had not the God of the supernals, in a state of
Intellectual befuddlement, enslaved and ruled me,
Who would I be, what indeed would be my *manam*,
Of what avail would be my intellectual attainments
And who would know me at all ? He, the Lord of Ambalam,
Seeks alms to eat, in a skull to which flesh is still
Sticking. O King-tumpi fare forth to His feet like unto
The melliferous lotus and over them bombilate.

Do not sip honey from a flower, which in size, is
Like a millet seed. Whenever thought of, beheld
Or spoken of, He the dancing-Lord, for ever, causes
All the bones to melt inly and pours the honey of Bliss.
To Him, O King-thumpi, fare forth,
And over His feet buzz.

He found not in me, who in lovelessness, is peerless –
Love that can match the non-pareil love of
Kannappan's. Yet, He my Father, enslaved and ruled me;
In loving kindness, He bade me thus. "Come hither. !"
O King-thumpi, fare forth to Him who wears the Holy Ash
As His lovely fragrant dust of gold, and thrum.

"That God is the God; his God is the God." Thus they
Speak of pseudo-gods and rave. In such a world,
All desireless and to do away my attachment,
I hold fast the true God of gods.
O King-thumpi, fare forth to Him and hum.

In this mad world where wealth, women, siblings,
Clan and learning are blabbered about, He did
Away with transmigration that causes mental
Bewilderment, and conferred on us clarity.
To that God of wondrous Gnosis, fare forth,
O King-thumpi and over Him hum.

If thought of even for a (divinizing) moment
He, Sankara, springs as Nectar in the bosom.
Lo, I am lost; yet, will I ever forget Him ?
We cognize not the sinner-throng that think
Not of His unflawed and sacred feet.
O King-thumpi, fare forth to Him who is
Supremely sublime and over Him hum.

Lines : 1 - 48

11

திருத்தெள்ளேணம்

तिरुत्तॆळ्ळेणम्

சிவனோடு அடைவு

सिवनोदु अदैवु

312. திருமாலும் பன்றியாய்ச்
சென்றுணராத் திருவடியை
உருநாம் அறியவோர்
அந்தணனாய் ஆண்டுகொண்டான்
ஒருநாமம் ஓருருவம்
ஒன்றுமில்லாற் காயிரம்
திருநாமம் பாடிநாம்
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 1

312. तिरुमालुम् पन्ऱियायच
चॆन्ऱुणरात् तिरुवडियै
उरु नामऱियवोर्
अन्तणनाय् आण्डु कॊण्डान्
ऒरुनामम् ऒरुरुवम्
ऒन्ऱुमिल्लाऱ् कायिरम्
तिरुनामम् पाडि नाम्
तॆळ्ळेणम् कॊट्टामो !

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 1-8)

11

शिव में एकाकार होना

ताली बजाकर गाना

312. खोजा शूकर रूप लेकर विष्णु ने
किंतु पा न सके दर्शन चरणों के
हम उन्हें जान लें देख लें इसके लिए
आए प्रभु धरणी में धर कर द्विज रूप
आकर मुझे अपना लिया
नाम-रूप रहित परमेश्वर का
करें हम स्तवन
सहस्त्र नामों से
और महिमा गाते हुए
नाचें तालियाँ बजा बजाकर।

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 1-8)

313. திருவார் பெருந்துறை மேயபிரான் என்பிறவிக்
கருவேர் அறுத்தபின் யாவரையுங் கண்டதில்லை
அருவாய் உருவமும் ஆயபிரான் அவன்மருவுந்
திருவாரூர் பாடிநாம் தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 2

313. *तिरुवार् पॅरुन्तुऱै मेयपिरानॅन् पिऱविक्*
करुवेरऱुत्तपिन् यावरैयुम् कण्डदिल्लै
अरुवायुरुवमुमाय पिरानवन् मरुवुम्
तिरुवारूर् पाडिनाम् तॅळ्ळेणम् कॉट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 9-12)

314. அரிக்கும் பிரமற்கும்
அல்லாத தேவர்கட்கும்
தெரிக்கும் படித்தன்றி
நின்றசிவம் வந்துநம்மை
உருக்கும் பணிகொள்ளும்
என்பதுகேட் டுலகமெல்லாம்
சிரிக்குந் திறம்பாடித்
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 3

314. *अरिक्कुम् पिरमर्कुम्*
अल्लाद देवर्गट्कुम्
तॅरिक्कुम् पडित्तन्ऱि
निन्ऱ शिवम् वन्दुनम्मै
उरुक्कुम् पणिकॉळ्ळुम्
ऍन्पदु केट्टुलगमॅल्लाम्
चिरिक्कुम् तिऱम्पाडित्
तॅळ्ळेणम् कॉट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 13-20)

313. *श्रीलसित तिरुप्परुन्तुरै में विराजे प्रभु ने*
जड़-मूल से काट दिया भवरोग को
इसके बाद तो किसी और को
देखता नहीं एक उसको छोड़कर
निर्गुण-निराकार वह सगुण साकार भी है
तिरुवारूर उनका प्रिय धाम है
प्रभु महिमा का गान करें हम
तालियों की ताल-लय में।

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 9-12)

314. *हरि विरिंचि और देवगण भी*
जान न पाए हैं प्रभु परमेश्वर को
यथातथ्य रूप में
ऐसे महिमामय प्रभु आए
पिघला कर हमारे हृदय को
अपना लिया हमें
लगा लिया निज सेवकाई में
प्रभु की इस अपार महिमा को
जान ले जग प्रमुदित हो इसके लिए
आओ गान करें हम प्रभु महिमा का
तालियों की ताल-लय में।

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 13-20)

315. அவமாய தேவர்
அவகதியில் அழுந்தாமே
பவமாயங் காத்தென்னை
ஆண்டுகொண்ட பரஞ்சோதி
நவமாய செஞ்சுடர்
நல்குதலும் நாம்ஒழிந்து
சிவமான வாபாடித்
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 4

315. अवमाय तेवर्
अवगतियिल् अऴुन्दामे
पवमायङ् कात्तॆन्नै
आण्डुकॊण्ड परञ्जोति
नवमाय चॆञ्चुडर्
नल्गुदलु नामॊऴिन्दु
शिवमान वापाडित्
तॆळ्ळेणम् कॊट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 21-28)

316. அருமந்த தேவர்
அயன்திருமாற் கரியசிவம்
உருவந்து பூதலத்தோர்
உகப்பெய்தக் கொண்டருளிக்
கருவெந்து வீழக்
கடைக்கணித்தென் உளம்புகுந்த
திருவந்த வாபாடித்
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 5

316. अरुमन्त तेवर्
अयन्तिरुमार्करिय शिवम्
उरुवन्दु पूतलत्तोर्
उगप्पॆय्दक् कॊण्डरुळिक्
करुवॆन्दु वीऴक्
कडैक्कणित्तॆन्नुळम् पुगुन्द
तिरुवन्दवापाडित्
तॆळ्ळेणम् कॊट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 29-36)

315. जनन-मरण चक्र से बचाने में
असमर्थ देवों के वश में फँसे बिना
परंज्योति प्रभु ने मुझे बचाया
और अपना बना लिया
तत्काल ही मेरे अंदर
संचरित हुई नवल ज्योति
अनुभूति हुई शिवोऽहम् की
नष्ट हो गया मेरा मैं
नाथ की इस अपार करुणा का
कीर्तिगान करें हम
तालियों की ताल-लय में।

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 21-28)

316. देवताओं के शिरोमणि विष्णु विरिंचि के लिए भी
अगोचर प्रभु परमेश्वर
मानव-कुल को आह्लादित करने के लिए
आए धरणीतल पर धरकर मानव रूप
बिखेर दिया ऐसा कटाक्ष-वीक्षण मुझ पर
जिससे झुलस कर गिर पड़ा
पुनर्जन्म का भ्रूण
और प्रवेश कर गए मेरे हृदय में
आनन्द वारिधार बन कर
प्रभु की ऐसी अपार महिमा का
गान करें हम सखियो
तालियों की ताल-लय में।

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 29-36)

317. அரையாடு நாகம்
அசைத்தபிரான் அவனியின்மேல்
வரையாடும் மங்கைதன்
பங்கொடும்வந் தாண்டதிறம்
உரையாட உள்ளொடியாட
ஒண்மாமலர்க் கண்களில்நீர்த்
திரையாடு மாபாடித்
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 6

317. अरैयाडु नागम्
अशैत्तपिरानवनियिन्मेल्
वरैयाडु मङ्गै तन्
पङ्गॉडुम् वन्दाण्ड तिऱम्
उरैयाड उळ्ळॉळियाड
ऑण्मामलर्क् कण्कळिनीर्त्
तिरैयाडु मापाडित्
तॆळ्ळेणम् कॉट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 37-44)

318. ஆவா அரிஅயன்இந்திரன்
வானோர்க் கரியசிவன்
வாவாவென் றென்னையும்
பூதலத்தேவலிந்து ஆண்டுகொண்டான்
பூவார் அடிச்சுவடென்
தலைமேற் பொறித்தலுமே
தேவான வாபாடித்
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 7

318. आवा वरिययन् इन्दिरन्
वानोर्क्करिय शिवन्
वावा वॆऩ्ऱॆन्नैयुम्
पूतलत्ते वलिन्दाट्कॉण्डान्
पूवारडिचुवडॆन्
तलैमेल् पॊऱित्तलुमे
तेवान वापाडित्
तॆळ्ळेणम् कॉट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 45-52)

317. *नचाते हुए निज कटितट पर*
भुजंगों का मेखलाभरण प्रभु आए
गिरि राजकुमारी सुकुमारी के संग
आकर मुझे अपनाया बना लिया अपना
वर्णन करते हुए नाथ की इस महिमा का
नाच रहे हैं शब्द जिह्वा में
ज्योति नाच रही है हृदय में
चमकते नयनों पर नाच रहे हैं अश्रु
सखियो नाथ महिमा का गान करें हम
तालियों की ताल-लय में।

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 37-44)

318. *हरि विरिंचि और सकल देवगण के लिए*
सुदुर्लभ शिवराज आए भूतल में
बुलाया मुझे 'वत्स आओ'
और बरबस अपना बना लिया
जब प्रभु ने अंकित किए
सुमन सरिस चरणयुगल मेरे सिर पर
अहा, धन्य भाग मेरे
अनुभव किया मैंने देवत्व का
प्रभु की अपार महिमा का गान करें हम
तालियों की ताल-लय में।

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 45-52)

319. கறங்காலை போல்வதோர்
காயப்பிறப்போ டிறப்பென்னும்
அறம்பாவமென்றிரண்டச்சந்
தவிர்த்தென்னை ஆண்டுகொண்டான்
மறந்தேயுந் தன்கழல்நான்
மறவாவண்ணம் நல்கியஅத்
திறம்பாடல் பாடிநாம்
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 8

319. करङ्गोलै पोल्वदोर्
कायप्पिरप्पो डिरप्पॅन्नुम्
अरम्पावमॅन्रिरण्डच्चन्
तविर्त्तॅन्नै आण्डुकॉण्डान्
मरन्तेयुम् तन् कऴल् नान्
मरवा वण्णम् नल्गिय अत्
तिरम् पाडल पाडि नाम्
तॅळ्ळेणम् कॉट्टामो !

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 53-60)

320. கன்னா ருரித்தென்ன
என்னையுந்தன் கருணையினால்
பொன்னார் கழல்பணித்
தாண்டபிரான் புகழ்பாடி
மின்னேர் நுடங்கிடைச்
செந்துவர்வாய் வெண்ணகையீர்
தென்னா தென்னாவென்று
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 9

320. कन्नारुरित्तॅन्न
ऍन्नै उन्तन् करुणैयिनाल्
पॉन्नार् कऴल् पणित्
ताण्ड पिरान् पुगऴ् पाडि
मिन्नेर् तुडङ्गिडैच्
चॅन्तुवर् वाय् वॅण्णगैयीर्
तॅन्ना तॅन्ना वॅन्रु
तॅळ्ळेणम् कॉट्टामो !

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 61-68)

319. *वायुचालित ताड़-पत्र के पंखे के सरिस*
जनन-मरण का चक्र चलता रहता था काया का
जन्म-मरण कारण पाप-पुण्य के द्वंद्व से
नाथ ने मुझे बचाया
अपना लिया अपार करुणा से
यही नहीं, मैं कहीं उन्हें न बिसरूँ
प्रदान किया अपना चरणकमल वात्सल्य से
नाथ की इस महिमा का गान करें हम
तालियों की ताल-लय में।

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 53-60)

320. *पाषाण से तंतु निकालने का*
जादुई काम हो गया सखियो
नाथ ने अपनाया मुझे असीम करुणा से
लगाया स्वर्णिम चरणों से
तड़ित् सी तनुमध्यमा
बिंबाधर कलहासिनी सखियो
आओ नाथ की अपार करुणा पर
करें हम प्रशस्ति गान
पुकारते हुए उन्हें दक्षिणेश प्रभु
और नाचें हम ताली बजा बजाकर।

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 61-68)

321. கனவேயுந் தேவர்கள்
காண்பரிய கனைகழலோன்
புனவே யனவளைத்
தோளியொடும் புகுந்தருளி
நனவே எனைப்பிடித்தாட்
கொண்டவா நயந்தநெஞ்சம்
சினவேற்கண் நீர்மல்கத்
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 10

321. कनवेयुम् तेवर्गळ्
काण्परिय कनैकऴलोन्
पुनम् वेयनवळैत्
तोळियॊडुम् पुगुन्दरुळि
ननवे ऍनैप्पिडित्ताट्
कॊण्डवा नयन्तु नॆञ्जम्
चिनम् वेर्कण्णीर् मल्गत्
तॆळ्ळेणम् कॊट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 69-76)

322. கயல்மாண்ட கண்ணிதன்
பங்கன்எனைக்கலந் தாண்டலுமே
அயலமாண் டருவினைச்
சுற்றமுமாண் டவனியின்மேல்
மயல்மாண்டு மற்றுள்ள
வாசகமாண் டென்னுடைய
செயல்மாண்ட வாபாடித்
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 11

322. कयल् माण्ड कण्णि तन्
पङ्गन् ऍनैक्कलन्दाण्डलुमे
अयम् माण्डरुविनैच्
चुट्रमाण्डवनियिन्मेल्
मयन्माण्डु मट्रुळ्ळ
वाचकमाण्डॆन्नुडैय
चॆयन्माण्ड वापाडित्
तॆळ्ळेणम् कॊट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 77-84)

321. *स्वप्न में भी सुदुर्लभ हैं
नाथचरण देवगण के लिए
ऐसे महिमामय शिव पधारे मेरे पास
संग में थी वंशीनिभ मृदुलभुजा युत उमा
आकर मुझे बरबस अपना लिया
स्वप्न में नहीं सच में जीवन में
सखियो ! भाले सरिस सुदीर्घ नयनों में
आनन्दाश्रु भर कर
गान करें नाथ की अपार करुणा का
तालियों की ताल-लय में।*

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 69-76)

322. *मीन से भी सुभग लोचना के पति
गौरीशंकर ने मुझे अपनाया तन्मय बना लिया
मिट गया स्व-पर का बोध
बिसर गए अपने कार्यकलाप और परिसर
नष्ट हो गई लोक पर आसक्ति
उसकी गाथा उसकी बातों को छोड़
अपनी सारी बातें भूल गईं
उसका काम मेरा काम बन गया
नाथ की इस महिमा का गान करें
तालियों की ताल-लय में।*

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 77-84)

323. முத்திக் குழன்று முனிவர்குழாம் நனிவாட
அத்திக் கருளி அடியேனை ஆண்டுகொண்டு
பத்திக் கடலுட் பதித்த பரஞ்சோதி
தித்திக்கு மாபாடித் தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 12

323. मुत्तिक् कुळन्रु मुनिवर् कुळाम् ननिवाड
अत्तिक्करुळि अडियेनै आण्डुकॉण्डु
पत्तिक्कडलुळ् पतित्त परञ्जोति
तित्तिक्कुमापाडित् तॅळ्ळेणम् कॉट्टामो !

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 85-88)

324. பார்பாடும் பாதாளர் பாடும்விண்ணோர் தம்பாடும்
ஆர்பாடுஞ் சாரா வகையருளி ஆண்டுகொண்ட
நேர்பாடல் பாடி நினைப்பரிய தனிப்பெரியோன்
சீர்பாடல் பாடிநாம் தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 13

324. पार्पाडुम् पाताळर् पाडुम् विण्णोर् तम् पाडुम्
आर् पाडुम् चारावगै अरुळि आण्डुकॉण्ड
नेर्पाडल् पाडि निनैप्परिय तनिप्पॅरियोन्
चीर्पाडल् पाडिनाम् तॅळ्ळेणम् कॉट्टामो !

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 89-92)

323. नाना प्रकार से अध्यवसाय करते रहे
मुनिगण मुक्ति की कामना से
किन्तु परमेश्वर ने पता क्या किया ?
सद्गति प्रदान की हस्ती को
और अपनाया मुझे, हाँ बनाया अपना
परंज्योति प्रभु ने
निमग्न कर दिया मुझे भक्ति-सागर में
नाथ की ऐसी महिमा का
गान करें मधुरिम स्वर में
तालियों की ताल-लय में।

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 85-88)

324. नाथ ने मुझे रखा
न धरती में न स्वर्ग में
न पाताल में न और कहीं
रखा परमदयालु नाथ ने मुझे
अपने निकट सामीप्य में
और अपना लिया वात्सल्य से
नाथ की अपरंपार लीला
गरिमा-महिमा का गान करें हम
तालियों की ताल-लय में।

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 89-92)

325. மாலே பிரமனே
மற்றொழிந்த தேவர்களே
நூலே நுழைவரியான்
நுண்ணியனாய் வந்தடியேன்
பாலே புகுந்து
பரிந்துருக்கும் பாவகத்தால்
சேலேர்கண் நீர்மல்கத்
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 14

325. माले पिरमने
मट्रॊऴिन्द तेवर्गळे
नूले नुऴैवरियान्
नुण्णियनाम् वन्दडियेन्
पाले पुगुन्दु
परिन्दुरुक्कुम् पावकत्ताल्
चेलेर् कण्णीर् मल्गत्
तॆळ्ळेणम् कॊट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 93-100)

326. உருகிப் பெருகி
உளங்குளிர முகந்துகொண்டு
பருகற் கினிய
பரங்கருணைத் தடங்கடலை
மருவித் திகழ்தென்னன்
வார்கழலே நினைந்தடியோம்
திருவைப் பரவிநாம்
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 15

326. उरुगिप् पॆरुगि
उळम् कुळिर मुगन्दु कॊण्डु
परुगर्किनिय
परङ्करुणैत् तडङ्कडलै
मरुवित्तिगऴ् तॆन्नन्
वार्कऴले निनैन्दडियोम्
तिरुवैप् परवि नाम्
तॆळ्ळेणम् कॊट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 101-108)

325. *अग्राह्य है प्रभु विष्णु विरिंचि के लिए अनिर्वचनीय है*
अग्राह्य है अगोचर है अन्य देवगण के लिए
अबूझ है अनिर्वचनीय है शास्त्र-ग्रंथों के लिए
अतिसूक्ष्म वस्तु वह
शिवमंगल रूप में प्रवेश कर गया
मेरे हृदय में — पिघलाकर
परिपक्व बनाया वात्सल्य से
अश्रुपूरित सुभग नयनों के साथ
गान करें हम प्रभु-महिमा का
तालियों की ताल-लय में।

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 93-100)

326. *शिवयोग साधना से*
हृदय हमारा पसीज उठता है
निमग्न होकर
प्रेम के आनन्दसागर में
छक कर पिएँ हम करुणा - और
अनुग्रह का आनन्दामृत
पूरित होकर इसी आनंद से आह्लाद से
नाथ के चरणकमलों का गान करेंगे
तालियों की ताल-लय में।

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 101-108)

327. புத்தன் புரந்தராதி யர்அயன்மால் போற்றிசெயும்
பித்தன் பெருந்துறை மேயபிரான் பிறப்பறுத்த
அத்தன் அணிதில்லை அம்பலவன் அருட்கழல்கள்
சித்தம் புகுந்தவா தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 16

327. पुत्तन् पुरन्तरादि अयन्माल् पोट्रि चॅय्युम्
पित्तन् पॅरुन्तुऱै मेय पिरान् पिऱप्पऱुत्त
अत्तन् अणि तिल्लै अम्बलवन् अरुट्कऴल्गळ्
चित्तम् पगुन्दवा तॅळ्ळेणम् कॉट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 109-112)

328. உவலைச் சமயங்கள் ஒவ்வாத சாத்திரமாம்
சவலைக் கடலுளனாய்க் கிடந்து தடுமாறும்
கவலைக் கெடுத்துக் கழலிணைகள் தந்தருளும்
செயலைப் பரவிநாம் தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 17

328. उवलैच्चमयङ्गळ् ऑव्वाद चात्तिरमाम्
चवलैक्कडलुळनाय्क् किडन्दु तडुमाऱुम्
कवलैक् कॅडुत्तुक् कऴलिणैकळ् तन्दरुळुम्
चॅयलैप् परवि नाम् तॅळ्ळेणम् कॉट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 113-116)

327. महिमामय प्रभु चिर नवीन है
विष्णु विरिंचि और इंद्रादि से
निरंतर वंदित बावरा
विराजे है तिरुप्पंरुन्तुरै धाम में तात
जिन्होंने काट डाले भवबंधन
मुक्त कर दिया जनन-मरण के चक्र से
समलंकृत तिल्लै चिदंबरम् की
चित्सभा में नर्तित नटराज
घर कर गए मेरे चित्त में
उनके अनुग्रहपूर्ण चरणों की
महिमा गाएँ हम
तालियों की लय-ताल में।

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 109-112)

328. डगमगा रहा था मैं
मिथ्या मतों और परस्पर विरुद्ध सिद्धांतों के
भ्रमपूर्ण सागर में पड़कर
दूर कर दिया प्रभु ने सारा भ्रमजाल
और धर दिये निज चरणकमल
मेरे हृदय में अनुग्रहपूर्वक
नाथ की इस कृपा का
कीर्तिगान करें हम
तालियों की लय-ताल में।

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 113-116)

329. வான்கெட்டு மாருதம் மாய்ந்
தழல்நீர் மண்கெடினும்
தான்கெட்ட லின்றிச்
சலிப்பறியாத் தன்மையனுக்கு
ஊன்கெட் டுயிர்கெட்
டுணர்வுகெட்டென உள்ளமும்போய்
நான்கெட்ட வாபாடித்
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 18

329. वान् कॅट्टु मारुदम् मायन्दु
अऴल् नीर् मण् कॅडिनुम्
नान् कॅट्टल् इन्रिच्
चलिप्परियात् तन्मैयनुक्कु
ऊन् कॅट्टु उयिर् कॅट्टु
उणर्वु कॅट्टु ऍन्नुळ्ळमुम् पोय्
नान् कॅट्टवापाडित्
तॅळ्ळेणम् कोट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 117-124)

330. விண்ணோர் முழுமுதல்
பாதாளத் தார்வித்து
மண்ணோர் மருந்தயன்
மாலுடைய வைப்படியோம்
கண்ணார வந்துநின்றான்
கருணைக் கழல்பாடித்
தென்னாதென் னாவென்று
தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 19

330. विण्णोर् मुळुमुदल्
पाताळत्तार्वित्तु
मण्णोर् मरुन्दयन्
मालुडैय वैप्पडियोम्
कण्णार वन्दु निन्रान्
करुणैक्कळल् पाडित्
तॅन्ना तॅन्नावॅन्रु
तॅळ्ळेणम् कॉट्टामो !

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 125-132)

329. *विलीन हो जाते हैं वायु-आकाश*
अनल सलिल के संग पृथ्वी भी
प्रलयकाल के आने पर
किंतु निर्विकार रहते हैं स्थाणुनाथ
कोई थकान नहीं चंचलता नहीं
ऐसे महिमामय परमेश्वर में
विलीन हो गए यह देह और प्राण
चेतन मन के संग 'मैं' भी
यों मुझे आत्मसात करने की
अपार महिमा का गान करें हम
तालियों की लय-ताल में।

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 117-124)

330. *आदिमूल वह बीज रूप है*
धरती अंबर और पाताल का
मणि-मंत्र-औषध भी
शाश्वत निधि साक्षात् विष्णु का
ऐसा महिमामय परमेश्वर
प्रकट हुए हमारे सामने सहज रूप में
करुणा के इस वरुणालय का
कीर्तिगान करें हम
तालियों की लय-ताल में।

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 125-132)

331. குலம்பாடிக் கொக்கிற கும்பாடிக் கோல்வளையாள்
நலம்பாடி நீஞ்சுண்ட வாபாடி நாள்தோறும்
அலம்பார் புனல்தில்லை அம்பலத்தே ஆடுகின்ற
சிலம்பாடல் பாடிநாம் தெள்ளேணங் கொட்டாமோ! 20

331. *कुलम् पाडिक् कॉक्किरगुम् पाडिक् कोल्वळैयाळ्*
नलम्पाडि नञ्जुण्डवापाडि नाळ्तोरुम
अलम्बार् पुनल् तिल्लै अम्बलत्ते आडुकिन्र्
चिलम्बाडल् पाडि नाम् तळ्ळेणम् कॉट्टामो !

(तिरुमुरै आठ - 11 पंक्ति 133-136)

331. *गुणगण गाएँ नाथ की कुलमहिमा गाएँ*
देह पर विलसित बक पंख को गाएँ
गान करें अर्धांगिनी भवानी का जिनके
करतल पर शोभित हैं रत्नखचित कंकण
गान करें त्यागराज के महात्याग का
जगत्-त्राण हित विषपान करने की शालीनता का
गाएँ तिल्लै चिदम्बरम् में नर्तित नटराज को
जहाँ नर्तन करती हैं जलवीचियाँ भी
गाएँ नटराजराज के चरणों पर
शिंजित नूपुर को
नाथमहिमा का गान करें हम
तालियों की लय-ताल में।

(तिरुमुऱै आठ - 11 पंक्ति 133-136)



स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

Māl's self went forth a boar, but failed His sacred Foot
To find ; that we His form might know, a Sage He came,
And made me His ! To Him, Who hath nor name, nor form,
A thousand sacred names SING WE, AND BEAT TEḶḶĒṆAM !

The Lord in Perun-turrai's ever-hallowed shrine
Who dwelt, my birth with all its germs destrøyed ; since when
I've none else ; formless is He,— a form He wears,
The Lord of blest Ārūr SING WE, AND BEAT TEḶḶĒṆAM !

To Hari and to Brahmā and to other gods
Not manifested, Çivan came in presence there,
Melted our hearts, received our service due ; that all
The world may hear, and smile, SING WE, AND BEAT
TEḶḶĒṆAM !

From sinking in the vain abyss of worthless gods,—
From birth's illusions all,—the LIGHT SUPERNAL saved
And made me His. Soon as the new, pure Light, was given
How I in Bliss was lost : SING WE, AND BEAT TEḶḶĒṆAM !

To 'wildered gods, to Ayan, and to Māl unknown,
Çivan assumed a form, that men on earth should joy.
That germs of birth consumed might die, with gracious glance,
How to my soul He came, SING WE, AND BEAT TEḶḶĒṆAM !

The Lord, Who shakes the serpent dancing round His waist,
With His Hill-partner, came to earth, made us His own ;—
Say thus, soul-lighted, eyes like full bright lotus flowers,
Pouring forth floods of tears, and SINGING, BEAT
TEḶḶĒṆAM !

Çivan unknown to Hari, Ayan, Indra, heavenly ones,
On earth drew even me ; 'come, come,' said He, and made me His !
When imprint of His flow'ry Feet was on my head impressed,
How grace divine was mine, SING WE, AND BEAT TEḶḶĒṆAM !

Like rustling palm-leaves is this frame ! Its births and deaths,
With dread of good and ill, He swept away, and made me His ;
He gave me grace, though I, all else forget, ne'er to forget
His Foot ; Whose mighty dance SING WE, AND BEAT TEḶḶĒṆAM !

As though some stone were made sweet fruit, the Lord in grace
Gave ev'n to me His golden Foot, and made me His.
O ye with slender waist, red lips, and winsome smiles !
'Lord of the Southern-Land,' call Him ; AND BEAT TEḶḶĒṆAM !

Even in a dream His jewelled Feet 'tis hard for gods to see,—
With Her like laurel tree with jewelled arms,—entering in grace,
In waking hour He took, and made me His ! With loving souls
Your dart-like eyes be filled with tears, AND BEAT TEḶḶĒṆAM !

When He, Her spouse whose eyes shine bright, mixt with my soul,
And made me His, deeds and environments died out ;
Upon this earth confusion died ; all other mem'ries ceas'd ;
How all my 'doings' died, SING WE, AND BEAT TEḶḶĒṆAM !

Ascetic bands sore languish'd, longing for release.
Grace to the elephant he gave, made me His own ;
The light superne deep plunged me in devotion's sea !
How sweet His mercy is, SING WE, AND BEAT TEḶḶĒṆAM !

Not those on earth, nor in th' abyss, nor heavenly ones,—
To none beside, so near He drew ; He made me His !
To sing His advent, or Him, th' only Great, conceive
Is hard, His glory-song SING WE, AND BEAT TEḶḶĒṆAM !

Lines : 1- 52

12

திருச்சாழல்

तिरुच्चाऴल्

சிவனுடைய காருணியம்

शिवनुदैय कारुण्यम्

332. பூசுவதும் வெண்ணீறு பூண்பதுவும் பொங்கரவம்
பேசுவதுந் திருவாயால் மறைபோலுங் காணேடீ
பூசுவதும் பேசுவதும் பூண்பதுவுங் கொண்டென்னை
ஈசனவன் எவ்வுயிர்க்கும் இயல்பானான் சாழலோ! 1

332. पूसुवदुम् वॆण्णीरु पूण्पदुवुम् पॊङ्गरवम्
पेसुवदुम् तिरुवायाल् मऱैपोलुम् काणेडी
पूसुवदुम् पेसुवदुम् पूण्पदुवुम् कॊण्डॆन्नै
ईशनवन् ऎव्वुयिर्क्कुम् इयल्बानान् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 1-4)

333. என்னப்பன் எம்பிரான் எல்லார்க்குந் தானீசன்
துன்னம்பெய் கோவணமாக் கொள்ளுமது என்னேடீ
மன்னுகலை துன்னுபொருள் மறைநான்கே வான்சரடாத்
தன்னையே கோவணமாச் சாத்தினன்காண் சாழலோ! 2

333. ऎन्नप्पन् ऎम्पिरानॆल्लार्क्कुम् तानीशन्
तुन्नम्पॆय् कोवणमाक् कॊळ्ळुमदु ऎन्नेडी
मन्नुकलै तुन्नु पॊरुळ् मऱैनान्गे वान् चरडात्
तन्नैये कोवणमाच् चात्तिनन्काण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 5-8)

12

चाळल् नृत्य

शिव-कारुण्य

332. *"लेपन करते हैं धवल भस्म*
धारण करते हैं फुफकारते नागसर्प
भाषण करते हैं पावन वेदों का
इनमें क्या तारतम्य है बोल सखी !"
"जो भी लेपन करें जो भी धारण करें
और जो भी भाषण करें
इनमें रखा क्या है
सकल भुवन के अधीश्वर हैं
निखिल जगत् में प्राणतत्त्व हैं
उन सब का सार रूप हैं आधार हैं
आदिमूल हैं।"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 1-4)

333. *"मान लो कुछ भी कह लो कुछ भी*
कि तात वह मेरे नाथ हैं
सर्वेश्वर हैं जगत् के
किंतु ऐसे महिमामय ईश्वर को
धारण करने के लिए
फटे-पुराने कौपीन छोड़कर
और कुछ नहीं मिला ? बोलो तो !"
"जानती नहीं तुम
सकल वेद का सार अर्थ और निखिल कलाएँ
बनी हैं उसकी कापनी और कौपीन"।

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 5-8)

334. கோயில் சுடுகாடு சொல்புலித்தோல் நல்லாடை
தாயுமிலி தந்தையிலி தான்தனியன் காணேடீ
தாயுமிலி தந்தையிலி தான்தனியன் ஆயிடினும்
காயில் உலகனைத்துங் கற்பொடிகாண் சாழலோ! 3

334. कोयिल् चुडुकाडु कॉल्पुलित्तोल् नल्लाडै
तायुमिलि तन्तैयिलि तान् तनियन् काणेडी
तायुमिलि तन्तैयिलि तान् तनियन् आयिडिनुम्
कायिल् उलगनैत्तुम् कऱ्पॉडिकाण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 9-12)

335. அயனை அனங்கனை அந்தகனைச் சந்திரனை
வயனங்கள் மாயா வடுச்செய்தான் காணேடீ
நயனங்கள் மூன்றுடைய நாயகனே தண்டித்தால்
சயமன்றோ வானவர்க்குத் தாழ்குழலாய் சாழலோ! 4

335. अयनै अनङ्गनै अन्तगनैच् चन्तिरनै
वयनङ्गळ् माया वडुच् चॅय्दान् काणेडी
नयनङ्गळ् मून्ऱुडैय नायकने तण्डित्ताल्
चयमन्ऱो वानवर्क्कुत् ताऴ्कुऴलाय्च् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 13-16)

336. தக்கனையும் எச்சனையும் தலையறுத்துத் தேவர்கணம்
தொக்கனவந் தவர்தம்மைத் தொலைத்ததுதான் என்னேடீ
தொக்கனவந் தவர்தம்மைத் தொலைத்தருளி அருள்கொடுத்தங்கு
எச்சனுக்கு மிகைத்தலைமற்றருளினன்காண் சாழலோ! 5

336. तक्कनैयुम् ऍच्चनैयुम् तलैयऱुत्तुत् तेवर् गणम्
तॉक्कन वन्तवर् तम्मैत् तॉलैत्तदु तान् ऍन्नेडी
तॉक्कन वन्तवर् तम्मैत् तॉलैत्तरुळि अरुळ्कॉडुत्तंगु
ऍच्चनुक्कु मिगैत्तलै मट्रुरुळिनन् काण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 17-20)

334. "मंदिर है श्मशान भूमि
परिधान है हिंस्र व्याघ्र का चर्म
तात नहीं मात नहीं जग में अकेला है
कैसी विचित्र बात यह, बोलो सखी !"
"क्या हुआ इससे
तात-मात विहीन है
या बंधु-बांधव विहीन है
पता है एक बार क्रोध आ जाए
तो भस्मसात् हो जाए सकल जगत् ?"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 9-12)

335. "अज, कंदर्प, अंतक और शशांक को
अंग-भंग करके छोड़ दिया नाथ ने
ऐसा घाव पहुँचाया जो निरंतर बना रहे
बोल सखी इसका क्या मर्म है ?"
"स्वयं त्रिनेत्र प्रभु द्वारा दंडित होना
बोलो, क्या यह अनुग्रह नहीं
देवगण के लिए
बोल मेरी सुभग कुंतला सखी !"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 13-16)

336. "दक्ष-यज्ञ के अवसर पर
छील दिया शीर्ष दक्ष का
ध्वस्त कर दिया यज्ञ-कुंड
खदेड़ डाला देवगण को
हवि की लालसा में
जिन्होंने भाग लिया दक्ष-यज्ञ में
यह सब आवश्यक था ?"
"अरे यह भी तो किया था
खदेड़ने के बाद देवगण को
अनुग्रहपूर्वक लगा दिया
अजशीर्ष दक्ष के धड़ पर"।

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 17-20)

337. அலரவனும் மாலவனும் அறியாமே அழலுருவாய்
நிலமுதற்கீழ் அண்டமுற நின்றதுதான் என்னேடீ
நிலமுதற்கீழ் அண்டமுற நின்றிலனேல் இருவருந்தம்
சலமுகத்தால் ஆங்காரந் தவிரார்காண் சாழலோ! 6

337. अलरवनुम् मालवनुम् अऱियामे अऴलुरुवाय्
निलमुदऱ् कीऴण्डमुऱ निन्ऱदुतान् ऍन्नेडी
निलमुदऱ् कीऴण्डमुऱ निन्ऱिलनेल् इरुवरुम् तम्
चलमुगत्ताल् आङ्कारम् तविराऱ्काण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 21-24)

338. மலைமகளை யொருபாகம் வைத்தலுமே மற்றொருத்தி
சலமுகத்தால் அவன்சடையிற் பாயுமது என்னேடீ
சலமுகத்தால் அவன்சடையிற் பாய்ந்திலளேல் தரணியெல்லாம்
பிலமுகத்தே புகப்பாய்ந்து பெருங்கேடாஞ் சாழலோ! 7

338. मलैमगळै ऑरुपागम् वैत्तलुमे मट्रॉरुत्ति
चलमुगत्तालवन् चडैयिल् पायुमदु ऍन्नेडी
चलमुगत्तालवन् चडैयिल् पाय्न्तिलनेल् तरणि ऍल्लाम्
पिलमुगत्ते पुगप्पाय्न्दु पॆरुङ्केडाम् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 25-28)

339. கோலால மாகிக் குரைகடல்வாய் அன்றெழுந்த
ஆலாலம் உண்டான் அவன்சதுர்தான் என்னேடீ
ஆலாலம் உண்டிலனேல் அன்றயன்மால் உள்ளிட்ட
மேலாய தேவரெல்லாம் வீடுவர்காண் சாழலோ! 8

339. कोलालमागिक् कुरैकडल् वायन्ऱॆऴुन्द
आलाल मुण्डानवन् चतुर् तानॆन्नेडी
आलाल मुण्डिलनेल् अन्ऱयन्मालुळ्ळिट्ट
मेलाल तेवरॆल्लाम् वीडुवऱ्काण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 29-32)

337. *"अगम अगोचर था जो*
विष्णु विरिंचि के लिए
ऐसा वह क्यों खड़ा हुआ
अनल का महास्तंभ बनकर
पाताल से ब्रह्मांड की छत तक ?"
"यदि वह पाताल तक नहीं पहुँचता
विष्णु विरिंचि के द्वय का
अहंकार कहाँ मिटता ?"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 21-24)

338. *"जिस समय नाथ ने*
प्रदान किया निज वाम भाग
गिरिराजकुमारी को
तत्क्षण ही अपर नारी
जलधार बनकर झपट पड़ी
उनकी जटा पर, बोलो सखी
इसका रहस्य क्या है ?"
"यदि जटा पर नहीं गिरती
क्रोध से आवेश से
तो हो गया होता महानाश
पहुँच गई होती धरणी
पाताल के बिल द्वार में।"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 25-28)

339. *"तुमुल नाद कर रहे सागर से उत्थित*
हलाहल का उस दिन पान किया शिव ने
बोलो यह कैसा विचित्र कृत्य था ?"
"यदि वे अशन न करते
उस दिन हलाहल का
तो निश्चय जानो
विष्णु विरिंचि सहित
सबका अंत हुआ होता उस दिन।"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 29-32)

340. தென்பா லுகந்தாடுந் தில்லைச்சிற் றம்பலவன்
பெண்பா லுகந்தான் பெரும்பித்தன் காணேடீ
பெண்பா லுகந்திலனேற் பேதாய்இரு நிலத்தோர்
விண்பாலி யோகெய்தி வீடுவர்காண் சாழலோ! 9

340. तॆन्पालुगन्ताडुम् तिल्लैच् चिट्रम्बलवन्
पॆण्पालुगन्दान् पॆरुम्पित्तन् काणेडी
पॆण्पालुन्दिलनेल् पेदाय् इरुनिलत्तोऱ्
विण्पालियोगॆय्दि वीडुवऱ्काण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 33-36)

341. தானந்தம் இல்லான் தனையடைந்த நாயேனை
ஆனந்த வெள்ளத் தழுத்துவித்தான் காணேடீ
ஆனந்த வெள்ளத் தழுத்துவித்த திருவடிகள்
வானுந்து தேவர்கட்கோர் வான்பொருள்காண்
சாழலோ! 10

341. तानन्तमिलान् तनैयडैन्द नायेनै
आनन्दवॆळ्ळत्तऴुतुवित्तान् काणेडी
आनन्द वॆळ्ळत्तलुवित्त तिरुवडिगळ्
वानुन्दु तेवर्गट्कोर् वान्पॊरुळ्काण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 37-40)

342. நங்காய் இதென்னதவம் நரம்போ டெலும்பணிந்து
கங்காளந் தோள்மேலே காதலித்தான் காணேடீ
கங்காளம் ஆமாகேள் காலாந்த ரத்திருவர்
தங்காலஞ் செய்யத் தரித்தனன்காண் சாழலோ! 11

342. नङ्गाय् इदॆन्न तवम् नरम्बोडॆलुम्बणिन्दु
कङ्गाळम् तोळ्मेले कादलित्तान् काणेडी
कङ्गाळम् आमा केळ् कालान्तरत्तिरुवऱ्
तङ्कालम् चॆय्यत् तरित्तनन् तान् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 41-44)

340. *"दक्षिण देश में प्रेम से नर्तन करता*
तिल्लै चिदम्बरम् का नाथ वह
आसक्त हुआ नारी पर
इसलिए बौराया बावरा है"
"सुन री मूर्ख मान लो
वह आसक्त न हुआ नारी पर
तब मोक्ष नहीं पा जाएँगे सबके सब
धरती कहाँ बचेगी
सब हो गए होते स्वर्गलोक के वासी !"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 33-36)

341. *"यह कैसा अचंभा है सखी !*
आद्यंतविहीन के पास पहुँची
श्वान-तुल्य मैं
निमग्न कर दिया मुझे
आनन्द के सागर में !"
"चरणकमल जो प्रवेश कर गए
मेरे हृदयतल में
अमूल्य संपदा हैं वे
अमरलोक के निवासियों के लिए"।

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 37-40)

342. *"सखी, यह कैसा विचित्र तापस वेश !*
गले में पहने हैं नसों में गूंथा अस्थिमाल
और कंधे पर धारण किये हैं नर कंकाल ?"
"कंकाल ? हाँ उसकी बात भी सुन ले
कल्पांत में अंत करने के लिए
अन्य दो देवताओं का
पहने हैं उनकी अस्थियाँ और कंकाल।"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 41-44)

343. கானார் புலித்தோல் உடைதலைஊண் காடுபதி
ஆனா லவனுக்கிங் காட்படுவார் ஆரேடி
ஆனாலும் கேளாய் அயனுந் திருமாலும்
வானாடர் கோவும் வழியடியார் சாழலோ! 12

343. कानार् पुलित्तोलुडै तलैयूण् काडुपति
आनाल् अवनुक्किङ्काट् पडुवारारेडी
आनालुम् केळाय् अयनुम् तिरुमालुम्
वानाडर् कोवुम् वऴियडियार चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 45-48)

344. மலையரையன் பொற்பாவை வாள்நுதலாள் பெணதிருவை
உலகறியத் தீவேட்டான் என்னுமது என்னேடீ
உலகறியத் தீவேளா தொழிந்தனனேல் உலகனைத்துங்
கலைநவின்ற பொருள்களெல்லாங் கலங்கிடுங்காண்
சாழலோ! 13

344. मलैयरैयन् पॊर्पावै वाळ्नुदलाळ् पॆण्डिरुवै
उलगऱियत् तीवेट्यनॆन्नुमदु ऍन्नेडी
उलगऱियत् तीवेळादॊऴिन्दनने उलगनैत्तुम्
कलैनविन्ऱ पॊरुळ्गळॆल्लाम् कलंगिडुम् काण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 49-52)

345. தேன்புக்க தண்பணைசூழ் தில்லைச்சிற் றம்பலவன்
தான்புக்கு நட்டம் பயிலுமது என்னேடி
தான்புக்கு நட்டம் பயின்றிலனேல் தரணியெல்லாம்
ஊன்புக்க வேற்காளிக் கூட்டாங்காண் சாழலோ! 14

345. तेन्पुक्क तण्पणैचूऴ् तिल्लैच्चिट्रम्बलवन्
तान् पुक्कु नट्टम् पयिलुमदु ऍन्नेडी
तान् पुक्कु नट्टम् पयिन्ऱिलनेल् तरणियॆल्लाम्
पुक्क वेर्कालिक्कूट्टाम् काण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 53-56)

343. *"पहनता है बाघंबर, कपाल है भोजनपात्र*
और निवास है गिरि-कानन में
बोल सखी ! ऐसे शिव की
दासता करना कौन चाहेगा ?"
"सुन सखी ! इन सबके होते हुए भी
उसके निष्ठापूर्ण सेवक हैं
विष्णु और विरिंचि के संग
इंद्र और सकल देवगण।"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 45-48)

344. *"मैं क्या सुनती हूँ सखी !*
विवाह किया था परमेश्वर ने
पर्वतराजकुमारी सुकुमारी से
पावक के सामने लोक को साक्षी बनाकर
क्या यह सही था ?"
"लोक को साक्षी मानकर
पावक के सामने विवाह न करता
तो क्या सारे नीतिशास्त्र
निरर्थक नहीं हो जाते !
भ्रम का अंबार न बनते ?"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 49-52)

345. *"मधु रिसते केदारों से*
वलयित सुभग तिल्लै के
चिदंबर में - चित्सभा में -
नाथ क्यों नर्तन कर रहा निरंतर
सखी, बोलो इसका क्या रहस्य है ?"
"सुन सखी, यदि वह
चित्सभा में नृत्य नहीं करता यों
तो यह सारी धरती
बन जाएगी मुँह का कौर
मांस-खचित-शूलधारिणी
काली का"।

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 53-56)

346. கடகரியும் பரிமாவும் தேரும்உகந் தேறாதே
இடபம்உகந் தேறியவா றெனக்கறிய இயம்பேடீ
தடமதில்கள் அவைமுன்றுந் தழலெரிந்த அந்நாளில்
இடபமதாய்த் தாங்கினான் திருமால்காண் சாழலோ! 15

346. कडकरियुम् परिमावुम् तेरुमुगन्देऱादे
इडपम् उगन्तेऱियवा ऱॅनक्कऱिय इयम्बेडी
तडमदिल्गळवै मून्ऱुम् तऴलॅरिन्त अन्नाळिल्
इडपमदाय्त् ताङ्गिनान् तिरुमाल् काण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 57-60)

347. நன்றாக நால்வர்க்கும் நான்மறையின் உட்பொருளை
அன்றாலின் கீழிருந்தங் கறமுரைத்தான் காணேடீ
அன்றாலின் கீழிருந்தங் கறமுரைத்தான் ஆமிடினுங்
கொன்றான்காண் புரமூன்றுங் கூட்டோட சாழலோ! 16

347. नन्ऱाग नाल्वर्क्कु नान्मऱैयिन् उट्पॊरुळै
अन्ऱालिन् कीऴिरुन्दङ्कऱम् उरैत्तान् काणेडी
अन्ऱालिन् कीऴिरुन्दङ्कऱम् उरैत्तानायिडिनुम्
कॊन्ऱान् काण् पुरमून्ऱुम् कूट्टोडे चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 61-64)

348. அம்பலத்தே கூத்தாடி அமுதுசெயப் பலிதிரியும்
நம்பனையுந் தேவனென்று நண்ணுமது என்னேடீ
நம்பனையும் ஆமாகேள் நான்மறைகள் தாமறியா
எம்பெருமான் ஈசாவென் றேத்தினகாண் சாழலோ! 17

348. अम्बलत्ते कूत्ताडि अमुदुचॅयप् पलितिरियुम्
नम्बनैयुम् तेवनॅन्ऱु नण्णुमदु ऍन्नेडी
नम्बनैयुम् आमा केळ् नान्मऱैगळ् तामऱिया
ऍम्पॆरुमानीशा ऍन्ऱेत्तिन काण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 65-68)

346. *"गज था और अश्व था, क्यों रथ भी था*
इन सबको छोड़कर
नाथ क्यों आरूढ़ हुए वृषभ पर प्रेम से
बताओ तो सही, सखी !
ताकि मैं भी समझूँ।"
"सुनो सखी, कारण यह था
जब जल गए
सत्व रज तमोगुण के त्रिपुर
शेष बचे केवल शंकर-नारायण
नारायण ने सहारा दिया
वृष बनकर शंकर को।"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 57-60)

347. *"अरी सखी, देखा तुमने ?*
वटतरु तले उस दिन
सनक सनंदनादि चार मुनियों को
समझाते हुए चतुर्वेद का निहित अर्थ
व्याख्या की थी धर्म की।"
"हाँ, धर्म की व्याख्या करने पर भी
जलाकर धराशायी कर दिया
त्रिपुर को समूल ही।"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 61-64)

348. *"मंच पर करता है नर्तन*
खाने के लिए मांगता फिरता है भिक्षान्न
ऐसे हमारे नाथ को - बोल सखी
देवदेव मानते क्यों हैं ?"
"हाँ सखी, सुनो इसलिए मानते हैं
हमारे नाथ को देवदेव
कि चतुर्वेद भी उन्हें जानने में असमर्थ हैं
स्तुति करते हैं परमेश्वर रूप में।"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 65-68)

349. சலமுடைய சலந்தரன்தன் உடல்தடிந்த நல்லாழி
நலமுடைய நாரணற்கன் றருளியவா றென்னேடீ
நலமுடைய நாரணன்தன் நயனம்இடந் தரனடிக்கீழ்
அலராக இடஆழி அருளினன்காண் சாழலோ! 18

349. चलमुडैय चलन्तरन् तन् उडल् तडिन्त नल्लाऴि
नलमुडैय नारणर्कन्ऱरुळियवाऱॆन्नेडी
नलमुडैय नारणन् तन् नयनम् इडन्तरनडिक्कीऴ्
अलराग इडवाऴि अरुळिनन्काण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 69-72)

350. அம்பரமாம் புள்ளித்தோல் ஆலாலம் ஆரமுதம்
எம்பெருமான் உண்டசதுர் எனக்கறிய இயம்பேடீ
எம்பெருமான் ஏதுடுத்தங் கேதமுது செய்திடினுந்
தம்பெருமை தானறியாத் தன்மையன்காண் சாழலோ! 19

350. अम्बरमाम् पुळ्ळित्तोल् आलालम् आरमुदम्
ऍम्पॆरुमानुण्ड चतुर्ऎनक्करिय इयम्बेडी
ऍम्पॆरुमान् एदुत्तङ्केदमुदु चॆय्दिडिनुम्
तम् पॆरुमै तानऱियात् तन्मैयन्काण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 73-76)

351. அருந்தவருக் காலின்கீழ் அறமுதலா நான்கனையும்
இருந்தவருக் கருளுமது எனக்கறிய இயம்பேடீ
அருந்தவருக் கறமுதல்நான் கன்றருளிச் செய்திலனேல்
திருந்தவருக் குலகியற்கை தெரியாகாண் சாழலோ! 20

351. अरुन्तवरुक्कालिन् कीऴ् अऱमुदला नान्कनैयुम्
इरुन्तवरुक्करुळुमदु ऍनक्करिय इयम्बेडी
अरुन्तवरुक्कऱ मुदनान्गरुळिच् चॆय्दिलनेल्
तिरुन्तवरुक्कुलकियऱ्कै तॆरियाकाण् चाऴलो !

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 77-80)

349. "संहार कर दिया परमक्रोधी जलंधर का
अपने अमोघ चक्रायुध से
ऐसे अमोघ आयुध को
क्यों प्रदान किया नारायण को
विचित्र बात है न सखी ?"
"अमोघ यह चक्रायुध पाने की अमित लालसा से
अर्पण किया निज नयन को
सुमन बनाकर नारायण ने
आशुतोष प्रसन्न हो गए
प्रदान किया चक्रायुध नारायण को।"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 69-72)

350. "धारण किए हैं कटितट पर
चित्रित हिरण का चर्म
भोजन किया ज्वलित
श्यामल हलाहल का
नाथ की चातुरी क्या है
समझ नहीं पा रही, बोल सखी ?"
"कुछ भी पहन लें नाथ
कुछ भी अशन कर लें
नाथ की महिमा अपरंपार
इतना कि ज्ञात नहीं स्वयं को
यह है उनकी प्रकृति।"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 73-76)

351. "आसीन होकर वट-वृक्ष के तले
पुराकाल में व्याख्यायित किया
धर्मादि पुरुषार्थ अद्‌भुत तपस्वियों को
इसका रहस्य क्या है बता सखी समझूँ मैं भी"
"अद्‌भुत तपस्वियों के सामने धर्मादि पुरुषार्थ को
व्याख्यायित न किया होता उस दिन
जगत् की प्रकृति से
अवगत न हुए होते मुनिजन।"

(तिरुमुऱै आठ - 12 पंक्ति 77-80)



स्रोत : पाथवे टू गॉड थ्रू द तिरुवाचकम् - जी. वनमीकनाथन्
Source : Pathway to God through the Tiruvacagam by G. Vanmikanathan

What He smears on His body is white ash !
What He wears is an angry snake !
What He speaks with His lips divine
is the *Saama* Veda, it seems, my dear ?

What matters what He smears,
what He says, what He wears ?
The Lord of the universe, of all that has life,
the essence is He.

You call Him 'my Father, my Lord,
the Lord of everyone too',
yet how is it that He wears
a much-darned rag as loin cloth ?

Take note that the eternal arts as G string,
and meaning - imbued Vedas four themselves
as the loin cloth He wears.

His residence is the cremation ground;
the deadly tiger's skin is His grand dress;
motherless, fatherless,
a kinless lone one is He, don't you see ?

Motherless One, fatherless One,
and kinless lone One though He is,
note that if He gets angry
the world entire will be ground to dust.

Brahma, Cupid, Death, the Moon,
He irreparably mutilated them,
don't you see ?

If my three- eyed Beloved Himself punishes,
blessing is it not
to the heavenly ones,
O you with flowing tresses ?

What do you say about His beheading
Thakkan and Echchan
and putting to rout the band of *devas*
who had come there in large numbers ?

But note that after He had graciously routed
the devas gathered there,
and thereby bestowing grace on them,
He graciously gave a new head to Echchan
on the very spot.

What is the meaning of your Lord
standing as a pillar of fire,
reaching from the nether regions to the skies,
that Brahma and Vishnu may not know Him ?

Reaching from the nether regions to the skies,
had He not stood so that day,
both of them,
on account of the altercation between them,
would never have shed their egotism.

What is this disgraceful thing ?
On His placing the daughter of the mountain
on one side of Him,
another woman, in a rage,
plunged into His matted locks ?

Had she not plunged into His matted locks in a rage,
great ruin would have been caused,
making all the world plunge
into the bowels of the nether regions.

Lines : 1 - 28

13

திருப்பூவல்லி

तिरुप्पूवल्लि

மாயாவிசய நீக்குதல்

मायाविसय नीक्कुतल्

352. இணையார் திருவடி என்தலைமேல் வைத்தலுமே
துணையான சுற்றங்கள் அத்தனையுந் துறந்தொழிந்தேன்
அணையார் புனற்றில்லை அம்பலத்தே ஆடுகின்ற
புனையாளன் சீர்பாடிப் பூவல்லி கொய்யாமோ! 1

352. इणैयार तिरुवडि ऍन्ऱलैमेल् वैत्तलुमे
तुणैयान चुट्रङ्गळ् अन्तनैयुम् तुरन्दॊऴिन्देन्
अणैयार् पुनट्रिल्लै अम्बलत्ते आडुकिन्ऱ
पुणैयाळन् चीर्पाडिप् पूवल्लि कॊय्यामो !

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 1-4)

353. எந்தையெந் தாய்சுற்றம் மற்றுமெல்லாம் என்னுடைய
பந்தம் அறுத்தென்னை ஆண்டுகொண்ட பாண்டிப்பிரான்
அந்த இடைமருதில் ஆனந்தத் தேனிருந்த
பொந்தைப் பரவிநாம் பூவல்லி கொய்யாமோ! 2

353. ऍन्तै एन्ताय् चुट्रम् मट्रुमॆल्लाम् ऍन्नुडैय
पन्तमरुत्तॆन्नै आट्कॊण्ड पाण्डिप् पिरान्
अन्त इडै मरुदिल् आनन्दत् तेनिरुन्द
पॊन्दैप् परवि नाम् पूवल्लि कॊय्यामो !

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 5-8)

13

पुष्प-चयन गीत

माया जनित विषयों से निवृत्ति

352. *ज्यों ही नाथ ने धरे*
चरणयुगल मेरे सिर पर
हो गया मुक्त मैं परिजनों से
जो सदा संगसंग रहते थे
आओ तोड़ें हम वल्लरियों से पुष्प
समवेत स्वर में गान करते हुए नाथ का
जो जल-मंडल वलयित तिल्लै के लिए पतवार सम हैं
और आनंद नृत्य करते हैं जो तिल्लै चित्सभा में।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 1-4)

353. *फूल तोड़ें हम वल्लरियों से*
स्तुतिगान करते हुए मधु झर रहे
इडै मरुदु के तरुकोटरों का
इस धाम में विराजे हैं
पांड्य भूमि के प्रशस्त नाथ
जिन्होंने अपना लिया मुझे
काटकर सकल बंध-पाश
तात-मात का, बंधु-परिजन का
अन्य समस्त इच्छाओं का।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 5-8)

354. நாயிற் கடைப்பட்ட நம்மையுமோர் பொருட்படுத்துத்
தாயிற் பெரிதுந் தயாவுடைய தம்பெருமான்
மாயப் பிறப்பறுத்தாண்டான்என் வல்வினையின்
வாயிற் பொடியட்டிப் பூவல்லி கொய்யாமோ! 3

354. नायिऱ् कडैप्पट्ट नम्मैयुम् ओर् पॊरुट् पडुत्तुत्
तायिऱ् पॆरिदुम् दयावुडैय तम्पॆरुमान्
मायप्पिरप्परुत्तु आण्डानॆन् वल्विनैयिन्
वायिऱ् पॊडियट्टिप् पूवल्लि कॊय्यामो ।

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 9-12)

355. பண்பட்ட தில்லைப் பதிக்கரசைப் பரவாதே
எண்பட்ட தக்கன் அருக்கன்எச்சன் இந்துஅனல்
விண்பட்ட பூதப் படைவீர பத்திரரால்
புண்பட்ட வாபாடிப் பூவல்லி கொய்யாமோ! 4

355. पण्पट्ट तिल्लैप् पतिक्करशैप् परवादे
ऍण्ण्ट्ट तक्कनरुक्कन् ऍच्चन् इन्दुवअल्
विण्पट्ट पूतप्पडै वीरपत्तिरराल्
पुण्पट्ट वापाडिप् पूवल्लि कॊय्यामो !

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 13-16)

356. தேனாடு கொன்றை சடைக்கணிந்த சிவபெருமான்
ஊனாடி நாடிவந் துள்புகுந்தான் உலகர்முன்னே
நானாடி ஆடிநின் றோலமிட நடம்பயிலும்
வானாடர் கோவுக்கே பூவல்லி கொய்யாமோ! 5

356. तेनाडु कॊन्ऱै चडैक्कणिन्द शिवपॆरुमान्
ऊनाडि नाडिवन्दुळ्पुगुन्दान् उलगर् मुन्ने
नानाडि आडि निन्ऱोलमिड नडम् पयिलुम्
वानाडर् कोवुक्के पूवल्लि कॊय्यमो !

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 17-20)

354. *श्वान से भी कदर्य*
मुझे भी सम्मान देते हुए
माँ से भी ममतामय दयामय प्रभु ने
काट डाले जनन-मरण के बंधन
अपना लिया मुझे वात्सल्य से
चाट ले धूल अब मेरा संचित-कर्म
आओ सखियो
तोड़ें फूल हम वल्लरियों से।

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 9-12)

355. *आओ तोड़ें फूल हम वल्लरियों से*
उस वृत्तांत का गान करते हुए
कि किस तरह प्रताड़ित हुए
अपने को दक्ष समझने वाले दक्ष
अर्क इन्दु और अनल ने
वंदना नहीं की प्रभु परमेश्वर की
सुसंस्कृत तिल्लै नगरी के अधीश्वर की
और इसके लिए दंडित हुए
भूत सेनापति वीरभद्र से
गाएँ किस तरह वे क्षत-विक्षत हुए उस दिन।

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 13-16)

356. *निज जटा पर*
मधु-स्त्रवित कोन्ऱै-धारी शिवराज
धर कर मानुष रूप प्रकट हुए सबके सामने
घुस गए मेरे मानस में
और नाचने लगे
ताकि मैं भी नाचूँ गाते हुए आनंदगीत
ऐसे महिमामय देवाधिदेव के लिए
आओ सखियो !
तोड़ें फूल हम वल्लरियों से।

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 17-20)

357. எரிமூன்று தேவர்க் கிரங்கியருள் செய்தருளிச்
சிரமூன் றறத்தன் திருப்புருவம் நெரித்தருளி
உருமூன்று மாகி உணர்வரிதாம் ஒருவனுமே
புரமூன் றெரித்தவா பூவல்லி கொய்யாமோ! 6

357. ऍरिमून्ऱु तेवक्किर्करङ्गि अरुळ् चॆय्दरुळि
चिटमून्ऱरत् तन् तिरुप्पुरुवम् नॆरित्तरुळि
उरु मून्ऱुमागि उणर्वरिदाम् ऒरुवनुमे
पुरमून्ऱॆरित्तवा पूवल्लि कॊय्यामो !

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 21-24)

354. வணங்கத் தலைவைத்து வார்கழல்வாய் வாழ்த்தவைத்து
இணங்கத்தன் சீரடியார் கூட்டமும்வைத் தெம்பெருமான்
அணங்கோ டணிதில்லை அம்பலத்தே ஆடுகின்ற
குணங்கூரப் பாடிநாம் பூவல்லி கொய்யாமோ! 7

358. वणङ्गत्तलै वैत्तु वार्कऴल्वाय् वाऴ्त्तवैत्तु
इणङ्गत्तन् चीरडियार् कूट्टमुम् वैत्तॆम्पॆरुमान्
अणङ्गॊडु अणितिल्लै अम्बलत्ते आडुकिन्ऱ
कुणम् कूरप्पाडि नाम् पूवल्लि कॊय्यामो !

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 25-28)

359. நெறிசெய் தருளித்தன் சீரடியார் பொன்னடிக்கே
குறிசெய்து கொண்டென்னை ஆண்டபிரான் குணம்பரவி
முறிசெய்து நம்மை முழுதுடற்றும் பழவினையைக்
கிறிசெய்த வாபாடிப் பூவல்லி கொய்யாமோ! 8

359. नॆऱिचॆय्दरुळित्तन् चीरडियार् पॊन्नडिक्के
कुऱिचॆय्दु कॊण्डॆन्नै आण्डपिरान् कुणम् परवि
मुऱिचॆय्दु नम्मै मुऴुदुडट्रुम् पऴविनैयैक्
किऱिचॆय्द वापाडि पूवल्लि कॊय्यामो।

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 29-32)

357. *आओ तोड़ें हम फूल वल्लरियों से*
नाथ की महिमा का गान करते हुए
कि किस विधि
देवों को अनुगृहीत करते हुए प्रभु ने
सृजन किए त्रिकाग्नि
त्रिमूर्ति बने स्वयं और परे होकर त्रिमूर्ति से
किस विधि बल दिया भ्रूमध्य में
जिससे कट जाएँ तीनों सिर, त्रिपुरं अहंकार के
अबूझ है महिमा परमेश्वर की।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 21-24)

358. *आओ तोड़ें हम फूल वल्लरियों से*
प्रभु के गुण-गणों का गान करते हुए
जिन्होंने
दिया है सिर नमन करने के लिए
दिया है मुँह दिव्य-चरण का गान करने के लिए
दिया है भक्तमंडली सत्संग के लिए
और नृत्य करते हैं
अपनी अर्धांगिनी शिवकाम सुंदरी के संग
तिल्लै चिदंबरम् में।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 25-28)

359. *सिखाया प्रभु ने मुझे वह दिव्य मार्ग*
निज दासों के स्वर्णिम चरणों की सेवा का प्रशस्त मार्ग
इस तरह मुझे अपनाया प्रभु ने
काट दिया हमें घेरते संचित कर्म को
जो बांधते थे हमें संपूर्ण शक्ति से
गान करें प्रभु का जिसने झुठला दिया कर्म को
और बना लिया मुझे अपना दास।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 29-32)

360. பன்னாள் பரவிப் பணிசெய்யப் பாதமலர்
என்ஆகம் துன்னவைத்த பெரியோன் எழிற்சுடராய்க்
கல்நா ருரித்தென்னை யாண்டுகொண்டான்கழலிணைகள்
பொன்னான வாபாடிப் பூவல்லி கொய்யாமோ! 9

360. पन्नाट् परविप् पणिचॅय्यप् पादमलर्
ऍन्नागम् तुन्नवैत्त पॅरियोन् ऍऴिर्चुडरायक्
कल्नारुरित्तॅन्नै आण्डुकॉण्डान् कऴलिणैगळ्
पॉन्नान वापाडिप् पूवल्लि कॉय्यामो !

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 33-36)

361. பேராசை யாமிந்தப் பிண்டமறப் பெருந்துறையான்
சீரார் திருவடி யென்தலைமேல் வைத்தபிரான்
காரார் கடல்நஞ்சை உண்டுகந்த காபாலி
போரார் புரம்பாடிப் பூவல்லி கொய்யாமோ! 10

361. पेराशैयामिन्दप् पिण्डमरप् पॅरुन्तुरैयान्
चीरार् तिरुवडि ऍन्तलैमेल् वैत्तपिरान्
कारार् कडल्नञ्जै उण्डुकन्द कापालि
पोरार् पुरम् पाडिप् पूवल्लि कॉय्यामो !

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 37-40)

362. பாலும் அமுதமுந் தேனுடனாம் பராபரமாய்க்
கோலங் குளிர்ந்துள்ளங் கொண்டபிரான் குரைகழல்கள்
ஞாலம் பரவுவார் நன்னெறியாம் அந்நெறியே
போலும் புகழ்பாடிப் பூவல்லி கொய்யாமோ! 11

362. पालुममुदमुम् तेनुडनाम् परापरमायक्
कोलम् कुळिर्न्दुळ्ळम् कॉण्डपिरान् कुरैकऴल्गळ्
ञालम् परवुवार नन्नॅरियाम् अन्नॅरिये
पोलुम् पुगऴ्पाडिप् पूवल्लि कॉय्यामो !

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 41-44)

360. *ज्योतिरूप में आकर*
धर दिए सुमन निभ चरण युगल
मेरे हृदय में सुभग ढंग से
परमपुरुष दयामय प्रभु ने वात्सल्य से
कि मैं सदा सेवकाई करता रहूँ प्रभु की
प्रभु का कार्य कुछ ऐसा है
पत्थर को इतना मसृण मृदुल बनाए कोई
कि उससे धागा निकल आए
परिपक्व बना कर मेरे हृदय को
अपनाया प्रभु ने
चरणयुगल की महिमा का गान करते हुए
तोड़ें हम फूल वल्लरियों से।

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 33-36)

361. *पेरुन्तुरै के अधीश प्रभु ने*
धर दिए निज सुभग चरण मेरे सिर पर
जिससे ध्वस्त हो जाए
महत्त्वाकांक्षा का यह पिंड
किस विधि निगल गए आनंद से
कापाली प्रभु
समुद्र से उत्थित श्यामल हलाहल को
किस प्रकार ध्वस्त किए त्रिपुर को
महा-रणांगण-मध्य में
आओ फूल तोड़ें हम वल्लरियों से।

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 37-40)

362. *दुग्ध-मधु सम अमृत सम प्रियंकर*
परात्पर प्रभु ने
आकर मेरे हृदय पर अधिकार कर लिया
शिंजित नूपुरयुत चरण-युगल से
लक्ष्य हैं उनके चरण साधकों के लिए
इस सन्मार्ग का प्रशस्ति गान करते हुए
आओ तोड़ें हम फूल वल्लरियों से।

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 41-44)

363. வானவன் மாலயன் மற்றுமுள்ள தேவர்கட்கும்
கோனவ னாய்நின்று கூடலிலாக் குணக்குறியோன்
ஆன நெடுங்கடல் ஆலாலம் அமுதுசெய்யப்
போனகம் ஆனவா பூவல்லி கொய்யாமோ! 12

363. वानवन् मालयन् मट्रुमुळ्ळ तेवर्गट्कुम्
कोनवनाय् निन्रु कूडलिलाक् कुणक्कुरियोन्
आन नॆडुङ्कडल् आलालममुदु चॆय्यप्
पोनगम् आनवा पूवल्लि कॊय्यामो !

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 45-48)

364. அன்றால நீழற்கீழ் அருமறைகள் தானருளி
நன்றாக வானவர் மாமுனிவர் நாடோறும்
நின்றார ஏத்து நிறைகழலோன் புனைகொன்றைப்
பொன்றாது பாடி நாம் பூவல்லி கொய்யாமோ! 13

364. अन्राल नीळ्रकीळ् अरुमरैकळ् तानरुळि
नन्राग वानवर् मामुनिवर् नाडोरुम्
निन्रार एत्तु निरैकळ्लोन् पुनै कॊन्रैप्
पॊन्तादु पाडि नाम् पूवल्लि कॊय्यामो !

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 49-52)

365. படமாக என்னுள்ளே தன்னிணைப்போ தவையளித்திங்கு
இடமாகக் கொண்டிருந் தேகம்பம் மேயபிரான்
தடமார் மதில்தில்லை அம்பலமே தானிடமா
நடமாடு மாபாடிப் பூவல்லி கொய்யாமோ! 14

365. पडमाग ऍन्नुळ्ळे तन्निणैप्पोदवैयळित्तिङ्गु
इडमागक् कॊण्डिरुन्द एकम्बमेय पिरान्
तडमार् मदिल् तिल्लै अम्बलमे तानिडमा
नडमाडु मापाडिप् पूवल्लि कॊय्यामो !

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 53-56)

363. *इंद्र के लिए विष्णु विरिंचि के लिए*
और अन्य देवगण के लिए अधीश हैं
सर्वेश्वर वह अतीत है गुणों और विशेषणों से
अमृतमय भोजन सम अशन किया
विशाल सागर से उत्थित हलाहल को
इस महिमा का गान करते हुए
आओ तोड़ें हम फूल वल्लरियों से।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 45-48)

364. *व्याख्यायित किये वेदों के निगूढ़ अर्थ*
वटवृक्ष के तले प्रभु ने उस दिन
उद्धार पाने के लिए चरणतल पर
प्रणत हैं स्तुतिरत हैं देवगण के संग मुनिवृंद
नित्य ही - प्रभु से धृत
स्वर्णिम कोन्रै के मकरंद का
स्तुतिगान करते हुए
तोड़ें फूल हम वल्लरियों से।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 49-52)

365. *चित्र सम अंकित कर दिए मेरे हृदय में*
अपने सुमन निभ चरणयुगल और
आवास बना लिया मेरे हृदय को
एकाम्रनाथ प्रभु ने
प्राचीर वलयित तिल्लै नगर को
जिसकी चित्सभा में
निज आस्थान बना लिया
नटराजराज की नृत्य भंगिमा का
गान करते हुए फूल तोड़ें हम वल्लरियों से।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 53-56)

366. அங்கி அருக்கன் இராவணன்அந் தகன்கூற்றன்
செங்கண் அரிஅயன் இந்திரனுஞ் சந்திரனும்
பங்கமில் தக்கனும் எச்சனுந்தம் பரிசழியப்
பொங்கியசீர் பாடிநாம் பூவல்லி கொய்யாமோ! 15

366. अङ्गि अरुक्कन् इरावणन् अन्तकन् कूट्रन्
चॆङ्कण् अरिअयन् इन्दिरनुम् चन्दिरनुम्
पङ्गमिल् तक्कनुम् ऍच्चनुम् तम् परिशऴिय
पॊङ्गिय चीर् पाडि नाम् पूवल्लि कॊय्यामो !

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 57-60)

367. திண்போர் விடையான் சிவபுரத்தார் போரேறு
மண்பால் மதுரையிற் பிட்டமுது செய்தருளித்
தண்டாலே பாண்டியன் தன்னைப் பணிகொண்ட
புண்பாடல் பாடிநாம் பூவல்லி கொய்யாமோ! 16

367. तिण्पोर् विडैयान् शिव पुरत्तार् पोरेरु
मण्पाल् मदुरैयिऱ् पिट्टमुदु चॆय्दरुळित्
तण्डाले पाण्डियन् तन्नैप् पणिकॊण्ड
पुण्पाडल् पाडिनाम् पूवल्लि कॊय्यामो !

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 61-64)

368. முன்னாய மாலயனும் வானவருந் தானவரும்
பொன்னார் திருவடி தாமறியார் போற்றுவதே
என்னாகம் உள்புகுந் தாண்டுகொண்டான் இலங்கணியாம்
பன்னாகம் பாடிநாம் பூவல்லி கொய்யாமோ! 17

368. मुन्नाय मालयनुम् वानवरुम् तानवरुम्
पॊन्नार् तिरुवडि तामऱियार् पोट्रुवदे
ऍन्नागम् उळ्पुगुन्दाण्डु कॊण्डान् इलङ्कणियाम्
पन्नागम् पाडि नाम् पूवल्लि कॊय्यामो !

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 65-68)

366. *अग्नि-अर्क, रावण के संग अंतक मृत्युदेव*
अरुणाभ नयन हरि के संग विरिंचि
इन्दु-चंद्र के संग निर्लज्ज दक्ष और यक्ष के
हरिताभ हुए प्रभु के क्रोध से
महिमामय प्रभु का यशोगान करते हुए
आओ तोड़ें हम फूल वल्लरियों से।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 57-60)

367. *समरोद्धत वृष पर आरूढ़ प्रभु*
केसरी तुल्य हैं शिवपुर वासियों के लिए
ऐसे महिमामय प्रभु ने
ढोई माटी मधुरापुरी में
वृद्धा के लिए मधुर पिट्टु खाया आमोद से
खाई फिर मधुरा-नृप के हाथ की छड़ी भी
सेवकाई में प्रमाद के लिए
गान करते हुए प्रभु-शरीर के उस घाव का
आओ तोड़ें हम फूल वल्लरियों से।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 61-64)

368. *पुरातन विष्णु और विरिंचि के संग*
देव और दानवगण भी
जानते नहीं दिव्य चरण के रहस्य
और स्तुतिरत हैं नित्य ही
ऐसे महिमामय प्रभु
प्रवेश कर गए मेरे हृदय में
और अपना बना लिया मुझको
उनके प्रिय आभूषण पन्नगों को
गाते हुए तोड़ें हम फूल वल्लरियों से।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 65-68)

369. சீரார் திருவடித் திண்சிலம்பு சிலம்பொலிக்கே
ஆராத ஆசையதாய் அடியேன் அகமகிழத்
தேரார்ந்த வீதிப் பெருந்துறையான் திருநடஞ்செய்
பேரானந் தம்பாடிப் பூவல்லி கொய்யாமோ! 18

369. चीरार् तिरुवडित् तिण्चिलम्बु चिलम्बॊलिक्के
आराद आशैयदाय् अडियेन् अगमगिऴत्
तेरार्न्द वीदिप् पॆरुन्तुऱैयान् तिरुनडम् चॆय्
पेरानन्दम् पाडिप् पूवल्लि कॊय्यामो !

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 69-72)

370. அத்தி யுரித்தது போர்த்தருளும் பெருந்துறையான்
பித்தவடிவுகொண் டிவ்வுலகிற் பிள்ளையுமாம்
முத்தி முழுமுதலுத் தரகோச மங்கைவள்ளல்
புத்தி புகுந்தவா பூவல்லி கொய்யாமோ! 19

370. अत्ति युरित्तदु पोर्त्तरुलुम् पॆरुन्तुऱैयान्
पित्त वडिवु कॊण्डिव्वुलगिल् पिळ्ळैयुमाम्
मुत्ति मुऴुमुदलुत्तरकोशमङ्गै वळ्ळल्
पुत्ति पुगुन्दवा पूवल्लि कॊय्यामो !

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 73-76)

371. மாவார வேறி மதுரைநகர் புகுந்தருளித்
தேவார்ந்த கோலந் திகழப் பெருந்துறையான்
கோவாகி வந்தெம்மைக் குற்றேவல் கொண்டருளும்
பூவார் கழல்பரவிப் பூவல்லி கொய்யாமோ! 20

371. मावारवेऱि मदुरैनगर् पुगुन्दरुलित्
तेवार्न्द कोलम् तिगऴप् पॆरुन्तुऱैयान्
कोवागि वन्दॆम्मैक् कुट्रेवल् कॊण्डरुऴुम्
पूवार् कऴल् परविप् पूवल्लि कॊय्यामो।

(तिरुमुऱै आठ - 13 पंक्ति 77-80)

369. रथ वीथियों से युत पंरुन्तुरै धाम के अधीश
जब नृत्य करते हैं आमोद से
सुभग चरणों पर धृत
नूपुरों के रणन-खनन से
कभी नहीं अघाता है मेरा चित्त
इस आनंद की अनुभूति का
गान करते हुए तोड़ें फूल वल्लरियों से।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 69-72)

370. चीरकर हस्तिचर्म ओढ़ लिया उसे
पंरुन्तुरै धाम के अधीश ने
कभी बनते हैं बावरा कभी शिशु बनते हैं
मुक्ति का एक मात्र स्रोत वह
उत्तरकोशैमंगै धाम के उदार प्रभु हैं
ऐसे महिमामय प्रभु
प्रवेश कर गए मेरे मानस में
इस महिमा का गान करते हुए
आओ तोड़ें हम फूल वल्लरियों से।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 73-76)

371. पंरुन्तुरै धाम के अधीश ने
दैवी वैभव से पूर्ण अश्व-यूथ के पति रूप में
प्रवेश किया मधुरापुरी में
प्रभु-रूप में आकर अपनाया मुझे
नियुक्त किया अपने सेवकाई में कारुण्य से
सुमन निभ उनके चरणयुगल का
कीर्तन करते हुए
आओ तोड़ें हम फूल वल्लरियों से।

(तिरुमुरै आठ - 13 पंक्ति 77-80)



स्रोत : तिरुवाचकम् - टी. एन. रामचन्द्रन्

Source : Tiruvaachakam by T.N. Ramachandran

Like an ever-enduring picture etched in my mind,
He blessed me with His aeviternal and flower-feet twain.
The Lord of Yekampam is entempled in me.
Having the Ambalam at walled Tillai rich in
Broad pools, as the Forum, He dances there.
Of this we will sing and gather flowers from creepers.

Agni, Surya, Ravana, Antakaasura, Yama, red-eyed
Vishnu, Brahma, Indira, Chandra, Daksha - the abode
Of flaws and Yeccha : these were denuded, by Him,
Of their honour. Let us sing His glory that soars
Up and up, and gather blooms from lianas.

He has for His mount the puissant martial Bull.
He indeed is a martial Bull unto the dwellers
Of Sivapuram. He carried earth in Madurai and ate
In grace, rice-cakes. While serving, He was hurt
By the Paandya who caned Him. Lo, of His injury
We will sing and gather flowers from creepers.

Vishnu and Brahma – the outstanding among the Devas –,
The heavenly immortals and also the Asuras know not
Of His auric and sacred feet. (If this be so), can we,
(Poor mortals), duly hail Him at all ? Lo, He entered
Into my soul, redeemed me and ruled me.
Of His dazzling jewels – the numerous snakes –,
We will sing and gather flowers from creepers.

To hearken to the sound of the ever-during anklets
Adorning His glorious and sacred feet, I foster
Insatiable longing. To my soul's rejoicing, the Lord
Of Perunturai in the streets of which chariots galore ply,
Enacts His dance divine of supreme bliss.
This we will sing and gather blossoms from lianas.

He flayed a tusker and was mantled in its hide.
He is the Lord of Perunturai. In His form
Of a mad man, He became an infant too. He,
The munificent One of Uttharakosamangkai,
Is indeed the sole cause and source of Moksha.
Let us sing how He indwells our inner sensorium
And gather blossoms from lianas.

Riding majestically a charger, He entered the city
Of Madurai. He, of Perunturai, in His comely
And godly form, made His advent as a Monarch.
We will hail His flower-bedecked and ankleted
Feet that, in grace, ply us in ministration,
And gather blossoms from lianas.

Lines : 53 - 80

14

திருவுந்தியார்

तिरु उन्तियार्

ஞானவெற்றி

ज्ञानवेंट्रि

முப்புரம் | मुप्पुरम्

372. வளைந்தது வில்லு விளைந்தது பூசல்
உளைந்தன முப்புரம் உந்தீபற
ஒருங்குடன் வெந்தவா றுந்தீபற ! 1

372. वळैन्ददु विल्लु विळैन्ददु पूशल्
उळैन्दन मुप्पुरम् उन्ती पऱ
ऑरुङ्गुडन् वॆन्दवाऱुन्दी पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 1-3)

373. ஈரம்பு கண்டிலம் ஏகம்பர் தங்கையில்
ஓரம்பே முப்புரம் உந்தீபற
ஒன்றும் பெருமிகை உந்தீபற ! 2

373. ईर् अम्बु कण्डिलम् एकम्बर् तङ्कैयिल्
ओर् अम्बे मुप्पुरम् उन्ती पऱ
ऑन्ऱुम् पॆरुमिगै उन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 4-6)

14

कंदुक गीत

ज्ञान की विजय

त्रिपुर

372. *चढ़ गया धनुष मेरु का*
छिड़ गया संग्राम घनघोर
तहस नहस हुए त्रिपुर
धू-धू जलकर हुए भस्म
इसी बात पर उड़ जा कंदुक
उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 1-3)

373. *देखे नहीं दो बाण*
एकाम्रनाथ के हाथ में
अमोघ था वह एक बाण
जल गए त्रिपुर - कंदुक उड़ता जा
एक बाण भी अधिक ठहरा
त्रिपुर के लिए - इसी बात पर
कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 4-6)

374. தச்சு விடுத்தலும் தாமடி யிட்டலும்
அச்சு முறிந்ததென் றுந்தீபற
அழிந்தன முப்புரம் உந்தீபற! 3

374. तच्चु विडुत्तलुम् तामडि यिट्टलुम्
अच्चु मुऱिन्ददॆन्ऱु उन्ती पऱ
अऴिन्दन मुप्पुरम् उन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 7-9)

375. உய்யவல் லாரொரு மூவரைக் காவல்கொண்டு
எய்யவல் லானுக்கே உந்தீபற
இளமுலை பங்கனென் றுந்தீபற! 4

375. उय्य वल्लालॊरु मूवरैक् कावल् कॊण्डु
एय्य वल्लानुक्के उन्ती पऱ
इळमुलै पङ्गनॆन्ऱुन्ती पऱ।

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 10-12)

தக்கன் இட்ட பலி तक्कन् इट्ट बलि

376. சாடிய வேள்வி சரிந்திடத் தேவர்கள்
ஓடிய வாபாடி உந்தீபற
உருத்திர நாதனுக் குந்தீபற! 5

376. चाडिय वेळ्वि चरिन्दिडत् तेवर्गळ्
ओडिय वापाडि उन्ती पऱ
उरुत्तिर नातनुक्कुन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 13-15)

377. ஆவா திருமால் அவிப்பாகங் கொண்டன்று
சாவா திருந்தானென் றுந்தீபற
சதுர்முகன் தாதையென் றுந்தீபற! 6

377. आवा तिरुमालविप्पागम् कॊण्डन्ऱु
चावा तिरुन्तानॆन्ऱु उन्ती पऱ
चतुर्मुकन् तातैयॆन्ऱु उन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 16-18)

374. *पूरी हुई कारीगरी*
सज्जित रथ पर
धरे पग नाथ ने
तत्क्षण टूट गई धुरी
और उधर - ध्वस्त हुए त्रिपुर
इसी बात पर उड़ जा कंदुक
उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 7-9)

375. *उबरने योग्य तीन असुर थे*
बना लिया द्वारपाल उन्हें
शिवपुर के
हाँ बड़े दक्ष थे शिवराज शर संधान में -
मृदुलकुचा का पति जो था
उड़ता जा कुंदक उड़ जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 10-12)

दक्षयज्ञ

376. *आक्रमण के फलस्वरूप*
तितर बितर हुआ यज्ञ
किस तरह भागे देवगण
प्राण लेकर इसी बात पर
उड़ जा कंदुक
जयगान करता हुआ रुद्रदेव का
उड़ता जा कंदुक !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 13-15)

377. *अहा ! दिव्य विष्णु ने*
खा लिया हविर्भाग यज्ञ का
अमर रहे वे
हाँ तात थे चतुरानन
विरिंचि के - यही गाता हुआ
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 16-18)

378. வெய்யவன் அங்கி விழுங்கத் திரட்டிய
கையைத் தறித்தானென் றுந்தீபற
கலங்கிற்று வேள்வியென் றுந்தீபற ! 7

378. वॆय्यवनङ्कि विऴुङ्कत् तिरट्टिय
कैयैत् तरित्तानॆन्रुन्ती पर
कलङ्किट्रु वेळ्वियॆन्रुन्ती पर !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 19-21)

379. பார்ப்பதி யைப்பகை சாற்றிய தக்கனைப்
பார்ப்பதென் னேஎடி யுந்தீபற
பணைமுலை பாகனுக்குந்தீபற ! 8

379. पार्प्पतियैप् पगै चाट्रिय तक्कनैप्
पार्प्पदॆन्ने एडि युन्ती पर
पणैमुलैप् पागनुक्कुन्ती पर !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 22-24)

380. புரந்தர னாரொரு பூங்குயி லாகி
மரந்தனி லேறினார் உந்தீபற
வானவர் கோனென்றே உந்தீபற ! 9

380. पुरन्दरनारॊरु पूङ्कुयिलागि
मरन्तनिलेरिनारॆन्रु उन्ती पर
वानवर् कोनॆन्रे उन्ती पर !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 25-27)

381. வெஞ்சின வேள்வி வியாத்திர னார்தலை
துஞ்சின வாபாடி உந்தீபற
தொடர்ந்த பிறப்பற உந்தீபற ! 10

381. वॆञ्चिन वेळ्वि वियात्तिरनार् तनै
तुञ्चिन वापाडि उन्ती पर
तोडर्न्द पिरप्पर उन्ती पर !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 28-30)

378. तापक अग्नि ने
समेटा हविर्भाग हाथ से
मुँह में डाला नहीं
कि काट दिया हाथ (वीरभद्र ने)
उड़ जा कंदुक
विघ्न पड़ा यज्ञ में
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 19-21)

379. क्रोध दिखाया पार्वती पर दक्ष ने
ऐसे दक्ष को
देख लिया रुद्र ने उचित रूप से
सुभगस्तनी वह
अर्धांगिनी जो थी
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 22-24)

380. पुरंदर बना सुंदर कोकिल
बचकर बैठ गया तरु-डाल पर
इसी बात पर उड़ जा कंदुक
बोल वह देवों का अधीश था
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 25-27)

381. यज्ञ पशु का काटा सिर व्याध ने
लुढ़क गया उसी का सिर
धड़ से अलग होकर
इसी बात पर उड़ जा कंदुक
हताहत हो जाए
घेरती पुनर्जन्म-शृंखला भी
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 28-30)

382. ஆட்டின் தலையை விதிக்குத் தலையாகக்
கூட்டிய வாபாடி உந்தீபற
கொங்கை குலுங்கநின் றுந்தீபற ! 11

382. आट्टिन् तलैयै विदिक्कुत् तलैयागक्
कूट्टिय वापाडि उन्ती पऱ
कॊङ्गै कुलुङ्ग निन्ऱुन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 31-33)

383. உண்ணப் புகுந்த பகன்ஒளித் தோடாமே
கண்ணைப் பறித்தவா றுந்தீபற
கருக்கெட நாமெலாம் உந்தீபற ! 12

383. उण्णप् पुगुन्द पगनॊळित् तोडामे
कण्णैप् पऱित्तवा ऱुन्ती पऱ
करुक्कॆड नामॆल्लाम् उन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 34-36)

384. நாமகள்நாசி சிரம்பிர மன்படச்
சோமன் முகன்நெரித் துந்தீபற
தொல்லை வினைகெட உந்தீபற ! 13

384. नामगळ् नाशि शिरम् पिरमन् पडच्
चोमन् मुगन् नॆरित्तुन्ती
तॊल्लै विनैकॆड उन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 37-39)

385. நான்மறை யோனும் மகத்திய மான்படப்
போம்வழி தேடுமா றுந்தீபற
புரந்தரன் வேள்வியி லுந்தீபற ! 14

385. नान्मऱैयोनुम् अगत्तियमान् पड
पॊम् वऴि तेडुमाऱुन्ती पऱ
पुरन्तरन् वेळ्वियिल् उन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 40-42)

382. *बना दिया अज-मस्तक को*
नियति-मस्तक दक्ष का
इसी भंगिमा का गान करता हुआ
उड़ जा कंदुक
तुंग कुचों के संग नाचो सखियो
और कंदुक ! उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 31-33)

383. *अशन करने आया भग*
अक्षि खोकर असमर्थ हुआ भागने में
इसी बात पर उड़ जा कंदुक
छूटें हम जनन-मरण की शृंखला से
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 34-36)

384. *नासिका कटी वाग्देवी की*
ब्रह्मदेव का सिर
चपटा हो गया चंद्र का मुख
उड़ जा कंदुक
संचित कर्म के कटने के लिए
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 37-39)

385. *सकपका उठे चतुर्वेद गायक*
भागने को हुए यजमान के संग
दिख नहीं रहा था बहिर्द्वार
उड़ जा कंदुक
भाग रहा था हतप्रभ इंद्र भी यज्ञ से
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 40-42)

386. சூரிய னார்தொண்டை வாயினிற் பற்களை
வாரி நெரித்தவா றுந்தீபற
மயங்கிற்று வேள்வியென் றுந்தீபற ! 15

386. सूरियनाऱ् ताॅण्डै वायिनिऱ् पर्कळै
वारि नॅरित्तवारुन्ती पऱ
मयङ्किट्रु वेळ्वियेन्ऱुन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 43-45)

387. தக்கனா ரன்றே தலையிழந் தார்தக்கன்
மக்களைச் சூழநின் றுந்தீபற
மடிந்தது வேள்வியென் றுந்தீபற ! 16

387. तक्कनारन्ऱे तलैयिऴन्दाऱ् तक्कन्
मक्ककैच् चूऴ निन्ऱुन्ती पऱ
मडिन्ददु वेळ्वियॅन्ऱुन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 46-48)

உபமனியன் उपमन्यन्

388. பாலக னார்க்கன்று பாற்கடல் ஈந்திட்ட
கோலச் சடையற்கே யுந்தீபற
குமரன்தன் தாதைக்கே உந்தீபற ! 17

388. पालकनाक्कन्ऱु पार्कडलीन्दिट्ट
कोलच्चडैयर्के उन्ती पऱ
कुमरन् तन् तातैक्के उन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 49-51)

386. *विस्फारित कर सूर्य का मुँह*
चूर कर डाली बत्तीसी
इस भंगिमा का गान करता हुआ
उड़ता जा कंदुक
फैल गया दिग्भ्रम यज्ञभूमि में
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 43-45)

387. *रक्षा में खड़े थे पुत्र वृंद*
उड़ गया तब भी दक्ष-शीर्ष
इसी बात पर उड़ जा कंदुक
बोल ध्वस्त हुआ यज्ञ
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 46-48)

उपमन्यु

388. *मुनि-बालक (उपमन्यु) के हित*
सज्जित किया क्षीर का सागर
ऐसे करुणामय सुभग जटाधर का
यशोगान करता हुआ
उड़ जा कंदुक
स्कंद तात जो हैं
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 49-51)

பிரமன் पिरमन्

389. நல்ல மலரின்மேல் நான்முக னார்தலை
ஒல்லை யரிந்ததென் றுந்தீபற
உகிரால் அரிந்ததென் றுந்தீபற ! 18

389. नल्ल मलरिन्मेल् नान्मगनार् तलै
ऑल्लै अरिन्ददॆन्ऱुन्ती पऱ
उगिराल् अरिन्ददॆन्ऱुन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 52-54)

இராவணன் रावणन्

390. தேரை நிறுத்தி மலையெடுத் தான்சிரம்
ஈரைந்தும் இற்றவா றுந்தீபற
இருபதும் இற்றதென் றுந்தீபற ! 19

390. तेरै निऱुत्ति मलैयॆडुत्तान् शिरम्
ईरैन्दुम् इट्रवाऱुन्ती पऱ
इरुपदुम् इट्रदॆन्ऱुन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 55-57)

391. ஏகாச மிட்ட இருடிகள் போகாமல்
ஆகாசங் காவலென் றுந்தீபற
அதற்கப்பாலுங் காவலென் றுந்தீபற ! 20

391. एकाशमिट्ट इरुडिगळ् पोगामल्
आकशम् कावलॆन्ऱुन्ती पऱ
अदर्कप्पालुम् कावलॆन्ऱुन्ती पऱ !

(तिरुमुऱै आठ - 14 पंक्ति 58-60)

ब्रह्मा

389. *सुभग कमल पर आसीन*
चतुरानन सिर
कट गया झटिति में
उड़ जा कंदुक
मानो नख से नोच डाला हो
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 52-54)

रावण

390. *रथ रोककर (रावण ने)*
उठा लिया कैलाश पर्वत दर्प से
तत्क्षण दबोचे गए
उसके दसों आनन
दब गए बीसों हाथ
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 55-57)

391. *धरे हैं ज्ञान का उत्तरीय ऋषिगण*
ज्ञानोत्तरीय धरे ऋषियों के
आकाश रूप में
रक्षक हैं अंबरनाथ
उड़ जा कंदुक
रक्षक वह आकाश के परे भी
उड़ जा कंदुक उड़ता जा !

(तिरुमुरै आठ - 14 पंक्ति 58-60)

स्रोत : तिरुवाचकम् - वर्ड बीटिफिक एस. ए. शंकरनारायनन्

Source : Tiruvacagam : Word Beatific by S.A. Sankaranarayanan

Arched Meru-bow; ensued a war;
cities three in cinerary.
Concomitantly charr'd - play aflutter.

Two darts we saw not in Ekamban's hand;
one burnt all three.
One is one too many - play aflutter.

Car was carpentered; His foot He placed:
axle broke;
citadels triple were sacked-play aflutter.

For Him who could dart at
sparing but three redeem worthy,
with soft-bosom in Half-play aflutter.

Sacrifice went to shreds.
Devas did flee.
For Lord of Rudras' sake-play aflutter.

When Hari took a share
of offerings, yet survived
as father of the four faced one-play aflutter.

Fire god scooped his hands, to grab havis;
one of which He severed;
Sacrifice broke down - play aflutter

Why care, friend, for Takkan
that antagonized Parvati.
For Him of bosomy half - play aflutter.

Indra in lovely koel's guise
lurked in the bough ;
e'en He, the Deva's king - play aflutter.

Eccan the head of Takkan's sacrifice,
the cause of wrath died beheaded. Sing
let chasing birth perish - play aflutter.

Junior Brahma's lost head
was replaced by goat's.
Shaking bosoms - play aflutter.

Bagan entered to eat, feering fled.
But His eyes were plucked.
Let our births be slain - play aflutter.

Lines : 1 - 36

திருவாசகம்

சைவ இலக்கியக் கவி மாணிக்கவாசகர்

ஆசிரியர், மொழிபெயர்ப்பாளர்
டாக்டர் ரவீந்தர்குமார் சேத்





साहित्य शोध संस्थान

साहित्य शोध संस्थान
8ए/141, पश्चिमी विस्तार क्षेत्र, करोलबाग,
नई दिल्ली-110005 दूरभाष : 2572-6216

SAHITYA SHODH SANSTHAN
8-A/141, W.E.A. KAROL BAGH
NEW DELHI-110005, PHONE: 2572-6216